मिशकात-ए-हक़्क़ानिया

(जीवनी वारिस पाक)

लेखक

मौलवी फ़ज़ल हुसैन साहब सिद्दीक़ी वारसी

जुबैरी बुक डिपो

आस्ताना रोड़, देवा शरीफ, बाराबंकी (यु.पी.)

Scanned with CamScanner

या वारिस

''पवित्र नाम''

आप का पूर्ण नाम वारिस अली शाह है। आप जन्मजात ईश्वर अनुरागी थे। अत: आपका जीवन ईश्वर अनुराग से आरम्भ होकर ईश अनुराग में ही विलीन हो गया। आपका वारिस नाम ही अपनी भरपूर विशेषताओं के साथ जनप्रिय और प्रसिद्ध है। यह भी विदित है कि प्रारम्भ से ही आपने **'मूतू मिन कबले अन् तमूतू'** (मृत्यु के पूर्व ही मर जाओ) अर्थात मरने के पूर्व मृतक जैसा हो जाने का गन्तव्य स्थान आप को प्राप्त था। अपने शिष्यों को भी आप यह उपदेश देते रहे। तात्पर्य यह है कि सरकार वारिस पाक को मोकामे बका अर्थात अमरत्व प्राप्त है जो शब्द वारिस के लिये सार्थक है। जिसने आपका दर्शन किया तत्काल ही बोल उठा :-

इस तरह भेस में आशिक के छुपा है माशूक।
जिस तरह आँख की पुतली में नज़र होती है॥

आपका सुप्रसिद्ध नाम हाजी हाफ़िज सैय्यद वारिस अली शाह है। आपके श्रेष्ठ नाम को यदि ख़ानदानी नसब के अनुसार देखा जाय तो अति सार्थक है। आप मुहम्मद साहब के ख़ानदान के दीपक हैं। आपको मुहम्मद साहब से वरास्तन आन्तरिक ज्ञान तथा अध्यात्म प्राप्त है। साथ ही आप अली की औलाद हैं। अत: अली मुर्तुजा के आन्तरिक ज्ञान के वारिस हैं।

जन्म तथा परिवारिक क्रम

आपकी जन्मभूमि होने की प्रतिष्ठा कस्बा देवा शरीफ़ को है जो ज़िला बाराबंकी, उत्तर प्रदेश का एक ऐतिहासिक उप-नगर है। आपके जन्म तिथि के सम्बन्ध में कुछ मतभेद भी है, किन्तु **मिश्काते हक्कानिया** के लेखक फ़जल हुसेन साहब के अनुसार १२३४ हिजरी, सन् ईसवी के मुताबिक १८१९ ई० है। आप इमाम हसन महोदय के छब्बीसवीं पुश्त में भूतल पर पधारे हैं। आपकी वंशावली निम्न है:-

सैय्यद वारिस अली शाह आत्मज कुर्बान अलीशाह आत्मज सलामत अली आत्मज करमुल्लाह, आत्मज जैनुल आबदीन आत्मज सैय्यद उमर शाह आत्मज अब्दुल वाहिद आत्मज सैय्यद अब्दुल आद आत्मज सैय्यद अलाउद्दीन आत्मज अज़ीजुद्दीन आत्मज सैय्यद अशरफ अबी तालिब आत्मज सैय्यद मुहम्मद महरूक आत्मज अबुल कासिम आत्मज सैय्यद अली असकरी आत्मज सैय्यद अबू मुहम्मद आत्मज सैय्यद मुहम्मद जाफर आत्मज सैयद मुहम्मद मेंहदी आत्मज सैय्यद अली रज़ा आत्मज सैय्यद कासिम हेमज़ा आत्मज सैय्यद मूसा काज़िम आत्मज सैय्यद

Scanned with CamScanner

इमाम जाफर आत्मज इमाम बाकर आत्मज इमाम जैनुल आबदीन आत्मज इमाम हुसेन आत्मज हज़रत अली शेरे खुदा पति० सैय्यद फात्मा पुत्री मुहम्मद मुस्तुफा (सल्ल०) साहब।

फरोग शहजहांपुरी द्वारा

अवलाद है यह खास शहे मश्रकैन की।
छब्बीसवीं है पुश्त जनाबे हुसैन की ॥
पुतली यही है फातमा के नूरे ऐन की।
मोहरे नर्गी हैं फातहे बदरो हुनैन की ॥
यह जौहरो खुलासा है दोनों जहान की।
बन्दा नजर पड़ा है खुदाई की शान की ॥
है तूही वारिसे अली व वारिसे नबी।
दिल है तेरा खजीनएं इसरार मानवी॥
तेरे बदन पै ठीक क़बा फ़क्र की हुई।
आदत की इब्तदा ही से तर्के लबास की ॥
दस्तार व पाएजामा न जेबे बदन किया।
एहराम को पसन्द पये सतरे तन किया॥
लड़का यही है शाहे शहीदाँ का बा खलफ।
पुर नूर सिल्के शाहे नजफ का दुरे नजफ॥
दुर्जे रसूल का है यही गौहरे सदफ।
अल्लाह ने दिया है हर एक बात का शरफ॥
सैय्यद भी हैं फकीर भी हैं और वली भी हैं।
हर तरह जानशीने नबी व अली भी हैं॥
कौम ऐसी लाज्वाब कि दुनिया में आफताब ।
दुनिया में आफताब तो उकबा में माहताब॥
उकबा में माहताब तो कौसर पे जोशेआब।
कौसर पै जोशे आब से फिर सा कीये शराब॥
साकी शराबे कौसर तसनीम का है यह।
वारिस अली अहमदे बे मीम का है यह॥

ख़ानदानी महत्व

सैय्यद ख़ानदान का एक विशेष सम्मान

यह भी है कि हुज़ूर के महान पूर्वजगण ने कभी दूसरे ख़ानदान में ब्याह-शादियां नहीं की हैं। और नेशापूरी सैय्यदवंश के मान-सम्मान को सुरक्षित रखा है।

आपके परदादा सैय्यद करमुल्लाह साहब के तीन पुत्र सैय्यद बशारत अली साहब, सैय्यद सलामत अली साहब और सैय्यद शेर अली साहब थे। आपके पिता क़ुरबान अली साहब का विवाह उनके चाचा शेर अली की पुत्री से हुआ था। इस प्रकार आप दोनों पक्षों से हुसैनी होने का विशेष सम्मान प्राप्त करते हैं।

अवध के महान लोगों, शरीफ़ों में आपके ख़ानदान को विशेष स्थान और सम्मान प्राप्त था। आपके पूर्वज वाह्य ज्ञान तथा आन्तरिक ज्ञान में निपुण होने के कारण विशेष सम्मानित रहे। आपके ख़ानदान के श्रेष्ट पूर्वज मख़दूम अलाउद्दीन आला बुजुर्ग नसीरूद्दीन चिराग़ देहलवी के ख़लीफ़ा थे। और शिक्षा में अबुल बरकात व शेख़ यहिया के शिष्य थे। आपके पूर्वज हर ज़माने में नेक, पवित्र और सम्मानित रहे। अच्छे सन्त और फ़कीर सदैव ही आपके ख़ानदान में होते रहे हैं और साधारण जनता उन फ़क़ीरों के यश से लाभान्वित होती रही है।

भारत वर्ष में सर्वप्रथम आपके पूर्वज ने रसूलपुर कन्तूर में निवास किया है। यहीं से एक बुज़ुर्ग अब्दुल अहद साहब ने देवा की भूमि को पवित्र किया। यहाँ देवा में आपकी ५ पुशतें बीती और सरकार वारिस पाक ने जन्म लेकर अपने कमलवत चरणों से इस भूमि को गौरवमयी और पवित्र कर दिया। आज भारत तथा संसार में ये कस्बा देवा शरीफ के नाम से पुकारा जाता है। सहस्त्रों लोग दर्शनार्थ संसार के कोने-कोने से पधारते हैं।

दूध पीने का ज़माना

हुज़ूर वारिस पाक की पैदाइश रमज़ान के महीने में हुई। आपने दिन में कभी दूध नहीं पिया। यह चर्चा औरतों में फैल गई और चारों ओर घरों में स्त्रियां इस बात से अचम्भित थीं, देखा गया कि आपने दिन में रोज़े रखे और रात्रि में दूध ग्रहण किया। यहाँ तक कि आपने मोहर्रम की दसवीं तारीख़ को कभी दूध नहीं ग्रहण किया। यह सब कुछ होते हुए भी आप अपने समकालीन शिशुओं से अधिक स्वस्थ थे। शारीरिक बढ़ाव तेज़ी पर था। अन्य बच्चों से दुगने मोटे ताज़े दिखाई पड़ते थे। आपका पवित्र सिर सदैव अन्य बच्चों से ऊँचा दिख पड़ता था। आपका

Scanned with CamScanner

सम्मान आपकी माता द्वारा भी अधिक था। माताजी बिना वज़ू (हाथ पाँव धोये) कभी आपको दूध नहीं पिलाती थीं। यहाँ तक कि कभी आप की ओर पीठ करके न खड़ी होती न बैठती थीं।

माता-पिता का स्वर्गवास

विश्वसनीय लोगों का कहना है कि जब सरकार वारिस पाक की उम्र अभी तीन वर्ष भी पूरी नहीं हुई थी कि आपके पिता मान्यवर क़ुरबान अली शाह साहब का स्वर्गवास हो गया और कुछ ही दिनों पश्चात आपकी माता जी भी परलोक सिधार गयीं।

यह यतीमी अर्थात माता पिता का न रहना जनाब रसूले ख़ुदा मुहम्मद साहब से आपको वरासतन मिली है।

इसके बाद आपकी दादी साहिबा आपका पालन पोषण करने लगीं आपके आदरणीय चचा जनाब सैय्यद मोकर्रम अली साहब, आपके वैद्यानिक वली थे। अपनी अवलाद से अधिक आपकी देखभाल करते थे। कभी सरकार वारिस पाक इन घटनाओं को आंशिक रूप में या सीख के अवसर पर ब्यान करते थे आपका कथन है कि जब मैं दो वर्ष का था या इससे कुछ अधिक, मेरे माता पिता का स्वर्गवास हो गया किन्तु ख़ुदा अपने बन्दों का रक्षक और निगाहबान होता है तथा वह इतना मेहरबान, दयालू है जितना कि माता-पिता भी नहीं। ईश्वर बिना माँ-बाप के बच्चों का पालन पोषण स्वयं करता है। अत: ख़ुदा पर ही भरोसा करना चाहिये।

शिक्षा तथा पठन-पाठन

हुज़ूर वारिस पाक जब ५ वर्ष की आयु को पहुंचे तो रस्म, रिवाज के अनुसार बिस्मिल्लाह के बाद आप मकतब में बिठाये गये। आपकी तीव्र और विलक्षण बुद्धि तथा प्रतिभा को देखकर गुरूजन अचम्भित हो जाते थे। सभी छात्र तथा अध्यापक आपका सम्मान और आदर करते थे। घर से मकतब तक आप कुरआन शरीफ सिर पर रख कर जाते। फिर उसी भाँति सिर पर रखकर घर लौटते थे। आपकी तीव्र बुद्धि तथा स्मरणशक्ति की यह दशा थी कि आप ने दो वर्ष में ही क़ुरआन स्मरण और कंठस्थ कर लिया। उस समय आप केवल सात वर्ष के थे। आप की पढ़ाई लिखाई केवल मकतब तक सीमित रही। घर पर कभी किताब नहीं पढ़ते वरन् किसी फ़िक्र या विचार में विभोर हो जाते थे और यूँही चिन्तन-मनन में डूबे रहते थे। यही वह समय था जब कि आपकी दादी साहिबा की छाया भी सिर से उठ गई। इसके पश्चात् हाजी ख़ादिम अली शाह साहब आपको लखनऊ ले

गये और वहाँ फिर एक मौलवी साहब के यहाँ पढ़ने के लिए कर दिया गया। यहाँ भी आपकी प्रखर बुद्धि की यह दशा थी कि मौलवी साहब जब एक दो शब्द बतलाते तो आप पूरा पृष्ठ ही सुना देते।

मौलवी रौनक अली साहब निवासी पैंते पुर जिला-सीतापुर लिखते हैं कि मेरे नाना हकीम रहमत अली फ़िरंगी महल में आपके मकतब के साथी थे, उनका कहना है कि बालावस्था में ही प्रकाशपुंज वारिस पाक से ऐसी विलक्षण और अद्भुत बातें प्रकट होती रहती थीं कि सभी लोग अचम्भे में पड़ जाते थे। एक दिन मकतब के मौलवी साहब ने हज़रत ख़ादिम अली शाह से कहा कि हज़रत आपने एक शेर मेरे हवाले कर दिया है। इनसे विचित्र और अद्भुत कारनामें इतनी कम उम्र में प्रकट होते हैं जो बड़े सिद्ध-सन्तों और महात्माओं में भी नहीं देखे जाते हैं। साहबज़ादे पढ़े-पढ़ाये जन्म लिये हैं। मेरी राय में इनको अधिक शिक्षा देने की आवश्यकता नहीं है।

हज़रत ख़ादिम अली शाह महान ऋषि थे और साथ ही शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब देहलवी से हदीस और फिका की शिक्षा पाये थे। कुछ ही समय तक सरकार को अपने पास रखा। शेख हुसेन अली साहब जो सादा मऊ जिला बाराबंकी के नवाब थे उनका कहना है कि एक बार आपके उस्ताद मौलवी इमाम अली साहब उर्फ शाह अब्दुल मुनइम शाह देवा शरीफ़ में आये तो वारिस पाक खुद उनसे मिलने गए, मौलवी साहब आपको देखकर खड़े हो गये। सरकार ने कहा मौलवी साहब आप हमारे उस्ताद, पिता तुल्य हैं। मौलवी साहब ने कहा उस समय हम जो थे सो थे, अब आप ही हमारे पिता की जगह पर है। हमें वह समय याद है जब आपने एक बार मुझे घूर कर देखा तो मुझे तीन दिन बुखार रहा जब हमने ख़ादिम अलीशाह महोदय से कहा कि शाहबज़ादा तो पैदाईशी वली है तो शाह साहब ने कहा आपको चाहिए कि उनको प्यार और स्नेह से शिक्षा दें। फिर जब मैं साहबज़ादा से पाठ सुनाने को कहता आप हमारे सामने पुस्तक रख देते और पूरा पाठ सुना देते थे जिसमें कोई ग़लती नहीं होती। सारांश यह है कि आप बहुत ही अल्पकाल में तमाम पाठ्य पुस्तकों के अच्छे ज्ञाता हो गए।

आपका ज्ञान ईश्वरीय देन है। बड़े से बड़ा ज्ञानी अथवा पण्डित जो भी आपके सामने आया सबने आपकी योग्यता और स्मरणशक्ति को स्वीकार किया और आपकी महान योग्यता के समक्ष नतमस्तक हुआ। अधिकांश देखा गया कि पाठ लेने के पश्चात् आप जंगल-मैदान की ओर चले जाते थे और पूरा समय

Scanned with CamScanner

एकान्त में व्यतीत हो जाता था। जब आपकी उम्र दस वर्ष के लगभग हुई तब आपके स्वतन्त्र मन और मस्तिष्क ने इसको भी स्वीकार नहीं किया और आप सम्पूर्ण सम्बन्धों को तोड़कर तन-मन से भगवान की याद में संलग्न हो गए।

बचपन के कुछ हालात

सरकार वारिस पाक के बचपन का समय बहुत ही शान शौकत से गुज़रा है। सभी लोग पुरुष, महिला, युवा, वृद्धा आपका सम्मान करते थे। जो दशा बचपन में आपकी देखी गयी है वह निम्न है-अधिकतर आपकी आँखें लाल रहा करती थीं तथा आँसू से भरी होती थीं। जिन्हें लोग देखकर आँख आने का गुमान करते थे किन्तु आँख आने का कोई प्रभाव आपकी पवित्र आँखों में नहीं होता था। दस-ग्यारह वर्ष की अवस्था तक आपके मुख से लार टपका करती थी जिससे आपका दामन भीगा रहता था। आप इश्क और आशिकी की कथा-कहानी सुनने में बड़ी रूचि रखते थे। बहुधा देखा गया है कि आप दो चार दिन तक घर से लापता हो जाते थे, यहाँ तक कि कोठरी में बन्द कर देने पर भी आप कोठरी से गायब थे। तलाश करने पर आप एक बाग़ में मिले। आप गज़लें सुन्दर स्वर में पढ़ लेते थे और पढ़ते-पढ़ते बेहोश हो जाते थे।

मुंशी नादिर हुसेन साहब जो वारसी दरबार के पुराने होने का सम्मान रखते हैं, कहते है कि मौलवी अज़ीज़ुद्दीन साहब जो देवा शरीफ़ के तालुकदार थे ब्यान करते थे कि एक बार हम और मिट्ठन मियां (हुज़ूर का बचपन का नाम) बाग़ की सैर कर रहे थे। हमने कहा मिट्ठन मियां कोई गज़ल पढ़िए आप गज़ल पढ़ते ही चीख़ मारकर गिर पड़े। मुँह से झाग आने लगा। हम ऐसा देख कर बहुत भयभीत हुए और मारे डर के घर भागे। जब दूसरे दिन प्रातः भेंट हुई तो हमारी जान में जान आयी।

इसी बाल्यावस्था की बात है:- देवा शरीफ़ में शाह अब्दुल मुनईम महोदय के मज़ार पर एक फ़कीर बैठे आँखे बन्द किए ध्यान में थे। जब फ़कीर ने अपना ध्यान तोड़ा तो आपने कहा कि शाह साहब क्या कर रहे थे? फ़कीर ने कहा कि मैं अपने गुरू का ध्यान कर रहा था। आपने कहा जब तुमने अपनी आंखे बन्द कर ली थी तो फिर क्या देखते? क्या तुमने नहीं सुना है-"मन काना फी हाजेही आमा फ होवा फिल आखिरते आमा (जो यहाँ अन्धा है वह आखिरत में भी अन्धा रहेगा)। यदि खोज सत्य है और शौक परिपूर्ण है तो कण-कण में परमात्मा का दर्शन हो सकता है।

बचपन में आपकों तैराकी का बड़ा शौक था और बड़ी उम्र तक आप तालाब

में डुबकी लागाकर बहुत देर तक तैरते रहते थे। बचपन में ही आप की जप-तप की बातें लोगों की जबान पर आ गयी थीं। आप अब्दुल मुनईम शाह के मज़ार पर जाते और सारी रात ख़ुदा के स्मरण और याद में लगे रहते थे। यदि किसी के लिए कुछ कह देते तो वही होता था। इस भांति सभी लोग आपके यश से प्रभावित थे और सभी आपकी इज्जत करते थे। आप खेल-कूद से घृणा करते थे। आपका खेल था रूपये-पैसे घर से लेकर बच्चों में बांटना और कभी-कभी लोकई हलुवाई से एक रुपये का एक बताशा बड़ा सा बनवाकर तोड़-तोड़कर बच्चों को बांटना। आप स्वयं कहा करते थे कि हमारी दादी के पास अशरफियां बहुत थीं, हम उनमें से निकाल लाते थे और एक-एक अशर्फी देखकर लोकई से एक बड़ा सा बताशा बनवाकर बच्चों को बांट देते थे। देखने में यह कथा एक साधारण सी बात है किन्तु यह बहुत सी असाधारण खूबियों से भरी है। प्रथम यह कि हुज़ूर एक दीन हलुवाई की पर्दे की ओट से पोषण करते थे। बच्चों पर निःस्वार्थ दया और सहानुभूति का अद्वितीय मिसाल है। बालावस्था से ही आपको धन, सम्पत्ति, माल और असबाब से कोई लगाव नहीं, बल्कि घृणा थी। आप भोले पन से कहते थे कि न्याय की शर्त यही है कि सोने-चांदी के बराबर मिठाई खरीदी जाय। विशेष अवस्था में कहते थे माल और चांदी-सोना फ़कीरों को नहीं चाहिए। इसकी सत्यता इस प्रकार देखी गई कि दादी साहिबा की मृत्यु के पश्चात् चालिस दिन के भीतर ही आपने अपना सारा धन और सम्पत्ति जो कुछ भी थी, सब दीन-दुखियों को दान कर दिया।

हज़रत वारिस पाक से सम्बन्धित भविष्यवाणियां

लखनऊ में एक सन्त या बुज़ुर्ग रहते थे जिनका नाम अकबर शाह साहब था। उनके यश से लोग प्रभावित थे। सदैव लोग उनके पास एकत्रित रहते थे। लोग उनको इस समय का 'कुतुब' कहते थे। एक दिन की बात है कि हज़रत ख़ादिम अली शाह महोदय आपको साथ लेकर हज़रत अकबर शाह से मिलने गये शाह साहब ने आपको देखते ही गोदी में बड़ी प्रसन्नता से बिठा लिया और भविष्यवाणी की 'साहबजादे अपने समय में अद्वितीय होंगे' इस भविष्यवाणी को मौलवी ख़ुदा बख्श साहब शायक ने पुस्तक 'तोहफ़तुल असफ़िया' में लिखा है, जिसके परसियन इबारत का अनुवाद निम्नलिखित है :-

एक दिन हुज़ूर सैय्यद वारिस अली शाह साहब हज़रत अकबर शाह साहब का दर्शन करने गए। अकबर शाह पश्चिमी इलाके के शहर लखनऊ में चौक स्थिति

Scanned with CamScanner

मसजिद बसातिया में रहते थे। उनकी ख्याति चारों ओर फैली हुई थी। लोगों की भीड़ उनके दर्शनार्थ एकत्र होती थी। लोग अकबर शाह के सम्बन्ध में कहते थे कि 'कुतुब' हैं। उन्होंने हज़रत वारिस पाक को अपनी गोद में खींच लिया और उनके रूप को देखते ही ख़ादिम अली शाह से कहने लगे कि इस बालक जैसा सौभाग्यशाली कोई भी हजारों वर्षों तक इस मुल्क में जन्म नहीं लेगा। यह बालक रूप में देवता हैं और इस मिट्टी के पुतले में नख से शिख तक प्रकाश ही प्रकाश भरा है। इनकी ख्याति का डंका चारों ओर संसार में बजेगा। संपूर्ण मानव तथा जिन्न इसकी बन्दगी और वन्दना करेंगे। आप इस बालक की शिक्षा पूरी तरह हिम्मत से करेंगे। अत: इसके बाद सैय्यदना हज़रत ख़ादिम अली शाह ने आपकी ओर विशेष ध्यान देना आरम्भ कर दिया।

जनाब रहीम शाह साहब का कहना है कि हम ने मौलाना शाह अब्दुर्रहमान साहब मोहिद, सूफी लखनवी के खास आदमी से सुना है कि उक्त सूफी कहा करते थे। इस समय देवा में एक साहबजादा हैं जिनकी ओर सदैव लोगों की भीड़ जमा होती रहेगी और उनके यश का सूर्य पूरब से पश्चिम तक चमकता रहेगा।

मौलाना शाह अब्दुर्रज्जाक साहब बांसवी से लिखित है- मेरी पांचवीं पुश्त में एक सूर्य उदय होगा जिसका प्रकाश मैं देखता हूँ। वास्तव में वही हुआ। पांचवी पुश्त में सरकार वारिस पाक प्रकट हुए जो इस भविष्यवाणी को सार्थक करते हैं।

इसी तरह शाह नजातुल्लाह साहब जो ख़ादिम अली शाह के धर्मगुरू थे। सीना खोलकर तथा देवा शरीफ की ओर मुंह करके कहते थे। उस सूर्य की रोशनी अपने सीने में भर रहा हूँ जो अब उदय होना चाहता हैं। सारांश यह कि देवा कि भूमि पर वारिस रूपी सूर्य का उदय हुआ जिसकी किरणें भिन्न-भिन्न धर्मों के अनुयाइयों तथा हम सभी लोगों के हृदय को प्रकाशित करती है। साथ ही देवा को वह सम्मान मिला जिससे सभी इश्क अथवा अनुराग वाले माथा टेकते हैं।

शिष्यता या प्रतिनिधित्व

हुज़ूर वारिस पाक जन्मजात ऋषि थे और इनके जन्म से ही विशेष और अद्भुत क़ार्य देखे जाने लगे। अत: लोग आपको सिद्ध और ईश्वर के प्रेम में लीन देखने तथा समझने लगे। मान्यवर हज़रत ख़ादिम अली शाह ने आपको केवल ग्यारह वर्ष की उम्र में गुरुमुख करके अपनी प्रतिनिधित्व से सुशोभित किया। कुछ लोगों ने इस कार्य पर तर्क-वितर्क भी किया किन्तु आपने इसकी कोई परवाह नहीं

किया। मान्यवर ख़ादिम अली शाह कहते थे कि आप मुरीद नहीं है मुराद हैं। हाजी वारिस पाक उनके निसबती छोटे भाई थे फिर भी वह इनकी बड़ी इज़्ज़त करते थे।

सज्जादा नशीनी

हज़रत ख़ादिम अली शाह की शिक्षा-दीक्षा में अभी वारिस पाक को थोड़ा समय व्यतीत हुआ था कि अचानक हज़रत ख़ादिम अली शाह की तबीयत ख़राब हो गई और वृद्धापन के कारण और ख़राब होती गई। अंतत: मृत्यु में परिवर्तित हो गई और एक दिन आपने उपस्थित चेलों और सेवकों को शान्ति तथा संतोष दिया तत्पश्चात् कलम-ए-शहादत उच्च स्वर से पढ़ा और कलमा पढ़ते-पढ़ते आपकी आत्मा ने इस नश्वर शरीर को त्याग दिया। पर्दा करने की तिथि १३ या १४ सफ़र बतायी जाती है। कफ़न-दफ़न के बाद तीसरे दिन फ़ातेहा ख़ानी की रस्म अदा की गई। इस अवसर पर तमाम छोटे- बड़े तथा सम्मानित व्यक्ति एकत्र थे। उसी सभा में जॉनशीनी (उत्तराधिकारी) के लिए बात चली। मौलवी मुन्ना जान जो आपके लंगरखाने के प्रबन्धक और व्यवस्थापक थे एक सुन्दर क़िस्ती (गोल सा बर्तन) में एक पगड़ी रखकर सभी उपस्थितगण के सामने प्रस्तुत किया और कहा जिसको योग्य समझा जाय उसे यह पगड़ी सौंप दी जाय। चूंकि मुन्ना जान साहब को इस पद की चाह थी। अत: विवाद खड़ा हो गया। अंतत: यह स्थान किसको दिया जाय और कौन इसके लायक है? इसी बीच सआदत अली जो हज़रत गौस ग्वालियारी के पोते हैं उठे और वारिस पाक का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा मेरे विचार में इनसे उत्तम कोई नहीं है। तुरन्त ही लोगों ने एक स्वर से समर्थन किया और वह वस्त्र सरकार वारिस के शरीर पर सुसज्जित किया गया।

सत्य साधकों का शिष्य होना

हुज़ूर प्रकाश पुंज वारिस पाक की ख़िलाफ़त और उत्तराधिकारी होने की ख़बर साधारण जनता को हो चुकी थी। अत: एक बहुत बड़ी भीड़ ने बैय्यत किया।

मौलवी रौनक़ अली साहब पैंतेपुरी का कहना है कि मेरे ख़ानदान के लोग हज़रत शाह अब्दुर्रज़्ज़ाक बाँसवी की भविष्यवाणी अनुसार हुज़ूर वारिस पाक से मुरीद हुए। मिर्ज़ा मुहम्मद इब्राहीम बेग शैदा के पिता हुज़ूर जब चौदह वर्ष के थे तभी आपके शिष्य हुए थे। मौलवी फरखन्द अली निवासी कस्बा चौरासी, जिला-लखनऊ के दादा शेख़ उम्मीद अली चौदह वर्ष की उम्र में शिष्य हुए थे। चौधरी

Scanned with CamScanner

ख़ुदा बख्श साहब वारसी निवासी इटावा (आगरा) कहते हैं कि मेरे पिता जब शिष्य हुए तो हुज़ूर की आयु चौदह वर्ष थी।

हाफ़िज गुलाब शाह वारसी अकबराबादी जो अपने काल के संत और सूफ़ी प्रसिद्ध थे, अपनी शिष्यता की घटना स्वयं बतलाते थे जो निम्नलिखित है :-

जब मैं मकतब में पढ़ता था उस समय मेरा एक सहपाठी किसी बुज़ुर्ग का शिष्य हो आया। उसने मुझसे भी अनुरोध किया कि तुम भी शिष्य हो जाओ। किन्तु मेरे मन में रह-रहकर ये भावना उठती थी कि क्या मुरीद होना अनिवार्य है? मुरीद होना चाहिये या नहीं होना चाहिये। उसी रात को मैंने एक सफेद दाढ़ी वाले बुज़ुर्ग को यह कहते देखा कि मियां साहबज़ादे यदि तुम्हारी इच्छा बैय्यत की है तो पूरब से एक बुज़ुर्ग आते हैं उनसे हो लेना। स्वप्न के पश्चात् मेरी बेचैनी बढ़ गयी और तीन वर्ष प्रतीक्षा में व्यतीत हो गये। जब-जब मेरा मन विह्वल हो उठता था वही सूरत सपने में तसल्ली दे जाती थी। तीन वर्ष बाद एक दिन वही सूरत स्वप्न में आयी और कहा कि उठो जाओ और ख़ोज लो वह बुज़ुर्ग पूरब से आकर एक सराय में ठहरे हुए हैं। रात के दो बजे थे हड़बड़ा कर उठा हाथ मुंह धोया और एक ओर जिधर मन ने स्वीकार किया चल पड़े। पहरेदारों ने रोकना चाहा मगर मैंने किसी की न सुनी। अपने हृदय के पथ-प्रदर्शन पर चलता हुआ मुहल्ला हींग की मण्डी के एक सराय के दरवाज़े पर पहुंचा। पूरब से आने वाले बुज़ुर्ग के सम्बन्ध में द्वारपाल से पूछा तो उसने द्वार खोल दिया। भीतर जाकर मैंने कमरों को झांकना आरम्भ किया। अंधेरे के कारण कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा था तभी आपने आवाज़ दी 'हाफिज़ गुलाब तुम आ गये।' व्याकुलता से दौड़ते हुए पैरों पर गिर पड़ा। देखा आप मुस्कुरा रहे थे। मैंने घर चलने का आग्रह किया। आपने स्वीकृति दी। मेरी उम्र १९ वर्ष और हुज़ूर वारिस पाक की उम्र लगभग १३ वर्ष चार माह थी। सारांश ये कि हुज़ूर की १३, १४ वर्ष की आयु में अध्यात्म और आंतरिक ज्ञान प्रत्यक्ष रुप में परिलक्षित हो रहे थे। अनगिनत लोगों ने आपका शिष्य होकर लाभ उठाया।

हाफ़िज़ गुलाब शाह कहते हैं कि आपको पतंग उड़ाने का शौक था। आपने इसके लिए एक नया ढंग निकाला। रात में पतंग ओर डोर मंगवाते थे। लगभग आधा सेर डोर छोड़ देते थे। पतंग तीव्र गति से उड़ती चली जाती थी। उसकी उड़ान इतनी तेज़ होती थी कि डोर सम्हालना कठिन होता था।

मुंशी अब्दुल ग़नी खाँ वारसी रईसपुर लिखते हैं कि मेरी उम्र १६ वर्ष थी। मैंने

एक व्यक्ति से सुना कि देवा शरीफ, जिला- बाराबंकी के एक राजकुमार हैं जिनके माता-पिता की मृत्यु हो चुकी है। घर में ईश्वर का दिया हुआ सम्पूर्ण धन-सम्पत्ति, माल-असबाब सब कुछ है किन्तु वह सबको त्याग कर फ़कीर हो गये हैं। आयु लगभग १३ वर्ष है। हज का शौक है। नाम पूछने पर हुज़ूर प्रकाश पुंज का पुनीत नाम बताया। मेरी आंखों से आंसू बहने लगे। मन में हुज़ूर का ख्याल करता था।

मुंशी अब्दुल ग़नी खाँ वारसी की शिष्यता हुज़ूर की युवावस्था में हुई उस समय आप छूरी और कटार मंगवाते और हाथ में लेकर अपनी अंगुलियों से उसकी धार का निरीक्षण करते। उसके लहू (ख़ून) की बड़ाई और बखान करते थे।

भ्रमण के संक्षिप्त समाचार

पन्द्रह वर्ष की उम्र में हुज़ूर पाक ने हज का इरादा किया। लोगों ने अल्पायु का ध्यान रखकर हुज़ूर को रास्ते की कठिनाईयों तथा यात्रा के कष्टों का स्मरण कराया किन्तु आपके उच्च विचार सुदृढ़ साहस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। क्योंकि आपका ईश्वर-प्रेम और उस पर आस्था प्रबल और बलिष्ट थी। सर्वप्रथम आप हज़रत ख़ादिम अली शाह के मज़ार पर पहुँचकर फ़ातिहा पढ़ा और उपस्थित लोगों से मिलकर सबको सन्तोष दिलाते हुए यात्रा आरम्भ कर दिया। रास्ते में समयानुसार रुकते-रुकाते आप अजमेर पहुँचे। यह समय चूंकि ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के 'उर्स' का था। अतः आप मज़ार शरीफ़ पर पहुँचकर तवाफ़ (पंच भवरा) किए तथा कौव्वाली की मजलिस में सम्मिलित हुए। आपकी उपस्थिति से पूरी महफ़िल में एक विशेष दशा उत्पन्न हो गई। जब लोग अपनी पूर्व अवस्था पर आ गये तो सबने उठकर आपको घेर लिया और चरण चूमने लगे। बहुत से व्यक्ति आपके शिष्य हुए और पूरे अजमेर में लोगों की जुबान पर आप ही की चर्चा रही।

अजमेर शरीफ़ से आप नागौर पहुंचे, वहाँ मौलवी हुसैन साहब के मकान पर मेहमान रहे। हुसेन बख्श साहब ने आपके हाथ पर बैय्यत लिया। आपने हुसेन बख्श साहब को बैय्यत लेने की आज्ञा भी दी। फिर आप शहर पीराने पट्टन, अहमदाबाद और भक्कर होते हुए बम्बई पहुँचे। लगभग दो सप्ताह यहाँ रुके। वहाँ विख्यात व्यापारी सेठ यांकूब अली खाँ तथा यूसुफ़ ज़करिया इत्यादि ने एक गिरोह के साथ आपके हाथ अपने हाथों में ग्रहण कर शिष्य हुए। इसके बाद आप जहाज़ में सवार हुए और निचली श्रेणी में अपनी आसनी जमाई। उस समय आपकी यह दशा थी कि आप तीसरे दिन भोजन ग्रहण करते थे सो भी बहुत थोड़ा सा। आप

Scanned with CamScanner

भगवान आश्रित थे अपने साथ कुछ खाने पीने की सामग्री भी नहीं रखते थे। बिना खाए पिए आप को सात दिन बीत गए। अचानक यह चलता हुआ जहाज़ रुक गया। जहाज में एक धर्मात्मा व्यापारी मुहम्मद ज्याउद्दीन साहब को स्वप्न में सरकारे मदीना रसूले ख़ुदा का दर्शन हुआ, और आपने निर्देश किया कि स्वयं खाते हो और पड़ोसी का ख्याल नहीं रखते। उक्त ताजिर बहुत दानी थे। उन्होंने सोचा हो सकता है कि खोजने में सफलता न मिले। इसलिये पूरे जहाज़ के यात्रियों की दावत कर दी। भाँति-भाँति का भोजन तैयार कराया, जब सब लोग खा-पी चुके तो व्यापारी महोदय ने स्वयं जहाज की हर श्रेणी में खोजना आरम्भ किया। जहाज़ की निचली श्रेणी में पहुँचकर आपको एक कोने में बैठा हुआ पाया। दौड़ कर कदमों में गिर पड़े और वहीं भोजन मंगवा कर प्रस्तुत किया। आपने दो-चार लुकमा लिया। जब व्यापारी ज्याउद्दीन साहब अपने स्थान पर आये, जहाज़ अपने आप चलने लगा। उस दिन से जहाज में जब तक आप रहे खाना तैयार होने पर सर्वप्रथम आपके सामने जाता। हुज़ूर वारिस पाक उस समय तीसरे दिन भोजन ग्रहण करते। आपकी यात्राओं का हाल पूरा-पूरा बिल्कुल नहीं मालूम हो सका। आपकी जीवनी लिखने वालों ने भी दो चार बातों के अतिरिक्त कुछ लिख नहीं पाये हैं, क्योंकि सरकार वारिस पाक के जीवन का अधिकांश भाग भ्रमण और यात्रा में व्यतीत हुआ। किन्तु जो कुछ भी लिखा गया है वह या तो आंखों देखा है या पुराने बुजुर्गों की कही हुई बातें हैं। कभी भी सरकार ने अपने चाहने वालों को सफर की बातें बताई नहीं हैं और यदि कभी कुछ समयानुसार कहा भी है तो बहुत ही कम शब्दों में। मौलवी रौनक़ अली साहब वारसी रज्जाकी पैंतेपुरी जिनको दरबार वारसी में गौरव प्राप्त है। लिखते हैं कि मैंने अपने पिता की डायरी में देखा है और दूसरे आदरणीय बुजुर्गों से सुना है कि सरकार वारिस पाक ने सत्तरह हज किये हैं और लगातार बारह वर्ष की यात्रा में अरब, ईरान, हज्जाज, ईराक, मिस्र और शाम देशों में भ्रमण करते रहे। इसमें दस बार हज किये हैं। वहाँ की वापसी के बाद सात बार भारत से हज करने गये हैं। जिसमें तीन स्थल मार्गों से काबुल होकर और दो बार इंजन से चलने वाले तथा दो बार पालवाले जहाज़ से। ये यात्रायें भिन्न-भिन्न स्थानों, कभी अजमेर, कभी मुलतान से एक हज देवा शरीफ़ से प्रस्थानित किये।

आपने अपने सफर में तमाम पवित्र स्थानों का दर्शन किया है। सहस्त्रों आप से गुरूमुख हुए हैं। इसी सफर में जब आप कुस्तुनतुनिया पधारे हैं तब तुर्की के सुल्तान स्वर्गीय अब्दुल मजीद खाँ आप से मुरीद हुए हैं। इनके मुरीद होने की घटना इस प्रकार

है कि एक दिन हुज़ूर जब अब्दुल्लाह के मकान पर रूके हुए थे तो अब्दुल्लाह ने आप से कहा कि यदि हुज़ूर सुल्तानी बाग़ की सैर को चलें तो कुछ आपका मन बहलाव हो जाये। अब्दुल्लाह की प्रार्थना पर हुज़ूर सैर के लिये तैयार हो गये। जिस समय हुज़ूर बाग़ में थे संयोग से उसी समय सुल्तान ने भी पदार्पण किया और सरकार वारिस पाक को देखते ही अत्यंत प्रभावित हुए। एक सप्ताह तक हुज़ूर की सेवा-सत्कार में लगे रहे। ख़ुद भी हुज़ूर के हाथ पर बैय्यत लिये और साथ ही बहुत से तुर्क भी गुरूमुख हुए। मौलवी हुसेन अली साहब वारसी लिखते हैं कि हमने ख़ुद सरकार वारिस पाक से ये बात सुनी है। जिससे मालूम होता है कि सुल्तान को सरकारे मदीना ने ख्वाब में हुज़ूर की सूरत दिखाया था। अतः सुल्तान ने देखते ही सरकार को पहचान लिया था। बातचीत के दौरान हुज़ूर ने कहा था कि हमने सुल्तान के महल से एक डोर लटका दी थी उसी को एक साथ बहुत से तुर्क पकड़ लेते थे और बैय्यत हो जाते थे। आपने रूस, जर्मन तथा फ्रांस इत्यादि देशों की भी यात्रा की है। यह कहना अनुचित होगा कि हुज़ूर ने उस जमाने में जितनी यात्रायें की हैं किसी बुजुर्ग की उतनी सुनने में नहीं आई है। अधिकांश यात्रियों तथा भ्रमणकारियों से वर्णित है कि उन्होंने आपके फ़कीरों अथवा संतों को जंगल-पहाड़ियों बियाबानों और अन्य देशों में देखा है जो घोर तपस्या में लगे हुए हैं।

अमानत सौंपना

पुस्तक 'तोहफतुल असफिया' के रचयिता तथा अन्य बुजुर्गों से वर्णित है कि जब प्रथम बार मक्का गये तो एक मस्त फकीर से आपकी भेंट हुई जो आपकी प्रतिक्षा में थे। उन्होंने आपको हृदय से लगाया और जो धरोहर उनके पास थी उसे आपको सौंप दिया। इसके बाद आपकी जांघों पर सर रखकर परमात्मा में विलीन हो गये। उनके सम्बन्ध में आप कहते हैं कि उनकी लाश हरे रंग का पक्षी होकर हवा में उड़ गयी और मैं जंगल में फिरता रहा। मौलवी रौनक अली वारसी रज्जाकी पैंतेपुरी लिखते हैं कि एक बुजुर्ग बैतुल्लाह में आपकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वह आप से मिलते ही ख़ुदा को प्यारे हो गये। बुजुर्गों का विचार है कि वह अवैसिया के अमानतदार थे जिसको उन्होंने हुज़ूर को सौंप दी।

तपस्या एवं योग साधना

आप बाल्यवस्था से ही कठोर तपस्या में लगे थे। जवानी का ज़माना आरम्भ होने से पूर्व आप तीन दिन का रोज़ा रखते थे। बहुत दिनों तक रोज़ा (भूख़-व्रत) रखा करते थे। इन रोज़ों में भी आप अल्प-आहार लेते थे, जो वास्तव में नहीं के

Scanned with CamScanner

बराबर होता था।

मौलवी रौनक अली साहब अपने स्वर्गीय दादा मौलवी क़दीर अली की आँखों देखी बात लिखते हैं कि जब हुज़ूर पहली बार पैंतेपुर पधारे तो तीन दिन का रोज़ा रखते थे। तीसरे दिन उबाली हुई अरवी का आधा भाग बिना नमक का ग्रहण करते थे। अब्दुल ग़नी साहब वारसी रईस पुरवा जी एक वयोबृद्ध बुजुर्ग हैं, लिखते हैं कि जब आप देवा शरीफ़ और फ़तेहपुर कुछ दिनों के लिए रहते थे तो देखा गया है कि सातवें दिन आप रोज़ा केवल पांच उबले हुए आलू से खोलते थे। अन्य पुराने बुजुर्गों ने बताया है कि बहुत दिनों तक हुज़ूर को अन्न इत्यादि ख़ाते हुए नहीं देखा गया है। कुछ के मतानुसार पचास वर्ष की आयु तक और कुछ के अनुसार इससे भी अधिक उम्र तक नियमित रूप से रोज़ा रखते थे। आपका पेट रूमाल से कसा रहता था। कभी-कभी पेट पर पत्थर भी बंधा रहता था। बहुत दिनों तक आपने गोश्त, मछली, अंडा, लहसुन और प्याज़ का त्याग कर दिया था। चारपाई और चौकी पर कभी नहीं बैठते थे। सदैव भूमि पर बैठते और लेटते थे। रात अथवा दिन में कभी आप सोते हुए नहीं देखे गये। कभी आराम करते हुए किसी को यह शंका हुई कि आप निद्रा में हैं तो तुरन्त ही आप ने कहा कि कौन है?

किसी को आपके तप-जप की ख़बर नहीं। आप पोशीदगी का इतना ध्यान रखते थे कि किसी को कुछ पता नहीं चलता था कि आप कब कौन सी साधना करते थे। आरम्भ में आप रात भर नफ़िलें अदा करते और क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत (अध्ययन) करने की आदत थी। चालिस वर्ष की उम्र तक रात में न आप आराम करते और न किसी से बात करते थे। सारी रात खड़े-खड़े नफ़िल नमाज़ पढ़ा करते थे।

तसलीम व रज़ा

'तसलीम' शब्द का अर्थ है कि ईश्वर की ओर से दुख:, भूख जो कुछ भी मिले सन्तोष सहित उसको स्वीकार करना और 'रज़ा' शब्द का अर्थ है कि प्रत्येक दुखों-सुखों और कष्ट आराम में प्रसन्न रहना तथा शिकायत का कोई शब्द जुबान पर न लाना। हुज़ूर वारिस पाक की तपस्या में तसलीम व रज़ा का विशेष गौरव तथा महत्व झलकता है। आप सरापा तसलीम व रज़ा के प्रतीक थे। अन्य वरासतों की भाँति ये वरासत भी आपको अपने पूर्वजों से प्राप्त हुई। यह ख़ास वरासत हज़रत इमाम हुसेन अलैहिस्सलाम का है। सरकार वारिस पाक स्वयं अपने मुखार बिन्दु से वर्णन करते हैं 'तसलीम और रज़ा बीबी फ़ातमा और दोनों साहबज़ादों का

हिस्सा है।' यह भी कहा है कि इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा की एक रज़ा के लिए सारे परिवार को कर्बला के मैदान में शहीद करा दिया। कोई इस आशिकी के रहस्य को क्या समझ सकता है? यह बात बहुत ही नाजुक है।

एक साधारण तारीफ़ आपके तसलीम-रज़ा की यह है कि कोई भी व्यक्ति आपके पवित्र मुख से कभी भी कोई शिकायत नहीं सुना है। यहाँ तक की बीमारी में भी न रोग का नाम किसी ने सुना है और न दर्द अथवा कष्ट की बात, न सर्दी की शिकायत, न गर्मी की कमी-बेसी की बात ही जुबान पर आयी है। इससे यह सिद्ध होता है कि आपकी सम्पूर्ण इच्छायें ख़ुदा की ख़ुशी के लिए विलीन हो गयी थीं।

मौलवी नादिर हुसेन साहब लिखते हैं कि मैं आठ बजे हुज़ूर के पैर दबा रहा था। आपने कहा 'नादिर हुसेन इस समय हवा ठंडी चलती है।' मैंने उत्तर दिया 'जी हाँ!' पास ही बैठे तुराब अली शाह ने नम्रता से कहा 'दाता! दिन को ऐसी गर्मी पड़ती है कि सम्पूर्ण धान की फसल भस्म हो गयी है।' यह सुनकर आपने कहा 'तुम क्या जानो माशूक का दिया हुआ कष्ट दुर्लभ होता है।' इसके बाद ही वर्षा हुई और बची हुई फसल बहुत ही अच्छी हुई और रबी की फसल में भी ख़ूब गल्ला पैदा हुआ।

हाजी अवघट शाह कहते हैं कि प्लेग के समय डाक्टर ने घर छोड़ने के लिए अधिक प्रयत्न किया किन्तु आपने घर नहीं छोड़ा। यहाँ तक की अन्तिम बेला में भी जब आप रोग से पूर्णरूपेण ग्रस्त थे, वैद्य, हकीमों के हाल पूछने पर यही उत्तर देते थे कि बहुत अच्छा हूँ। यह सब बातें सिद्ध करती हैं कि आप पूरी तरह जीवन के हर पक्ष से रज़ा-तसलीम के पाबन्द थे। आप कहते थे कि जो तुमसे मोहब्बत करें, उससे तुम मोहब्बत करो, न किसी के लिए दुआ करो न बद्दुआ अर्थात् न आशीर्वाद दो न श्राप। तुम रज़ा- तसलीम के बन्दे रहो। आप रज़ा-तसलीम में इस क़दर डूबे हुए थे कि न दुआ के लिए हाथ उठे न बद्दुआ के लिए। क्योंकि अपने को ईश्वर के हवाले कर देना और जो विधि-विधान हो उसे बिना मीनमेख़ के स्वीकार करना ही बन्दगी की शान है। तसलीम-रज़ा की व्याख्या आपने इस प्रकार की है 'तसलीम-रज़ा जब है कि बुराई को भी भलाई समझ ले। कष्ट, आशिक और माशूक का भेद है।' आप कहा करते थे कि माशूक का तरसाना, पर्दा करना और सख़्ती करना ही उसकी दया और कृपा है। सारांश यह है कि आपकी नज़र में न कष्ट, कष्ट था और न सुख, सुख था। आप तंत्र-मंत्र, झाड़ फूंक को पसन्द नहीं करते थे और प्रत्येक को ख़ुदा के हवाले कर देते थे।

Scanned with CamScanner

एक बार की बात है कि सैय्यद सरफ़ुद्दीन साहब, बैरिस्टर, पटना हुज़ूर के साथ गोरखपुर में मुंशी सफ़दर हुसेन साहब जज के यहाँ ठहरे हुए थे। एक दिन मुंशी साहब अपने बेटों का ख़त जो इंग्लैण्ड से आया हुआ था , लिए हुए हज़रत की सेवा में पहुंचे और प्रार्थना किया कि हुज़ूर हमारे लड़कों का बैरिस्टरी में अन्तिम परीक्षा है। उनकी मंशा यह थी कि हुज़ूर परीक्षा में सफलता के निमित्त दुआ करें किन्तु हुज़ूर बिल्कुल चुप रहे। मुंशी सफदर हुसेन साहब दुखी मन से बाहर आकर सैय्यद सरफ़ुद्दीन साहब से कहने लगे कि हमारे हुज़ूर का दरबार निराला है, न किसी की इच्छा स्वीकार की जाती है और न किसी के लिए दुआ की जाती है। अभी यह शिकायत मिश्रित बात समाप्त भी नहीं हुई थी कि हुज़ूर का सेवक दौड़ा हुआ आया और कहा कि बैरिस्टर साहब और जज महोदय को हुज़ूर ने बुलाया है। हज़रत ने सैय्यद सरफ़ुद्दीन साहब को सम्बोधित करते हुए कहा 'बैरिस्टर सुनो! एक समय मैं बग़दाद में था। एक आदमी ने आकर कहा कि एक औरत पर जिन आता है। आप चल करके उतार दें। मैंने कहा भाई मैं झाड़-फूंक, गण्डा, तावीज़ कुछ भी नहीं करता हूँ। मैं कुछ भी नहीं जानता हूँ। मैं वहां जाकर क्या करूंगा? किन्तु वह न माना और मजबूर होकर मुझे जाना ही पड़ा। उसके मकान पर जहां वह आसेब की मारी स्त्री थी। उस पर उस समय भी जिन चढ़ा हुआ था। मैंने जिन से पूछा तुम इस औरत पर क्यों आते हो? उसने उत्तर दिया कि मैं इस स्त्री का सच्चा आशिक हूँ। मैंने कहा कि क्या यह भी जानते हो कि सच्चा आशिक किसको कहते हैं? देखो, सच्चा आशिक वह है जो माशूक की मर्ज़ी को चाहे और सुई की नोक बराबर भी उसके उल्टा न करे। तुम उस औरत के आशिक बनते हो और उसकी मर्ज़ी के विरूद्ध करते हो। उसकी ख़ुशी इसमें है कि तुम उसके ऊपर न आओ। जिन ने कहा कि अच्छा आज से मैं यहां न आया करूंगा। समझे, बैरिस्टर समझे! अच्छा जाओ।'

संसार से विरक्ति बैराग

तसलीम व रज़ा की तरह संसार को छोड़ने में भी हुज़ूर वारिस पाक बहुत ही ऊँची शान और मर्यादा की अद्वितीय मिसाल हैं। हुज़ूर वारिस पाक ने संसार की प्रत्येक वस्तु का परित्याग जिस दशा में किया उसकी मिसाल भी बहुत कम मिलती है। आपने एक सुख-सम्पदा से भरे-पूरे घर में जन्म लिया तथा सम्पन्न भी थे। सोने चाँदी की कमी भी आपके पास नहीं थी किन्तु होश सम्हालते ही आपने सभी धन-

दौलत और अशर्फ़ियों को कौड़ीयों की तरह लुटा दिया। अपनी सारी सम्पत्ति और जायदाद हीन-नात में बांट दिया जो इस समय भी मौजूद हैं। एक ख़ानदानी पुस्ताकालय भी था, जिसकी भी परवाह आपने नहीं किया। पूरा जीवन अविवाहित ही रहे। जब लोगों ने बहुत आग्रह किया तो आपने क़ुरआन मजीद की आयत (श्लोक) ब्यान किया -

या अय्युहल्लज़ीना आमनू इन मिन अज़वाजेकुम व अवलादे कुम
अद्उल लकुम फ़ अहज़रोहुम

'ऐ ईमान लाने वालों! तुम्हारी औरतें और तुम्हारी औलादें तुम्हारे लिए शत्रु हैं। अतः तुम उनसे बचो अथवा परहेज़ करो।'

वास्तविकता यह है कि आप माँ के पेट से ही वली जन्म लिये थे। आपकी नज़र में ख़ुदा का वह अनूप रूप बसा हुआ था जिसके सम्मुख नश्वर संसार का नाशवान रूप अति ही तुच्छ था। सरकार वारिस पाक को केवल विवाह से ही घृणा नहीं थी बल्कि वे जीवन सम्बन्धी सभी सामग्रियों से घृणा करते थे। आपने कभी किसी वस्तु को पसन्द नहीं किया। आपका देश में रहना ही सफ़र था और सभाओं में होना ही एकान्तवास था।

शाह मक़सूद अली शाह वारसी रह० एक मस्त बुज़ुर्ग थे। जब हुज़ूर की सेवा में उपस्थित होते तो अपनी उमंग और मस्ती में कहा करते थे कि हमारे पीर दस्तगीर का लगाव विशेष कर मसीही ढब पर है। जिस तरह ईसा मसीह ने संसारिक बन्धनों से विरक्त होने को मंजिल तय किया है,वही यह वारसी मंजिल है। हुज़ूर मुस्कुराते हुए कहते थे 'फ़कीर का कोई घर नहीं और सभी घर फ़कीर के हैं।'

हुज़ूर वारिस पाक की यह वाणी ऐसी सार्थक हुई कि भारतवर्ष में सैकड़ों मकानात हुज़ूर के नाम से बने हैं। अधिक संख्या में बाग़ान और गाँव आपके नाम से मशहूर हैं जैसे-वारिस नगर, वारिस बाग़, वारिस मंजिल इत्यादि। अमीरों ने तो नया मकान बनाकर हुज़ूर के ठहरने के लिए रख छोड़ा और गरीबों ने जब कभी नया मकान बनवाया तो अपनी शक्ति के अनुसार एक कोठरी ही हुज़ूर के नाम से सुरक्षित कर दिया। बहुधा स्त्रियों ने आपके इश्क व मुहब्बत में विवाह का परित्याग कर वस्त्र तथा आभूषणों को त्याग दिया। सत्य की खोज में घोर कष्टों, असह्य दुखों को झेलने की अभ्यस्त हो गयीं जिनमें बहुतों ने ईश्वर-भक्ति में ख्याति भी पाई।

जब आप घरों में पर्दापण करते तो महिलायें चारों ओर से आपको घेर लेती, आपके सिर में तेल डालतीं, पाँव दबाने लगतीं, किन्तु कितनी सबल और दृढ़ थीं,

Scanned with CamScanner

आपकी भगवान-विलीनता कि आपने कभी किसी की ओर नज़र उठाकर नहीं देखा, सत्य है -

काजल दूँ तो किर-किर करे, सुरमा दिया न जाय।
जिन नयनन मा पिव बसे, दूजा कौन समाये॥
परी भी हो तो नज़रों में भला क्यों कर समाती है॥

(आसी रह० अ०)

आप महिलाओं को माता जी, बहन जी कहकर सम्बोधित करते थे और बेधड़क बातें करते थे। परन्तु ये स्वाभाविक बातें ठीक अबोध बालकों जैसी होती थीं। घर के लोगों का नाम ले-लेकर कुशल पूछते तथा सब पर सहानुभूति दर्शाते थे। जो महिलायें दूसरे गुरुजनों से गुरुमुख होतीं, वह भी आपके सम्मुख बेहिचक उपस्थित होतीं।

१८७३ ई०/१२९३ हिजरी की बात है कि हुज़ूर पैंतेपुर तशरीफ लाये तो आपके आगमन का समाचार पाकर हकीम सलामत अली साहब भी पैंतेपुर के सम्मानित लोगों के साथ दर्शनार्थ हुज़ूर की सेवा में उपस्थित हुए। आप उस समय मकान में थे, औरतों की भीड़ थी। दर्शनार्थियों के पहुंचने पर पर्दा हो गया, औरतें हट गयीं। सभी लोग हाज़िर हुए। हज़रत वारिस अली पाक पर वज्द की हालत छाई हुई थी। पाठकगण 'वज्द' एक ऐसा शब्द है जिसका अर्थ लिखने से बाहर है मेरे ख्याल में थोड़ा सा संकेत काफी होगा। वह दशा जो अपनत्व (ख़ुदी) को नष्ट कर देती है और जिसपर ये अवस्था आती है वह ईश्वर की ज्योति के दर्शन में विलीन हो जाता है। आपके नेत्र लालिमापूर्ण थे। आपका प्रकाश युक्त मुख तमतमा रहा था। जब मिलने वाले लोग बिदा होकर चले गये तो रास्ते में उन लोगों में कुछ बातें होती जाती थीं। हकीम सलामत अली साहब आयुर्वेदिक दृष्टिकोण से कहने लगे कि ब्रह्मचर्य की शक्ति विचित्र होती है। औरतों की संगत और पाक दामनी की सहन शक्ति यही कारण है कि हुज़ूर के नेत्र और पवित्र मुख लालिमा से भर उठा था। रास्ते में हाजी मनसब अली शाह रह० अलै० पढ़ते थे सभी लोग उनके दर्शनार्थ उपस्थित हुए। सलामत अली हकीम साहब को देखते उक्त शाह साहब क्रोधित हो उठे। कहने लगे हकीम साहब फ़कीरों के मामले में हिकमत की क्या पहुंच है जब आपका यही हाल है तो अक़्ल को ठीक कर लीजिये और मेरे पास न आइये।

हकीम साहब ये सुनकर खिसके। रास्ते में अपने साथियों से कहने लगे

फ़कीरों का विचित्र मामला है। एक फ़कीर की बात का ज्ञान दूसरे फ़कीर को कैसे हो जाता है। फिर वह डर गये और इतने प्रभावित हुए कि हमेशा वह फ़कीरों का अदब करते रहे। कहने का तात्पर्य ये है कि सरकार वारिस पाक की प्रत्येक बातें ही विचित्र और निराली थीं। एक बार हुज़ूर ने विशेष मुद्रा में कहा फ़कीरी ख़ुटका पर है। सुनने वालों को अचम्भा हुआ, बात कुछ समझ में न आई। हुज़ूर ने स्वयं इसकी व्याख्या करते हुए कहा शक्ति होते हुए भगवान के लिए एक विशेष अंग बेकार कर दो और उससे काम न लो, शैतान को बग़ल में रखकर ख़ुदा को याद करना बड़ा काम है, अपनी आत्मा द्वारा राह चलना बहुत कठिन काम है। आपने किसी अवसर पर लंगोट बन्द की यह तारीफ़ की है, लंगोट बन्द वह है जो सभी स्त्रियों को अपनी माता तथा बहन समझे और देखे। इसी भांति किसी स्त्री को स्वप्न में वासना के निमित्त न देखे।

तवक्कल – स्तग़ना

तवक्कल का अर्थ है अल्लाह पर भरोसा करना और उसके अतिरिक्त सबसे बे परवाह होना। **स्तग़ना** का अर्थ होता है कि भगवान के सिवा किसी की परवाह न करना। हुज़ूर वारिस पाक आरम्भ से ही बड़े स्वतंत्र विचार के थे और बड़ी घनी तबियत के थे। वास्तव में किसी वस्तु से गरज़ नहीं थी। आप नज़राना नहीं पसन्द करते थे। रुपया, पैसा, दिरहम, दिनार नहीं लेते थे। सौगात स्वीकार करते थे और वह भी उसी समय उपस्थित जनों में बंटवा देते थे। अमीर और रईस लोग नकदी आप पर निछावर करके गरीबों को स्वयं बांट देते थे। विशेष महत्व की बात यह है कि आपने किसी प्रकार का रुपया पैसा कभी अपने पुनीत हाथ से छुआ तक नहीं, न अपने पास रखा। आपने कभी खाने -पीने का कोई प्रबन्ध नहीं किया, घर-द्वार, बिस्तर, कम्बल, ओढ़ना, बिछौना कुछ भी अपने पास नहीं रखा। ज़रूरत की चीज़ों से भी बेफ़िक्र रहते थे। किसी को बिस्तर उठाकर दे दिया, किसी को कम्बल, किसी को चादर बांट दिया करते थे। हकीकत यह थी कि जरूरी सामानों की भी कोई चिन्ता नहीं रखते थे। केवल एक एहराम (पीला वस्त्र) आपके पवित्र शरीर पर होता था, वह भी किसी दूसरे व्यक्ति का दिया हुआ होता था जो लोग बदलवाने के लिए लाते थे। जब कोई एहराम आपको लाता था। आप उसे शरीर पर डालते और उतारा हुआ उसी समय किसी को दे दिया जाता था, चाहे वह कितना ही बहुमूल्य हो। आप उसे सदैव के लिए छोड़ देते थे। धनी-मानी, राजा-महाराजा

Scanned with CamScanner

मूल्यवान चादरें, जामादारें तथा अन्य अमूल्य वस्तुऐं उपहार में भेजते किन्तु आप अपने लिए किसी को पसन्द नहीं करते थे। हाँ, बांटने से बहुत खुश रहते थे। अत: आपकी प्रसन्नता हेतु धनी मानी लोग उपहार लाते और दीन दुखियों में बांटकर आनन्दित होते थे। चारों ओर यह बात फैली हुई थी जो जिस इरादे से अथवा जिस ख्याल से जाता था, आपके दानशील दरबार से उसको वही प्रदान होता था। शेख़ निहालुद्दीन साहब, निवासी कुरसी, जिला- बाराबंकी के हैं, ब्यान करते हैं कि एक समय की बात है कि मैं सरकार वारिस पाक के दरबार में हाज़िर था, वहीं पर एक रईस साहब हुज़ूर की सेवा में एक फ़र्द (चादर) तैयार कराके लाये। उनके साथ उनका ख़ान्सामा भी था जिसकी नीयत फ़र्द पर लगी थी। रईस साहब ने आपके चरणों में वह फ़र्द अर्पित कर दिया। हुज़ूर बहुत आनन्दित और ख़ुश हुए। उसी समय फ़र्द ओढ़कर बैठ गये। दो-चार मिनट बाद वह रईस चरण स्पर्श कर चले गये। तत्पश्चात् ही उनका खान्सामा अपने हाथ की बनाई हुई मिठाई लाकर हुज़ूर के सम्मुख पेश किया। आपने उसका उपहार स्वीकार कर बंटवा दिया और खान्सामा को अमीर की चादर जो ओढ़े हुए थे प्रदान कर दिया। इस प्रकार की घटनायें बहुधा होती रहती थीं किन्तु कोई सवाली कभी खाली हाथ नहीं लौटता। आपके सेवक उसको इतना देते कि उसकी ज़रूरत से अधिक हो जाता था।

हुज़ूर स्वयं आज़ाद मिज़ाज़ और संसार से विरक्त थे। उनकी विशेषता की एक अलग शान है किन्तु अपने गुलामों को भी यही हिदायत थी और हिदायत ही तक नहीं बल्कि उनकी कड़ी पकड़ होती थी। गुलाब शाह साहब आपके फ़कीरों में थे। आगरा में रहते थे। हाफिज़ गुलाब शाह वारसी पानी फ़ूंक कर दे देते थे। पानी पीने वाला निरोग हो जाता था। आपके यहाँ जवान-बूढ़ों और बच्चों की भीड़ लगी रहती थी। दरवाज़े पर रोगियों-दुखियों का तांता बना रहता था। आठ दस भिश्ती पानी लिए खड़े रहते थे तथा कुम्हार टोकरों में मिट्टी के कूज़े (बट्टे) लिए बेचते रहते थे। संयोगवश कलक्टर साहब बहादुर की पत्नी को प्रसव पीड़ा आरंभ हुई दो चार दिन इसी कष्ट और परेशानी में बीत गये। डाक्टर भी परेशान हो गये। लोगों ने जिलाधीश महोदय से कहा यहाँ पर एक फकीर रहते हैं वह प्रत्येक रोग के लिए पानी फूंक कर देते हैं। कलक्टर महोदय ने पानी मंगाकर प्रयोग कराया। बच्चा पैदा हुआ। कलक्टर महोदय बड़े अधिकारियों से प्रयत्न करके पांच हजार वार्षिक आमदनी के एक मौजे की सनद बनवाकर तहसीलदार साहब द्वारा भेजवाया। हाफिज़ गुलाब शाह लेने में सोचने लगे और इस मामले से सम्बन्धित एक प्रार्थना

पत्र सरकार वारिस पाक की सेवा में भेजा कि जो आपकी आज्ञा हो किया जाय। आपने गुलाब शाह को आदेश किया कि गुलाब शाह खुद ही इनकार कर देना जरूरी था जो खुदा सम्पूर्ण रोगों को दूर कर सकता है। वह भूख-प्यास का कष्ट भी निवारण कर सकता है। जो लालच में घिर जाये वह हमारा नहीं है। गुलाब शाह ने सनद लेने से इनकार कर दिया। कलक्टर साहब उदास हो उठे और कुछ सोच समझकर हाफिज़ साहब के मकान से लगी हुई एक मस्जिद का निर्माण करा दिया। एक बार आपने कहा 'बड़ी फ़कीरी यह है कि हाथ न फैलाये किसी के आगे।' हाजी अवघट शाह ने पूछा कि यदि कोई बिना मांगे दे तो क्या करें? तो आपने कहा 'यदि बिना मांगे दे तो ले लो।' इस आदेश से यह विदित है कि नज़राना, भेंट इत्यादि जो बुजुर्गों के यहां चलता है जायज़ और उचित है। किन्तु इसको भी अपने लिए उचित नहीं मानते थे। आपकी दृष्टि का मूल किसी के आगे हाथ न फैलाना था। आपका कहना है 'आज कल तौहीद (अद्वैत्व) टके सेर है। भीख मांगते हैं, बड़ी चीज़ यह है कि मर जाए किसी के आगे हाथ न पसारे। तौहीद (ईश्वर को एक मानना और एक जानना) की प्रतिष्ठा आजकल नहीं है।'

हुज़ूर की नज़र संसारिक वैभव से परे रही और हमेशा इसके पाबन्द रहे। कभी भी जुबान से ख़ाना-पीना और इससे सम्बन्धित वस्तुओं को कभी नहीं मांगा और न इच्छा व्यक्त की। आपके सेवक दैनिक अनिवार्य वस्तुओं को समयानुसार हुज़ूर के सम्मुख पेश कर देते तो आप स्वीकार कर लेते थे। एक बार आपके कुछ सेवकों ने आप पर निछावर किया हुआ कुछ रुपया एकत्रित किया था। इसपर आपने बहुत डाँटा और रोका। लोगों ने उज्र किया और बहाना बनाया तो आप यह दोहा गुनगुनाने लगे :

गुरु से कपट मित्र से चोरी।
कि होइहें निर्धन कि होइहें कोढ़ी।।

आप दो वस्तुओं को अपने पास रखते थे। मिट्टी के ढ़ेले पवित्रता (तहारत) के लिए और खरिका दाँत साफ करने के लिए। जब कभी गर्मी के दिनों में आपके सोने के लिए बिछौना बाहर लोग लगा देते थे और रात में वर्षा आ जाती तो आप केवल मिट्टी के ढ़ेले (क्लूख) और खरिका लेकर अन्दर चले जाते थे। कहा जा सकता है कि हुज़ूर की दृष्टि में जीवन यापन करने के लिए दो ही वस्तुयें अनिवार्य थीं। ***'व अलल्लाहे फ़लयतावक्कलिल् मूमेनून'*** अर्थात् ईमान वालों को चाहिये कि केवल ईश्वर पर भरोसा करें तथा निर्भर रहें।

Scanned with CamScanner

खाने-पीने का तरीका

आपके भगवान पर निर्भर रहने की बात तो प्रत्येक दशा में झलकती है। यहां तक कि खाने-पीने में भी निस्पृहता पाई जाती है। आप कभी स्वेच्छा से कोई वस्तु नहीं चाहते थे। भक्त और सेवकगण जो भी प्रस्तुत कर देते थे, आप स्वीकार कर लेते थे। कभी भी आपने ऐसा प्रदर्शित नहीं होने दिया कि भोजन का स्वाद कैसा है? आपके विचार में भोजन वस्त्र का प्रबन्ध ईश्वर पर भरोसा करने के विरूद्ध था। आप बाल्यावस्था से सदैव भूख व्रतधारी थे। जब आपकी पुनीत आयु पचास वर्ष से अधिक हो गई तब शिकोहाबाद में संयोगवश आपकी तबीयत ख़राब हो गई। रोग के पश्चात् अधिक निर्बल व कमज़ोर हो गये। अत: कुछ दिनों तक थोड़ा सा आहार लेते जो नाममात्र को होता था। भोजन करते समय लोग बताते थे कि यह फलाँ वस्तु है। आप थोड़ा-थोड़ा चुटकी से प्रत्येक पदार्थ ग्रहण करते थे, वह भी इतनी अल्पमात्र में होती थी कि यह गुमान नहीं किया जा सकता कि आपको स्वाद का भी पता हो सका हो। आप इतनी जल्दी भोजन करते जैसे कोई कड़वी दवा गले में उतारतें हों। कभी-कभी पदार्थों में से माशे की मात्रा में लेकर एक प्याले में रखकर पानी में मिलाकर ग्रहण करते थे। फ़ीरनी उल्टे चम्मच से लेकर चाट लेते और बस कर देते थे। देवा शरीफ़ में अवासित होने के समय रईस बेलछी हाजी मुहम्मद इस्माईल साहब की पत्नी थीं। जो एक सभ्य और शरीफ़ तथा आपकी भक्त महिला थीं। आपके लिए उत्तम से उत्तम भोज्य पदार्थ तैयार करके आपके सामने प्रस्तुत करतीं किन्तु आप थोड़ा-थोड़ा चीखकर पूरे का पूरा बंटवा दिया करते थे। और केवल दिन में एक बार नूर मुहम्मद शाह साहब की उबाली हुई ख़िचड़ी मात्र दो-तीन ग्राम ग्रहण करते थे।

मौलवी हामीद हुसेन साहब बछरायूनी प्रोफेसर बरौदा कालेज अंकित करते है कि एक बार हज़रत वारिस पाक ने बाँदा में पदार्पण किया और हाफिज़ अहमद खाँ साहब तहसीलदार बाँदा के मकान पर आवासित हुए। उक्त तहसीलदार साहब के भाई जो कुरवी (तिरहुवन) में तहसीलदार थे आपको आमंत्रित किया। जब हुज़ूर बाँदा से कुरवी जाने लगे तो बाँदा के मौलवी सैय्यद अब्दुल हादी साहब जो एक आलिम (धर्म के पंडित) और मेरे उस्ताद थे मुझको पत्र प्रेषित कर सूचित किया कि सरकार वारिस पाक आपके मौज़े से गुजरेंगे, आप अतिथ्य-सत्कार से गौरववान्वित हुए। मैंने भी सरकार से प्रार्थना किया और आप मेरे मेहमान हो गये।

मेरे यहाँ भोजन में कइत की चटनी भी थी। आपने पूछा कि यह क्या है? हमने बताया कि ये कइत की चटनी है। आपने फ़रमाया कि आज तक हम नहीं जानते थे कि कइत की चटनी बनती है। उक्त चटनी बहुत पसन्द फ़रमाया।

मौलवी हुसेन अली साहब नवाब वारसी जमींदार सादा, मऊ, जिला-बाराबंकी से वर्णित है। हुज़ूर वारिस पाक मोहर्रम की दसवीं को रूधौली शरीफ में काज़ी मज़हरूल हक महोदय के मकान पर तशरीफ़ रखते थे। ताज़िया दफ़नाने के बाद घर आकर मैंने अपनी पुत्री से कहा। हुज़ूर के लिए हलवा तैयार कर दो पर बादाम मत डालना क्योंकि हुज़ूर बादाम का प्रयोग बिल्कुल नहीं करते। उसने फ़ौरन हलवा तैयार कर दिया। जब मैं लेकर चला तो उसने कहा, आप ले तो जा रहे हैं परन्तु हुज़ूर ग्रहण करें तब न। मौलवी हुसेन अली साहब कहते हैं मैंने हज़रत के समक्ष जाकर हलवा पेश किया तो आपने नूर मुहम्मद शाह सेवक को हलवा बांट देने का आदेश दिया। इस बात पर मुझे हंसी आ गई। आपने पूछा क्यों हंसे? तब मैंने नम्रतापूर्वक कहा हुज़ूर चलते समय मेरी लड़की ने कहा था लिये तो जाते हो सरकार खायें तब बात है। यह सुनकर फ़रमाया 'हम खायेंगे।' आपने तीन बार अपनी पवित्र अंगुली से उठाकर चखा।

मैंने अर्ज़ किया कि अब ख़ातिर हो गई। वास्तव में हुज़ूर को कुछ भी पसन्द न था। पेश करने वालों को प्रसन्न करने के लिए आप कभी-कभी बड़ाई कर देते थे। जब हुज़ूर वारिस पाक देवा शरीफ़ में स्थाई निवास करने लगे तो शाह फ़ज़ल हुसेन साहब वारसी और सैय्यद मारुफ़ शाह साहब वारसी तथा दूसरे अमीरों ने भी हुज़ूर प्रकाशपुंज और उनके मेहमानों के खाने का सुन्दर प्रबन्ध रखा था। प्रतिदिन भोजन की कई परातें हुज़ूर की सेवा में पेश होती और आगन्तुकों को खिलाई जाती थीं।

हुज़ूर वारिस पाक के भोजन की मात्रा थी एक तोला (दो भर या 11 ग्राम) प्रात: तथा एक तोला शाम। अंतिम उम्र में केवल एक तोला भोजन की मात्रा चौबीस घंटे में थी जिससे विदित है आपकी रुहानी ज़िन्दगी थी, खाना-पीना नाममात्र को था। आप बर्फ का पानी कभी प्रयोग नहीं किये हैं। आपने कभी मछली नहीं खाया और न खाने का कारण ही बताया है। जिस घर में आपका भोजन तैयार होता उसमें मछली नहीं पकती थी। यदि कभी भूल से ऐसा होता तो छप्पर में आग लग जाती थी। धनी हो या ग़रीब आप सबका निमन्त्रण स्वीकार करते थे।

हाँ, उन लोगों की दावतें अस्वीकार होती थीं जिनकी रोज़ी जायज़ अथवा

Scanned with CamScanner

उचित ढंग से नहीं होती थी। ऐसे लोगों ने कभी आपके दावत के लिए साहस भी नहीं किया क्योंकि ये बात प्रसिद्ध थी।

उन लोगों की दावतों से भी इनकार कर जाते थे जिन लोगों में सुलह न थी और नाराज़गी रहती थी। एक बार की बात है जिसे मौलवी रौनक साहब वारसी लिखते हैं कि मेरे परिवार की एक महिला जो आपकी शिष्या थीं किन्तु उनके पति हुज़ूर के गुरुमुख नहीं थे। उस महिला के पास सम्पत्ति थी। उक्त महिला ने दावत का प्रबन्ध किया। किन्तु उनके पति खर्च की अधिकता के कारण सहमत न हुए। बीबी साहिबा बिना पति को राज़ी किये ही सरकार की सेवा में पहुंचकर निमंत्रण दिया। आपने मुस्कुराते हुए कहा कि पहले मियां-बीवी सुलह कर लो। वह चुप होकर लौट आयीं। फिर दोनों ने एक राय होकर हुज़ूर की दावत की।

भोजन करते समय आप सर को तहबन्द के कोने से ढाँक लेते थे। भोजन करते समय उकड़ू बैठते थे। खाने के पश्चात् इस्तिंजा के लिए जाना व्यवहार में था। खाने के पश्चात् दिन में कीलोला और रात में अवश्य टहलते थे। ख़िलाल (खरिका) करना भी नियमत: था।

वस्त्र

बाल्यावस्था में आप बन्द वाली अचकन, ग़रारादार पजामा, दो पल्ली कामदार टोपी तथा सलीम शाही जूता पहनते थे।

पन्द्रह वर्ष की उम्र में आप हज के लिए गये। एहराम बांधा तब से यह ईश्वरीय दरबार का वस्त्र सदैव के लिए अपने प्रकाशमयी शरीर पर धारण कर लिया और इसी वस्त्र में हिन्दुस्तान पधारे। आपके पहले किसी दरवेश-फ़कीर ने वेश-भूषा में इतनी सादगी, एकरूपता नहीं अपनायां है कि एक ही कपड़ा सारे शरीर के लिए पर्याप्त और काफ़ी हो। हुज़ूर ने पीले रंग का एहराम अधिक प्रयोग किया। आपको पुराने ढंग के रंग बहुत पसन्द थे। मौलवी रौनक अली साहब से अंकित है कि जब हुज़ूर पहली बार पैंतेपुर आये, उस समय पीले हरसिंगार के फूलों या बबूल की छाल का रंग अधिक प्रयोग में लाया जाता था। इसके अतिरिक्त अन्य रंगों के वस्त्र धारण कर लेते थे। बहुधा देखा गया है कि जो जिस रंग का एहराम लाता उसको आप प्रसन्नतापूर्वक धारण करते थे।

आप एहराम शरीर पर धारण करने के बाद उतारे हुए एहराम को सदैव के लिए त्याग देते थे और उतरे हुए एहराम का आधा लाने वाले को और आधा भाग

दूसरे हक वालों के मिल जाता था। जिसको प्राप्त करने की एक विशेष खुशी होती थी और उसका एक-एक धागा पवित्र सौग़ात के रूप में बंट जाता था।

ये लिबास जितना गौरवमयी और सम्मानित था उतना ही अपनी पवित्रता में भी श्रेष्ठ था। उसी प्रकार वारिस पाक की दृष्टि में महत्व भी रखता था। जिन सत्य खोजियों को आप एहराम प्रदान करते उन्हें इसके निमित वाह्य व आन्तरिक अदब की शिक्षा भी देते थे जो अपने रूप में कठोर प्रयत्न थे, जिनके आप खुद पाबन्द थे।

भूमि के अलावा चारपाई, चौकी, कुर्सी इत्यादि पर बैठना त्याज्य है। यात्रा में जहाज, रेल व बस के अतिरिक्त किसी जानदार सवारी पर सवार न होना यद्यपि विशेष अवस्था में कुछ फ़कीरों को छूट दी गई है किन्तु सबके लिए यह हुक्म नहीं था। जूते, मोज़े इत्यादि एहराम धारियों को पूर्णत: वर्जित है। खोलकर या सांकेतिक सवाल करने से रोका गया है। नि:स्वार्थ और बेलाग रहने की शिक्षा दी गई। इस पवित्र एहराम की वास्तविकता परहेज़गारी तपस्या कार्य करण ईश्वर की ओर से मानना। ईश्वर की मर्ज़ी पर राज़ी रहना उसी का भरोसा करना और उसके अतिरिक्त सबसे लापरवाह होना इत्यादि विशेषतायें हैं। *'व लिबासुत्तकवा ज़ालेका ख़ैरून'* तकवा परहेज़गारी का लिबास ही तेरे लिए बेहतर है और एहराम प्रदान करते समय सरकार कहते थे, लो यही जीवन वस्त्र है और यही कफन है।

इससे यह विदित होता है कि अपने अस्तित्व को मिटा देने की ओर संकेत है। आपके फकीर इसी एहराम में दफन किये जाते हैं। हुज़ूर वारिस पाक ने लाल, काला और सफेद रंग का प्रयोग कभी नहीं किया है। दोशाला, रेशम का तहबन्द आदि कभी हाथ से नहीं छुआ है। आपका जो तरीका ओढ़ने, पहनने और खाने-पीने का था वह नियमित रूप ले लिया था और आजीवन भर उसमें कोई अन्तर नहीं आ सका।

नियमित जीवन-यापन

नियमित जीवन व्यतीत करने की शैली जो आप में देखी गयी है वह कहीं किसी में न देखी गयी है और न सुनी गई है। जिससे ज़ाहिर है कि आपके मिजाज में उच्चतम श्रेष्टता और मजबूती और एक रंगी थी। जो बात आरम्भ में आप से प्रकट हुई वह वजा में सम्मिलित हो गई और उसमें परिवर्तन होना किसी भी दशा में असंभव था।

जिस आदमी के मकान पर आप एक बार रूके और ठहरे आजीवन आप ने अपने पदार्पण से उसी मकान को सम्मानित किया। बड़े-बड़े धनी मानी व्यक्ति

Scanned with CamScanner

प्रार्थना करके हार गये परन्तु आप प्रथम गरीब मेज़बान का दिल तोड़ना पसन्द नहीं किया। जीवन के अंतिम भाग में जब आप बहुत कमज़ोर और ज़ईफ़ हो गये थे सफर नहीं करते थे। आपके धनी मालदार मुरीद (धार्मिक चेले) खुद जाकर आप को लाते थे। तो भी आप उनके घर नहीं ठहरते वरन् उस शहर में जहाँ प्रथम बार रूके थे उसी स्थान पर रूकते थे। यहां तक कि किसी शहर या कस्बा में पहली बार जिस रास्ते प्रवेश किये थे उसी रास्ते से तशरीफ ले जाते थे और कभी उस रास्ते को नहीं बदलते थे। यदि कभी अपनी लीनता विलीनता के कारण संयोगवश रास्ता छूट जाता तो आप लौट कर उस रास्ते पर पलट आते थे और कहते थे कि हमारा पुराना रास्ता यही है गोया रास्ते से भी स्नेह हो जाता था।

मौलवी रौनक़ अली साहब वारसी लिखते है कि ग्राम गौरा, जिला- बाराबंकी जब प्रारम्भ में सरकार तशरीफ ले गये थे तो राह में एक बाग़ था जिसके एक वृक्ष के साये में आप थोड़ी देर आराम किये थे।

दूसरी बार पन्द्रह-सोलह वर्ष पश्चात् उसी रास्ते से उसी गाँव को जा रहे थे। पालकी में सवार थे क्योंकि उस समय आपका बुढ़ापा था और अत्याधिक कमज़ोर हो गये थे। जब आप बाग़ पर पहुंचे तो पालकी रोकवाकर उतर गये समय के फेर ने उस बाग़ को उजाड़ दिया था। आप उस बाग़ के उसी वृक्ष के स्थान पर गये और थोड़ी देर विश्राम करने के बाद फिर पालकी पर सवार हुए। अपने साथ वालों से कहा जब हम पहली बार इस रास्ते से गुजरे थे तो इस स्थान पर एक छायादार वृक्ष था। यह विशेषता आप में सदैव पाई गई कि आप जिस मकान अथवा स्थान पर प्रथम बार जिस ओर मुंह करके बैठे, उठे और आराम किया हमेशा आप उसी प्रकार व्यवहार करते रहे कभी आचरण में अन्तर नहीं आ पाया।

बैठक व विश्राम

'बैठना और आराम करना' हुज़ूर वारिस पाक के उठने बैठने और आराम करने में भी नियम की पाबन्दी पायी जाती थी जो आपके पूरे जीवन में दृष्टिगोचर हुई। आपकी आदत थी भोजन करने के पश्चात् दो तीन सेकेन्ड बाईं करवट आराम करते तत्पश्चात् करवट बदल लेते थे। आपको कभी चित्त या उतान लेटते नहीं देखा गया है। जब आपको करवट बदलना होता था तो आप बैठकर दाईं ओर फिर लेटते थे। एक ही करवट लेटने के कारण आपके दायें कूल्हे पर घाव पड़ गया था। आप तकिया का प्रयोग कभी नहीं करते थे। सोते समय अपने दांये हाथ को सिर के

नीचे रख लेते थे। एक बार मौलवी अहमद हुसेन साहब ने आपके बिछौने पर दो तकिये रख दिये तो आपने कहा 'हम तकिया पसन्द नहीं करते।' जीवन के अन्तिम भाग में दुर्बलता के कारण अधिक कष्ट होता। सेवकगण देखते तो सहारे के लिए कोई कपड़ा सिरहाने रख देते थे। आप भोजन करते समय उकड़ू बैठते थे और इसी ढंग से बैठने की आदत थी। उकड़ू बैठने में आप दोनों हाथ ज़मीन पर रख लेते थे। कभी दो ज़ानू और कभी एक ज़ानू भी बैठते थे अर्थात् कभी दोनों पाँव मोड़कर और कभी एक पाँव मोड़कर बैठते थे। आपकी बैठक का एक ऐसा अंदाज़ था कि आपके बैठक पर अल्लाह शब्द साफ़ पढ़ा जाता था। कहा जा सकता है कि आपकी बैठक भी भगवान के स्मरण या यादे ईलाही से खाली नहीं थी। आराम करने अथवा लेटने की दशा से शब्द मुहम्मद की सूरत दिखाई देती थी। टांग पर टांग रखकर आप कभी नहीं बैठते थे या पलथी लगाकर नहीं बैठते थे।

सरापाये मुबारक

सरापा का अर्थ होता है सिर से पैर तक माशूक की बड़ाई ब्यान करने को सरापा कहते हैं। हुज़ूर वारिस पाक का हुस्न और उनकी ख़ूबसूरती बेजोड़ थी। आपकी शारीरिक बनावट की सराहना कठिन है तथा शक्ल व सूरत ईश्वर प्रदत्त थी। आपके दर्शनकर्ता ईश्वर के प्रकाश निरीक्षण में लग जाता था। ख़ुदा के इस कथन के आप हक़दार थे : *'लक़द ख़लक़ नल इन्साना फी अहसने तक़वीम'* अर्थात् हमने मनुष्य को अति उत्तम बनावट पर पैदा किया। आपका सम्पूर्ण शरीर मानों प्रकाश के साँचे में ढ़ला था। आपकी मुखाकृति गेहुऐं रंग की लालिमायुक्त आकर्षक तथा मनोहर थी। आपके चेहरे का रंग बदलता रहता था। कभी सूर्ख, कभी उज्जवल और कभी चन्द्रमा की भांति दमकता हुआ। जिससे नज़र भर के देखना कठिन होता था। हुज़ूर वारिस पाक प्रातः बिना मुंह धोये चादर से मुंह बाहर नहीं करते थे। एक बार इस दशा में सैय्यद मारूफ शाह साहब को आपके मुख का दर्शन हुआ था। उक्त सैय्यद साहब का कहना है कि आपके मुख की लालिमा सूर्य के समान थी। देखते ही आंखों में चकाचौंध उत्पन्न हो जाती थी। हाजी अवघट शाह वारसी का कहना है कि हकीम ज़मीर अहमद साहब बछरायूनी को भी एक बार यह शुभ अवसर प्राप्त हुआ था। आप उस ओजस्वी मुख को देखकर सूर्य की लालिमा के चक्कर में पड़ गये थे।

काज़ी मुहम्मद इलियास साहब निवासी गाज़ीपुर अपनी घटना इस प्रकार

Scanned with CamScanner

लिखते हैं :- एक दिन मैं हाजी वारिस पाक के पास ख़िदमत में हाज़िर था। रात को आठ बजे संयोगवश चिराग़ बुझ गया। मैंने उस समय हुज़ूर के शरीर का ऐसा प्रकाश देखा जो न तो अक्षरबद्ध ही हो सकता है और न जिसका कहना ही उचित है। एक घंटा तक इसी विचार में डूबा ही रह गया। इस अनोखी बात का भेद केवल उन्हीं लोगों पर खुला जिन्होंने इस दशा में हुज़ूर का दर्शन किया है। आपका पूरा शरीर प्रकाश के साँचे में ढला हुआ था। आपके पुनीत शरीर की लम्बाई कुछ लम्बी किन्तु अत्यन्त उचित थी। मोटाई शरीर की भी समुचित थी। किन्तु कठोर तप और व्रत के कारण दुबला और कमजोर होता रहता था। ये ईश्वरीय दया और देन थी जो सरकार वारिस पाक पर उतरती रहती थी। जैसा कि क़ुरआन में मौजूद है- ***'व नोरीदो अन् नमल लज़ीनस तो वफ्फेफूल अरदे व नज अल्हुम अईम्मतन व नज अल होमुल वारेसून'*** अनुवाद (हमारी इच्छा यह थी कि जो लोग पृथ्वी पर कमजोर कर दिये गये थे उन पर भलाई करें और उनको सरदार बनायें तथा वारिस नियुक्त करें।) आपका सिर बड़ा और गोल था। आपकी सरदारी ज़ाहिर थी जो आपके महानता की द्योतक थी। हज़ारों लोगों के बीच आप खड़े होते तो आपका सिर सबसे ऊँचा दिखाई देता था। घूंघुर वाले केशों से आपका सिर सुशोभित रहता था जो रसूले ख़ुदा मुहम्मद साहब का तरीका था। सुन्नते रसूल के अनुसार सिर के केश कभी कंधे या मोढ़े तक और कभी कान की लुरकी तक होते थे।

यही सबब था जो ज़ुल्फों को ये बढ़ाये हुए कि आज सारे ज़माने पे हैं वह छाये हुए।

आपकी पेशानी ईश्वरीय प्रकाश से भरपूर थी। भवें कुछ फैली हुई कमान की तरह थीं। आपके नेत्र लज्जा से परिपूर्ण, सुमार्गी और पलकें झुकी हुई थीं। ईश्वर के दर्शनार्थ ये नेत्र खुले हुए होते थे। सदैव दृष्टि नीचे ही रहती थी। कभी किसी को देखने की आदत नहीं थी। यदि सुसंयोगवश किसी पर दृष्टि पड़ जाती तो वह मूर्छित हो जाता था। मौलाना मुहम्मद नाजिम अली साहब फजली जो मदरसा फुरकानिया लखनऊ के नायब सिक्रेट्री थे लिखते है कि मैं कई बार हुज़ूर के दरबार में जाता था किन्तु पहुंच कर होश खो देता । तमीज़ शेष नहीं रह जाती थी और न याद ही है क्या देखा और क्या हुआ ? सिवाय इसके कि स्वयं खो जाता था। किन्तु हाजिरी का बड़ा शौक था। मैं उनकी आँखो का शैदाई था। आप में चुम्बकीय आकर्षण था जो सामने पड़ता आप ही का हो जाता था। आपकी नासिका सटी हुई और ऊँची थी। पवित्र मुख न चौड़ा और न तंग बल्कि मध्यम

कोटि का था। आपके दाँत न छोटे न बड़े औसत मोतियों के तरह चमकदार थे। दाढ़ी घनी और लम्बाई में मुठ्ठी भर होती थी। गर्दन अच्छी लगने वाली और लम्बी थी। दोनों कन्धे गोल, हाथ लम्बा, हथेलिया गोश्त से भरी हुई, अंगुलियाँ लम्बी-पतली और बहुत खूबसूरत। नख द्विज के चन्द्रमा के समान शानदार थे। दोनों हाथ संसार के प्राणियों की सहायता का बीड़ा उठाये हुए थे। दोनों कलाइयों में अल्लाह के हाथों की शान झलक रहीं थी। आप का सीना दर्पण सरीखे स्वच्छ और पवित्र था जिसमे ईश्वरीय रहस्य छुपे हुए थे। वास्तव में आपका सौन्दर्य और खूबसूरती खुदा के कलाम ***'इन्नल्लाहा ख़लका आदमा अला सूरतेही'*** को सार्थक करती हैं। आपकी सूरत को देखते ही अल्लाह की याद आ जाती थी। ***अल्लाहुम्मा सल्ले अला सैय्यदना मुहम्मदिन बेहिल उम्मीये व अला आलेही व अला असहाबेही व बारिक व सल्लिम बे अददे कुल्ले हुसनेही।***

आप के शरीर का सुगन्ध मोहक और मनोहर था। धार्मिक चेलों के अलावा अन्य लोग भी इसके साक्षी हैं। यही कारण था कि जिस गली से आप गुजरते लोग आप को खोज लेते थे।

पवित्र और दोष रहित विशेषतायें

जिस प्रकार आपका सौन्दर्य और रूप मोहक और हृदय को आनन्दित करता था। उसी प्रकार दूसरी विशेषताओं से भी आप सुसज्जित थे। आपका सरापा अद्वैत्य का दर्पण था और खुदा की एकताई का आईना था। जो समक्ष आता वह अचंभित होकर अद्वैत्य के रंग में डूब जाता । आपकी सभा का एक छोटा करिश्मा था कि अधिक लोगों के एकत्र होते हुए भी सभी का हृदय एक रंग में रंग जाता और एक ही ख्याल तथा समान विचार के दृष्टिगोचर होते थे। ईश्वर ने आपके शरीर को यह भी विशेषता प्रदान किया था कि कभी-कभी आपके पुनीत शरीर का पूर्णतः ज्ञान नहीं होता था और दर्शक दंग रह जाते थे। इस बात से यह प्रत्यक्ष है कि आपका पुनीत शरीर पूर्णतः प्रकाश पुँज था।

बहुधा सेवा में उपस्थित रहने वाले हाफिज रहमत अली साहब निवासी मटवारा, खैरात अली साहब पैंतेपुरी, मियाँ भूरे शाह इत्यादि ने भी इसकी गवाही दी है तथा मौलवी रौनक अली साहब रज्जाकी-वारसी लिखते हैं कि मेरे पिता शाह मकसूद अली रह0 अलैह और हकीम रहमत अली साहब पैंतेपुरी जो आपके सहपाठी थे ब्यान करते हैं कि हुज़ूर के पवित्र पैर दबाते समय आपका पवित्र शरीर

Scanned with CamScanner

ज्ञात नहीं होता था। मारूफ शाह साहब वारसी किबला लिखते हैं कि मेरी बड़ी बहन ने जो हुज़ूर से बैय्यत थीं एक बार मुझसे कहा कि ऐसा संयोग होता है कि जब हुज़ूर के पांव दबाने का इरादा होता है तो आपके पुनीत शरीर का पता ही नहीं चलता है। इस कथन के कारण उत्सुकतावश अनुभव किया। रात के समय मैंने जाकर वारिस पाक के बिस्तरे के पायताने सोता और रात के समय पद चप्पी की गरज से जाकर आपके पदस्पर्श किया किन्तु आप का पवित्र अंग न पाकर ठीठका और विस्मयभूति होकर अपनी जगह जा लेटा तथा चारों ओर देख भालकर यह सोचने लगा कि अंततः आप क्या हो गये? इसी विचार में था कि आपने पुकारा "मारूफ शाह सोते हो।" इस निर्देश पर मैं पहुँचकर पाँव चप्पी में लग जाता तथा आप भिन्न-भिन्न स्थानों की घटनाओं का वर्णन करने लगते।

मौलवी रौनक अली साहब वारसी रज्जाकी लिखते हैं कि मियाँ नियामत अली शाह साहब वारसी निवासी ग्राम सहारा का ब्यान है कि हुज़ूर ज़माना अलालत के बाद और पालकी की सवारी के पहले जब पैदल चलते तो कमजोरी के कारण थक जाते। चलने में अधिक कष्ट होने लगता था। उस समय उपस्थित सेवक आपको एक चादर पर लिटाते और चादर के कोनों को पकड़ लेते थे। बिना किसी हिचक आपको लिए चले जाते थे। ले जाने वालों को आपके शरीर के भार का ज्ञान नहीं होता था और बात की बात में दूरी समाप्त हो जाती थी। नियामत अली शाह साहब का कहना है कि देवा शरीफ से कुरसी तक मैं भी सेवा में सम्मिलित था। आपका शरीर पुष्प की भाँति हलका था।

पुस्तक ऐनुल यकीन में है:- एक बार सरकार वारिस पाक हाफ़िज रमजान अली साहब के मकान पर विराजमान थे। आप में विश्वास रखले वालों की एक भीड़ लगी हुई थी। हाफिज साहब ने बातचीत के बीच कहना आरंभ किया। हमने सुना है कि सैय्यद शाह अब्दुर्रज्जाक साहब की कमर से पटका निकल गया था किन्तु यह बात कुछ समझ में नहीं आती। आप ने फरमाया 'हमारी कमर में एक मजबूत चादर बांध कर खींचो।' आदेश का पालन किया गया और बंधी-बंधाई चादर बाहर निकल आई। सभी लोग अचंभित हो गये। यहीं तक यह बात नहीं रही वरन् हुज़ूर जिस चीज से जो काम लेना चाहते थे उस वस्तु से वह कार्य प्रगट हो जाता था। लकड़ी से भी रूमाल निकल आने की एक घटना निम्नांकित है :

मौलवी अहमद हुसेन साहब वारसी का कथन है कि एक समय मेरे मकान पर

हज़रत अब्दुर्रज्जाक रह० बांसवी की इस घटना की चर्चा हो रहीं थी कि आपकी कमर से पटका निकल जाता था। हुज़ूर पाक मकान से बाहर निकल आये और उन लोगों के शंकित कथन को सुनकर कहा "यह क्या बकवास है। आशिकों को अल्लाह की ओर से हर हाल में एक हाल होता है। वह हर वस्तु तथा प्रत्येक प्राणी से जो चाहे करा दें। तमाम विशेषतायें माशूक अर्थात् भगवान में विलीन हो जाती हैं। उसमें खो जाने ही को 'वसाल' मिल जाना कहते हैं और 'ख़ुदी' अपने आप से बाहर हो जाना ही कमाल हैं। आशिक जब इस सीमा को पंहुचते हैं तो अपने अस्तित्व को नष्ट कर देते हैं। इसका उदाहारण यह है कि जब सूर्य आकाश पर चमकता है तो तारे प्राणियों की दृष्टि से छुप जाते हैं जिस प्रकार तारिकाओं का होना आकाश पर है उसी भांति आशिक का होना माशूक में है जैसा कि है 'मनकाना लिल्लाहे कानल्लाहो लहू' अर्थ है - जो अल्लाह का हुआ, अल्लाह उसका हो गया। आशिक-माशूक एक हो जाते हैं। फिर इसमें अनोखेपन की कौन सी बात है? वह खुदा अपने आशिकों की तमाम खूबियाँ समेट लेता है।' इन बातों पर कुछ समय तक सभी चुप रहे और सभी के ऊपर एक रोब छाया हुआ रहा। तत्पश्चात् हुज़ूर कस्बा मसौली को चले गये। मसौली में शेख मज़हर अली के मकान पर ठहरे। मौलवी अहमद हुसेन साहब अंकित करते हैं कि कुछ दिनों बाद जब किसी को इस घटना का ख्याल तक नहीं था। एक दिन हज़रत वारिस पाक ने एक छड़ी जो कुबड़ी की तरह थी उस पर सफेद रूमाल बंधा था। शेख मज़हर किदवई को देकर कहा 'यह गोरख धन्धा है। इस रूमाल को कुबड़ी से खींच लो। गाँठ वैसी ही रहेगी तथा रूमाल लकड़ी से अलग हो जायेगा।' आदेश की पूर्ति की गई वास्तव में ऐसा ही हुआ। मज़हर अली किदवई आपकी सेवा में रहते-रहते निर्भीक हो चुके थे। अन्होंने कहा यह सेवक इस लकड़ी से तसल्ली नहीं पा रहा है। मैं खुद अपने हाथ से गाँठ लगाऊंगा और फिर निकल जाये तो अवश्य विश्वास हो जायेगा। हुज़ूर ने स्वीकार किया किदवाई साहब ने अपने हाथ से मजबूत गिरह लगाई। कुबड़ी हुज़ूर वारिस हाथ में रही। किदवई ने रूमाल खिंचा और वह कुबड़ी से साफ बाहर हो गयी। प्रत्येक व्यक्ति जो वहाँ उपस्थित था अचम्भे में पड़ गया। हुज़ूर वारिस पाक मुस्कुराते हुए अपने बिस्तरे पर चले गये और कहा कि हमने अरब में एक उस्ताद से सीखा है। हम और किदवई वहाँ से अलग होकर सोचने लगे तो समझ में आया कि कमर से पटका निकल जाने का जवाब है।

Scanned with CamScanner

सैय्यद हामिद अली शाह कादिरी चिश्ती, निवासी साड़ी, जिला हरदोई कहते है कि शेख अज़मत अली शाह से हमने सुना है कि वह एक बार हुज़ूर के साथ थे। उन्होंने देखा था कि वर्षा के कारण चारों ओर पानी भरा था। मौज़ा कोरसत के मुकाम पर रास्ते में पानी अधिक था। आपने मुझे आदेश किया तुम हम को गोद में उठा लो।' मैं हैरान हो गया कि हुज़ूर के इतने बड़े शरीर को कैसे संभाल सकूंगा। पर आदेश का पालन अनिवार्य है। इरादा किया देखा तो हुज़ूर पाक को देखते ही अचम्भे से भर उठा और ऐसा जान पड़ा कि एक छः मास का बालक गोद में है और मैं हुज़ूर को लिये हुए आसानी से पार हो गया। आपका पुनीत शरीर देखने में तो शरीर अवश्य दिखाई देता था परन्तु वास्तव में आदमी के ढाँचे का एक आईना था। जिसमें ईश्वरीय रूप तथा विशेषतायें दिखाई देती थीं।

अपने चेलों के अतिरिक्त अन्य सिलसिलों के भी बुजुर्ग तथा सम्मानित लोगों के निरीक्षण में भी आया है। जैसा कि शाह नजीरूल हसन साहब कबा फतेहपूरी जो अपने समय के बुजुर्ग और नामवर हैं। एक पत्र में लिखते है- हज़रत हाजी साहब की शान श्रेष्ट और उच्च है। तौहीद के सागर में विलीन है । अपने निरीक्षण में केवल एक घटना आई और पर्याप्त है। देवा शरीफ में मुसाफहे का संयोग हुआ बसन्त ऋतु थी। सभी बसन्ती वस्त्रधारी थे। हज़रत हाजी साहब भी इसी रंग में थे। हाथ मिलाने के समय उनका दाहिना हाथ फकीर के दोनों हाथों के बीच था। मानों अपने ही हाथ थे जो एक दूसरे से मिले हुए थे। इनके हाथ का अंशमात्र भी मालूम नहीं होता था। यह दशा केवल दो मिनट तक थी। मौलाना कहते हैं जो कुछ निरीक्षण किया वह कलम से प्रकट नहीं किया जा सकता है। जिन महान लोगों को हुज़ूर पाक की संगति का सम्मान प्राप्त हुआ है वे सभी सरकार वारिस पाक की खूबियों का इकरार करते हैं, समर्थन देते हैं।

सरकार वारिस पाक सर्वदा नंगे पाँव रहते थे किन्तु कभी कमलवत चरण धूल धुसरित नहीं होते। अधिकांश लोग जो आपको देखे हैं, वह ऐसा कहते हैं कि आप के पद भूमि पर पड़ते हुए नहीं दिखाई पड़ते थे। हुज़ूर वारिस पाक के पवित्र चरणों की कोमलता अनगिनत लोगों ने देखा है। यहाँ तक कि लोगों ने रास्ते को कीचड़ मयी करके आप का इम्तेहान भी लिया है।

मौलाना शाह अब्दुल कादिर साहब, सूबा बिहार, अपनी देखी हुई घटना ब्यान फरमाते हैं। सन् १८८९ ई० की बात है जब वारिस पाक हकीम ज्याउल हसन

साहब निवासी भिसवाँ के मकान पर पधारे थे। उक्त हकीम साहब के दरवाज़े पर पानी गिरने के कारण कीचड़ हो गई थी जिसको हकीम साहब नहीं जानते थे। हुज़ूर वारिस पाक की पालकी उसी स्थान पर रखी गई जहाँ कीचड़ थी। आप पालकी से उतरे और कीचड़ से होते हुए मकान की ऊपरी मंजिल पर चले गये। फर्श पर बैठ गये किन्तु आपके पाँव में कीचड़ का अंशमात्र भी कहीं न लगा था और न फर्श पर कोई धब्बा पड़ा था।

मुंशी समद मस्त खाँ फजली, निवासी गंज मुरादाबाद जिला-उन्नाव अपनी आँखों देखी लिखते हैं। गंज मुरादाबाद में जिस मकान पर आप विद्यमान थे वहाँ महफिल की गरज़ से फर्श बिछाया जाता था। विशेषतः सफेद चांदनी अवश्य बिछती थी और उस फर्श पर आप तशरीफ रखते थे। यद्यपि आप नंगे पाँव होते थे। तथापि फर्श पर कहीं भी कोई धब्बा नहीं दिखाई पड़ता था।

शाह मुहम्मद रजीउद्दीन साहब मुतवल्ली(उत्तराधिकारी, प्रबन्धकर्ता) दरगाह शरीफ अबूल अला साहब लिखते हैं कि मैं अपने एक रिश्तेदार के यहां बाराबंकी में था, मुहर्रम का महीना था, वर्षा हो रही थी। मैंने देखा कि हुज़ूर वारिस पाक लोगों की एक भीड़ के साथ अपने एक धार्मिक चेले के वहाँ जा रहे थे। मैं भी उनके साथ हो लिया, उस समय वर्षा के कारण सड़क पर कीचड़ बन गई थी। सभी लोगों के पैर जूते में भी गन्दे और मैले हो रहे थे। हुज़ूर वारिस पाक अपनी प्रथा के अनुसार नंगे पाँव चलकर मुरीद के सुसज्जित कमरे के फर्श पर जाकर बैठे। हमने देखा कि आपके पैर साफ थे। पाँव में कीचड़ का चिन्ह भी कहीं न था और न फर्श की बिछी हुई सफेद चादर पर कोई धब्बा ही पड़ा था।

मौलाना हाजी क़ारी अहमद मुखतार साहब मेरठी जिनको नक्शबन्दिया, चिश्तिया और कादिरीया से खिलाफत तथा सनद प्राप्त है का लिखना है कि जब मैं दूसरी बार दरबार वारसी में हाज़िर हुआ तो मैंने देखा कि हज़रत हाजी साहब किबला फिनिस से उतर कर नंगे पाँव छिड़काव की गई जमीन से पधारे किन्तु आप के पांवों में धूल-मिट्टी का आंशिक प्रभाव भी नहीं था। मौलाना हाजी शाह अबू मुहम्मद अली हसन साहब अशरफी अल जीलानी किछौछा शरीफ द्वारा लिखित है कि मैंने हाजी साहब को नंगे पाँव ईदगाह में जाते हुए कई बार देखा है। आपके पाँव मुबारक में धूल गर्द नहीं जमती और न उनके पद चिन्ह ही फर्श पर उभरते थे। ऐसी घटनायें आये दिन हजारों लाखों लोगों को दृष्टिगोचर हुई है। यह बात एक खुली

Scanned with CamScanner

निशानी थी जो प्रत्येक समय नजरों से गुजरती थी।

मीर आरिफ अली साहब रईस बरौदा जो इमामिया मज़हब रखते थे। वह ब्यान करते थे कि एक बार हुज़ूर वारिस पाक मेरे घर पधारे तो आप पैरों में जूता या खड़ाऊँ जैसी कोई वस्तु नहीं थी। रास्ते में धूल, मिट्टी, कीचड़ और पानी सब कुछ था पर आप के पुनीत-पदों में कीचड़-मिट्टी कुछ भी न लगा था। आपके चरण धूल-धुसरित भी नहीं थे। आप बिछी हुई चाँदनी पर बेहिचक पधारे पर फर्श पर कोई धब्बा नहीं आया। आरिफ अली साहब कहते हैं कि इसके पूर्व भी हमने यह सुना था किन्तु मुझे यकीन नहीं आया। जब अपनी आंखो से देखा तो मेरे आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा। इसी भांति मौलवी हामिद हुसेन कादिरी बरेलवी लिखते है कि यह घटना स्वयं उनके बुजुर्ग शाह निजामुद्दीन साहब बरेलवी ने अतिप्रेम से लिखा है। आप का जीवन संसार के संबन्धों तथा धार्मिक बुराईयों से पाक था। भाग्यशाली हैं वे लोग जिनके हाथों और होंठों ने आपके पद स्पर्श किये हैं। शैदा मियाँ वारसी के शब्दों में -

सिर यहाँ जिस ने झुकाया वह नेक अन्जाम।
दीन-दुनिया के सभी बन गये बिगड़े हुए काम॥
अपने पैरू की भी रहबरी करते हैं मुदाम ।
अब कदम चूम ले शैदा कि सरापा है तमाम॥

कोई दुनिया में तअल्ली से न मुमताज़ हुआ।
सर यहाँ तू ने झूकाया तो सर-फराज़ हुआ॥

बात-चीत करने की शैली

आपके बेमिसाल सरापा के भाँति ही आपके बात करने का ढंग भी निराला था। आपके कथन में मनमोहकता और मिठास भरी होती थी। एक बार आपकी बातें सुनकर बहुत दिनों तक हृदय चटखारा लेता रहता था। चुप-चाप रहने की आदत थी। सदैव दृष्टि नीची होती थी। आपके वाक्य छोटे होते थे। बातें धीरे-धीरे और जल्दी होती थीं। शब्दों को दोहराने की आदत थी। आपकी जुबान में कुछ कम्पन थी। आपकी बातें अबोध बालकों जैसी सीधी-सीधी होती थीं। वाक्य अत्यन्त संक्षिप्त होते थे। जो चाहने वालों को व्याकुल कर देते थे। आप बातों-बातों में कठिन से कठिन गुत्थियाँ सुलझा देते थे। आपके मीठे और मधुर वचन दुखी

दिलों का दुःख दूर कर देते थे। आपके खामोश रहने में भी एक प्रत्यक्ष शान दिखाई देती थी। लोग इच्छुक रहते थे कि आप कुछ कहें और लोग लाभान्वित होवें। प्रत्येक दिलों की दशा आप जानते रहते थे। जब आवश्यकता होती या समझते तब बोलते थे। कभी ठहाका मार कर नहीं हंसते। यह जरूर था कि मुस्कुराते हुए जान पड़ते थे। किसी से बात को हुज़ूर लम्बा करना नहीं चाहते, जहाँ तक होता बातें जल्द ही समाप्त कर देते थे। आप अधिकांश चुप रहा करते थे। आपके बात करने की अनोखी शान थी। जिससे आप बात करते वह रोमान्चित हो उठता, अपना होश खो देता था तथा मुहब्बत में मस्त हो जाता था।

श्री मिर्जा मुहम्मद इब्राहीम बेग शैदा वारसी (जो हुज़ूर वारिस पाक के निकट रहने वालों में विशेष स्थान रखते हैं) लिखतें है:- दरभंगा में नवाब सादिक अली खाँ के मकान पर आप विद्यमान थे। चार से छः बजे शाम के बीच एक अरब निवासी आप की सेवा में उपस्थित हुए। आपने केवल इतना ही कहा 'मदनी साहब कल आपकी खातिर हो जायेगी।' दूसरे दिन आपके चेलों और आप पर विश्वास करने वालों की एक अच्छी भीड़ नवाब सादिक अली साहब के द्वार पर लगी थी। आप नवाब साहब के मकान से बाहर आये। अरबी साहब भी हाजिर थे। आपने उनको 'एहराम' पीले वस्त्र का एक टुकड़ा प्रदान किया जो नीले रंग का मलीना था और कहा 'लो यह तुम्हारा हिस्सा है।' अरबी महोदय ने वह टुकड़ा लेकर दर्दनाक आह की तथा व्याकुल होकर अपने वस्त्र फाड़ डाले और तड़पने लगे। सभी उपस्थित गण भी एक विशेष अवस्था में आ गये पर हुज़ूर मुस्कुराते हुए कहते थे 'मदनी साहब को यह क्या हो गया?' अंततः जब आप बिस्तर पर आकर बैठे तो अरबी महोदय को उसी दशा में बुलाकर फकीरी वस्त्र प्रदान किया। उनका नाम अरबशाह रखा और आदेश दिया सादिक अली खाँ के बंगला में रहा करो। यह भी कहा:-'यदि दिल घबराये तो मदीना शरीफ चले जाना, जुमा के दिन हम से भेंट हुआ करेगी।' वास्तव में इस वाक्य का 'लो यह तुम्हारा हिस्सा है' का अर्थ था जिसने अरबी महाशय को दर्द से भर दिया।

मौलवी सैय्यद शर्फुद्दीन साहब (आनरेबुल मेम्बर एक्जीकेटिव कौन्सिल बिहार) कहते हैं कि एक बार हुज़ूर वारिस पाक पटना पधारे और मुझे आदेशित किया 'तुम मेरे साथ देवा चलो।' मैं अपने मन में सोचने लगा ख़ुदा ने मुझे दो बच्चे दिया एक बेटा और एक बेटी और दोनों को चेचक निकल आई है आखिर इनको किस पर और

Scanned with CamScanner

कैसे छोड़ कर जाऊँ। अंततः मैं सरकार की सेवा में हाजिर हुआ। हुजूर ने अपने आप एक किस्सा कहना आरम्भ किया जिसका अर्थ यह था कि मुहब्बत में माता-पिता, माल-दौलत, धर्म-संसार सब छूट जाता है। यह कह कर मुझे आदेश दिया 'वालिस्टर मेरे साथ चलो।' मैंने हाँ कहा और हुजूर के साथ हो लिया। पुनः हमने कहा कि हुजूर हकीम मुबारक हुसेन साहब सफर करना पसन्द करते है। आपने उनकी ओर मुंह करके कहा 'हकीम जी जितना गाँव जवान और बनफशा को याद रखते हो उसी कदर मुझे भी याद रखा करो।' मैं नहीं कह सकता कि यह वाक्य कितना प्रभावकारी था और किस विशेष अदा में कहा गया था कि हकीम जी भी प्रेम रोग के रोगी बन गये। वह भी हुजूर के साथ चलने को तैयार हो गये।

खान बहादुर मौलवी बाकर खाँ साहब वारसी पेनशिनोज डिप्टी कलक्टर राय बरेली जो एक शरीयत (इस्लाम धर्म के कानून) पर चलने वाले बुजुर्ग हैं। ब्यान करते हैं कि एक बार वारसी दरगाह में मैं हाजिर था। एक हिन्दू साधु परिक्रमा करते हुए एक विशेष दूरी चलकर हुजूर के सामने उपस्थित हो अपने ढंग से दण्डवत कर चरण चूमे तथा चुपचाप खड़े हो गये। देखने से जान पड़ता था कि इनका कोई विशेष उद्देश्य था। इस समय किसी सेवक ने एक व्यक्ति से संकेत किया कि इनको सीधा दिला दो। तत्काल साधु ने कहा 'मैं सीधा लेने हेतु इतना कष्ट झेलकर नहीं आया हूँ। मेरी गरज पूरी होनी चाहिये।' हुजूर ने उसकी ओर देखकर केवल दो शब्द कहा 'अच्छा जाओ।' साधु महाराज प्रसन्नता से जोश में आ गये और आनंदित हो उछलते कूदते चले गये। मानो उनकी मनोकामना पूरी हो गयी। सुनने वालों के समझ में तो कुछ हाथ न लगा किन्तु साधु अपनी कामना के पूरी होने का निरीक्षण करते हुए चला गया। श्रोतागण हुजूर के कथन का कुछ अर्थ समझने से असमर्थ होते किन्तु जिसके प्रति कहा जाता वह अपनी उद्देश्य पूर्ति को देखकर प्रसन्न हो उठता था।

मौलवी सैय्यद ग़नी हैदर शाह का कथन है कि मौलवी सैय्यद मुहम्मद करीम साहब रज़ा चिश्ती नजामी, आरंभ में हदीस की शिक्षा देते थे। जाहिरी शरीयत में सुदृढ़ थे किन्तु आन्तरिक ज्ञान से सहमत न थे। हदीस पढ़ाना आपने छोड़ दिया और कुछ दिन अपने घर पर ही पड़े रहे। फिर मौलवी साहब ने बरेली जाने का इरादा किया। संयोग से उसी समय हम लोग देवा शरीफ जा रहे थे। स्टेशन पर मौलवी साहब से मुलाकात हो गई। हम लोगों की दिलजोई के लिए मौलवी

साहब भी बाराबंकी स्टेशन पर साथ ही उतर गये और देवा शरीफ भी गये। दूसरे या तीसरे दिन संध्या पश्चात् मौलवी साहब ने कहा 'हम भी मिलना चाहते है।' हम अपने साथ लेकर हुजूर की खिदमत में हाजिर हुए। हुजूर उस समय लेटे हुए थे। मैंने हुजूर के हाथों को चूम कर कहा कि मौलवी साहब आपके दर्शन के लिए आये हैं। हुजूर उठकर बैठ गये। मौलवी की ओर देखते हुए कहा 'मौलवी साहब! मौलवी साहब! हम तो किताबें भूल-भूलाये गये।' ग़नी हैदर साहब का कथन है कि मैंने हुजूर से कहा मौलवी साहब भी भूल रहे हैं। फिर मौलवी साहब की ओर हुजूर ने देखते हुए कहा '**अल कलेमतो लफज़ुन वजेअ ले मजी मुफरदिन, इन्नल्लाहा ख़लका आदमा अला सूरतेही**, है न, बस देखा करो।' हम लोग आपने पढ़ा है तो भी भूल -भूलाये गये।' पुनः आपने कहा 'मौलवी साहब ! मौलवी साहब को लेकर ठहरने की जगह पहुंचे और पूछा फिर मौलवी साहब ने जो कुछ बताया मेरी याद के मुताबिक यह है- हम छात्रों को हदीस पढ़ाते थे तो एक छात्र के पाठ में ये हदीस आई (**इन्नल्लाहा ख़लका आदमा अला सूरतेही**) अर्थात् बेशक अल्लाह ने आदम को अपनी सूरत पर पैदा किया है। उसने प्रश्न किया कि ख़ुदा की तो कोई सूरत नहीं फिर यहां सूरत का क्या अर्थ है? मैं जो बराबर पढ़ाता था वही बताया किन्तु उसके मन को विश्वास नहीं होता था। वह छात्र प्रत्येक दिन मुझसे पूछता था। चूंकि अपने अर्थ पर मुझे भी विश्वास नहीं था। अतः मैं उसके चक्कर में पड़ गया। बहुत दिनों तक किताबें उलटता-पलटता रहा किन्तु वास्तविक अर्थ नहीं मिला। मेरी तबियत पढ़ने-पढ़ाने से उदास हो गई। यही सोचा करता था कि सूरत कैसी है और सूरत का क्या अर्थ है? इस उलझन को आज हाजी साहब ने खोल दिया। उक्त मौलवी साहब घूम फिर कर दिल्ली में निवासित हुए और आज़ाद फ़कीर के नाम से मशहूर हैं।

हुजूर की बातें वास्तविकता पर निर्भर होती थी। आप समस्याओं पर बहस नहीं करते थे। एक बार की बात है। शाह अब्दुर्रहमान दहलवी हज़रत हाजी साहब से मुलाकात करने गये। बातचीत के सिलसिले में अद्वैत्यवाद का मसला पूछा। आपने कहा 'जिस पर अद्वैत्यवाद खुलता है, वही जानता है। ज़बान से इसका भेद कहना कठिन है।' इससे यह विदित है कि आप मसले को समझते थे। उसका संक्षिप्त उत्तर दे देते थे। मौलाना हकीम सैय्यद अली नक़ी शाह जो नक़्शबन्द के ख़लीफ़ा थे लिखते हैं कि एक बार हज़रत भिसवाँ फतेहपुर में ठहरे थे। न्याज़

Scanned with CamScanner

अहमद साहब जुमा के दिन मस्जिद में आपके प्रति कठोर वचन प्रयोग कर रहे थे। अचानक आप मस्जिद में आ गये और केवल इतना सा कहा 'मौलवी साहब आप अपनी बना चुके। मैं तो अपने दुख दर्द में फ़ंसा हूँ।' इतना कहना था कि मौलाना चीख़ मार कर रोने लगे। मस्जिद के सभी लोग रोते-रोते बेहोश हो गये। आपके साधारण वाक्य बिजली की तरह प्रभावकारी थे। मध्यम पुरुष तथा अन्य उपस्थितगण पर तत्कालिक प्रभाव छा जाता था।

हाजी अवघट शाह वारसी जब अपने पूज्य पिता के उर्स की आज्ञा लेने आये तो आपने तीन चादरें देकर कहा 'लो ये चढ़ा देना।' हाजी अवघट शाह कहते हैं कि मेरे पिता का मज़ार और एक फ़कीर सोहराब शाह का, दो मज़ार मस्जिद में थे किन्तु तीसरी चादर की बात समझ में न आती थी। अत: दो चादरें चढ़ा दीं और तीसरी रख लिया। स्वप्न में हुज़ूर कहते हैं कि इस मस्जिद में अमुक स्थान पर एक और मज़ार है। सुबह उठकर उस जगह को खोदवाया और वहाँ एक मज़ार मिला जिस पर चादर चढ़ा दिया। इसके पूर्व किसी को इस मज़ार का ज्ञान नहीं था। इसी प्रकार की एक घटना फजीहत शाह साहब वारसी की बीती है। जिसको मौलवी पूज्य अब्दुल ग़नी वारसी लिखते हैं। जब हुज़ूर बिहार प्रदेश के मौज़ा बेलछी शरीफ में पधारे थे। फ़जीहत शाह भी हाज़िर थे। उस समय एहराम न मिलने के कारण उनका पैतृक नाम ज़हूर अली था। फ़जीहत शाह हुज़ूर से अपने दादा पीर के उर्स में सम्मिलित होने के लिए आज्ञा लेने गये। आपने कहा 'अच्छा जाओ और एक काम और भी करते जाओ।' जब फ़जीहत शाह उर्स से लौटे तो मालूम हुआ कि उनके पीरज़ादा ग्यासुद्दीन साहब के एक मुरीद की ऐसी हालत है कि बेरोक टोक पीर, पैग़म्बर, औलिया, अम्बिया सबको गाली देते हैं। फ़जीहत शाह ने हुज़ूर की पाक रूहानियत से उसकी इस हालत को दूर कर दिया। उस समय से समझ में आया कि काम यह था।

सैय्यद हामिद अली शाह चिश्ती क़ादिरी लिखते है कि मुझ से मिर्ज़ा मुनियम शाह वारसी ब्यान करते है कि एक बार मैं तीन सौ रुपये का कर्ज़दार था। ऋण चुकाने की कोई सूरत नहीं बनती थी। एक दिन मैं सरकार वारिस पाक की सेवा में हाज़िर हुआ। आपने मुझे सम्बोधित कर कहा 'किस्सा चार दरवेश कर्ज़ अदा करने के लिए अच्छा है।' इतना कहकर आप चुप हो गये। मैं मकान पर आकर किस्सा चार दरवेश तीसरी बार ख़त्म किया था कि मुझको ताअल्लुकदार

साहब कोहबरा ने बुलाकर तीन सौ रुपये प्रदान किया और कहा कर्ज़ दे दो।

मौलाना शायक वारसी साहब '**तोहफ्तुल असफिया**' में लिखते हैं कि देवा शरीफ के कुछ सम्मानित लोग आपके पास आए और कहा कि हमारे कुछ अज़ीज फौजदारी के मुकदमें में फंस गये हैं। हुज़ूर पाक ने कहा 'हम क्या करेंगे?' अगन्तुक निराश हो चलने को तैयार हुए ही थे कि आपने उनकी ओर देखकर कहा

'दोसता रा कुजा कुनी महरूम तू किवा दुशमनाँ नज़र दारी'

अर्थ - जब तू दुश्मनों की सुरक्षा करता है फिर दोस्तों को कैसे निराश करेगा।

हुज़ूर सरकार वारिस पाक के कथन, उप-कथन में संकेत अधिक होते थे जैसे :- ख़ुदा मालिक है। ख़ुदा में सब क़ुदरत है। ला तकनतू मिर्रहमतल्लाह। इसी प्रकार सांकेतिक बातें आपके मुख से निकलती थीं जिनसे दीन दुखियों को अपनी सफलता का विश्वास हो जाता था। आप भविष्य की बातें इस प्रकार ब्यान करते जैसे कोई प्रश्न किया जाता है अर्थात् कोई पूछता है। जिसकी मिसाल हेतु अब्दुल ग़नी साहब वारसी, बिहारी की एक घटना काफी है। बेलछी में आपने कहा 'अब्दुल ग़नी तुम्हारी तरक्की हो गई।' मौलाना अब्दुल ग़नी साहब चूंकि आपकी कथन शैली के जानकार नहीं थे। अत: आपने सादगी से कहा 'नहीं हुज़ूर।' हज़रत ख़ामोश हो गये। उक्त मौलाना का कहना है कि मुरीद बनने के पश्चात् सन् १८९१ ई० में जब मैं हैदराबाद पहुँचा तो मेरा वेतन दो सौ रुपये से बढ़कर सवा तीन सौ रुपया मासिक हो गया। यही वेतन दस-बारह वर्ष तक मिलता रहा। मुझे शंका बनी रहती थी कि मेरा विभाग अस्थाई है। इसके टूटने पर मुझे किसी अन्य विभाग में नौकरी मिले या न मिले। उसी समय मैंने अपनी जन्म भूमि को जाने का इरादा किया तथा अवकाश लेकर वापस हुआ, सोचा सरकार वारिस पाक का चरण स्पर्श करता चलूं। मैं आपकी चौखट पर पहुंचा। जब हुज़ूर के समक्ष हाज़िरी हुई तो आपने फ़रमाया 'अब्दुल ग़नी तुम नौकर हो ना।' अब चूंकि मैं हुज़ूर की वाक्य शैली का ज्ञान रखता था इसलिये अर्ज़ किया 'हाँ हुज़ूर, नौकर हूँ।' अपने घर से जब छुट्टी पूरी करके वापस गया तो मैं दूसरे मुहकमे में चला गया और क्रमश: मेरी तनख्वाह ३०० रु० से ५०० रु० हो गयी। यह सब हुज़ूर वारिस पाक का सदक़ा था। आपकी शान अत्यन्त निराली थी। आपके सामने पहुंचकर अपनी आवश्यकता कहने की ज़रुरत नहीं होती थी। पहुंचते ही सब कठिनाईयां दूर हो जाती थीं।

Scanned with CamScanner

समयानुसार प्रश्नकर्ता ही उसका उत्तर बन जाता था। ठाकुर पंचम सिंह रईस मलावली, जिला मैनपुर जो जापक और साधक बुजुर्ग हैं। ब्यान करते हैं कि मुझसे काज़ी बख़्श अली साहब ने कहा कि एक व्यक्ति हुज़ूर वारिस पाक की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। अपने जोश उमंग तक ख़ुशी को इस पद द्वारा व्यक्त किया -

न दारम ज़ौके रिन्दी न ख्याले पाक दामानी।
मोरा दीवानए ख़ुद कुन व हर रंगे कि मीदानी॥

पद का अर्थ है - हे गुरु! न तो मस्ती का शौक रखता हूँ और न मुझे पवित्र बनने का ख़्याल है, आप जिस भांति चाहें मुझे दिवाना बना लें।

हुज़ूर वारिस पाक ने एक बार सुना और दो बार पद को उस व्यक्ति से पढ़वाया तीसरी बार पद समाप्त होते ही वह अपने आपे से बाहर हो गया और कपड़े फ़ाड़कर चला गया। मानो इस पद की सम्पूर्ण दशा उस पर छा गई। हुज़ूर पाक ने अपनी आदत के अनुसार एक बार और दो बार उससे पढ़वाया और उनका प्रश्न ही उसका उत्तर बन गया।

जिस प्रकार हुज़ूर द्वारा दिये गये उत्तर कभी तो तत्काल ही मिल जाते थे अर्थात् पूरे उतरते थे और कभी कुछ दिनों बाद हक़ीकत को पहुंचते थे किन्तु वह उत्तर प्रश्नकर्ता को फ़ौरन ही मिल जाते थे। हकीम अह० अली साहब वारसी लिखते हैं कि शेख़ हामिद अली साहब जो रियासत महमूदाबाद के तहसीलदार थे। ब्यान करते हैं कि मेरे बड़े भाई साहब ने जो आपकी ग़ुलामी में थे। एक आदमी द्वारा हुज़ूर को कह भेजा कि आपके पितामह (जिनके ऊपर मेरी जान न्योछावर है) सलअम ने कहा कि **मनकाला लाएलाहा इल्लल्लाह फहोवा दोखला फिल जन्नते**। अनुवाद - जिसने कहा ला ईलाहा इल्लल्लाह वह जन्नत में प्रवेश किया। हुज़ूर मुझको इसका अर्थ और बारीकी इस तरह समझा दें कि मेरे दिल को शान्ति और संतोष प्राप्त हो जाय। हुज़ूर ने फ़रमाया 'देखा जायेगा' और ख़बर लाने वाले को बिदा कर दिया। उसने मेरे भाई साहब को यह छोटा सा जवाब सुना दिया। पूरे तीन वर्ष बीतने के पश्चात् अब भाई साहब बीमार पड़े और उनकी दशा दिनों दिन गिरती गई तो संयोग से जुग्गौर की एक महिला देवा शरीफ सरकार का दर्शन करने गयी थीं, आपने उनसे कहा कि जुग्गौर कब जाओगी? उसने कहा कि कल सुबह। आपने फ़रमाया कि हामिद अली तहसीलदार के भाई के पास जाकर कह देना कि तुमने जो हदीस **मन-काल लाईलाहा इल्लल्लाह** का अर्थ पूछा था और उसकी

वास्तविकता जानना चाहा था, उसका समय यही है। अब कहो कि दखलल जन्नत के भागीदार हो जाओ। शेख़ हामिद अली कहते हैं कि वह महिला शाम को मेरे मकान पर पहुंची और भाई साहब के निकट जब वह जाकर देखा कि मरणासन्न हैं तो उसने चिल्लाकर कहा- मुझको हज़रत ने आपके पास भेजा है और यह फ़रमाया है। यह सुनकर वह चौंक पड़े और समाचार पाते ही कलम-ए-तौहीद जुबान से दोहराने लगे। इसी दशा में उनकी आत्मा परलोक सिधार गई।

हुज़ूर वारिस पाक की बातों की निराली शान और निराला अंदाज़ था। कभी-कभी एक ही बात में बहुत से लोगों को जवाब मिल जाता था और लोग अपने मतलब की बात सुन समझकर प्रसन्नचित हो जाते थे। मिर्ज़ा इब्राहीम बेग शैदा वारसी नक़ल करते है कि एक बार मैं हुज़ूर के पास था। एक ही समय चार वारसी ग़ुलाम हाज़िर हुए। वे अभी कुछ कह भी नहीं पाये थे तब तक आपने उनसे कहा जो ख़ुदा पर भरोसा करता है उसकी सहायता ख़ुदा ज़रूर करता है और तुम तो आज रहोगे कल चले जाना है। सिर्फ़ इतना कह कर उनको छुट्टी दे दिया। शैदा मियां कहते हैं कि उनको अधिक ख़ुशी का कारण पूछना चाहिये। रात में उनके रहने के स्थान पर पहुंचकर उनसे पूछा। उनमें से एक ने कहा कि मैं अपने हाई कोर्ट के मुकदमें में डिग्री का इच्छुक था। दूसरे आदमी को अपने धार्मिक शंका समाधान में और तीसरे साहब की इच्छा थी कि कुछ ख़ुदा को याद करने के नियम और शैली की शिक्षा चाहते थे। चौथे ईश्वर के होने का रहस्य समझना चाहते थे। ये सभी अपनी सफलता की ख़ुद में मस्त थे। कुछ दिनो के बाद इन सब से भेंट हुई। हमने देखा कि मुकदमे वाला हाई कोर्ट में मुकदमा की सफलता प्राप्त कर लिया, दूसरे की शंका दूर हो चुकी थी, तीसरे (अल्लाह) के ज़िक्र में संलग्न थे और चौथे साहब हमा ओस्त, सब कुछ वही है का दम भर रहे थे। आपकी विशेषता से भरे हुए वचन का सही अर्थ पाना एक कठिन कार्य था। ईश्वर ने आपको अन्य ख़ूबियों के साथ वाकपटुता भी दिया था। आप ईश्वर संलग्न और विलीन हुए भी लोगों के सवालों का जवाब बरदस्ता अर्थात् तुरन्त प्रस्तुत करते थे. जो प्रश्न जिस तरह का होता था, जवाब वैसा ही होता था। जो दलील से काटा नहीं जा सकता था। आपके प्रत्येक शब्द में आन्तरिक रहस्य छुपे हुए थे और आपके पुनीत होंठों से जो शब्द निकलते थे, वे हकीकत का दर्पण होते थे।

आपने ज़ाहिरी ज्ञान तथा इल्म पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया क्योंकि आपका

Scanned with CamScanner

दिल ईश्वर प्रेम से भरा हुआ था -

अक्ल को कुछ न मिला इल्म में हैरत के सिवा।
दिल को भाया न कोई रंग मोहब्बत के सिवा॥

आप विद्या और गुण में सबसे अच्छे थे। किसी इल्म और ज्ञान में कभी आप चुप नहीं पाये गये। अपनी उर्दू भाषा के सिवा अन्य भाषाओं में भी आप बातचीत कर लेते थे। आपकी सेवा में हाफिज, कारी, आलिम, पंडित सभी आते थे और आप उनके रूचि के अनुसार बातें करते थे।

आपके अध्ययन में तिलावत कलाम मजीद, मसनवी मौलाना रुम मलिक, मुहम्मद जायसी की पद्मावत और हंस जवाहिर भाषा अधिक देखी गई है। आप सातों केरअतों (क़ुरआन पढ़ने की शैली) में क़ुरआन पाक पढ़ते थे और जब कभी कोई क़ारी मिलता तो उसे क़ुरआन शरीफ़ पढ़ने की बारीकियां समझाते थे। विद्या और ज्ञान वालों से मिलकर आप बहुत ख़ुश होते थे। कलाम पाक की तफ़सीर करके रहस्य और बारीकियों का बोध कराते थे। मसनवी तथा पद्मावत के पद्यों की व्याख्या करते थे तथा रहस्यों को खोलकर बतलाते थे।

मौलाना सैय्यद अब्दुल ग़नी साहब लिखते हैं कि हमने बेलछी में हुज़ूर को देखा है कि प्रातः मसनवी शरीफ मंगवाते और उसके पदों को पढ़ते थे। जो पद जिसके लिए उचित होते उसकी ओर मुंह करके उसका अर्थ बतलाते थे। हुज़ूर वारिस पाक को क़ुरआन शरीफ से बहुत लगाव था। बुढ़ापे में कमज़ोर होने के पूर्व आप मीलाद की महफ़िलों में जाते और पंच सूरा ख़ूब पढ़वाते तथा स्वयं भी पढ़ते थे। जीवन के पूर्वार्द्ध में आप रोज़ाना पूरा क़ुरआन शरीफ़ पढ़कर समाप्त करते थे। यात्रा करने की दशा में भी आप एक कोस चलने में तीन अध्याय और दस कोस में तीस अध्याय अर्थात् पूरा क़ुरआन समाप्त कर देते थे। तालिबे इल्म, उस्ताद तथा माता-पिता की इच्छा होती थी कि ख़त्म क़ुरआन की रस्म पूरी होती है वह कभी भूलता नहीं है।

हुज़ूर वारिस पाक की क़ुरआन की जानकारी का पता इस घटना से भलीभांति ज्ञात होता है। एक बार की बात है कि मौलवी अब्दुल समद साहब जो मदरसा देववन्द से शिक्षा पाये हुए थे। संयोग से चौधरी लताफ़त हुसेन रामदाना, जिला- सीतापुर के मकान पर किसी जरूरत से आ गए थे। जहाँ हुज़ूर वारिस पाक ठहरे हुए थे। उक्त मौलाना सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बेमिसाली में किसी

व्यक्ति से बात कर रहे थे जिसमें आयत शरीफ़-लक़द जाअकुम रसूलुम मिन अनफो से कुम। हुज़ूर वारिस पाक सुनते ही मौलवी साहब से कहने लगे -

इस आयत पाक की केरअत इस तरह भी होती है अर्थात् क़ुरआन शरीफ की इस आयत को इस प्रकार भी पढ़ा जाता है- लक़द जाअकुम रसूलुम मिन अनफो सेकुम। यदि आयत के अक्षर फ को फो के स्थान पर फ' पढ़ा जाय तो अर्थ आपके उद्देश्य के विलोम होगा और यही आयत आपके दावे को झूठा सिद्ध कर देगी।

मौलवी अली अहमद खाँ वकील आगरा जो शरीअत पर चलने के पाबन्द थे और उनका अरबी भाषा का ज्ञान उत्तम था। लिखते हैं कि १८७२ ई० में एक रिश्तेदार की शादी में शिकोहाबाद जाने का संयोग हुआ। वहां पहुँचने पर ज्ञात हुआ कि हुज़ूर वारिस पाक शिकोहाबाद में पधारे हैं। मुझे भी जाने का शौक हुआ किन्तु मेरे कुछ रिश्तेदार जो हुज़ूर कि कदमबोसी के लिए गये थे बिना कदमबोसी किये हुए ही लौट आये थे। कारण यह बताया कि हुज़ूर मकान के अन्दर थे और वहाँ औरतों की भीड़ थी। स्त्रियां आपके सामने बेधड़क आती हैं। ये सुनकर मेरी कदमबोसी की इच्छा और लालसा जो कुछ भी थी समाप्त हो गई। १८७२ ई० से १८९५ ई० तक किसी प्रकार का कोई विचार मेरे मन में नहीं आया। सितम्बर १८९५ ई० में मुझे दिवानी अदालत आगरा में हकीम अमजद अली साहब का एक तार मिला कि हुज़ूर वारिस पाक भोपाल से आने वाले हैं। जब वह आगरा पधारें तो मुझे तुरन्त सूचित करना। अभी मैं कचहरी में ही था कि हकीम अमजद अली फिरोज़पुर से आये और उन्होंने कहा कि हुज़ूर नगर में आ चुके हैं। इसी समय रेल गाड़ी से इटावा जाने वाले हैं। आगन्तुक हकीम साहब के साथ ही मैं स्टेशन पहुंचा। वहां दर्शनार्थ एक अच्छी ख़ासी भीड़ लगी हुई थी। हुज़ूर तक पहुंच पाना कठिन था। हमने प्रथम श्रेणी का टिकट लिया। हुज़ूर तक पहुंचा और ख़ामोशी के साथ बेंच के नीचे बैठकर डरते-डरते हुज़ूर के पाँव मुबारक पर हाथ रखा। आपने पूछा कौन है? सेवक ने कहा 'हकीम अमजद अली फीरोज़पुरी।' फिर हकीम साहब ने मेरा नाम बताया और ये भी कहा कि कदमबोसी के लिए आये हुए हैं। आपने अपने मुख से चादर हटाया। इसी समय १८७२ ई० की बात मेरे मन में याद आ गई और मैं बहुत लज्जित हुआ। हुज़ूर ने मुझ से कहा 'हर आदमी पर शरीअत की पाबन्दी और ताबेदारी लाज़िम है।' इसके बाद कुछ क़ुरआन की आयतें, कुछ हदीसें और कुछ मौलाना रूमी के पद सुनाते रहे। आपका यह छोटा सा बयान

Scanned with CamScanner

सुनकर मैं अचम्भे में पड़ गया। यही सोचता रहा हुज़ूर 'फ़क़ीह' भी हैं और उत्तम ढ़ंग से हदीस और क़ुरआन शरीफ की व्याख्या करने में भी निपुण हैं। फ़कीरी तो आपकी हद से अधिक निराली है। १८७२ ई० की जो बदगुमानी थी उसकी सफाई है। फिर इटावा पहुँचकर देवा शरीफ हाज़िर हुआ और २ अक्टूबर १८९५ ई० से ६ अक्टूबर ९५ ई० तक सेवा में उपस्थित रहा। उस समय आपकी कदमबोसी करना आसान कार्य नहीं था। हज़ारों दर्शनार्थी और चाहने वालों की भीड़ लगी रहती थी। अमीर-गरीब, दीन-दुखी जुटे रहते थे। लोग एक पर एक गिरते, ठोकरें खाते तब कहीं हुज़ूर के चरणों तक पहुँच होती थी। ६ अक्टूबर को आपकी ग़ुलामी से सम्मानित होकर वापस हुआ।

जिस समय हुज़ूर वारिस पाक जौनपुर में ठहरे हुए थे। मौलाना अब्दुर्रहीम साहब जो उस समय दहरिया कहे जाते थे। एक दिन अपने चेलों को साथ लेकर वारिस पाक की ख़िदमत में हाज़िर हुए और पूछा 'यदि इबलीस (शैतान) ने ख़ुदा को छोड़ आदम का सिजदा नहीं किया तो क्या बुरा किया? आख़िर उसको शैतान मलऊन क्यों कहते हैं?' हुज़ूर ने जवाब में कहा 'मौलवी साहब मोहिद (ख़ुदा को मानने वाले) तो शैतान और रहमान में फ़र्क नहीं करते और आशिक शैतान को बुरा नहीं मानते। इबलीस की घटना एक विशेष सबक है। परन्तु शरीअत के अनुसार इबलीस ने यह ग़लती ज़रूर की कि आदम को ग़ैर समझा। ख़ल्क आदम अला सूरतही का ध्यान न रखा।' मौलवी साहब यह सुनकर प्रभावित हुए और वारसी हो गये। हुज़ूर पाक किसी से वाद-विवाद नहीं करते न वाद-विवाद को अच्छा मानते थे। बहुत से प्रत्यक्ष इल्म तथा ज्ञान वाले आपकी ख़िदमत में आते पर आप उनको मना नहीं करते वरन् उनकी तसल्ली कर देते थे। यही कारण था कि आगन्तुक आपकी ग़ुलामी स्वीकार कर लेते थे और यदि उनके भाग्य ने साथ नहीं दिया तो अपने विरोध के कारण लज्जित होकर बात करने की हिम्मत नहीं करते थे।

मुंशी अब्दुल ग़नी खाँ साहब साबिक नायक रियासत महुवना, जिला-सुलतानपुर और अब्दुल ग़नी साहब रायबरेली लिखते हैं कि एक बार हम देवा शरीफ में हाज़िर थे। हुज़ूर की ख़िदमत में एक आलिम (धर्म के ज्ञाता) पंजाब से चलकर आठ या नौ बजे प्रात: हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुए। अपने इल्म के अहंकार में बिना नमस्कार, बन्दगी के ही प्रश्न किया कि अगर आप कुछ जाहिरी इल्म पढ़े होते तो शरीअत के मसलों की जानकारी होती। आपने कहा 'मौलवी

साहब आप ज्ञान अथवा इल्म के सम्बन्ध में पूछते हैं।' मौलवी ने कहा कि यही इल्म अरबी, फारसी में जो प्रचलित है। आपने पुन: कहा 'मौलवी साहब इस इल्म का यही फायदा है न कि पेट भर रोज़ी मिल जाय और इच्छाओं की पूर्ति हो। बस ख़ुदावन्द ताला में रोज़ी देने का गुण मौजूद है। उसका नाम रज़्ज़ाक (रोज़ी देने वाला) है। इस नाम पर जिसको तसदीक (पूर्ण विश्वास) हो जाय उसको इस इल्म की क्या ज़रूरत है? केवल उसके एक नाम से सब काम निकल सकते हैं, बस मैं उसकी सन-अतेरज़्ज़ाकी (रोज़ी बांटने के गुण) पर ईमान रखता हूँ। इसलिये सबको बेकार और बेफायदा समझकर छोड़ दिया है। मौलवी साहब इल्म वही सीखना चाहिये जो मरने के वक्त काम आये और मौत के वक्त कलमा ज़ुबान से निकले। यदि ज़ुबान से कलमा न निकला तो इल्म किस काम का।'

इस पर मौलवी साहब ने कहा कि मैं अरबी, फारसी, फलसफा, मुनातिक, हदीस, तफसीर और फेका सबका जानकार हूँ। क्या मरने के वक्त मेरे मुँह से कलमा न निकलेगा। हुज़ूर ने ब्यान किया कि कुछ दूर और असम्भव मत जानिये। आपने सुना होगा कि दो, तीन दिन पहले से लोगों का मुंहबन्द और ज़ुबान उलट जाती है। मौलवी साहब ने फिर कहा कि जिसका मुँह बन्द हो जाएगा, ज़ुबान के इशारे से कहेगा, ज़ुबान बन्द हो जायेगी तो दिल से कहेगा। आपने फरमाया कि अधिकांश लोगों का दिल पलट जाता है। बहुत से लोगों की दशा पागलों जैसी हो जाती है। कुछ लोगों पर ऐसा सकूत (शान्ति) छा जाती है कि हिल नहीं सकते यहाँ तक कि होश खो देते हैं। मृत्यु का भय उनकी ज्ञानेन्द्रियों का नाश कर देता है। दिल बेकरार होश हवास बदले हुए होते हैं। फिर दिल में एकाग्रता कहाँ? इन बातों को सुनते ही मौलवी साहब की दशा बदल गयी। उन्होंने अपनी पगड़ी फेंक दी और आपके पैरों में गिर कर कहने लगे कि जैसा सुना था उससे अधिक पाया। आपके सामने मैं उम्मी (बिना पढ़ा लिखा) हूँ। ख़ुदा के लिए अपनी ग़ुलामी प्रदान कर इस गरीब को सम्मानित करें। मेरी आन्तरिक दशा में घोर परिवर्तन हो रहा है मेरा मन घबरा रहा है। हो सकता है कि ये मेरे जीवन की अन्तिम बेला हो। हुज़ूर वारिस पाक ने मौलवी साहब को अपनी गुलामी में शामिल कर लिया। मौलवी साहब ने फकीरी वस्त्र की इच्छा जाहिर की। हुज़ूर ने एहराम (पीला वस्त्र) प्रदान किया। मौलवी साहब के तीन चेलों को भी पीला वस्त्र प्राप्त हुआ और शेष अपने घरों को लौट गये। जाने वालों से मौलवी साहब ने कहा कि मेरे रिश्तेदारों से कह

Scanned with CamScanner

देना कि सब्र करें। मेरे हृदय की दशा बदल गई है। पुनः मौलवी साहब अपने तीनों चेलों के साथ नेपाल की ओर चले गये। आपके सामने कभी वाद-विवाद की नौबत नहीं आती। आप दो ही तीन वातों में सभी कार्य पूरा कर देते थे और यदि कोई व्यक्ति वाद-विवाद के निमित आया तो आपके व्यक्तित्व के प्रभाव से भयभीत को जाता और उनके मुख से कोई बात ही न निकल पाती थी।

मौलवी बशीरूज़्ज़मा साहब निवासी सन्डीला लिखते हैं कि मुंशी फज़ले हुसेन साहब गद्दीधारी हज़रत शाह मुनियम कन्जुल मारफत मुझ से कहते हैं कि एक बार दो अफ़ग़ानी मौलवी हुज़ूर के दरबार में आये। एक साहब बूढ़े होने के नाते बड़े और एक कम उम्र होने के नाते छोटे कहे जा सकते थे। इनकी बातों से जान पड़ता था कि ये लोग बहस करने हेतु आये थे। उन लोगों ने मुझ से कहा कि हाजी साहब नमाज़ नहीं पढ़ते हैं। इसलिये ये हदीस '**मनतरकस्सलात मोतअम्मीदन फ़कद कफ़र**', उनके ऊपर लागू होती है। अत्यन्त कठोरता से बात-बात पर इन शब्दों को दोहराते जाते थे। हम आपको कुछ नहीं कह सकते क्योंकि आप मेरे मेहमान हैं। आपको जो कुछ कहना हो उन्हीं के सम्मुख कहिये। किसी के पीठ पीछे कुछ कहना उचित नहीं है। उचित ये है कि आप भोजन कर लें और दोपहर की नमाज़ के पश्चात् हुज़ूर के अस्ताने पर चलिये फिर जो जी में आवे कहियेगा। किसी तरह वे लोग ख़ामोश हुए, खाना खाने के बाद हुज़ूर के सम्मुख जाने का इरादा कर ही रहे थे कि हुज़ूर वहीं पधारे और अपने ढ़ंग के अनुसार सलाम किया। दोनों साहब टकटकी बांधकर ताकते रहे, सलाम का जवाब देना भी भूल गये। मानो ये लोग पूरे बदहवास थे। हुज़ूर पाक ने दोनों से कहा 'उलमा की बड़ी शान है, आपका मकान कहाँ है? किस काम के लिए पधारे हैं? आपके नाम क्या है?' किन्तु वे दोनों आदमी तस्वीर अथवा मूरत बने बैठे थे और दोनों विस्मीत भाव से आपके रूप अनूप की ओर देखने में संलग्न थे। जब वे लोग किसी बात का उत्तर ही नहीं दिये तो हुज़ूर पाक ने कहा 'आप लोग हमारी भाषा नहीं समझते होंगे।' अतः पुनः आपने अरबी, फारसी में पूछा परन्तु वह लोग चुप रहे। आपने पूछा वेश भाषा से पंजाबी मालूम होते हैं। अतः फिर आपने पिशतू, पंजाबी, गुजराती इत्यादि में भी बातें कीं परन्तु दोनों साहब भौचक्का और हैरान बैठे रहे। आप उठ खड़े हुए कहा 'विचित्र लोग हैं। आये थे शस्त्रार्थ करने और कोई बात जुबान पर नहीं लाते।'

हुज़ूर चले गये लेकिन ये दोनों आदमी बुत बने बैठे रहे। उन पर ऐसी चुप्पी चढ़ी मानो उतरने को नहीं थी। मुंशी फज़ले हुसेन साहब कहते हैं कि मुश्किल से हमने उनको अस्र की नमाज़ में खड़ा किया। नमाज़ समाप्त करने के पश्चात् वह लोग हमारे निकट बैठ गये और चुप बैठे रहे। रात के भोजन के लिए हमने उनसे धीरे से कहा कि कुछ खा लिजिए। उन्होंने उत्तर दिया कि हमें भोजन की इच्छा नहीं है। नमाज़ बाद भी वह दोनों एक दूसरे के सामने चुप बैठे रहे। हम लोगों ने यह समझा कि अपने जप-तप में लगे हैं। पर दशा विचित्र थी। आधी रात के लगभग दोनों आपस में झगड़ने लगे। गाली-गुप्ता व जूतम पैजार की नौबत हो गयी। मैंने पहुंचकर उनको अलग किया फिर दोनों एक दूसरे को घूरते हुए बैठ गये। रात के अन्तिम पहर में फिर दोनों आपस में झगड़ने लगे। यहाँ तक की प्रातः छोटे मौलवी मस्जिद में एक ओर घायल पड़े थे। हमने उनको उठाया और वह उठकर हाथ मुंह धोकर फर्ज़ की नमाज़ पढ़कर हम से कहा कि हमको हुज़ूर का चेला बना दो। हमने पूछा कि मौलवी साहब कहाँ चले गये? उनहोंने कहा कि ख़ुदा जाने कहाँ भाग गये? हुज़ूर सरकार वारिस पाक की ख़िदमत में हम लोग पहुँचे। हुज़ूर ने अति प्रेम तथा स्नेह से छोटे मौलवी साहब को चेला बनाया और वह दो चार दिन रहकर अपने घर को चले गये। बाद में सुना कि बड़े मौलवी फतेहपुर सिसवा मस्जिद में पहुंचे। वहाँ मोअज़्ज़ीन (अज़ान कहने वाला) और पेश इमाम (आगे खड़े होकर नमाज़ पढ़ाने वाले) से खूब जूतम पैजार हुई और घायल होकर ख़ुदा जाने कहां भाग गये।

मौलवी नाज़िम अली साहब फज़ली निवासी कुरसी, बाराबंकी, सहायक प्रबन्धक, मदरसा आलिया फुरकानिया, लखनऊ की लिखित घटना है कि एक बार देवा शरीफ में मैं आपकी सेवा में हाजिर हुआ। आपने मुझसे कहा अब तो कुरसीमें कोई आमिल नहीं है, तुम्हीं हो कहकर आपने एक कसीदा अरबी भाषा का जिसकी भाषा कठिन थी और जिसका पढ़ना साधारण योग्यता के लिए कठिन था। मुझे देखकर सम्बोधित किया और कहा पढ़ो मैंने बिस्मिल्लाह कहकर जो पढ़ना आरम्भ किया तो आदि से अन्त तक शुद्ध उच्चारण से पढ़ा किन्तु आज हम उसको पढ़ने के योग्यता नहीं रखते हैं। ये सब हुज़ूर वारिस पाक की वाह्य शक्ति की देन है। आपको पुस्तकों को पढ़ने द्वारा ज्ञान नहीं था। वरन् उनकी शक्ति ईश्वर प्रदत्त थी। बड़े-बड़े फ़िलासफ़र और बोलने वाले प्रवक्ता की सांस बन्द हो जाती थी। जिस प्रकार की समस्या सामने होती आप उसी प्रकार उत्तर देते थे।

Scanned with CamScanner

सैय्यदना मारूफ साहब वारसी का कथन है कि एक बार हाजी वारिस पाक लखनऊ में आग़ा मीर की डयोढ़ी को शैदा मियाँ वारसी के मकान पर जा रहे थे। मैं भी साथ था। सड़क के किनारे दो पादरी भाषण दे रहे थे। सैकड़ो हिन्दू-मुसलमान वहाँ एकत्र थे। पादरियों के भाषण से हिन्दू तथा मुसलमान उत्तेजित हो गए और बात यहाँ तक बढ़ी कि झगड़े की नौबत आ गयी। पादरी लोगों ने हुजूर को आते देखकर उच्च स्वर से पुकारा और कहा हाजी साहब मेरी सहायता कीजिये। हुजूर पाक ने सैय्यद मारूफ शाह साहब को आदेश दिया जल्दी देखो, क्या मामला है? सैय्यद साहब तेज़ी से दौड़कर भीड़ को सम्हालने लगे तब तक हुजूर पाक भी पधारे। पूछने पर लोगों ने कहा कि दोनों पादरी रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सम्बन्ध में अनुचित शब्दों का प्रयोग कर रहे थे। सिर्फ स्वयं को तौहीद पर वरीयता देते थे। एक पादरी ने हुजूर से कहा कि हम तो केवल अपने धर्म की सत्यता ब्यान कर रहे थे। आप ही इन्साफ करें। मानव स्वभाव की यह विशेषता है कि बिन बाप के बच्चा पैदा नहीं हो सकता है। क़ुरआन शरीफ में भी ईसा मसीह बिना बाप के हैं। उनके बाप का नाम या बात किसी आसमानी किताब में नहीं है। अतः सभी नबियों (अवतारों) पर उनकी बुजुर्गी अथवा गौरव प्रभावित है। हुजूर पाक ने कहा 'पादरी साहब अगर मान भी लिया जाय कि ईसा मसीह अल्लाह के बेटे हैं तो भी उनको दूसरे नबियों पर वरियता नहीं है।' पेदरम सुल्तान बुदे (मेरा बाप बादशाह था) से कुछ नहीं होता जब तक यह निश्चित न हो जाये कि बाप के बाद लड़का उत्तराधिकारी होगा। फिर ख़ुदा की मौत ही नहीं है जो ईसा मसीह को राजगद्दी नसीब होगी।' आपके इस कथन से पादरी लोग मूर्तिवत हो गये और लोगों का हल्ला-गुल्ला ठण्डा हो गया। लोगों ने अपने-अपने घरों की राह ली।

सरकार वारिस पाक का वक्तब्य जो बाहरी बातों से सम्बन्धित है उसमें भी विशेष मर्यादा झलकती थी। आपकी बातें तथा लोगों के प्रति उत्तर इस कदर समुचित और यथोचित होते थे जिससे सम्बन्धि बात होती थी। वह अपने मन में स्थित हो जाता था। अतः विदित है कि हुजूर पाक हकीकत पर आधारित बात करते और प्रश्नों के मूल पर दृष्टि होती थी। आप अन्य छोटी बातों पर नहीं सोचते थे। आपके कुछ ज्ञानवर्धक और रहस्यमयी उत्तर इतने गुणार्थ लिये होते थे कि ज्ञान वालों को भी बहुत उलझन में डाल देते थे। लोगों को वास्तविक अर्थ तक पहुंचने में अधिक समय लगता था। इसके सबूत में निम्न घटना प्रस्तुत की जाती है:

एक बार शाह ज़हूर अशरफ साहब वारसी के पास उनके एक मित्र का पत्र मिला जिसमें लिखा था यहाँ दो मौलवी आपस में इस बात पर लड़ रहे हैं कि हज़रत ईसा-मसीह की माता का क्या नाम था ? शाह ज़हूर अशरफ साहब वारसी ने शैदा मियां से कहा कि आप हुजूर पाक से पूछें। सुअवसर देखकर एक दिन शैदा मियां वारसी ने पूछा। हुजूर ने उत्तर दिया "बिन्ते-अरबी" यह सुनकर सबको आश्चर्य हुआ और लोगों ने पूछा यह नाम किसी अन्य पुस्तक में भी है। आपने पुनः कहा क़ुरआन में देखो। किन्तु देखने पर भी नहीं मिला। आपने फिर कहा 'हमारे क़ुरआन में देखो। इस पर कुछ लोगों को और अचम्भा हुआ कि हमारे और आपके क़ुरआन में भी कुछ फर्क है। पुनः शैदा मियां को ख्याल हुआ कि हुजूर पाक की तिलावत में जो क़ुरआन शरीफ है उसमें तफसीर हुसेनी भी किनारे पर अंकित है। उसमें देखा गया। बाइसवें अध्याय में इब्रानी भाषा का शब्द 'खुयल्द' निकला। इस पर भी लोग अचम्भे में पड़े। चूंकि किसी की हिम्मत नहीं होती कि उनसे बार-बार प्रश्न करें। इसलिए शैदा साहब ने मौलवी फखरूद्दीन साहब देवा शरीफ के पुस्तकालय में जाकर इब्रानी भाषा के शब्दकोष में मिला जिसका अरबी अनुवाद 'बिन्ते अरबी' मिला। फिर हम लोगों के समझ में बात आई कि हुजूर ने हम लोगों की जानकारी के अनुसार अरबी भाषा में बतलाया था।

मुंशी अब्दुल ग़नी साहब महुवना रईसपुर और अब्दुल गनी खाँ साहब राय बरेली के हैं, इन लोगों ने मुस्तकीम शाह साहिबा वारसिया का उर्स करना चाहा। इस पर एक बुजुर्ग जो आलिम भी थे उन्होंने कहा कि औरतों को उर्स नहीं करना चाहिए। जायज़ नहीं है। जब उक्त आलिम महोदय हुजूर पाक से मिले तो आपने कहा 'मौलवी साहब आपको मालूम है कि रूह (आत्मा)को मौत नहीं है। जब पैदा होने वाली दुनिया का यह आलम है तो अवलिया अल्लाह (अल्लाह के दोस्त के) की क्या बात है। उनकी शान में क़ुरआन साक्षी है **'इन्नमल औलिया अल्लाह लायमूतूना"** यक़ीन जानो कि अल्लाह के दोस्त अथवा मित्र नहीं मरते हैं। जो कुछ औलिया के लिए होता है सब जीवित के प्रति भेंट है अथवा सौग़ात है। मौलवी साहब आप ही बताइये।' मुस्तकीम शाह ने मौला की खोज में सिर खोला या दुनिया की तलाश में अथवा आखिरत की खोज में मौलाना ने इतना सुनकर मान लिया कि इनके उर्स है कोई दोष नहीं है।

हुजूर पाक का छोटा सा उत्तर हकीकत का सारांश होता था। मौलाना चूंकि अध्यात्म के पात्र और सम्बन्ध वाले थे। इसलिए आप ने उन्हीं के शैक्षिक स्तर पर

Scanned with CamScanner

उनको समझाया।

श्री हुसेन बक्श व मुहम्मद बक्श दोनों सिलसिला नक़शबन्द सम्प्रदाय के धार्मिक चेले थे जो जोगीपुरा निकट हाथरस, जिला-अलीगढ़ के निवासी थे। लिखते हैं कि हुज़ूर पाक हाथरस में मौलवी रूक्ने आलम साहब के मकान पर थे। बहुत से लोग एकत्र थे। हम लोग भी उसी में थे। आपकी सेवा में चार विख्यात पण्डित उपस्थित हुए। उनमें एक का नाम लीलाधर और दूसरे का बावन जी था। वह इस गरज़ से आए थे कि हुज़ूर का दरबार दानी है। कुछ नकदी जरूर हाथ लगेगी। हुज़ूर पाक के समक्ष हाजिर होकर श्लोक सुनाने लगे। जितने श्लोक वे सुनाते थे हुज़ूर उसके दूने सुनाते थे। आपकी जानकारी से वह परेशान हो गए और चलने को तैयार हुए तब हुज़ूर ने कहा 'जिसके लिए आए हो वह तो लिए जाओ' रूक़नुद्दीन साहब ने चारों को अलग-अलग कुछ रूपया दिया और ये आपकी जानकारी से प्रभावित होकर चले गए।

हकीम महमूद वली साहब वारसी, हकीम याकूब बेग साहब का कथन लिखते हैं कि एक बार मैं हुज़ूर वारिस पाक की सेवा में हाजिर था। एक बहुत बड़े पण्डित जो वेद विद्या के अतिरिक्त ज्योतिष विद्या के भी ज्ञाता थे, आपके पास आए। आपने उनसे कहा 'पण्डित जी ! आपको तो अपनी विद्या का अच्छा ज्ञान है। यह तो बताइए कि प्रह्लाद ने जिस समय ईश्वर-आशक्त होकर अपनी शोक और प्रेम में ब्रह्म अर्थात वास्तविक ईश्वर का नाम रटना आरम्भ किया। उसके पिता हिरण्यकश्यप ने इस कार्य से क्रोधित हो अपने योग्य एवं होनहार बेटे से कहने लगा 'सावधान! मेरे सामने राम का नाम कदापि न लेना, नहीं तो इस तलवार से तेरा सर उड़ा दूंगा।' प्रह्लाद ने जब पिता का यह अनुचित विरोध सुना तो उसे भी जोश आ गया तथा उसने ईश्वर विलीनता की दशा में अपने पिता से कहा 'मुझमें राम तुझ में राम, खड्ग, खम्भ सब में राम' अर्थात मुझ में, तुम में, खड्ग और खम्भे सबमें उस एक ईश्वर का प्रकाश प्रकाशमान है। उसके कहते ही खम्भा फट गया तथा ब्रह्म का रूप शेर के चोले में प्रकट हुआ जिसने हिरण्यकश्यप को टुकड़े-टुकड़े कर डाला। प्रश्न यह होता है कि प्रह्लाद ने मुझ में, तुम में, खड्ग और खम्भे चार वस्तुओं में ईश्वर के प्रकाश का वर्णन किया। किन्तु ब्रह्म का रूप खम्भे से प्रकट हुआ। शेष तीन वस्तुओं में से अन्य किसी से प्रकट नहीं हुआ। इन वस्तुओं में खम्भे की क्या विशेषता थी? पंडित जी ! इस भगवान के पहचान के प्रश्न से परेशान हो गए। आपकी ओर देखते रह गए। असमर्थ होकर प्रार्थना किए कि आप ही फरमाऐं। इस हकीकत को मैं

ब्यान नहीं कर सकता। मेरी अधूरी समझ इस उच्च विषय को समझने में असमर्थ है। तदुपरान्त आप ने कहा, 'सुनो, सुनो. पंडित ! प्रह्लाद ने मुझ में, तुम में, खड्ग और खम्भे चार वस्तुओं पर आकर रूक गया। ईश्वर वहीं से प्रकट हो गया। मनुष्य जिस वस्तु को दृढ़ता से पकड़ ले और उसी पर रूक जाए वहीं ख़ुदा है। पंडित जी इन वचनों पर आत्मविभोर हो गए और पैरों पर गिर गए तथा प्रार्थना करने लगे कि जैसा मैंने आपके सम्बन्ध में सुना था उससे हज़ार गुना अधिक पाया। आपके एक उपदेश (नसीहत) ने मेरे जीवन भर के ज्ञान की वास्तविकता खोल दी। वास्तव में यह ज्ञान, ज्ञान है। इसके समक्ष सभी ज्ञान तुच्छ हैं। यह कहकर पंडित जी आत्म विभोर हो झूमने लगे। वास्तव में इस कथन का उद्देश्य पंडित जी को ज्ञान देना था। आए दिन इस प्रकार की घटनाएं उपस्थित होती रहती थी। अच्छे-अच्छे ज्ञानी और विज्ञानी इनके यश से उपकृत होते रहते थे।

जब आप मौज में होते थे तो ऐसे नुक़ते और बारीकियाँ शब्दों में प्रकट कर देते थे जिनका वाह्य ज्ञान द्वारा जानना और समझना असम्भव था। एक बार की बात है कि मौलाना शाह सैय्यद अली अशरफी अलजीलानी गद्दीनशीन किछौछा, अपने धार्मिक चेलों के साथ सैदनपुर में मिलने आये तो दो-चार मिनट बाद आप ने कहा,'अच्छा अब फिर मुलाकात होगी।' और विदा करने के लिए खड़े हो गए। हाथ मिलाया। पुन: उपस्थित गण से कहा,'ज़रा सब बाहर जाएं।' उक्त मौलाना लिखते हैं कि उस समय हुज़ूर पाक ने अद्वैत्य भाव के रहस्य से सम्बन्धित कुछ कहा, प्रत्येक जीवधारी की मृत्यु निश्चित है और प्राण या आत्मा की मृत्यु नहीं है ईश्वर क़ुरआन में कहता है **'कुल्लो नफसिन जायएक़तुल मौत** (प्रत्येक प्राणी को मौत का स्वाद चखना है) किन्तु ये नहीं कहा है कि, **'कुल्लो रूहीन जायएक़तुल मौत'** (आत्मा की मृत्यु भी है)। मैंने कहा उचित है। इसके पश्चात् सरकार ने ऐसी बातों का वर्णन किया जो आत्मा के भेदों से सम्बन्धित थी। उक्त मौलाना चूंकि अरबी के महाविद्वानों में से हैं, इसलिए हुज़ूर ने अपनी योग्यतानुसार उनसे बात किया। इससे विदित है कि हुज़ूर वारिस पाक के निकट जो आता था आप उनके ज्ञान और योग्यता के अनुसार कोई एक बात ऐसी बता देते थे जो उनके ज्ञान का मूल होता था। कला विशेषज्ञों को आप ऐसी बारीकियां समझाते थे कि वे लोग आश्चर्य में पड़ जाते थे। आप ईश्वरीय ज्ञान के अतिरिक्त ज्ञान-विज्ञान और कला को व्यर्थ समझते थे। आपका पथ अनुराग और मुहब्बत पर निर्भर था। इसी को आप वास्तविक ज्ञान समझते थे। यह विदित है कि ईश्वरीय ज्ञान वाह्य ज्ञान का

Scanned with CamScanner

आश्रित नहीं है। इन सबके होते हुए भी यदि इसे ईश्वरीय चमत्कार कहा जाए तो अनुचित न होगा कि आप को पूर्ण रूप से प्रत्येक प्रकार के सांसारिक ज्ञान तथा उनकी वास्तविकता पर इतनी गहरी नजर होती थी, जो माध्यम पुरूष को शान्त और आनन्द विभोर कर देती थी। हुजूर वारिस पाक का व्यक्तित्व ईश्वरीय प्रतिबिम्ब था जिसके द्वारा प्रत्येक कला और ज्ञान दिखायी देते रहते थे।

काव्य रूचि

काव्य, कविता तथा शेर व शायरी से आप आनन्दित होते थे। लोग आप से लाभान्वित होते थे। काव्य की विशेषताओं को भली-भांति जानते थे। प्रत्येक गुणों से सम्पन्न होना ईश्वर प्रदत्त था। आपका काव्य, कविताओं, छन्दों से विशेष सम्बन्ध था। आपका स्वर अति सुन्दर था। जब मौज में आते थे कुरआन मीठे स्वर से पढ़ते थे। गज़लें भी सुन्दर लय से पढ़ते थे। आपका स्वर दिलों को पिघला देता था और एक जलन सी पैदा कर देता था। यद्यपि आप कविता पसन्द करते थे किन्तु कभी अपने मुख से कोई कविता अथवा पद की रचना नहीं किया है। अधिकांश लोगों ने कविता कर के आप के नाम से सम्बन्धित कर दिया। जब इस प्रकार रची गयीं कविताएं आपके सम्मुख पढ़ी गयीं तो आपने ऐसा करने वालों को रोक दिया और कहा कि ऐसा नहीं करना चाहिए। किसी भाषा की कविता आप स्वरूचि सुनते थे और उनके गुढ़-अर्थो को खोलकर समझाते थे जिससे यह ज्ञान होता था कि आप काव्य रचना के विशेषज्ञ हैं। आपके पास एक डायरी थी जिसमें आप चुने हुए पद्य लिखते थे और जब काव्य से रूचि रखने वाले व्यक्ति एकत्रित होते थे तो आप उनको पढ़कर सुनाते थे। कविताएं और पद्य आपको अधिक मात्रा में कंठस्थ थे, अन्ताक्षरी से आप बहुत आनन्दित होते थे, कभी कभार आप स्वयं सम्मिलित हो जाते और दस व्यक्तियों को एक ओर करके अकेले हरा देते थे। देखा गया है कि एक ही अक्षर पर समाप्त होने वाले पचासों पद आप क्रमशः सुना जाते थे जिसमें दूसरे लोग थक जाते थे। हज़रत अमीर खुसरो महोदय का कलाम आपके मन को बहुत भाता था। बड़ाई करते और कहते की शिष्य को ऐसा होना चाहिए। पीर (धर्मगुरू) को खुश करने के लिए अमीर खुसरो ऐसा कहा करते थे। इसके साथ ही हाफिज शीराजी की गजलें भी आपको याद थीं। मसनवी शायक लगभग पूरी आपको कंठस्थ थी। हुजूर वारिस पाक इश्क मोहब्बत की मूर्ति थे और आशिकाना भावों से सम्बन्धित पद्य आपको पसन्द थे। आप से सम्बन्धित बहुत सी पुस्तकें छपी हैं जिनमें अधिकतर कविता की हैं। गद्य में भी पुस्तकें लिखी गयी हैं किन्तु कम।

इश्क की पराकाष्ठा

अनुराग में आपका स्थान चरम सीमा पर था। इश्क ही वह मुकाम या स्थान है जिसमें आपने अपना जीवन व्यतीत किया है। बचपन से ही इश्क के नशे में आप मस्त थे, आपके खेलों में प्रेम का रंग छाया रहता था। बाल्यावस्था में ही जब कोई मदीना मुनौव्वरा की बातें ब्यान करता तो आप एक चीख मारते और अचेतन अवस्था में हो जाते थे। आपकी आँखें सदैव आंसुओं से भरी रहती थीं। चेहरे का रंग बदल जाता था बातें कम करते थे। भोजन नहीं के बराबर ही लेते थे, सुख सम्पदा से घृणा थी। सदैव चुप रहते थे। भ्रमण करना ही पसन्द करते थे। अल्लाह पर भरोसा करना, ईश्वर के अलावा संसार में किसी की फिक्र ना करना सब से लापरवाह रहना, आपका मुख्य स्वभाव था।

हुजूर वारिस पाक के जूता त्याग करने में एक घटना देखी गयी है। जब आप अजमेर शरीफ पधारें तो ख्वाजा गरीब नवाज़ के मजार (समाधि) पर जाते समय अपनी जूतियों को रूमाल में लपेट लिया। यह देखकर एक आज़ाद फ़कीर ने कहा- मियाँ साहबज़ादे! क्या यह चपातियाँ (पतली रोटी) हैं? आपने लपेटी हुई जूतियों को उसकी ओर फेंक दिया और कहा 'अगर चपातियाँ हैं, तो यह लो काम आयेंगी।' उस दिन से जीवन भर फिर कभी पाँव में जूते न डाले। जाहिर में तो यह घटना थी किन्तु हकीकत यह थी कि आप को प्रेम-पथ में नंगे पद चलना था।

हुजूर वारिस पाक की प्रत्येक बातों से इश्क और मुहब्बत अथवा प्रेम का रहस्य समझ में आता था। आप प्रेम में इतना विलीन थे कि प्रेम के विरूद्ध कोई बात सुनना असह्य था। सम्पूर्ण कार्यों पर प्रेम को वरीयता देते थे। यही आपकी शिक्षा-दीक्षा थी। मौलाना शायक वारसी रह० तोहफ्तुलअसफिया में लिखते हैं कि सैय्यद अब्दुल अली साहब नग्राम निवासी, नेम-धर्म पर चलने वाले व्यक्ति थे उनसे और काजी अब्दुल करीम साहब बरेलवी से काफी रस्म-व्यवहार था। काजी साहब के मानने वाले मिलाद की सभा करते और खड़े होकर सलाम पढ़ते। दूसरी ओर सैय्यद अब्दुल अली साहब कहते यह तरीका इस्लाम से बाहर है। दोनों में बहस तकरार होती रहती थी। रब्बीउल अव्वल (अरबी मास)१२८२ हिजरी मुताबिक १८६२ ई० को संयोग से सरकार वारिस पाक नग्राम पधारे हुए थे। आपके आगमन पर सैय्यद साहब तथा काजी साहब दोनों आदमी ने राय किया कि हुजूर से इस सवाल को पूछा जाए। दोनों हुजूर की खिदमत में हाजिर हुए। बिना कहे-सुने स्वयं सरकार ने सैय्यद अब्दुल अली साहब की ओर ध्यान देकर कहा 'मीर साहब

Scanned with CamScanner

आशिक जो कुछ माशूक के सम्बन्ध में कहे वह उचित और ठीक है। जितना सम्मान दे मुनासिब है। ज्ञान कुछ है और प्रेम कुछ और है।' जबकि रसूल मकबूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ज्ञान की बड़ाई ब्यान किया है किन्तु मकतबे इश्क में (प्रेम की पाठशाला) यह बहुत बड़ा पर्दा है। ये भी फरमाया है कि अधिकांश उलमा की बातें गवांरों के लिए मधु और प्रेमियों के लिए विष मात्र होती हैं। जैसे मौलाना रूम ने उस आकाशवाणी को जो चखा है, के सम्बन्ध में हुई इस प्रकार लिखा है:

१. मूसिया आदाबे दाना दीगरन्द सोखता जाँ दर्द दर्मा दीगरन्द।
ऐ मूसा बुद्धिमानों का अदब और हैं और दिल जलों के दर्द की दवा और है।

२. तू बराये वस्ल करदन आमदी नै बराये फस्लकरदन आमदी।
आप लोगों को ईश्वर से मिलाने आये हैं, न कि अलग करने आये हैं।

३. दर हके ऊमदह दर हक्के जिम्म दर हके उ शहद दर हक्के तू सम्म।
उसके हक में वह बात बड़ाई है तेरे हक में वही बुराई है।
उसके लिए तो वह मधु है और तेरे लिए विष है।

४. दर हके उ नूर दर हक्के तू नार दर हके ऊ वरद हक्के तू खार
उसके लिए वही प्रकाश है और तेरे लिए आग है।
उसके हक में गुलाब का फूल है तेरे लिए कष्ट दायक कांटा।

वारिस पाक ने इस कथन से सैय्यद अब्दुल अली साहब को पूरी शान्ति मिली। पुन: कोई प्रश्न उन्होंने नहीं किया। चूंकि मिलाद की महफिल प्रेमियों के लिए पूर्ण ईमान है। कुछ आलिमों (धार्मिक पण्डितों) को इसके बारे में विरोध है। यही कारण था कि वारिस पाक ने इसकी वास्तविकता को खोल दिया। आपकी दृष्टि में मुहब्बत और प्रेम के समान संसार में कोई वस्तु नहीं थी। अत: आपकी बातों में मुहब्बत और प्रेम की शिक्षा थी। हुजूर वारिस पाक की इश्क व मुहब्बत को कितना ऊँचा पद प्राप्त था। आपके निकट इश्क की क्या विशेषता थी? दर्शाने से पहले एक घटना अंकित है जिससे यह विदित होता है कि हुजूर की भाषा में इश्क क्या है?

मौलाना शायक वारसी रह० अपनी पुस्तक **'तोहफ्तुल असफिया'** में लिखते हैं कि हुजूर पाक लखनऊ में विद्यमान थे। एक हिदायत चाहने वाला आपकी सेवा में उपस्थित हो कर अर्ज़ किया कि मेरा सम्पूर्ण जीवन आवारगी और पाप में व्यतीत हुआ। मैं इच्छुक हूँ कि आप मुझे शिक्षा दें। आप ने कहा,'इश्क व मुहब्बत का सबक पढ़ो।' उस व्यक्ति ने भोलेपन से कहा,'मेरी आयु इस समय तक इश्क व मुहब्बत में बीती है, किन्तु प्रेम में दुनिया और आख़िरत का ह्रास है। आप ने पुन:

कहा 'तुम इश्क की हकीकत से बेखबर हो।' उसने कहा कि मैं स्वयं हैरान हूँ। इश्क तीन अक्षरों से मिश्रित है-ऐन, शीन और काफ। अक्षर 'ऐन' ईश्वर की बन्दगी की ओर संकेत करता है। 'शीन' इस्लाम के नियमों (शरीअत) को पूरा करने पर जोर डालता है। 'काफ' बलिदान या न्यौछावर होने (कुरबानी) के प्रति जागरूक करता है कि मनुष्य अपने तईं सच्ची उमंग और अभिलाषा के साथ न्यौछावर कर दे। इश्क एक बेमिसाल माशूक है। महबूब की मुहब्बत के प्रभाव उसमें कीमियां की खासियत रखते हैं जिसको माशूक चाहता है इश्क की बेड़ी में जकड़ लेता है। मौलाना रूम कहते हैं :

१. मिल्लते इश्क बज हमाँ मिल्लत जुदास्त,
इश्क अस्तरलाबे इसरारे खुदास्त!
इश्क का धर्म तमाम धर्मों से अलग है,
इश्क भगवान के भेदों को उठाने वाला यन्त्र है।

२. मनचेसाजम इश्करा शरह ब बयाँ, कै शनासद इश्करा जुज आशिका।
मैं इश्क की व्याख्या क्या कर सकता हूँ,
आशिकों के अतिरिक्त इश्क को पहचान सकता है?

३. इश्क आँ-न बु-बद कि बर मर्दुम बु-बद, ई फसाद अज खुर्द ने गन्दुम बुवद
इश्क वह नहीं होता जो साधारण लोगों को होता है,
ये फसाद गेहूँ के खाने से होता है।

४. इश्क हाये कि-ज पये रंगे बुबद, इश्क न बुवद आकबत तंगे बुवद।
जो इश्क रंग के लिए होता है, वह इश्क नहीं होता तंगी होती है।

५. इश्क ओं बगुजीं कि जुमला औलिया, याफतन्द अज फैजेऊ कारो कया।
वह इश्क अपनाओ जिसके द्वारा सभी औलिया ने कार्यों की क्षमता और पवित्रता प्राप्त किया है।

६. गरचे तफशीरे जुबाँ रोशन गरअस्त, लेक इश्के बेजुबाँ रोशन तरस्त।
यदि जुबान की तफसीर अधिक रोशन है,
लेकिन बेजुबान इश्क उससे अधिक रोशन है।

७. आफताब आमद दलीले आफताब, गर दलीलत बायद अज-बैं रू मताब।
सूर्य की दलील सूर्य का उदय होना है,
यदि तुझे इश्क की दलील चाहिए तो उससे मुँह न फेर।

Scanned with CamScanner

इन पदों को पढ़कर हुज़ूर पाक ने कहा कि तुम हजरत मख़दूम बख्तियार काकी रह० के कथन देखो उसमें लिखा है कि एक दिन हज़रत राबिया बसरी रह० की सभा में, हसन बसरी रह० मालिक दीनार तथा शफीक बलखी रह० पधारे। राबिया बसरी ने पूछा 'इश्क का कमाल क्या है ?' हज़रत हसन बसरी ने कहा कि यदि माशूक आशिक को मुसीबत में डाल दे तो आशिक को चाहिए कि मजबूती के साथ प्राण दे दे। हजरत मालिक दीनार ने कहा कि आशिक माशूक के अत्याचारों से प्रभावित न हो। शफीक बलखी ने कहा कि यदि माशूक आशिक के टुकड़े-टुकड़े कर दे तो भी आशिक शिकायत की बात जुबान पर न लाए और इश्क से मुंह न फेरे। फिर राबिया बसरी ने कहा 'आशिक वह है जो अपने जीवन से गुजर जाए, मुर्दा हो जाए, स्वयं को जीवित न समझे।' आशिक के आरम्भ में अक्षर 'ऐन' है और शरअ के अन्त में 'ऐन' है, यह संकेत इस बात की ओर है कि जो शरअ की सीढ़ियां न तय करे इश्क में कमाल को नहीं पहुंचता। इश्क का कमाल यह है कि आशिक माशूक हो जाए। आशिक वही है जो माशूक में विलीन हो जाए। हुज़ूर वारिस पाक के इस प्रभावशाली भाषण से हिदायत चाहने वाले को हिदायत मिली तथा उपस्थित गण की दशा विचित्र हो गयी। आगे उस व्यक्ति से कहा कि कुछ दिनों तक ईश्वर-भक्तों की संगति में रहो। आप अधिकतर पढ़ा करते थे कि मा किस्सये सिकन्दरो दारा न खानदेम। अज मा बजुज हिकायते मेहरोवफा मपुर्स। अर्थ है: हमने सिकन्दर और बादशाह दारा की कथाएं नहीं पढ़ा है, मुझसे मुहब्बत और वफा के अतिरिक्त कुछ न पूछो।

इश्क से सम्बन्धित वचन

अनुराग तथा इश्क के बारे में जो कथन वारिस पाक के हैं। इससे प्रत्यक्ष हो जाता है कि प्रेम व ईश्क में स्थिर पद होना हर व्यक्ति के बस की बात नहीं है जैसा कि आप व्यक्त करते हैं :

'आशिकी एक मलामत है। मानव दीन-दुनियां से गुजर जाता है और वियोग में मर जाता है। उसी विरह में तो मजा है वरना फिर कुछ नहीं। माशूक का तरसाना, छुपना तथा सख्ती करना ही तो उसकी कृपा और दया है। इसके सिवा कुछ नहीं। अध्यात्म या ब्रह्म ज्ञान (मारफत) कमाने से नहीं मिलती सिर्फ वहबी अर्थात ईश्वर की देन है। वह खुदा अपनी मारफत (अपने तक पहुँच) जिसको चाहे प्रदान करे किसी का ठीका नहीं है।'

स्वयं सरकार वारिस पाक इसकी व्याख्या करते हैं। आशिक कौन है ? होने को हजारों इश्क का दम भरते हैं किन्तु वास्तव में आशिक कहलाने का जो भागी है। उसमें क्या विशेषताएं होनी जरूरी हैं? आप इस सम्बन्ध में स्वयं कहते हैं जिसने जान को कुर्बान न किया वह आशिक नहीं। लैला के हजारों और यूसुफ के लाखों चाहने वाले थे पर यह मजनू और जुलेखा का ही भाग्य था। अत: जो जिसके भाग्य का होता है वही पाता है। एक अन्य अवसर पर आप ने कहा था कि ज्ञान और चीज़ है इश्क और चीज़। जहाँ इश्क का साम्राज्य होता है वहाँ ज्ञान और बुद्धि का प्रवेश नहीं होता है। इश्क में मनुष्य को क्या मिलता है और इसमें किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इस विषय पर हुज़ूर पाक संक्षिप्त शब्दों में ब्यान करते हैं 'इश्क में त्याग ही त्याग है, तर्क दुनिया (संसार का त्याग है), तर्क उकबा (आखिरत का त्याग), तर्क मौला (ईश्वर का त्याग), त्याग ही त्याग है और अपना आप वियोग है।'

हुज़ूर पाक के एक कथन से यह समस्या भी साफ हो जाती है कि आशिक और माशूक में कोई भेद नहीं रहता है। वास्तव में अपने से वियोग है जिससे आशिक को काम पड़ता है। आपका कथन है 'इश्क की मंजिल में अस्तित्व ही विशेषता हो जाती है।' आप प्रारम्भिक इश्क के सम्बन्ध में कहते हैं 'ख्याल में माशूक की सूरत जमा लेना चाहिए जो सूरत जम गयी वही मृत्यु के बाद भी स्थिर रहती है और उसी के साथ उसका अन्त भी होता है।' सरकार वारिस पाक का एक दूसरा कथन है 'आशिक जिस ख्याल में मरता है वही ख्याल उसका स्वर्ग-नर्क और हस्र (प्रलय) के पश्चात उसके साथ है। आशिक, इश्क के खिंचाव की अधिकता में स्वयं वही हो जाता है। जिसके भीतर इश्क व मुहब्बत नहीं वह इसको नहीं समझ सकता और न इस पथ पर चल सकता है। ईश्वर के इश्क की विशेष दशाएं अथवा अवस्थाएं हैं। प्रत्येक व्यक्ति का कार्य नहीं है कि वह उसका भार वहन कर सके।' तथापि इश्क की गति की सरकार वारिस पाक संक्षिप्त रूप से व्यक्त करते हैं।

इश्क और अनुराग की उल्टी चाल है। जिसको अपनाता, प्यार करता है उसी को जलाता है। जिसको प्यार नहीं करता उसकी बागडोर ढीली कर देता है। प्रेम ज्ञान सीखने से नहीं आता जो पुस्तकों से प्राप्त हो सके। यह एक ईश्वर प्रदत्त वस्तु है जिसको बाँटने वाले ईश्वर ने जिसे चाहा व्याकुल हृदय प्रदान कर दिया उसी का भाग है। यह भी कहा जुबानी पढ़ना लिखना और है, दिल से मुहब्बत करना और

Scanned with CamScanner

है। जुबानी पढ़ने लिखने से कुछ नहीं होता प्रेम विचित्र वस्तु है। ईश्वर प्रेमियों की मर्यादा यह होती है कि वह किसी को अन्य नहीं समझते। उनको प्रत्येक वस्तु में ईश्वर का प्रकाश ही दिखाई देता है। आपका कहना है मजहबे इश्क में कुफ्र ही इस्लाम है (अधर्म ही धर्म है) इसी से मिलता जुलता हुजूर वारिस पाक का दूसरा कथन भी है 'अनुराग में धर्म-अधर्म (कुफ्र इस्लाम) से कोई सम्बन्ध नहीं। इसमें शरीयत का कुछ दखल नहीं।' सूफी संतो के कुछ शब्द वाह्य ज्ञानियों को भोंडा सा जान पड़ते हैं किन्तु ऐसी वास्तविकता नहीं है। उनकी भाषा शैली अलग होती है। वाह्यदर्शी लोग जाहिरी अर्थ लगाकर अपना आदेश लागू कर देते हैं और कहने वालों को काफिर और बेदीन, अधर्मी ठहरा देते हैं। यह अवस्था भी आशिकों के निकट इश्क के विपरीत नहीं माना जाता यही वह स्थान है जहां हरि इच्छा में आनन्दित रहने का पथ मिलता है और पूरा होता है। हुजूर वारिस पाक कहते हैं,'जो कुछ आशिक माशूक के लिए कहे वह उचित और ठीक है तथा जो सत्कार करे ऐसी मर्यादा बनाए सो उचित है। जो माशूक आशिक के सम्बन्ध में कहे उसी को सहर्ष मानने का स्थान है आशिक को चारा नहीं।'

उक्त विषय से सम्बन्धित हुजूर पाक की दूसरी वाणी इस भांति है:-

आशिक अपने माशूक की जो बड़ाई करे वह सब ठीक है, उसे पाप नहीं लगता न उस पर कोई धर पकड़ है। लैला रा बचस्मे मजनू वायददीद (लैला को मजनू की नजर से देखना चाहिए)। बस अन्य कोई वह नेत्र नहीं पा सकता। हज़रत मूसा अलै० ने उस चरवाहे को अपनी शरीयत के अनुसार रोका था सो ईश्वर को पसन्द नहीं हुआ। उस चरवाहे का धर्म विरोधी कार्य करना ही भाया क्योंकि चरवाहे की बात हृदय से निकली थी।'

निम्नलिखित वाणी हुजूर वारिस पाक की आशिकी की दशा के सम्बन्ध में है। 'लाईलाहा (भगवान के सिवा कुछ नहीं है) मुख से कहना कुछ और है तथा जब लगाना कुछ और चीज़ है। किसी वस्तु का ख्याल बिना देखे और आशिक होना असम्भव है और देख के आशिक होना सम्भव है।' जब कोई किसी का आशिक होता है तो उसकी कोई साँस माशूक की याद से खाली नहीं जाती। आशिक की सांस बिना प्रयत्न जप तथा तपस्या है। आशिक बेखबर नहीं समझा जा सकता। आशिक की यही नमाज़ और बन्दगी है। यही रोज़ा व्रत है। आशिक इसी अवस्था में यार का सौन्दर्य देखता है। अत: इसी से कहा गया है कि अनदेखे किसी का ध्यान और रूप का स्मरण असम्भव है। देख के आशिक होना सम्भव है।

'जिसने यहां नही देखा वह अन्धा है। प्रेम रोग इश्क में आशायें और इच्छायें नष्ट हो जाती हैं। कोई बात किसी स्वार्थ पर निर्भर नहीं होती आपने यह भी कहा है कि आशिक का दीन दुनियां दोनों खराब हो जाता है।'

हुजूर वारिस पाक के उक्त वचनों के अतिरिक्त कुछ अन्य कथनोपकथन हैं जिसको सरकार ने समयानुसार कहा है और जो प्रेम पथिकों के पथ प्रदर्शक हैं और ईश्वर के चाहने वालों के लिए इश्क के रहस्य खोलते हैं जो निम्न हैं :

१. 'इश्क ईश प्रदत्त है जो उपार्जन से अर्जित नहीं होता।'
(इश्क ईश्वरीय देन है। प्रयत्न और श्रम से नहीं मिलता)।
२. इश्क में इन्तिजाम नहीं।
३. 'आशिक का शिष्य बेईमान नहीं मरता'।
४. आशिक वह है जिसकी एक साँस भी याद मतलूब से खाली न जाए।
(जो प्रत्येक सांस से ईश्वर को याद करे)।
५. 'मोहब्बत में अदब, बेअदबी का फर्क नहीं।'
(प्रेम में शिष्टता और अशिष्टता का कोई भेद नहीं है)।
६. 'आशिक को खुदा माशूक की सूरत में मिलता है।'
७. 'मोहब्बत वह चीज़ है जिसको कोई हानि नहीं पहुँचा सकता।'
८. 'मोहब्बत है तो हम हज़ार कोस पर तुम्हारे साथ हैं।'
९. 'मोहब्बत में बेअदबी भी ऐन अदब है।'
१०. 'फकीर कम मशायक ज्यादा होते हैं चूंकि इश्क की मंजिल सख्त दुश्वार गुजार है इसलिए चाहने वाले इस रास्ते को कम पसन्द करते हैं।'
(प्रेम मार्ग कठिन और कड़ा है अत: कम ही लोग पसन्द करते हैं)।
११. मोहब्बत (प्रेम) ऐन ईमान है।
१२. जो हमसे मोहब्बत करे हमारा है। मंजिल इश्क में ख़िलाफ़त नहीं होती।
१३. जिसको सब शैतान कहते हैं इस राह में दोस्त बन जाता है, दुश्मनी नहीं कर सकता।
१४. मोहब्बत में इन्तिज़ाम नहीं, जहाँ मोहब्बत नहीं है वहां इन्तिजाम है।
१५. 'आशिक के मुरीद का अंजाम खराब नहीं होता।'
१६. 'आशिक के ख्याल पर दीन-दुनियां का इन्तिजाम है।''
१७. 'यदि आशिक की जुबान से कोई बात गलत निकल जाए तो उसको भी खुदा सच कर देता है।'

Scanned with CamScanner

है। जुबानी पढ़ने लिखने से कुछ नहीं होता प्रेम विचित्र वस्तु है। ईश्वर प्रेमियों की मर्यादा यह होती है कि वह किसी को अन्य नहीं समझते। उनको प्रत्येक वस्तु में ईश्वर का प्रकाश ही दिखाई देता है। आपका कहना है मजहबे इश्क में कुफ्र ही इस्लाम है (अधर्म ही धर्म है) इसी से मिलता जुलता हुजूर वारिस पाक का दूसरा कथन भी है 'अनुराग में धर्म-अधर्म (कुफ्र इस्लाम) से कोई सम्बन्ध नहीं। इसमें शरीयत का कुछ दखल नहीं।' सूफी संतो के कुछ शब्द वाह्य ज्ञानियों को भोंडा सा जान पड़ते हैं किन्तु ऐसी वास्तविकता नहीं है। उनकी भाषा शैली अलग होती है। वाह्यदर्शी लोग जाहिरी अर्थ लगाकर अपना आदेश लागू कर देते हैं और कहने वालों को काफिर और बेदीन, अधर्मी ठहरा देते हैं। यह अवस्था भी आशिकों के निकट इश्क के विपरीत नहीं माना जाता यही वह स्थान है जहां हरि इच्छा में आनन्दित रहने का पथ मिलता है और पूरा होता है। हुजूर वारिस पाक कहते हैं,'जो कुछ आशिक माशूक के लिए कहे वह उचित और ठीक है तथा जो सत्कार करे जैसी मर्यादा बनाए सो उचित है। जो माशूक आशिक के सम्बन्ध में कहे उसी को सहर्ष मानने का स्थान है आशिक को चारा नहीं।'

उक्त विषय से सम्बन्धित हुजूर पाक की दूसरी वाणी इस भांति है:-

आशिक अपने माशूक की जो बड़ाई करे वह सब ठीक है, उसे पाप नहीं लगता न उस पर कोई धर पकड़ है। लैला रा बचस्मे मजनू वायददीद (लैला को मजनू की नजर से देखना चाहिए)। बस अन्य कोई वह नेत्र नहीं पा सकता। हज़रत मूसा अलै० ने उस चरवाहे को अपनी शरीयत के अनुसार रोका था सो ईश्वर को पसन्द नहीं हुआ। उस चरवाहे का धर्म विरोधी कार्य करना ही भाया क्योंकि चरवाहे की बात हृदय से निकली थी।'

निम्नलिखित वाणी हुजूर वारिस पाक की आशिकी की दशा के सम्बन्ध में है। 'लाईलाहा (भगवान के सिवा कुछ नहीं है) मुख से कहना कुछ और है तथा जर्ब लगाना कुछ और चीज़ है। किसी वस्तु का ख्याल बिना देखे और आशिक होना असम्भव है और देख के आशिक होना सम्भव है।' जब कोई किसी का आशिक होता है तो उसकी कोई साँस माशूक की याद से खाली नहीं जाती। आशिक की सांस बिना प्रयत्न जप तथा तपस्या है। आशिक बेखबर नहीं समझा जा सकता। आशिक की यही नमाज़ और बन्दगी है। यही रोज़ा व्रत है। आशिक इसी अवस्था में यार का सौन्दर्य देखता है। अत: इसी से कहा गया है कि अनदेखे किसी का ध्यान और रूप का स्मरण असम्भव है। देख के आशिक होना सम्भव है।

'जिसने यहां नही देखा वह अन्धा है। प्रेम रोग इश्क में आशायें और इच्छायें नष्ट हो जाती हैं। कोई बात किसी स्वार्थ पर निर्भर नहीं होती आपने यह भी कहा है कि आशिक का दीन दुनियां दोनों खराब हो जाता है।'

हुजूर वारिस पाक के उक्त वचनों के अतिरिक्त कुछ अन्य कथनोपकथन हैं जिसको सरकार ने समयानुसार कहा है और जो प्रेम पथिकों के पथ प्रदर्शक हैं और ईश्वर के चाहने वालों के लिए इश्क के रहस्य खोलते हैं जो निम्न हैं :

१. 'इश्क ईश प्रदत्त है जो उपार्जन से अर्जित नहीं होता।'
(इश्क ईश्वरीय देन है। प्रयत्न और श्रम से नहीं मिलता)।
२. इश्क में इन्तिजाम नहीं।
३. 'आशिक का शिष्य बेईमान नहीं मरता'।
४. आशिक वह है जिसकी एक साँस भी याद मतलूब से खाली न जाए।
(जो प्रत्येक सांस से ईश्वर को याद करे)।
५. 'मोहब्बत में अदब, बेअदबी का फर्क नहीं।'
(प्रेम में शिष्टता और अशिष्टता का कोई भेद नहीं है)।
६. 'आशिक को खुदा माशूक की सूरत में मिलता है।'
७. 'मोहब्बत वह चीज़ है जिसको कोई हानि नहीं पहुँचा सकता।'
८. 'मोहब्बत है तो हम हज़ार कोस पर तुम्हारे साथ हैं।'
९. 'मोहब्बत में बेअदबी भी ऐन अदब है।'
१०. 'फकीर कम मशायक ज्यादा होते हैं चूंकि इश्क की मंजिल सख्त दुश्वार गुजार है इसलिए चाहने वाले इस रास्ते को कम पसन्द करते हैं।'
(प्रेम मार्ग कठिन और कड़ा है अत: कम ही लोग पसन्द करते हैं)।
११. मोहब्बत (प्रेम) ऐन ईमान है।
१२. जो हमसे मोहब्बत करे हमारा है। मंजिल इश्क में ख़िलाफत नहीं होती।
१३. जिसको सब शैतान कहते हैं इस राह में दोस्त बन जाता है, दुश्मनी नहीं कर सकता।
१४. मोहब्बत में इन्तिज़ाम नहीं, जहाँ मोहब्बत नहीं है वहां इन्तिजाम है।
१५. 'आशिक के मुरीद का अंजाम खराब नहीं होता।'
१६. 'आशिक के ख्याल पर दीन-दुनियां का इन्तिजाम है।''
१७. 'यदि आशिक की जुबान से कोई बात गलत निकल जाए तो उसको भी खुदा सच कर देता है।'

Scanned with CamScanner

१८. आशिक का गोश्त दरिन्दों (हिंसक पशुओं) पर हराम है। उस पर न साँप का ज़हर असर कर सकता है और न शेर खा सकता है।

१९. मुहब्बत करो क़सब से कुछ नहीं होता।

२०. 'मुहब्बत है तो सब कुछ है। मुहब्बत नहीं तो कुछ नहीं।'

२१. 'जो कुछ है लगाव है बाकी झगड़ा दिखलाने की चीज़ है। अगर लगाव नहीं तो खाक नहीं, दुनियादारी-दुकानदारी है''।

अद्वैत भाव (तौहीद)

सरकार वारिस पाक की एकताई और एकरंगी अद्वितीय थी। प्रत्येक तौर तरीके, ढंग में तथा आचरण सब में एक रंग पाया जाता था। जो भी आपके पास जाता वह एक रंग में रंग जाता था। आपके कथन से सिद्ध है कि इश्क का कमाल भी तौहीद का दर्जा है जो इश्क में पूरा उतरता है वही तौहीद में भी एक होता है। आपकी बातों से ये बात साफ हो जाती है कि इश्क की मंजिल में अस्तित्व और गुण सभी एक हो जाते हैं अर्थात निर्गुण, सगुण सभी एक हो जाते हैं। आशिक के इश्क की खूबी यही है कि आशिक माशूक हो जावे। जब आशिक स्वयं को नष्ट कर माशूक में विलीन हो जाता है तब वह माशूक हो जाता है और जो कुछ दोस्त से है वह उसका अपना है। यहीं से अद्वैत्यवाद प्रकट होता है। असलियत यह है कि इश्क और अद्वैत्यवाद परस्पर दोनों अनिवार्य हैं। पूर्ण अनुरागी ही अद्वैत्यवादी है जो प्रत्येक कण में माशूक के सिवा कुछ नहीं देखता है। हुजूर अनवर तौहीद(खुदा को एक देखना, एक मानना तथा प्रत्येक वस्तु में उसका प्रकाश देखना)में इतना डूबे हुए थे कि उनके प्रत्येक शब्द तथा कार्य एवं व्यवहार से तौहीद के रहस्य प्रकट होते थे।

मुंशी अब्दुल गनी साहब वारसी रईसपुर और अब्दुल गनी साहब जिला रायबरेली दोनों लिखते हैं कि हुजूर वारिस पाक मेरे मकान पर पधारे थे। मैं हुजूर के विश्राम हेतु गृह-कक्ष सजा रहा था। इसी बीच एक नौकरानी से कुछ भूल हो गयी। मैंने एक थप्पड़ उसके मुँह पर मार दिया और उसकी एक आँख पर चोट आ गई। वह रोने लगी। मैं दूसरे दिन हुजूर पाक को ले आने गया। प्रार्थना किया हुजूर मैं आपको घर ले चलने के लिए आया हूँ। आप ने कहा- हमारी आँख में चोट लग गयी है। हम नहीं जा सकते, मैंने बार-बार आग्रह किया किन्तु आपने यही कहा 'हमारी आँख में चोट लग गयी है, हम नहीं जा सकते, अन्ततः बाध्य होकर मैं लौट

आया।' आप मेरे घर नहीं गए, फिर दूसरे वर्ष मेरे घर पधारे। इस घटना से यह विदित है कि अद्वैत में विलीन होना क्या है? इश्क की तरह ही आपका अद्वैतवाद से लगाव भी चरम सीमा पर था। एकत्व में मिट जाने की बात आप में पायी और देखी गयी है। जो बात आप के मुख से निकलती उसमें एकरंगी होती थी। अधिकतर आपके धार्मिक चेलों तथा अन्य लोगों को ऐसी बातें देखने का सुअवसर प्राप्त है और वे साक्षी हैं। अन्य बुजुर्गों से भी आप कहा करते थे 'हम और तुम एक हैं, ना आपकी ईश्वर विलीनता इस सीमा तक थी कि आप ने आजीवन अपना नाम अपने मुख से नहीं लिया और न कलम से ही कभी अपना नाम लिखा।' यही वह हालत और दशा हैं जिसको इश्क की बुलन्दी तथा ईश्वर की विलीनता का कमाल कहा जाता है। जब मानव अपने जीवन में कर्तव्य तथा रीति-रिवाज और नियम सिद्धांत से अलग हो जाता है। आप ने संसारिक सम्बन्धों का ऐसा काटा था कि अपना नाम और निशान तक नहीं छोड़ा था। आपकी पवित्र दृष्टि में ईश्वर के सिवा दूसरी कोई वस्तु नहीं थी। प्रत्येक वस्तु में आप ईश्वर का प्रकाश देखते थे। आपके कथन आपकी अद्वैत का प्रत्यक्ष उदाहरण हैं जिनमें से जो कुछ प्राप्त हो सके लिखे जाते हैं :

हुजूर वारिस पाक का कथन है 'हमारे यहाँ मजूसी, ईसाई सभी धर्मावलम्बी समान हैं कोई बुरा नहीं, खुदा आसमान पर नहीं है हम, तुम सब में छुपकर धोखे में डाल दिया है। बस एक सूरत पकड़ ले खुदा मिल जाएगा, आसमान पर क्या है?'

इस कथन पर हाजी अवघट शाह वारसी ने कहा कि यही सूरत पकड़ लें। आप ने कहा- नहीं, कोई सूरत हो, जब सब एक हैं तो 'यह' और 'वह' क्या सबमें खुदा है, कोई सूरत हो। आपके इस कथन से 'फना अनिल खलक'(संसार की वस्तुओं से मिटाव) प्रदर्शित है और समस्या तौहीद की वास्तविकता भी समझ में आती है। तौहीद का कमाल यही है कि सब में एक ईश्वर दृष्टिगोचर हो जैसा रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कहा है '**वल्लज़ी नफसो मुहम्मदीन बेयादेही लौ अन्नाकुम अवलैतुम बे हबलिल, ऐलल अरदिस सुफला लहा बेता अलल्लाह सुम्मा कराआ अलैहिस सलामो, होवल अव्वलो वल आखिरो, बज्जाहिरो वल बातिनो, व होव बे कुल्ले शैइन अलीम**' अनुवाद -उस भगवान की कसम है जिसके अधिकार में मुहम्मद सल्ल० का प्राण है। यदि तुम डोल को रस्सी में बाँधकर पृथ्वी के नीचे डालो तो वह ईश्वर पर ही पड़ेगा। क़ुरआन की आयत है कि वही आदि है, वही अन्त है, वही प्रत्यक्ष है और वही अप्रत्यक्ष है। इससे विदित होता है कि ईश्वर आकाश पर ही नहीं बल्कि प्रत्येक स्थान पर मौजूद है।

Scanned with CamScanner

चश्म बकुशा कि जल्वये दिलदार,मोतजल्लीस्त अजदरोदीवार

आँखों को खोलो कि वह प्यारा ईश्वर अपना प्रकाश प्रत्येक दीवार और दरवाजे से बिखेर रहा है। यह बात पूर्णतया सत्य है कि मानवरूप तथा व्यक्तित्व में जितना अधिक ईश्वर का प्रकाश प्रकट होता है अन्य किसी वस्तु में नहीं। यही कारण है मनुष्य योनि सम्पूर्ण योनियों से उत्तम और श्रेष्ठ मानी गयी है, जैसा हज़रत अब्दुल कादिर जिलानी रह० के हृदय पर ईश्वर की ओर से प्रकट होने वाली बातों (इल्हाम) से है। आप कहते हैं कि ईश्वर कहता है कि जैसा मेरा प्रकट होना मनुष्य में है वैसा किसी में नहीं।

हज़रत मौलाना अबुल हसन खित्कानी रह०,'**इन्नल्लाहा खलका आदमा अला सुरतहि**' की व्याख्या करते हुए लिखते हैं जब ईश्वर ने अपने गुणों को प्रकट करना चाहा तो संसार को प्रकट कर दिया। जब अपने को प्रकट करना चाहा तो आदम को पैदा कर दिया। अतः विदित है कि सम्पूर्ण संसार यदि ईश्वरीय गुण है तो मानव में वह स्वयं प्रकट है।

ऐ जाहिदे जाहिर बीं अज कुर्ब चे मी पुरसी।
उदर मन व मन दर वै चूं बू ब गुलाब अन्दर॥

ऐ जाहिर देखने वाले जाहिद (परहेजगार) ईश्वर की निकटता का रहस्य क्या पूछते हो? वह ईश्वर मुझ में और मैं उसमें इस प्रकार हूँ जैसे गुलाब के फूल में ख़ुश्बू होती है।

सही मुस्लिम में हजरत अबू हारेरा रजी० से नकल है कि खुदावन्द करीम कयामत के दिन अपने बन्दों से प्रश्न करेंगे कि ऐ आदम के बेटों मैं बीमार हुआ तो तूने मेरी सेवा सुश्रुषा नहीं किया। वह अचम्भे से क्षमा याचक होंगे कि भगवान! तेरी कोई क्या सेवा कर सकता है? पुनः भगवान कहेगा कि मेरे अमुक बन्दे की यदि तू सेवा करता तो वह मेरी ही सेवा होती। मैं उसके पास ही था, यथावत अपने बन्दों की भूख-प्यास तथा अन्य कष्टों को स्वयं से सम्बन्धित कर प्रश्न करेगा। स्पष्ट है कि ईश्वर से कोई स्थान रिक्त नहीं है तथा मानव के व्यक्तित्व में ईश्वर का प्रदर्शन पूर्णतः है। जैसा अन्य वस्तुओं में नहीं। ये हकीकत है कि ईश्वर आकाश पर नहीं है। हम तुम में छुपकर सबको धोखे में डाल दिया है। बस एक सूरत को पकड़ ले ईश्वर मिल जायेगा।

१-दर दीदा अयाँ तू बूंदी व मन गाफिल
दरसीना नेहाँ तू बूंदी व मन गाफिल

अज जुम्ला जहाँ निशाँ तोरा मिजुस्तम
खुद जुमला जहाँ तू बूंदी व मन गाफिल

अनुवाद- हे भगवन! तू नेत्रों में था किन्तु मैं भुला हुआ था। हृदय में तू छुपा हुआ था किन्तु मैंने नहीं जाना। सम्पूर्ण संसार में तुझे ढूंढा किन्तु तू ही स्वयं पूर्ण संसार में था और मैं भटका हुआ था।

तौहीद की समस्या (मसला) बड़ा नाजुक और कठिन है। तौहीद के पुजारियों की दृष्टि में प्रत्येक अच्छी-बुरी वस्तु समान होती है। किन्तु विचित्रता यह है कि संसार-विलीनता में भलाई बुराई दोनों सम्मिलित हैं। मानव मात्र भलाई को ही अपने से सम्बन्धित करता है। इस सम्बन्ध में वारिस पाक कहते हैं कि 'अनल हक (हम हक हैं) और फनाफिल्लाह भी (ईश्वर में अपने को नहीं कर देना)' होने को मौजूद हैं किन्तु 'अनश्शैतान' (मैं शैतान हूँ) या अनल यजीद (मैं यजीद हूँ) कोई नहीं बोलता। यह बात मुश्किल है। हुजूर वारिस पाक के कथन से स्पष्ट हो जाता है कि ईश्वर के अस्तित्व का नाम 'अल्लाह' इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण संज्ञायें गुणात्मक हैं। जाति (अस्तित्व) और सफाअत (गुण) को सूर्य और उसकी किरणों से उदाहरण देकर ब्यान किया जा सकता है। सूर्य को उस दशा में जब उसकी किरणें प्रकट न हों सरलता से देखा जा सकता है किन्तु उस समय जब उसकी किरणें पूरे ज़ोर पर चमकती हों तो उस पर दृष्टि जमाकर देखना कठिन है। इसी भांति ईश्वर के अस्तित्व (ज़ात) की उसके अस्तित्व के पर्दे में देखना सरल है किन्तु गुणों के पर्दे में उसका दर्शन कठिन है। कारण है कि वहां कहर की शान का प्रदर्शन भी प्रत्यक्ष है। पथिक यदि सत्यपथ में विशेषताओं का पर्दा उठाना आरम्भ करता है तो ईश्वर की जात (अस्तित्व) तक पहुँच प्राप्त करने के लिए एक लम्बे समय की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त पथ भी कठिनाइयों से पूर्ण है। यदि सर्वप्रथम ही ईश्वर की ओर ध्यान मग्न होकर पथ और उसके स्थानों से गुजरने के पश्चात ईश्वर-विलीनता का पद प्राप्त हो जाता है। यही वह मुकाम या स्थान है जहाँ भक्त से वाणी अनलहक अथवा अनल्लाह अकस्मात उच्चारित हो जाती है। विशेषताओं के पदों को उठाकर ईश्वर तक पहुँचने वालों के पथ में विशेष कठिनाई होने के कारण बहुधा पहुँच कठिन हो जाती है। इसी कारणवश वारिस पाक का कथन है कि इन स्थानों अथवा अवस्थाओं को पार करना और विशेषता के कारणों में जिनका प्रदर्शन यजीद और शैतान में भी है। अपने आपको इस दशा में विलीन करना और कथन या वाणी अनल यजीद या अनश्शैतान

Scanned with CamScanner

बोलना कठिन काम है। सन्त सूफियों के निकट ईश्वर के नाम दो प्रकार से बँटे हैं। (१)जमाली (विशेषता और खूबसूरती की दशा) (२)जलाली (उत्तेजक भाव)। अत: हुजूर का यह भाव समझ में आता है कि जमाली (सालिक) गुणों में विलीन होना और ईश्वरीय ज्योति का दर्शन करना सरल है किन्तु जलाली गुणों को सहन करना कठिन काम है। इसीलिए कहते हैं अनलहक सब पुकारते हैं और फनाफिल्लाह होने के लिए भी मौजूद हैं किन्तु शैतान और यजीद होना कोई नहीं चाहता। यह बात कठिन है। वास्तव में वारिस पाक के कथन बहुत कठिन है आपके सम्पूर्ण वाक्य-उपवाक्यों में इश्क प्रेम तौहीद (ऐक्य) तसदीक (सच मानना और सच जानना) और यकीन (पूर्ण विश्वास) के शिक्षा से भरे हुए हैं। जिनकी व्याख्या के लिए पुस्तकें चाहिए।

हुजूर पाक की सत्य-ज्ञानी दृष्टि में ईश्वर के अतिरिक्त कोई वस्तु नहीं थी। यही आपकी शिक्षा भी थी। जैसा कहते हैं 'मस्जिद-मन्दिर, गिरजा में जहां जायें एक शान के और कुछ न देखें यह वास्तविकता का जौहर है कि ईश्वर के अस्तित्व के सिवा हर एक चीज का त्याग हो जाए क्योंकि हकीकत में वही एक सूरत है जो काबा, बुतखाना सब में प्रकाशमान है। वही एक रूप है जिसका प्रतिबिम्ब आदम और संसार में दिखायी देता है।

तसदीक

किसी वस्तु की सत्यता का पूर्ण विश्वास ही तसदीक है अथवा किसी बात को भली-भांति जाँच परख कर उसका ज्ञान प्राप्त कर लेना ही तसदीक है। सूफी सन्तों का अर्थ है भली-भांति ईश्वर के गुणों तथा ईश्वर का पूर्ण विश्वास कर लेना है। हुजूर वारिस पाक तौहीद और इश्क की तरह तसदीक की भी शिक्षा देते थे जैसे ज्ञान तथा कर्म के सम्बन्ध में संकेत है : जो बात जुबान से कही जाय वह तसदीक से भरी हुई हो। कथनी और करनी एक होनी चाहिए। वारिस पाक की यह शान थी कि जो लोग किसी ख्याल में सशंकित होते या किसी के मन और विचार में वहम या शंका उत्पन्न होती तो उसको आप पुष्टि करा देते थे और आँखों से दिखा देते थे। यह बात सुप्रसिद्ध है कि वारिस पाक वहमों तथा शंकाओं का समाधान बातों से नहीं कराते बल्कि निरीक्षण करा देते थे। बहुत सी घटनाओं से प्रमाणित है और हुजूर की बातों से भी इस समस्या पर प्रकाश पड़ता है। तसदीक प्रत्येक का भाग नहीं है। जिसको ईश्वर ये नियामत प्रदान कर दे। आपने एक बार कहा :

एक मौलवी साहब मदीना रास्ते में जाते समय बार-बार कहते थे, 'इन्नल्लाहा

मअस्साबिरीन'(बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है)। दोपहर को जब हवा गर्म हुई तो मौलवी साहब घबराये। उनके पास जो पानी था वह भी समाप्त हो चुका था। उस वक्त हमने कहा इन्नल्लाह मअस्साबिरीन बस मौलवी साहब खफा हो गये। बस जबान से कहना और है तथा दिल से तसदीक करना और चीज है।

एक बार आप ने कहा 'मक्का मुअज़्ज़मा' में एक मौलवी साहब 'नहनो अकरवो मीन हबलील वरीद' का भाषण करते थे। उनके पास एक छोटी सी चादर थी। जब रात को सर्दी मालूम हुई तो हमारे पास कम्बल माँगने आए। हमने कहा नहनोअकरवो मिन हबलील वरीद से नही माँगते। इसके बाद हमने कहा जबानी जमा खर्च से काम नहीं चलता जब तक दिल से तसदीक न हो। हुजूर पाक से सुनें गये तसदीक के सम्बन्ध में कुछ कथन निम्न हैं :

१. तसदीक हज़ारों में से एक को होती है हर एक का हिस्सा नहीं। फिर इसके भी कई सूरते हैं। जबानी जमा खर्च से काम नहीं चलता।
२. अपने में जो साँस चलती है वही अस्तित्व (जात) है। बस तसदीक बहुत मुश्किल है।
३. फी अनफो से कुम अफला तुवसेरून जो इसको समझ गया तसदीक हो गयी।
४. आदमी जब तक इश्क में काफिर नहीं होता। मुसलमान नहीं होता। 'साहबे तौहीद होना आसान पर साहबे तसदीक होना मुश्किल है।'
५. जिसको यहाँ तसदीक नहीं वह काबा जाकर क्या करेगा? वहां जाकर सिवाय पत्थर के क्या देखेगा। खुदा तो हर जगह है काबा तो सिर्फ जेहत (तरफ, सिम्त, दिशा) है।
६. सोहबत(संगति) से कुछ हासिल नहीं जब तक मन उसकी पुष्टि न करे।
७. नमाज़ रोज़ा और है तसदीक और है। यद्यपि तसदीक माने सलात नहीं(तसदीक नमाज़ से रोकती नहीं है) किन्तु हालत लेहाज करने लायक है।
८. किताबें पढ़ने से कुछ हासिल नहीं है। तसदीक और चीज़ है।

सरकार वारिस पाक के पवित्र कथनों से विदित है तसदीक वह वस्तु है जो बिना मुरशिदे कामिल(सत्य गुरू) प्राप्त नहीं हो सकती। तसदीक वह ज्ञान नहीं है जो पुस्तकों में हो तथा पठन-पाठन से प्राप्त हो सके। तसदीक की भिन्न-भिन्न सूरतें हैं। सबए सनाबिल से अधिष्ठाता फवायदुस्सालकीन से नकल करते हैं। हजरत ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रह० का कथन है कि मैं शेख़ युसूफ चिश्ती रह० की महफिल में बैठा था। एक व्यक्ति चेला होने के गरज़ से हाजिर हुआ और शेख़

Scanned with CamScanner

यूसुफ चिश्ती के चरणों में सिर रख दिया। शेख जी उस समय विशेष दशा में थे कहने लगे यदि लाईलाह चिश्ती रसूलल्लाह कहो तो चेला बना लूंगा। वह व्यक्ति दृढ़ विश्वासी और सच्चा मर्द था उसने तत्काल दोहराया तथा शेख यूसुफ चिश्ती ने उसे मुरीद किया। फिर कहा 'मैं क्या हूँ और क्या हो सकता हूँ? मैं तो रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सेवकों का एक सेवक हूँ। यह कलमा तसदीक की जाँच के लिए कहलवाया था।

इस घटना से विदित है कि तसदीक की शक्ति भी खुदा की देन पर निर्भर है। हर व्यक्ति की यह योग्यता नहीं होती और न यह ज्ञान पुस्तक में है जो पढ़-पढ़ाकर प्राप्त कर लिया जाय। देखा गया है कि सम्मानित उलमा तथा आदरणीय प्रयत्न शील लोग आन्तरिक ज्ञान वालों के दया पात्र बने हैं। उन्होंने सत्यता से स्वीकार किया है कि यह हिस्सा अल्लाह के आरिफों (पहचानने वालों) का है। ईमाम हब्बल रह० के हालात में अंकित है कि आप हज़रत बशर हाफी रह० की संगति में अधिक रहते थे। आपके चेलों तथा विश्वासपात्र लोगों ने आपसे प्रश्न किया कि आप आलिम (धर्म ज्ञाता) हैं और मोहद्दिस (रसूले पाक की बातों के ज्ञाता)हैं। यह अचरज की बात है कि आप ने एक मजनू और होश रहित फकीर से सम्बन्ध स्थापित कर रखा है सो आप को शोभा नहीं देता। ईमाम हब्बल रह० ने कहा जिन उलूम (जानकारी) का तुमने नाम लिया है। मैं उनसे अधिक जानता हूँ किन्तु बशर हाफी मुझसे कहीं अधिक खुदा को जानते हैं। हज़रत इमाम साफई रह० की यह दशा थी कि वे बड़े शौक से हज़रत बशर हाफी रह० के साथ घूमा करते थे तथा कहा करते थे :

मुझ से मेरे खुदा की बातें फरमाईये। हजरत ईमाम शाफई का कहना है पूरे विश्व का ज्ञान मेरे ज्ञान को नहीं पहुँचता और मेरा ज्ञान सूफियों के ज्ञान तक नहीं पहुँच सका और सूफियों का ज्ञान उनके पीर (धार्मिक गुरू) की एक बात तक नहीं पहुँच सका।

हज़रत सुफियान सोरी रह० का कहना है कि एक रात मैं हज़रत फजील रह० के पास गया। क़ुरआन की आयतें, हदीसें तथा धर्म के महान लोगों के कथन ब्यान करता रहा, देर तक सत्संग रहा, फिर मैंने कहा यह रात कितनी पवित्र और धन्य है कि अच्छे-अच्छे जिक्र-अजकार (विवाद) होते रहे हैं। वास्तव में ऐसी सभा तन्हाई (एकान्त) से उत्तम है। हज़रत फजील तुम उस धुन में थे कि कहाँ से ऐसी बात लाकर मुझे खुश कर दो। मैं इस फिक्र में था कि कहाँ से ऐसा जवाब दूँ जो तुमको अच्छा

लगे। दोनों अपने-अपने ख्याल में खुदा को भूल गये। अत: मेरे निकट एकान्त में खुदा से लौ लगाना अति उत्तम है। इन बातों से प्रत्यक्ष ज्ञात होता है वाह्य ज्ञान, आत्म ज्ञान का पथ प्रदर्शन नहीं कर सकता। तसदीक वह जौहर है जो पुस्तकीय ज्ञान में नहीं है। सत्य यह है कि तसदीक किताबों से प्राप्त नहीं होती। यह भेद आन्तरिक ज्ञान से सम्बन्धित है और ईश्वर के रहस्य ज्ञाता ही इसके वास्तविक गुरू हैं।

यक़ीन

यक़ीन स्थायी विश्वास ही है। अन्य आन्तरिक दशाओं की भांति स्थायी विश्वास भी अन्त: की दशा है। हुज़ूर वारिस पाक को यक़ीन से विशेष लगाव और संलग्नता थी। आन्तरिक प्रभावों को शब्दों में लाना कठिन किन्तु जाहिरी ढंग से जो बातें हुज़ूर ने बताया है उनके द्वारा पूर्णत: ज्ञात होता है कि वारिस पाक को यक़ीन के सम्बन्ध में कितनी संलग्नता थी। आप किस प्रकार इस विषय की शिक्षा पर ध्यान देते थे। मुन्शी अब्दुल गनी साहब वारसी रईसपुरा और गनी खाँ साहब जिला राय बरेली लिखते हैं कि- युवा काल में हुज़ूर छूरी-कटार मँगवाकर उनकी तेज धार पर अंगुली फेरते और उनके लोहे की तारीफ करते थे। एक बार मैंने आपकी सेवा में एक अति उत्तम भुजाली प्रस्तुत किया। हुज़ूर उसकी धार पर अंगुली फेरते और उसकी बड़ाई करते जाते थे। तत्पश्चात् उठे और एक डाल पर चला दिया। डाल कट गई फिर भुजाली लिए हुए मेरी ओर मुड़े, मैंने सिर झुका लिया, नम्र भाव से कहा ईश्वर को धन्यवाद है। मेरा मिटना आपको पसन्द है फिर आपके पैरों पर सिर रख दिया। आपने कहा मरे हुए को क्या मारना है फिर आकर अपनी आसनी पर बिराजमान हुए। आपके हृदय से प्रेम की तरंगें तरंगित हो उठीं तथा प्रसन्नता का भाव आपके मुखाकृत से झड़ने लगा। आप ने कहा 'आशिक का महबूब की याद में दम निकलता है तथा मरने के पश्चात् आशिक अपने माशूक की सूरत में होता है। जिससे उसको इश्क है वही उसके लिए सब कुछ है। इश्क की राह चलने वालों ने कहा है -

जाके हाथ होई अस किल्ली। सो राजा अरू ताकी दिल्ली॥ (जायसी)

इसके पश्चात पुन: आप ने कहा- माशूक के मिलने न मिलने से दुनिया में वास्ता न रखे, जो दिल में समा गया है उसी पर जमा रहे, बेगर्ज तथा निस्वार्थ जो प्रेम है वह एक कलेजा जलाने वाली अग्नि है जिसको इश्क या अनुराग कहते हैं। यह बेअखतियारी वस्तु है। इसका कोई उपाय नहीं है, श्रम से प्राप्त नहीं हो सकता ये अग्नि जिसके हृदय में सुलगती है शरीर त्याग के पश्चात् उसका रूप माशूक का

Scanned with CamScanner

रूप हो जाता है। 'नहनो अकर ब' (हम तुम्हारे निकट हैं) समझ चुके हो। खुदा सबमें मौजूद है। विचार करो तथा स्मरण रखो स्त्री-पुरूष के बीच जो करार और कबूलियत (स्वीकार करना) होती है। इस इकरार-प्रतिज्ञा का स्त्री इतना भरोसा करती है कि पुरूष हजार कोस पर भी समुद्र के पार होता है तो भी नहीं भूलती। पति भी अपनी पत्नी को नहीं भूलता, उसी की ओर उसका दिल लगा रहता है। जिस तरह सम्भव हो सकता है उसकी खबर लेता रहता है, केवल दो शब्द इकरार और स्वीकृति के कारण वह तुम्हारी पत्नी कहलाती है तथा तुम उसके पति कहलाते हो। एक क्षण के लिए तुम दोनों एक दूसरे को नहीं भूलते हो। भला विचार करो, सम्पूर्ण अधिकार रखने वाले ईश्वर ने तुमको अपनी सूरत पर बनाया तथा रोजे अजल (आदि दिवस) में 'अलस्तो बे रब्बे कुम' क्या मैं तुम्हारा रब (पालनहार) नहीं हूँ, का स्वत: इकरार किया और तुम भी उत्तर में बोले (हाँ) कहकर वचनबद्ध हुए। अब तुम में उस लगाव के अतिरिक्त जो वास्तविक और छुपा हुआ है अर्थात तौहीद का रहस्य है। इस कौल करार पर इतना तो भरोसा अवश्य होना चाहिए जितना एक पत्नी अपने पति पर करती है तथा उपस्थित-अनुपस्थित में उसे अपना जानती है। यह कितना उच्च पद है सर्व शक्तिमान ईश्वर ने तुमको अपनी सूरत प्रदान किया और अपने को तुम्हारा पालन-पोषण करता हुआ ठहराया। तुमने भी बन्दगी का वचन दिया तथा अपना नाम रोजी-रोटी देने वाला (रज्जाक) रखा। तुम्हें शक और सन्देह है। पूर्णरूपेण ईश्वर पर विश्वास भी नहीं करते। इतना भी भरोसा नहीं जितना कि पत्नी के प्रति भरोसा है। मुन्शी अब्दुल गनी साहब वारसी जो वहां उपस्थित थे वर्णन करते हैं कि आपके इस प्रभावशाली भाषण से उपस्थितगण की दशा विचित्र हो गयी। सभी रोमांचित हो उठे तथा नेत्रों से आंसू छलक पड़े। यक़ीन से सम्बन्धित वारिस पाक के कुछ कथन निम्नांकित हैं :

१. यक़ीन विश्वास का प्राण है। जिसमें यक़ीन की कमी है उसमें सदाकद (विश्वास) की भी कमी है।
२. जिनकी दृष्टि दोस्त पर है उनका कोई दुश्मन नहीं है।
३. खुदा पर भरोसा करो वह स्वयं तुम्हारा प्रबन्धक है। यदि कोई अपना उपाय करता है तो वह अलग खड़ा होकर तमाशा देखता है और फिर कुछ नहीं होता।
४. हज़ार कोस से पति अपनी पत्नी की फिक्र रखता है (हृदय की ओर संकेत करते हुए) और जो तुम्हारे भीतर है वह नहीं फिक्र करेगा।

५. जिसके मन में ये हो कि देखिए यह काम हो कि न हो यह कार्य नहीं होता क्योंकि दुविधा में पड़ा है। बल्कि ऐसा होना चाहिए तो जरूर होगा।

विश्वास और यकीन कितनी सुदृढ़ शिक्षा है, ईश्वर से किसी हालत में निराश नहीं होना चाहिए। क़ुरआन शरीफ में आया है 'व मंय्युकनुत मिर्रहमते रब्बेही इल्लद्दालून' पथ भ्रष्टों के अतिरिक्त ईश्वर की दया से कोई निराश नहीं होता है।

दूसरी तरह से इस प्रकार कहते हैं 'अपना हाथ किसी के सामने न फैलाये चाहे मर जाए, खुदा से भी न कहे, चाहे कैसी तकलीफ हो।' क्या अल्लाह नहीं देखता? किसी स्त्री का शौहर हज़ार कोस पर भी हो तो अपनी बीवी की खबर रखता है। अल्लाह तो अपने पास है। क्या वह नहीं देखता? हुज़ूर वारिस पाक के उच्च कथन से सिद्ध है कि अपनी इच्छाओं और अभिलाषाओं से बेफिक्र होना चाहिए। ईश्वर स्वयं जिम्मेदार है। उसके अस्तित्व पर पूर्ण विश्वास और भरोसा रखना ही सब कुछ है। जैसा बायजिद बसतामी रह० का कथन है:

मैंने ३० वर्षों तक ईश्वर को तलाश किया और जब मिल गया तो ज्ञात हुआ कि मैं स्वयं को ही ढूंढ रहा था। यदि ईश्वर पर विश्वास और भरोसा हो तो प्रत्येक काम आसानी से हो सकता है क्योंकि ईश्वर ने स्वयं सब कार्यों का भार ग्रहण किया है। ईश्वर से अधिक किसी पर भरोसा करना अनर्थ और व्यर्थ है। 'व तवक्कलों अलल हय्यइल्लज़ी लायमूतो' अनुवाद -भरोसा करो उस पर जो जीवित और अविनाशी है। हुज़ूर की हिदायत इसी बुनियाद पर होती है। अपना हाथ किसी के सामने न फैलायें चाहे मर जाएं। खुदा पर और उसकी दया पर ऐसा विश्वास होना चाहिए कि अपनी जरूरत कहने की भी इच्छा न हो। इस पूर्ण विश्वास के लिए कहते हैं खुदा से भी न कहे चाहे कैसी भी तकलीफ हो और फिर समझाया जाता है क्या अल्लाह नहीं देखता? और स्वयं उदाहरण भी देते हैं कि किसी औरत का शौहर यदि हज़ार कोस पर हो तो अपनी पत्नी की खबर अवश्य रखता है और अल्लाह तो अपने पास है क्या वह नहीं देखता? साराँश यह है कि दृढ़तापूर्वक ईश्वर पर विश्वास करना चाहिए। जैसा उमर फारूक रजी० कहते हैं कि ईश्वर पर पूर्ण विश्वास रखो। वह तुमको रोज़ी ऐसे पहुँचाएगा जैसे पंछियों को रोजी पहुंचा देता है। अध्यात्मवाद का यह उच्च पद है कि किसी के सामने माँगने हेतु हाथ न फैलाएँ। संसार और संसार वालों से बेगरज हो जाएँ। यहिया मो आज राजी का कथन है कि कयामत (प्रलय) के दिन धनाढयता कुछ भार रखती होगी और न फकीरी। यदि भार होगा तो सब्र और शुक्र का। लोगों ने आप से पूछा कि दुनियां

Scanned with CamScanner

में परहेजगारी किसकी अधिक जानना चाहिए। उत्तर मिला-जिसका यक़ीन बढ़ा हुआ है। हुज़ूर वारिस पाक का कथन है कि जो व्यक्ति अपनी तदबीर और कोशिश करता है अल्लाह मियाँ उससे अलग रहते हैं। क्योंकि वह स्वयं अपना कार्य करता है। जो अल्लाह के भरोसे पर बैठ जाता है उसका कार्य स्वयं अल्लाह करता है। यही स्थान यक़ीन का है जो उच्च पद का परिचय देता है। जो अत्यन्त तपस्या बन्दगी के पश्चात् प्राप्त होता है। **'वाबोदो रब्बक हता याते यकल यक़ीन'** अर्थात् अपने पालनकर्ता (रब) की इतनी बन्दगी करो कि तुमको यक़ीन हो जाए। यही यक़ीन है जो ईश्वर पर भरोसा करने वालों तथा ईश्वर के पुजारियों को सम्पूर्ण संसार से बेफिक्र कर देता है। उनके प्रत्येक कार्य में ईश्वर का हाथ होता है। सवा-सनाविल के अधिष्ठाता ने लिखा है कि फतह मूसली रह० हज करने जा रहे थे। राह में एक अवयस्क लड़के को देखा कि बिल्कुल सामान-रहित दीन-दशा में आ रहा है। फतह मूसली रह० ने पूछा कि ऐ बालक कहां से आ रहे हो? उसने उत्तर दिया-मक्का से। फतह मूसली ने कहा, 'अभी तुम बालक हो, तुम्हारे लिए यात्रा-कष्ट अनिवार्य नहीं है।' पुनः लड़के ने कहा 'इस क्षणिक और नाशवान जीवन का कोई भरोसा नहीं है, मैंने देखा है कि हमसे छोटे बच्चे मरते और दफन किए जाते हैं।' फतह मूसली ने कहा 'तुम्हारे पास कुछ सफर-खर्च है।' लड़के ने उत्तर दिया 'जिस स्थान पर मैं रहता हूँ, मेरे लिए राह-खर्च विश्वास और यकीन होता है। मेरी सवारी मेरे दोनों हाथ-पाँव एवं दूसरी सवारी प्रेम और शौक है। इन्हीं के द्वारा मैं यात्रा करता हूँ।' फतह मूसली ने कहा-मेरा अर्थ इससे नहीं, खाने-पीने के सामानों से है। लड़के ने कहा, 'मुझे एक बात का जवाब दीजिए, वह यह है कि यदि आपके मित्रों में से कोई मित्र आपके घर आए तो क्या आप पसन्द करते हैं कि वह अपने घर से खाने-पीने की सामग्री अपने साथ लाए? मूसली ने कहा-हर्गिज नहीं, कदापि नहीं। पुनः उस लड़के ने कहा, ऐ दुर्बल विश्वास वाले! मेरा ईश्वर जो अनगिनत पापियों और अन्य लोगों तथा अतिथियों को रोजी देता है तो वह मुझे अपने घर बुलाकर खाना पीना न देगा। यही वह यक़ीन विश्वास है जो ब्रह्मज्ञानियों को प्राप्त है।

Scanned with CamScanner

मिशकात-ए-हक़्क़ानिया

(जीवनी वारिस पाक)

लेखक
मौलवी फ़ज़ल हुसैन साहब सिद्दीक़ी वारसी

जुबैरी बुक डिपो
आस्ताना रोड़, देवा शरीफ, बाराबंकी (यु.पी.)

Scanned with CamScanner

में परहेजगारी किसकी अधिक जानना चाहिए। उत्तर मिला-जिसका यक़ीन बढ़ा हुआ है। हुज़ूर वारिस पाक का कथन है कि जो व्यक्ति अपनी तदबीर और कोशिश करता है अल्लाह मियाँ उससे अलग रहते हैं। क्योंकि वह स्वयं अपना कार्य करता है। जो अल्लाह के भरोसे पर बैठ जाता है उसका कार्य स्वयं अल्लाह करता है। यही स्थान यक़ीन का है जो उच्च पद का परिचय देता है। जो अत्यन्त तपस्या बन्दगी के पश्चात् प्राप्त होता है। '**वाबोदो रब्बक हता याते यकल यक़ीन**' अर्थात् अपने पालनकर्ता (रब) की इतनी बन्दगी करो कि तुमको यक़ीन हो जाए। यही यक़ीन है जो ईश्वर पर भरोसा करने वालों तथा ईश्वर के पुजारियों को सम्पूर्ण संसार से बेफिक्र कर देता है। उनके प्रत्येक कार्य में ईश्वर का हाथ होता है। सवा-सनाविल के अधिष्ठाता ने लिखा है कि फतह मूसली रह० हज करने जा रहे थे। राह में एक अवयस्क लड़के को देखा कि बिल्कुल सामान-रहित दीन-दशा में आ रहा है। फतह मूसली रह० ने पूछा कि ऐ बालक कहां से आ रहे हो? उसने उत्तर दिया-मक्का से। फतह मूसली ने कहा, 'अभी तुम बालक हो, तुम्हारे लिए यात्रा-कष्ट अनिवार्य नहीं है।' पुनः लड़के ने कहा 'इस क्षणिक और नाशवान जीवन का कोई भरोसा नहीं है, मैंने देखा है कि हमसे छोटे बच्चे मरते और दफन किए जाते हैं।' फतह मूसली ने कहा 'तुम्हारे पास कुछ सफर-खर्च है।' लड़के ने उत्तर दिया 'जिस स्थान पर मैं रहता हूँ, मेरे लिए राह-खर्च विश्वास और यकीन होता है। मेरी सवारी मेरे दोनों हाथ-पाँव एवं दूसरी सवारी प्रेम और शौक है। इन्हीं के द्वारा मैं यात्रा करता हूँ।' फतह मूसली ने कहा-मेरा अर्थ इससे नहीं, खाने-पीने के सामानों से है। लड़के ने कहा, 'मुझे एक बात का जवाब दीजिए, वह यह है कि यदि आपके मित्रों में से कोई मित्र आपके घर आए तो क्या आप पसन्द करते हैं कि वह अपने घर से खाने-पीने की सामग्री अपने साथ लाए? मूसली ने कहा-हर्गिज नहीं, कदापि नहीं। पुनः उस लड़के ने कहा, ऐ दुर्बल विश्वास वाले! मेरा ईश्वर जो अनगिनत पापियों और अन्य लोगों तथा अतिथियों को रोजी देता है तो वह मुझे अपने घर बुलाकर खाना पीना न देगा। यही वह यक़ीन विश्वास है जो ब्रह्मज्ञानियों को प्राप्त है।

विभिन्न कथन

हुज़ूर वारिस पाक की वाणी, कथन जहाँ तक प्राप्त हो सके हैं पाठकों के लिए अंकित किए जाते हैं :

१. अपनी वज़ा पर कायम रहो।
(अपने जीवन-यापन का सदैव एक ढंग स्थिर रखें।)

२. जो घर बैठे शिष्य होते हैं उसको बैय्यतुल वजह कहते हैं।
३. अगर सात दिन का उपवास हो तो भी ज़बान पर न लावें और अल्लाह से भी न कहें, क्या वह नहीं जानते जो अपने पास है।
४. अपनी बस्ती में रहकर लापरवाह रहना मुश्किल है।
५. जब फाके हों तो सहन करे।
६. बात तो जब है कि साँस खाली न जाए। लोगों ने पूछा किससे साँस खाली न जाए तो वारिस पाक ने कहा अल्लाह से।
७. एक रंग रहे।
८. बड़ी फ़क़ीरी यह है कि हाथ कभी न फैले, निर्लोभी होकर रहें। ईश्वर की दी हुई दशाओं और उसकी मर्जी पर स्थिर रहें। गंडा-तावीज, दुआ-बद्दुआ इत्यादि बिल्कुल न करें, यही फ़क़ीरी है।
९. हाजी अवघट शाह वारसी ने प्रार्थना किया कि हुज़ूर मशायख तवज्जह (ध्यान) देते हैं। यह तवज्जह क्या है? आप ने कहा गर्मी है, मुहब्बत है तो तवज्जह काम देगी और जिसके हृदय में मुहब्बत न हो उस पर क्या प्रभाव होगा?
१०. हाजी अवघट शाह ने हुज़ूर से कहा 'सैय्यद की पहचान लोग ये बताते हैं अगर उनके हाथ पर आग रख दी जाए तो हाथ न जले।' आप ने उत्तर दिया यह सच है किन्तु जो इम्तिहान लेगा वह क़ाफ़िर होगा।
११. यह जो पीर (गुरू) की सूरत है यही सब कुछ है।
१२. जिसने यहां नहीं देखा वह अन्धा है। आदेशानुसार '**मन काना फी हाजेही आमा फहोवा फिल आख़िरतिल आमा**' अर्थात् जिसने यहां नहीं देखा वह अन्धा रहेगा।

हर की इन्जा नदीद महरूमस्त दर कयामत जे लज्जते दीदार

जिसने यहां ईश्वर का दर्शन नहीं किया वह महाप्रलय के पश्चात् भी ईश्वर दर्शन की अनुभूति नहीं कर सकेगा।

१३. फ़क़ीर को किसी से नाराज न होना चाहिए इसका अर्थ यह नहीं कि उससे कोई खुश हो या रूष्ट।
१४. इस सृष्टि का नाम संसार नहीं है बल्कि भूल का नाम दुनिया है।
१५. इस्लाम और चीज़ है ईमान और चीज़ है।
१६. फ़क़ीर वह है जो किसी के समक्ष हाथ न पसारे।
१७. फ़क़ीर को बेलाग होना चाहिए। (फ़क़ीर को सम्पूर्ण सृष्टि से बेगरज और

Scanned with CamScanner

नि:स्वार्थ रहना चाहिए।)

१८. फ़क़ीर किसी का मोहताज नहीं होता।

१९. फ़क़ीर को सवाल हराम है।
(फ़क़ीर को किसी वस्तु को किसी से मांगना निषेध है)।

२०. संसार फ़साद (झगड़े) का घर है और संसार वाले ईश्वर से दूर रहते हैं।

२१. दुनिया की मुहब्बत बुरी चीज़ है।

२२. एक सूरत को पकड़ ले वही मरते वक्त, वही कब्र में, वही हस्र में काम आएगी।

२३. हसद (ईर्ष्या) बहुत बुरी चीज़ है। यहां तक कि शैतान पर भी लाहौल पढ़ने की ज़रूरत नहीं है। शैतान ख़ुदा का रक़ीब (प्रतिद्वन्दी) नहीं है।
'इन्नल्लाहा अला कुल्ले सय इन कदीर' (बेशक प्रत्येक वस्तु ईश्वर के अधीन है)।

२४. चाहने वाले के लिए 'नफ़्रख्तों फी हे मिर्रूही' पर्याप्त है। इसलिए ख़ुदा हमारी मिल्कियत है, हम ख़ुदा की मिल्कियत में हैं। किसी से कुछ माँगने की ज़रूरत नहीं है।

२५. जब इन्सान अपने दम पर काबू पा लेता है तो अठ्ठारह हज़ार आलम उसकी ताबेदारी में आ जाता है। पशु-पक्षी सभी उसका हुक्म मानते हैं।

२६. सैय्यद मुहम्मद इब्राहीम शाह रह० से हुज़ूर वारिस पाक ने पूछा 'तुमने कन्ज पढ़ी है, सर्फ व नहो, मुन्तिक उन्होंने' जी हाँ, कहा फिर सरकार वारिस पाक ने कहा यदि ईश्वर की तलब (चाह या इच्छा) है तो पगड़ी और मौलवीयत ताक पर रख दो तथा कुफ्र इस्लाम को एक समान देखो और समझो कि एक ही काव्य की दो पुस्तकें हैं। काफिर, मोमिन के समान हैं। किन्तु वास्तविक उद्देश्य के प्राप्त करने के रास्ते में विभिन्नता पायी जाती है। किन्तु अहले बैत (मुहम्मद सल्ल० के खानदान वालों) की मुहब्बत शर्त है।

२७. सैय्यदना (हमारे सैय्यद) मारूफ शाह साहब कहते हैं कि एक बार सरकार वारिस पाक काव्य ग्रन्थ 'मसनवी मौलाना रूम' का अध्ययन कर रहे थे। इसी बीच आप ने कहा प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि अपने मन और अपनी इच्छा शक्ति को वश में रखे अन्ततः सफल होगा। यदि इच्छाओं की बागडोर हाथ से छूट जाएगी तो उसे फाँसी की सज़ा दी जाएगी।
चूं कलम दर दस्ते गद्दारे बूबद। ला जुर्म मन्सूर बर दारे बूबद।

जब कलम गद्दार के हाथ होगा तो शक नहीं है मन्सूर को फांसी पर लटकना होगा।
यह पद पढ़कर आपने कहा शब्द गद्दार से अर्थ है-इच्छा शक्ति।

२८. मनुष्य को चाहिए कि ख़ुदा पर भरोसा रखे जब ख़ुदा ने उसकी आवश्यकताओं का उत्तरदायित्व लिया है तो अवश्य पूरा करेगा किन्तु तसदीक चाहिए। जब जिम्मेदार ऐसा अल्लाह है तो सोचना क्या? अति व्यर्थ है।

२९. बड़ी वज़ादारी यह है कि जो करे वह (उसे) किए जाए।

३०. बड़ी फ़क़ीरी यह है कि दस आदमियों को रोटी देकर खाये। यह बात सरकार ने नादिर हुसेन वारसी नग्रामी से फ़रमाया।

३१. पीर (गुरू) बहुत है मुरीद (चेला) बहुत मुश्किल से मिलता है।

३२. मुरीद (चेला) होना चाहिए, मुरीद अर्थात् चेला होगा ते पीर (गुरू) की छाती पर सवार होकर प्राप्त कर सकता है।

३३. पीरों को रस्मी मुरीद बहुत कम मिलते हैं। पर सौभाग्य से मुराद हाथ लगता है। जैसे-ख़्वाजा अबू सईद को ग़ौस पाक, उस्मान हारूनी को मोईनुद्दीन चिश्ती, बाबा फ़रीद को निज़ामुद्दीन औलिया तथा अलाउद्दीन साबिर कोहज़रत शम्श, महबूब ईलाही को अमीर ख़ुसरू, हज़रत मख़दूम बिहारी को मौलाना मुज़फ़्फ़र।

३४. एक बार आपने कहा, आदमी होना चाहिए, आदमी होना बहुत मुश्किल है। थोड़ी देर चुप रहकर फिर आप ने कहा-आदमी उसी वक्त होता है जब उसका पवित्र हृदय ईश्वर के स्मरण में लग जाता है। इसलिए कि मन की कोमलता हज़रत आदम के पैरों के नीचे है और ईश्वर की समीपता तथा सहवास प्राप्त हो जाता है। जब साथ (संगति) हो जाता है घनिष्टता मिल जाती है।

३५. फ़क़ीर लोग वर्षों अचम्भे में पड़े रहते हैं। इसके पश्चात् विलायत और नबूवत का यश प्रकट होने लगता है।

३६. 'जब कुछ न रहा तो फ़क़ीर हो गए।'

३७. 'फ़क़ीरों में बनावट नहीं है और सांसारिक व्यक्तियों में बनावट होती है।

३८. जितने शिष्य है सब हमारी सन्तान हैं जिसको जितनी हमसे मुहब्बत है। उतना ही उसको अपने भाइयों से मेल है। जो लड़का अपने बाप से मुहब्बत करेगा उसको अपने भाई से मेल रहेगा।

Scanned with CamScanner

३९. जिसका जो अंश होता है उसको अवश्य दिया जाता है। जीवन में या मरते समय और नहीं तो उसके क़ब्र में ठूंस दिया जाता है।

४०. अयोध्या वाले रामजी अवतार थे। श्रीकृष्ण जी प्रेमी थे और बाबा नानक साहब पक्के अद्वैतवादी थे।

४१. एक बार ग्यारहवीं शरीफ़ के अवसर पर पूछा गया तो आपने कहा - 'मुकामे हू (ईश्वर के अस्तित्व का स्थान) एक विचित्र मुकाम है। अबजद (अक्षरांक) के हिसाब से 'हे' के पाँच और 'वाव' के छः अंक होते हैं दोनों मिलकर ५+६=११ हुए। ग़ौस पाक का यही मुकाम था। हद यह है कि आप ग्यारहवीं वाले मियां मशहूर हो गए।

४२. हाज़ी अवघट शाह वारसी लिखते हैं कि हुज़ूर वारिस पाक से एक बार पूछा गया कि सुना जाता है कि तिहत्तर फ़िरकों (गिरोह) में से बहत्तर नारी (नरक) में जाने वाले होंगे और एक नाज़ी (मोक्ष पाने वाला) होगा। सभी फ़िरके (गिरोह) अपने को 'नाज़ी' कहते हैं। तो वह कौन सा गिरोह है जो मोक्ष प्राप्तकर्ता है? आपने कहा जो हसद अर्थात् डाह से पाक साफ हो वह मोक्ष प्राप्तकर्ता है तथा जिनके मन में ईर्ष्या हो वह बहत्तर फ़िरके में है। ये सब नरक में जाएंगे। हे, सीन, दाल कुल बहत्तर।

४३. जो नशीब-फ़राज अर्थात् उतार-चढ़ाव में रहेगा, उसको ईश्वर का दर्शन नहीं मिलेगा। जो उतार-चढ़ाव से निकल जाएगा उसका निर्वाण (मोक्ष) संसार में ही हो जाएगा।

४४. प्रत्येक समय सूरत सामने रहे। वही सूरत हर जगह नज़र आने लगेगी। यही फ़ना फिश्शैख हैं। फ़नाफिश्शैख का अर्थ है (गुरू में विलीनता)।

४५. एक बार पूछा गया कि 'हू' क्या है? आपने बताया न ज़ात न सिफ़त निर्गुण-सगुण कुछ नहीं एक मैदान।

४६. हाजी अवघट शाह ने पूछा 'इस्म ज़ात' कौन सा है? आपने बताया ईश्वर बाक़ी है शेष सब सिफात, गुण है।

४७. हम काबा (ईश्वर का घर जहां लोग हज करने जाते हैं) के भीतर यह ग़ज़ल पढ़ने लगे-

'इश्क में तेरे कोहे गम सिर पर लिया जो हो सो हो'

काबा के रक्षक ने कहा 'हाजा बैतुर्रब'(यह ख़ुदा का घर है) है। हमने कहा

वह जगह बताओ जहां ख़ुदा न हो। वह चुप हो गया और कहा इनसे न बोलो।

४८. हज़रत मारूफ शाह साहब लिखते हैं कि जब हुज़ूर वारिस पाक देहली पधारे तो सरमद के मज़ार (वह स्थान जहां फ़क़ीर लोग दफ़न होते हैं) पर भी गए। प्रेमातुर हो मज़ार (समाधि) से लिपट गए और कहा 'सरमद रज़ा-तसलीम'. के बन्दे थे। सिर दे दिया और 'उफ़ नहीं किया, न फ़तवा देने वाले रहे न राज गद्दी किन्तु एक सरमद के स्थान पर हज़ार सरमद पैदा हो गए।'

४९. एक बार अब्दुल गनी खाँ राय बरेली से आप ने कहा 'अब्दुल ग़नी जानते हो हज मकबूल किसका नाम है?' उन्होंने कहा कि आप का ज्ञान उत्तम है। हुज़ूर वारिस पाक ने कहा 'आशिक अपने माशूक से मिल जाय यही हज मकबूल है।

५०. ख़ानदान क़ादिरीया के सम्बन्ध में कहा कि उन पर जादू टोने का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

५१. नादिर हुसेन साहब लिखते है कि हुज़ूर वारिस पाक ने मेरे पिता से कहा 'बड़े मियाँ जो सांस निकले वह अल्लाह के नाम के साथ निकले। जो सांस बिना अल्लाह के नाम निकलती है वह मुर्दा है और बड़े मियाँ एक जिक्र (जप) ऐसा हो जो न सांस से सम्बन्ध रखती है और न जुबान से। उन्होंने कहा कि 'यह हुज़ूर का जप है।' हुज़ूर ने पुनः कहा 'बड़े मियाँ हो जाता है, बड़े मियाँ हो जाता है।' लगभग तीन बार ज़ोर देकर कहा।

इस्लाम धर्म सम्बन्धित कथन

यह बात सुप्रसिद्ध है कि ईश्वर-प्रेमी या आशिके इलाही को प्रेम में किसी अन्य वस्तुओं का ज्ञान नहीं रहता, एक मात्र प्रेम ही उनका धर्म हो जाता है। प्रेम मार्ग में प्रेम ही भगवान तथा प्रेम ही रसूल तथा पैग़म्बर होता है। वह प्रेम के अतिरिक्त न किसी को मानते और न किसी का अनुकरण ही करते हैं। यही कारण है प्रेम वंशीभूत होकर धर्म और सामाजिक रस्म और रिवाजों से अलग हो जाते हैं। लेकिन सरकार वारिस पाक में यह विचित्र बात देखी जाती है कि प्रेम की विलीनता और अनुराग निमग्नता के होते हुए भी आप धार्मिक विधान शरीअत पर भी विशेष ध्यान रखते थे। आप धार्मिक नियमों की पाबन्दी करने वालों को देखकर

Scanned with CamScanner

हर्षित होते थे। ऐसे लोगों में जो कमी या बुराई आप देखते तथा उसके कारणों से सम्बन्धित कमी की किसी न किसी धार्मिक उपदेश द्वारा बताने की चेष्टा करते। हाजी अवघट शाह साहब लिखते हैं कि एक बार सैय्यद नजमुद्दीन साहब मौलवी बाकीपुर ने आपसे पूछा कि इस समय नमाज़ ईश्वर के भय से नहीं होती बल्कि बार-बार करने की आदत हो गयी है। मैं प्रार्थी हूँ कि ऐसी नमाज़ छूट जाने से अच्छा है। हुज़ूर ने मुस्कुराकर कहा 'मौलवी साहब स्थिरता अच्छी होती है। अद्भुत चमत्कारों की वज़ादारी इसी में है कि मरने के दिन तक पढ़े, जाओ।' इस दिन से मौलाना को नमाज़ में मज़ा मिलने लगा तथा इस नश्वर संसार को छोड़ नमाज़ के मध्य उनकी आत्मा ने शरीर त्याग कर दिया।

हाजी अवघट शाह वारसी से कथित है कि मुन्शी गौहर अली के साथ कई महाशय हाजी वारिस पाक का चेला बनने हेतु गये। जब चेला हो गये तो मुंशी फ़ज़ले हुसेन साहब गद्दीनशीन शाह विलायत के आश्रम (तपोभूमि) या कुटी पर ठहराये गये। उन्होंने दोपहर के बाद की दो नमाज़ें छोड़ दिया, पढ़ा नहीं। दिन डूबने के बाद मुंशी फ़ज़ले हुसेन साहब ने उस व्यक्ति को नमाज़ पढ़ने के लिए संकेत किया लेकिन उन्होंने साफ़-साफ़ इन्कार कर दिया। शाह फ़ज़ले हुसेन साहब ने हाजी अवघट साहब से बात कही। जब हाजी अवघट शाह ने उस व्यक्ति की ओर दृष्टि फेरी तो उसने कहा कि हमने सुना है कि जो हाजी साहब का शिष्य होता है उस पर नमाज़ माफ हो जाती है। यदि नमाज़ ही पढ़ना होता तो हम किसी और के चेले नहीं हो लेते। यह सुनकर शाह फ़ज़ले हुसेन हंसने लगे। फिर हाजी अवघट शाह उनको लेकर हाजी वारिस पाक के पास आये और ये सब बातें सुनाईं। सरकार वारिस पाक ने उस व्यक्ति की ओर दृष्टि फेरा और कहा 'अच्छा तीन दिन और नमाज़ पढ़ो फिर माफ हो जायेगी।' यह सुनकर वह आदमी आनन्द विभोर हो चला गया। नमाज़ का पूरा पाबन्द रहा। ठीक तीन वर्ष बाद उसकी मृत्यु हो गई। सरकार वारिस पाक का प्रेम ईश्वर के प्रति अपनी चरम सीमा को होते हुए भी अन्य धार्मिक कार्यों की हिदायत और शिक्षा बराबर देते थे।

मुंशी शाह फ़ज़ले हुसेन साहब का ब्यान है कि उन्नाव में एक बार सरकार वारिस पाक ने ज़ोर-ज़ोर से कहा कि जो नमाज़ नहीं पढ़ता वह हमारी शिष्यता से अलग है। एक बार हाजी अवघट शाह वारसी ने सरकार वारिस पाक से कहा कि बहुत से लोग नमाज़ नहीं पढ़ते हैं। सरकार ने कहा 'नमाज़ जरूर पढ़ना चाहिये। यह सांसारिक व्यवस्था है अगर यह छोड़ दी जायेगी तो संसार के इन्तेज़ाम में ख़राबी

आ जायेगी' और यह भी कहा कि नमाज़ मन की हाजिरी के साथ हो।

मुंशी नादिर हुसेन निवासी नग्गाम लिखते हैं कि एक बार जेठ मास में हुज़ूर वारिस पाक हमारे मकान पर मेहमान थे। जुमे का दिन था। आप ने वज़ू किया और नमाज़ सुन्नत अपने स्थान पर पढ़कर कहा 'सुन्नतें मकान पर पढ़ना सुन्नत है।' वृद्धापन होते हुए भी हुज़ूर पाक ने मस्जिद तक पैदल चलकर जाना चाहा। मौलवी नादिर हुसेन साहब ने कहा- हुज़ूर धूप बहुत तेज़ है, ज़मीन जल रही है। आप ने कहा 'पैदल मस्जिद जाने से हर कदम पर सवाब (पुण्य) प्राप्त होता है। जब लोगों ने मिन्नत-समाजत किया तो आप किसी प्रकार पालकी पर सवार हुए।' इसी तरह का इसी सम्बन्ध में एक कथन अब्दुल ग़नी साहब बिहारी लिखते हैं कि बेलछी जब सरकार वारिस पाक ने एक दिन जुमा से सम्बन्धित बातें बताया 'जुमा की नमाज़ के बाद बहुत से लोग, चार रकाअत नमाज़ ज़ोहर दुहराते हैं। यह शक की बात है और मेरे यहाँ शक नहीं है।'

मुन्शी नादिर हुसेन साहब लिखते हैं कि मेरे माननीय पिता जी जो एक बुज़ुर्ग और रोज़ा-नमाज़ के पाबन्द आदमी थे, एक बार हुज़ूर की सेवा में उपस्थित थे। मैं भी मौजूद था। हुज़ूर वारिस पाक ने मेरे पिता को सम्बोधित करते हुए कहा 'बड़े मियाँ, जो आदमी चोरी-छिपे नमाज़ पढ़ता है, उसकी नमाज़ हो जाती है।' मेरे पिता ने कहा - जी हाँ! जरूर हो जाती है। फिर हुज़ूर वारिस पाक ने कहा 'ये हदीस भी सत्य है- **मन काला लायेलाहु इल्लल्लाहा, फ़दख़लल जन्नत।**' मेरे पिता ने कहा- जी हाँ। पुनः वारिस पाक ने कहा यह रवायत (देखी हुई बात) भी सत्य है कि जनाब रसूल मकबूल मुहम्मद रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत बिलाल जिनसे अल्लाह राज़ी है से कहा 'मदीना में मुनादी करा दो- **मन काला लाएल्लाह०**' और हज़रत बिलाल मुनादी करने जा रहे थे कि रास्ते में उमर फ़ारूक रज़ी० (जिनसे अल्लाह राज़ी है) मिल गये। हज़रत बिलाल को लौटाकर लाये और सरकार मदीना से विनयपूर्वक कहा 'हुज़ूर पूर्ण सत्य है। अवश्य ही वह जन्नत में जायेगा जिसने कहा **लाईलाहा इल्लल्लाह**, परन्तु इस्लाम के रूक्न (इस्लाम धर्म के मुख्य अंग) कोई पूरा नहीं करेगा।' मेरे पिता ने स्वीकार किया कि यह भी रवायत सत्य है। पुनः सरकार वारिस पाक ने कहा 'कोई हज़रत उमर फ़ारूक रज़ी० के रास्ते पर चलने वाला चाहिये।' एक बार वारिस पाक ने इस प्रकार लोगों से कहा 'रोज़ा-नमाज़ और चीज़ है ईमान और चीज़ है। नमाज़ तो इस्लाम का अंश है। यदि कोई एक लाख रुपये की चीज़ रखी हो तो उसका ख़्याल

Scanned with CamScanner

भी दिल में न लाये, बस यही ईमान है।'

किसी का हक हिस्सा देने के सम्बन्ध में आपका कथन है 'किसी का हक मारना बहुत बुरा है। मनुष्य को इसका ध्यान रखना चाहिये।' फिर ये भी कहा 'ईबादत नमाज़ ही नहीं अपने गृह प्रबन्ध में आवश्यक वस्तुओं को ला देना, पत्नी की जरूरतों को पूरा करना, बाल-बच्चों की देख-रेख, लाड-प्यार तथा सेवक-सेविकाओं का पोषण तथा अन्य भार को सहन करना, खाना खिलाना इत्यादि सब तपस्या, बन्दगी तथा इबादत है।' विश्वास और अक़ीदे के सम्बन्ध में आपका कथन है कि चारों सहाबा (चारों यारों) दर्जा-ब-दर्जा माने। इन सब कथनों से विदित है कि हुज़ूर वारिस पाक सुन्नत पर चलने वालों को सुन्नत के नियम, उप-नियमों के बारे में शिक्षा देते थे। जैसा देखने में आया है कि कुछ अध्यात्मवादी सब एक तरफा अध्यात्म की ओर बह गये हैं। किन्तु हुज़ूर पाक जब किसी को मुरीद करते थे तो सर्वप्रथम शरीयत से रोकी गयी तथा अनुचित बातों से तोबा (इनकार) कराते थे। आत्म शक्ति के प्रभाव से हृदय के पापों की जो धुलाई होती थी उसका वर्णन करने से नहीं हो सकता है किन्तु वाह्य रुप से शरीयत के ख़िलाफ़ बातों से बचने की विशेष हिदायत होती थी।

मौलाना मौलवी सैय्यद अब्दुल ग़नी साहब बिहारी अपनी पुस्तक 'अख़्बारिल तवकातुल कुबरा' में लिखते हैं कि एक नवजवान सैय्यद अपनी पत्नी सहित वारिस रखैल थी और उसका नाम रजबी था, दोनों उस समय जब हुज़ूर बेलछी में थे, हाजिर हुए। दोनों को फजीहत शाह वारसी ने भेजा था। कारण यह था कि दोनों ने उनसे मुरीद होने के लिए कहा था। फजीहत शाह ने सूचना देकर दोनों को बुलवाया था कि आज मुरीद हो लें। मुसम्मात रजबी तो पहुंचने के दिन ही मुरीद हो गयीं तथा दूसरे दिन सैय्यद साहब भी आकर मुरीद हो गये। फजीहत शाह का कहना है कि हम लोग उस समय किनारे खड़े होकर आपस में बातें या कानाफूसी कर रहे थे कि दोनों हुज़ूर के चेले बनकर आज से ज़ना (घाट) के पापों में लिप्त होंगे। तभी हुज़ूर वारिस पाक के एक सेवक ने आकर हम लोगों को सूचना दिया कि हुज़ूर आप लोगों को बुला रहे हैं तुरन्त ही हम लोग सेवा में उपस्थित हुए। आप ने कहा 'अब्दुल ग़नी, तुम लोग जल्द इन दोनों का निकाह कर दो।' हम लोगों के अपने स्थान पर पहुंचते ही दोनों निकाह लिए हुए पहुंचे और सैय्यद रहीमुद्दीन साहब एडीटर 'अल पंच', फजीहत शाह और मैंने उन लोगों का निकाह पढ़ाया।

हाजी अवघट शाह वारसी लिखते हैं कि क़ौम के एक ठाकुर सरकार वारिस

पाक की सेवा में आये और कहा हुज़ूर आप से मैं मुरीद होना चाहता हूँ किन्तु हमारी तीन शर्तें हैं। पहली शर्त यह है कि मैं झूठ बोलता हूँ, बोलता रहूंगा। दूसरी यह है कि में सूद लेता हूँ, लूंगा तथा तीसरी और आख़िरी शर्त ये है कि मैं एक वेश्या से फंसा हूँ उससे अपना सम्बन्ध न तोड़ूंगा। आप ने कहा अच्छा तीन वर्ष ठहरो फिर मुरीद करेंगे। जब वह चला गया तो हाजी अवघट शाह ने कहा हुज़ूर यह आदमी कार्य बहुत करता है और सच्चा भी था। हुज़ूर वारिस पाक ने कहा यदि हम उसकी शर्तें के साथ उसको चेला बना लिए होते तो यह अख़्तवारी हो जाता। हुज़ूर वारिस पाक की आन्तरिक शक्ति का प्रभाव जादू की तरह होता है, जिसका वर्णन करना कठिन है। किन्तु जो कुछ देखने में आता था वह भी लोगों की ज़बान पर चढ़ जाता था।

हुज़ूर वारिस पाक की बात-बात में धर्म तथा सत्य ज्ञान का रहस्य प्रकट होता था। आपकी जो वाणी अद्वैत्यवाद की है, उनसे विदित होता है कि सरकार वारिस पाक ने सभी धर्मों का भेदभाव समाप्त कर दिया है तथा धर्म का अन्तर और वादों को समाप्त करने का प्रयत्न किया है। सबको एक होने की दृष्टि से देखा है। आप ने एकता को प्रत्यक्ष भाव से विदित कराया है। आप कहते हैं 'हमारे यहाँ सब एक हैं। कोई भेदभाव नहीं।' यही अन्दाज़ और एक रंगी हुज़ूर वारिस पाक के मन, वचन और कर्म सब में उजागर होती थी। आपका कथन है कि कुल मानव की औलाद की गणना मुहम्मद सल्ल० की उम्मत में है क्योंकि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल० पर नबूवत समाप्त हो गयी है। क़ुरआन और आसमानी ग्रन्थों का उतरना समाप्त हो चुका है। अब न कोई नबी (ईश्वर को ख़बर देने वाला) होगा और न कोई ग्रन्थ उतरेगी। अत: सभी मानव जाति की गणना मुहम्मद सलअम की उम्मत (मानने वालों) में होगी। स्वीकार करने वालों अथवा अस्वीकार करने वाले सभी पर आदेश समान है। मानने वाले पथ पर हैं और न मानने वाले पथ भ्रष्ट है। किन्तु उम्मत की हैसियत से सब एक हैं जैसे आदेश मानने वाली और विद्रोह करने वाली प्रजा दोनों राज्य की प्रजा हैं।

धर्म तथा सत्य ज्ञान जिसको तसव्वुफ कहते हैं इसमें भी आप अद्वितीय थे शील तथा आचरण धर्म और सत्य ज्ञान का आवरण है। आप के प्रत्येक भाव तथा कर्तब्य से उक्त आदर्श प्रकट था। धर्म का जो आदर तथा सम्मान आप की दृष्टि मे था उसे आकना छोटी बात नही है। मौलवी हकीम महमूद अली फतेहपुर लिखते हैं कि एक काबुली मौलवी रमजान अली साहब जो आगरा की बड़ी मस्जिद में पेश-इमाम थे। संयोगवश एक बार फतेहपुर पधारे और नजीर साहब रह० की मस्जिद में उतरे उनकी सेवा में बहुत से लोग बैठे हुए थे। साधु सन्त और ईश्वर

Scanned with CamScanner

भक्तों के सम्बन्ध में बात चल रही थी । मैं भी वहाँ उपस्थित था। उन्होंने कहा एक को मुझको कुछ रूपयों की जरूरत थी। यह सोचकर मैं एक बुजुर्ग अखबन्द साहब के खितमत में हाजिर हुआ और नियमानुसार बैठ गया। एक व्यक्ति ने दो रूपये उनके नजराने में दिए और उन्होंने उन्हें मुझे दे दिया इसी तरह कई बार में उस बुजुर्ग से रूपये प्राप्त हो गए। दिन के लगभग ग्यारह बजे थे। मैं अपने मन में सोच रहा था कि एक रूपए और मिल जाते तो अपने बच्चों के लिए भेज देता। उस बुजुर्ग जामी साहब ने मुझे आदेश दिया कि हाजी साहब दाता की सेवा में चले जाओ। लगभग बारह बज चुके थे। पानी बरस रहा था। मैं सोच रहा था। कि क्या करूं। मैंने कहा, पानी भी बरस रहा है और बारह भी बज रहे हैं। मैं जाना पसन्द नहीं करता किन्तु उस बुजुर्ग ने स्वीकार नहीं किया और मुझको हाजी वारिस पाक की सेवा में जाने के लिए बाध्य किया। हलकी सी वर्षा हो रही थी। मैंने अपनी धार्मिक पुस्तक को कपड़े में लपेट कर कांख में दबा लिया और चादर से इस प्रकार ढ़क लिया कि कोई यह न जान सके कि मैं कुछ लिया हूं। मेरा उद्देश्य उस वर्षा से पुस्तक को बचाना था। जब मैं हुजूर पाक के पास पहुँचा तो सरकार वारिस पाक तेज़ी से बाहर निकले। मिलने आता देखकर परेशान हो गया और कहा हुजूर मैं आप का सेवक हूँ। मेरा इतना सम्मान उचित नहीं है। आपने कहा यह तुम्हारा सत्कार नहीं हैं।

किन्तु उस ग्रन्थ का जो तुम्हारी बगल में दबी है। मैं सोचने लगा कि फेका (शरीयत के ज्ञान की पुस्तक) की पुस्तक का जब हुजूर इतना सम्मान करते हैं तो सुन्नत से उनको जो लगाव है वह कितना अधिक होगा। उसी समय एक व्यक्ति आया और हाजी साहब को एक रूपया भेट करने की नियत किया सरकार ने उससे कहा हम क्या करेंगे। उन मौलवी साहब को दे दो। उक्त बात से यह विदित होता है कि हुजूर का ज्ञान कितना तीव्र और ज्ञान दृष्टि कितनी उत्तम थी।

सरकार वारिस पाक का गौरव, महत्व तथा मर्यादा कहने सुनने की आवश्यकता नहीं रखता। आप हदीस, फेका, धर्म-शरीयत सबकी मर्यादा करते थे। वाह्य रूप वालों से उक्त बातों का ऐसा सम्मान हो ही नहीं सकता साथ ही आन्तरिक रूप वालों से भी ऐसे उदाहरण बहुत कम मिलते हैं क्योंकि प्रेमावस्था तथा अनुराग की उमंग भरी दृष्टि सभी बातों को तुच्छ और व्यर्थ कर देती है। हुजूर वारिस पाक में जितना अधिक प्रेम सम्बन्धी दशाओं का बाहुल्य है उतना ही धर्म इस्लाम के विधि नियम इत्यादि की पाबन्दी की अधीकता पर बल पाया है। अतः सिद्ध हो रहा है कि सरकार वारिस पाक के सम्पूर्ण सदगुणों से परिपूर्ण व्यक्तित्व में एक ही ज्ञान और एक ही विशेषता का प्रदर्शन न होकर सभी भाँति की दशायें और गुणों का प्रदर्शन

पाया जाता है। अतः भिन्न-भिन्न विचार अथवा पसन्द के लोगों ने अपना मनोवान्छित फल प्राप्त किया है। धार्मिक ज्ञान का इच्छुक धर्म, तप जाप वाला तप जाप तथा नौकरी और संसार के इच्छुक ने संसारिक सुख और वैभव प्राप्त किया है।

अनुराग अवस्था में भी देखा गया है कि आप को इस्लाम धर्म की पवित्र रस्म रिवाजों और संस्कारों से बहुत उत्तम लगाव रहा है जैसे मवलूद शरीफ (मुहम्मद साहब का जन्म दिन और उससे सम्बन्धित बातें) ग्यारहवीं शरीफ, मोहर्रम का उत्सव कौवाली इत्यादि।

मीलाद शरीफ़

जवानी के जामाने में सरकार वारिस पाक मीलाद शरीफ की महफिलों में अधिक सम्मिलित होते थे और समाप्ति पर पंज सूरह स्वयं पढ़ते तथा वहाँ जो भी हाफिज कारी होते सबसे पढ़वाते थे। आदर तथा सम्मान सहित आप खड़े होकर सलाम पढ़ते और लोगों से पढ़वाते भी थे। आप स्वयं मीलाद का प्रबन्ध करवाते और आदर सम्मान सहित खुद महफिल करते थे। शाह अबू मुहम्मद अली हसन अशरफी अल जीलानी कहते हैं कि हुजूर वारिस पाक के पर्दा करने के दो तीन वर्ष पूर्व देवा शरीफ जाने का ईरादा किया और मेरे पहुँचने से एक दिन पहले देवा शरीफ में हाजी साहब किब्ला ने फज़ल हुसेन साहब वारसी को आदेश दिया, मिठाई तैयार कराइए कल मीलाद शरीफ होगा। दूसरे दिन मैं दस बजे देवा शरीफ पहुँचा और शाह फज़ल हुसेन साहब के पास ठहरा। बातों के बीच उक्त शाह साहब ने मुझसे कहा कि आप ने अपने आगमन की सूचना किबला हाजी साहब को दिया होगा जो सरकार ने मिटाई तैयार करवा रखी है। मैंने कहा भाई कोई सूचना नहीं। ज्ञान प्रकाश से प्रकाशित अवलिया-अल्लाह के मन प्रकाशमयी होते हैं। उसी दिन मीलाद की महफिल की गयी। तत्पश्चात् हाजी साहब में श्री शाह फज़ल हुसेन शाह वारसी को आदेश दिया 'कल फिर शाह साहब से मवलूद शरीफ पढ़वाओ।' फिर मिठाई तैयार हुई और दूसरे दिन मीलाद समाप्ति के पश्चात् हाजी साहब से बिदा हुआ।

ग्यारहवीं शरीफ

मीलाद शरीफ की तरह आप को ग्यारहवीं शरीफ की मजलिस का भी बहुत शौक था। ऐसी सभाओं से आप आनन्दित होते थे। जीवन के मध्य भाग से पूर्व आप स्वयं इस महफिल का प्रबन्ध कराते थे तथा सम्मिलित होते थे। यह आचरण अन्त तक भी रहा किन्तु थोड़ी देर हेतु। जब कोई ग्यारहवीं की नज़र आपके सामने लाता तो आप फातिहा दे देते थे।

Scanned with CamScanner

मौलवी बशीर ज़मां साहब निवासी सन्डीला लिखते हैं कि एक वर्ष संयोगवश मैं ग्यारहवीं के सुअवसर पर देवा शरीफ में उपस्थित था। मैंने नियमानुसार हज़रत शैख़ समदानी महबूब रब्बानी की नज़र के लिए मिठाई मंगवाई। मंगवा कर हुज़ूर वारिस पाक की सेवा में फातिहा देने के लिए पेश किया। उस समय विश्राम कर रहे थे। फौरन उठ बैठे और मुझको नज़र पेश करने का इशारा किया। अपनी विधि के अनुसार जैसे ही मैं उठना चाहा हुज़ूर ने कहा बैठ जाओ। आदेश का पालन करते हुए मैं बैठ गया किन्तु शीघ्रता से उठने-बैठने के कारण मेरे पैर की नस चढ़ गयी और अत्यधिक कष्ट होने लगा। मैंने हुज़ूर वारिस पाक की ओर देखा। आप दोनों हाथ उठाये फातिहा पढ़ रहे थे और अधखुली आँखों से मुस्कुराते हुए मुझे देख रहे थे। इतना कष्ट होते हुए भी मैं रोमांचित और आनन्द विभोर हो रहा था। थोड़ी देर में फातिहा पूरा हो गया और सरकार ने मुझे मिठाई देकर बिदा कर दिया। देखा गया है अन्तिम समय में आप बैठकर फातिहा देते थे परन्तु जो खड़े हो जाते उनको रोकते नहीं थे।

मोहर्रम शरीफ

अन्य रस्मों बारावफात, ग्यारहवीं शरीफ की तरह आपको मुहर्रम से भी आन्तरिक लगाव था। ताज़िया वाले घरों पर आप जाते थे। कभी बैठते थे और कभी थोड़ी देर खड़े रहकर लौट आते थे। जीवन के अन्तिम चरण में आप केवल देवा शरीफ में दो ताज़ियों तक जाते थे। छोटी बीबी और घसीटे मियाँ की ताज़िया तक। प्रातः बस्ती के सभी ताज़िये आपके द्वार तक आते, उस समय आप बाहर खड़े होकर ताज़ियों को देखते रहते थे। जब ताज़िया वाले अपनी-अपनी ताज़िया लेकर चले जाते तो आप भीतर प्रवेश कर लेते थे। मोहर्रम की दसवीं और चालिसवें को आपके आदरणीय चौखट पर सबील रखी जाती थी। सरकार वारिस पाक मोहर्रम की प्रथम तिथि की रात में कुरआन अधिक पढ़ते थे। शेष तिथियों में मौन धारण रखते थे। मोहर्रम के दस दिनों में आप मरसिया भी सुनते और अहले बैत की वीरता की बात भी सुनते थे। किन्तु जब कोई बैन (रोदन या रोना) करता तो आप कहते यह गलत है। वह तो तसलीम रज़ा पर थे। ऐसा नहीं हुआ। ये सब तो रोने-रूलाने के लिए बनाये हैं।

कौव्वाली का शौक

पुराने बुजुर्गों से जो उस समय के थे सुना गया है कि हुज़ूर वारिस पाक को जीवन के आरम्भ में समाअ (कौव्वाली सुनने) का बड़ा शौक था। आप मजलिसों में बैठते भी थे किन्तु आपको हाल की दशा में बहुम कम देखा गया है।

बाल्यावस्था की कुछ बातें लोगों में बहुत मशहूर हैं जिनके अनुसार एक दो

बार आप द्वारा कैफियत प्रदर्शित है। एक बार हुज़ूर वारिस पाक को अजमेर शरीफ में समाअ कौव्वाली की मजलिस में कैफियत हुई कि सारे लोग मस्त होकर रोमांच में हो गये। जवानी के ज़माने से अन्त तक कभी आप की दशा ऐसी नहीं हुई जिसको देखने वाले वज्द (रोमांच) या हाल कहे। हुज़ूर अपनी दशा कैफियत आदि को बहुत छिपाते थे और किसी पर किसी दशा में अपनी अवस्था नहीं प्रकट होने देते थे। अन्त में आप साल भर में एक बार अपने आदरणीय पिता के मज़ार पर उर्स के दिन बैठते और दो चार पद सुनकर उठ जाते थे। हाँ ! यह बात अवश्य थी कि दोपहर की नमाज़ के बाद हाजी अवघट शाह वारसी सुन्दर स्वर में एक दो गज़लें सुनाते और आप आनन्द से सुनते रहते थे। उक्त उर्स में दो चार मिनट बैठने के बाद आप किसी कौव्वाली की मजलिस में सम्मिलित नहीं होते थे। हाँ! यह बात तो थी कि आप गाने वालों की सहानुभूति में गाने वालों को आदेश मिल जाता किन्तु बहुत कम समय तक। ऐनुल यक़ीन में लिखा है कि हुज़ूर वारिस पाक के अज़ीमाबाद पधारने पर सैय्यद मौलवी शरफुद्दीन साहब ने कौव्वाली का प्रबन्ध किया। बहुत से लोग एकत्र हुए। जब भीड़ अधिक हो गयी तो हज़रत मुहम्मद इब्राहीम बेग शैदा हुज़ूर की सेवा में जाकर हुज़ूर से समाअ में चलने की प्रार्थना किया। आपने कहा 'मैं यहाँ से भी वैसा ही देखता हूँ।' वारिस पाक के इस कथन से शैदा मियाँ विशेष अवस्था को प्राप्त हुए तथा उन्होंने वहीं से उस महफिल को देखा। मध्य की दिवार भी ओट नहीं थी। ये देख कर शैदा मियां चुप हो गये फिर चलने का अनुरोध नहीं किया। सत्य यह है कि हुज़ूर वारिस पाक के सामने सब कुछ रोशन और प्रकट था।

महवीयत और इस्तगराक़

शब्दों का अर्थ है निमग्नता और विलीनता। अन्तिम समय में आप सदैव निमग्न और विलीन रहा करते थे। यही कारण था कि आप कौव्वाली तथा किसी प्रकार की मजलिस अथवा महफिल में नहीं जाते थे। यद्यपि हर वक्त आप जागे रहते थे पर नेत्र मूंदे रहते थे, यहाँ तक कि कई वक्त भोजन भी नहीं करते थे। सेवकगण बड़ी कठिनाई से आपको सम्बोधित करते तथा भोजन के तरफ ध्यान दिलाते। नमाज़ अदा करने की यह दशा थी कि जब आप नमाज़ के लिए खड़े होते तो एक आदमी पास बैठ जाता। जब आप नमाज़ पूरी कर लेते तो पूछते थे कि नमाज़ ठीक हो गयी। यदि वह कहता कि हो गयी तो ठीक और नहीं तो नमाज़ दहराते थे।

Scanned with CamScanner

नमाज़ का हर स्तम्भ आप देर से पूरा करते थे। आपका दैनिक नियम बन गया था कि संध्या के पश्चात् आप अंगुलियों पर कुछ पढ़ते थे। एक बार जब हुज़ूर शिकोहाबाद से मलावली जिला-मैनपुरी को जाने लगे तो पालकी का पट बन्द करने में आपका अंगूठा दब गया। जब मलावली पहुँचकर पालकी का पट खोला गया तो आपका अंगूठा बाहर आया। अंगूठे में सूजन अधिक थी, देखने से मालूम होता था कि कष्ट भी अधिक होगा किन्तु आपके मुखाकृति पर कष्ट का कोई भाव नहीं था। निमग्नता के कारण आप आने वालों से बार-बार पूछते कि कौन है? इन्हीं दशाओं में कुछ लोगों को तरह-तरह की शंका पैदा हुई और उन्हें उनका जवाब भी प्राप्त हुआ। ऐसी ही एक घटना चौधरी ख़ुदा बख़्श साहब के सामने प्रकट हुई। एक व्यक्ति के मन में हुज़ूर वारिस पाक को देखकर यह भावना उपजी कि जब हाजी जी इतने बेसुध हैं कि विशेष सेवकों को कई बार पूछते हैं तो फिर साधारण चेलों को क्या पहचानेंगे? हुज़ूर वारिस पाक ने नेत्र खोल दिया और सेवक से कहा इनको तहबन्द (कमर में लपेटा हुआ वस्त्र जो पाँव तक होता है) दे दो। जब वह तहबन्द लेकर वापस आया और उसको खोल कर देखा तो चारों कोने पर अपना नाम लिखा देखकर हैरान हो गया। अपनी शंका पर लज्जित हुआ।

इसी प्रकार की एक घटना कसीमुद्दीन साहब पेन्शन प्राप्तकर्ता इन्सपेक्टर मद्रास से भी प्रस्तुत हुई। इन्होंने भी अपने मन में सोचा कि जब हाजी साहब की दशा ऐसी है तो फिर अपने चेलों की क्या खोज ख़बर लेंगे। कई बार उनके मन में इस विचार की पुनरावृत्ति होती रही तभी सरकार वारिस पाक का पवित्र शरीर हिला (कसीमुद्दीन साहब स्वयं कहते हैं) और मैंने हुज़ूर वारिस पाक के माथे के सम्मुख देखा कि पटरी दिखायी दे रही है जिसमें मुरीदों की तस्वीर ग्रुप में दिखायी देती है। जिसमें हुज़ूर पाक की अचेतन अवस्था में चेतना का पता चलता है।

निमग्नता तथा विलीनता में आपकी ऐसी दशा रहती थी कि आपको अपने शरीर का कोई ज्ञान नहीं रहता था। न तो आपको गर्मी-ठंडी का ज्ञान रह जाता था। किन्तु इस अवस्था में भी जो घटनायें प्रकट होती वह लोगों को चकित कर देती थीं एक बार लोगों ने हुज़ूर से पूछा कि कौव्वाली में हाल आना (अर्थात् विशेष दशा का होना) कैसा है? आपने कहा 'ख़ुदा की रहमत है, बहुत अच्छा है, बहुत अच्छा है।' फिर किसी ने पूछा अधिकांश लोग हाल लाते हैं, अतः हाल लाना कैसा है? आपने कहा 'हराम है और न लाने वाला मरदूद है।' एक ही प्रकार के दो प्रश्नों के विलोम उत्तर सुनकर लोगों ने पुनः प्रार्थना किया तो आपने बताया प्रथम प्रश्न हाल (रोमांच) आने के सम्बन्ध में था। दूसरा प्रश्न हाल लाने के सम्बन्ध में था। इतनी

ईश्वर विलीनता और निमग्नता होते हुए भी हुज़ूर वारिस पाक को प्रश्नों के प्रत्येक शब्द का ज्ञान रहता था। जैसा जो प्रश्न होता था ठीक वैसा ही उत्तर आप से प्रकट होता था। इन घटनाओं से यह सिद्ध है कि आप सदैव एक विशेष दशा में रहते हुए भी प्रत्येक की दशा से भिज्ञ थे। जैसा कि सैय्यद अली हसन साहब अशरफ़ी डाल जीलानी गद्दी नशीन किछौछा शरीफ का कथन है कि लोग यह समझते थे कि पूज्य हाजी बाबा हमसे बात करते हैं और हज़रत ईश्वर में निमग्न थे। बात करने वाला बात करता भी और उनको ख़बर भी न थी।

कथा-कहानी सुनना

हुज़ूर वारिस पाक कथा कहानी बड़े चाव से सुनते थे। जीवन के अन्तिम समय तक जब आप विश्राम करते, किस्से, कहानी सुना करते थे। रात के बारह बजे तक काज़ी बख़्श अली जमींदार गदिया कथा सुनाने का कार्य सम्पन्न करते थे। प्रत्येक दिन नई कथा का आदेश होता था। काज़ी बख़्श अली साहब कहते हैं कि जब भी मैं हुज़ूर से अलग होता नई कथायें सोचता रहता फिर आने पर आप पूछते 'इतनी देर तक कहाँ रहे? मैं कह देता कि कहानी सीख रहा था। जब हुज़ूर पूर्णतः शान्त होते थे मैं चुप हो जाता था। आप संकेतात्मक ढ़ंग से बोलते तथा कथा के उस अवसर से सम्बन्धित दो चार वाक्य दुहराते थे। फिर मैं कहानी आगे बढ़ाता था। जब कभी मैं घोर निंद्रा के प्रभाव में कहानी भूल जाता कि क्या कहें तो आप उस कहानी का पूरा पता देते और कुछ अंश दुहराकर बताते कि यहाँ तक कहा है। प्रत्येक कहानी का फल इतना सुन्दर बतलाते जो अति शिक्षाप्रद होता। कहानी वक्ता जैसे ही अपनी कथा रोकता आप टोक दिया करते थे। सरकार वारिस पाक के कहानी सुनने की छवि निराली थी। आपके कानों में रूई ठूंसी रहती थी। अन्य समय में भी कानों में रूई भरी रहती थी जिसे प्रति दिन बदल दिया जाता था। कथायें प्रेम से सम्बन्धित होती थीं। कभी-कभी दिन में भी यह कार्य हुआ करता था। आपकी बैठकों में चाहें लोग अधिक क्यों न हों आपके लिए सभाओं में एकान्त का दृश्य होता था।

आचरण तथा स्वभाव

सरकार वारिस पाक अपने स्वभाव तथा आचरण में विशेष स्थान रखते थे। सत्याचरण आप अधिक पसन्द करते थे। नम्रता तथा विनम्रता की यह दशा थी कि किसी भी दशा में आप कठोर वचन न निकालते और न किसी को घुड़कते और झिझकते थे। कभी अपने पास उपस्थित सज्जनों के मन बहलाव के लिए आनन्दित

Scanned with CamScanner

करने वाली कुछ बातें कह देते थे किन्तु वह भी सत्यता से खाली नहीं होती थीं। मिसाल के तौर पर :

मौलवी सैय्यद हैदर ग़नी साहब वारसी नक़ल करते है कि अन्तिम बार वारिस पिया सैय्यद शरफ़ुद्दीन साहब के घर पधारे। यहाँ बहुत तैयारी के साथ सजावट की गयी थी। सरकार वारिस पाक के विश्राम का कमरा मूल्यवान और सुन्दर वस्तुओं से सजाया गया था। जब आप बिदा होने लगे तो बैरिस्टर को सम्बोधित कर कहा 'बैरिस्टर! अब हम जाते हैं, तुम अपनी सब चीज़ें देखभाल लो।' बैरिस्टर महोदय ने इधर-उधर देखकर कहा 'सब मौजूद हैं, केवल दिल नहीं मिलता।' हुज़ूर पाक ने मुखरित हो बैरिस्टर साहब को गले लगा लिया। जो गुणी और विशेषज्ञ आपकी सेवा में हाज़िर होते आप उन पर विशेष कृपा दृष्टि रखते थे। उसके मनोवांछित पुरस्कार भी उसको प्रदान करते थे। किन्तु कभी भी किसी को यह ज्ञान नहीं हो पाता था कि हुज़ूर को किस हुनर की ओर का लगाव है। अपनी-अपनी गरज़ और मनोकामना की ओर जब सरकार वारिस पाक का ध्यान गरज़मन्द लोग न पाते तो वह भिन्न-भिन्न ढंग से आपका ध्यान अपनी ओर फेरने के लिए विचित्र उपाय सोचते। कोई पत्थर आपके सामने लाता तथा अपना सर फ़ोड़ने के लिए उतारू होता और कोई चाकू लेकर आत्महत्या करने को दिखाता। आप सहम कर दो चार शब्द आशाजनक कहते और आपका दामन छोड़ देता था। कभी सेवकगण लोगों को इन कार्यों के लिए उसको रोक दिया करते थे। सरकार वारिस पाक जब पैदल चलते तो आपके चलने की गति इतनी तेज़ होती थी कि तीव्र गति से चलने वाले भी आपके साथ चल नहीं पाते थे। आप अपने मुख की लार निकाल कर तर्जनी अंगुली से अपनी आँखों में लगाते थे। जुमा की नमाज़ कभी नहीं छोड़ते थे। रमज़ान शरीफ के महीने में जब हुज़ूर वारिस पाक देवा शरीफ में होते तो शाह फ़ज़ल हुसेन साहब वारसी की मस्जिद में दो क़ुरआन शरीफ ख़त्म कराते थे। आप तरावीह (रमज़ान के महीने की विशेष नमाज़) पढ़ लेने के पश्चात् भोजन लेते थे। सफर की हालत में आप जिस शहर में होते उसी शहर में जुमा और दोनों ईदों के अवसर पर वहाँ के पेश इमामों (नमाज़ पढ़ाने वालों) को छोटा ख़ुतबा पढ़ने की हिदायत करते थे।

प्रत्येक पर्व पर हुज़ूर क़ुरआन की पच्चीसों प्रतियां मंगवाकर दीन-हीनों में बंटवा दिया करते थे। आपके सामने जब भोजन प्रस्तुत किया जाता तो प्रथम आप यह पूछते थे कि सभी अतिथियों और मेहमानों को भोजन पहुँच गया है। जब लोग बता देते थे कि हाँ सभी मेहमानों को भोजन दे दिया गया है तब आप भोजन ग्रहण

करते थे। बिछौने से तिनके और खर-पतवार आदि आप चुन-चुन कर फेंका करते थे तथा अपने हाथ से बिछे हुए बिछौने को झाड़ते रहते थे। अपने शरीर के प्रत्येक अंगों को एहराम से ढ़के रहते थे। यात्रा सफर में शंका दूर करने हेतु इतने दूर चले जाते कि लोग आपके अंगों को देख न सकें। जो सेवक आपको स्नान कराते थे वे बदले नहीं जाते थे। आप कभी जोर से नहीं हंसते थे। न कभी आप के हंसने की आवाज़ ही किसी को सुनायी पड़ती थी। सरकार वारिस पाक बहुधा लोगों को फकीर बनाते और एहराम देते समय फकीर का नया नाम भी रख देते थे। सुरमा कंघा दोनों वक्त होता था। प्रातः और तीसरे पहर आप के सिर में तेल डाला जाता था। कभी आपका सिर सूखा हुआ नहीं देखा गया है। जीवन के उत्तरार्द्ध तक आप बारीक लेखों और घसीट कर लिखे लेखों को पढ़ते देखे गए हैं। चश्मा का प्रयोग आप ने नहीं किया है। और न कहीं हस्ताक्षर ही किए हैं। लोगों के बहुत अनुरोध पर आपने जीवन में दो-चार शब्द अपने हाथ से लिखे हैं जो मिर्ज़ा मुहम्मद इब्राहीम बेग शैदा वारसी तथा काजी बख़शिश अली वारसी के यहाँ सुरक्षित हैं। अपने सिलसिला वालों और चेलों के आपसी मेल और प्रेम से आप बहुत प्रसन्न रहते थे। एक बार कहा 'बैरिस्टर तुम और सफदर हुसेन भाई हो' बैरिस्टर साहब पटना और सफदर हुसेन साहब जज गोरखपुर के थे।

आचरण सौन्दर्य

अन्य विशेषताओं की भांति आप का आचरण भी उत्तम तथा अति सुन्दर था। इन्नक लअला खुलकीन अजीम (बेशक तेरे लिए उच्चत्तम आचरण है) की पूरी झलक आप के व्यक्तित्व में पायी जाती थी। जो भी आप के गौरव मयी चौखट पर आता आप के सुन्दर स्वभाव तथा उत्तम व्यवहार से प्रभावित होकर आप का हो जाता। आप समस्त प्राणियों से अत्यधिक स्नेह तथा प्रेममयी व्यवहार करते थे। मिलने वाले लोग आनन्द विभोर हो उठते थे। चेलों के उपस्थित होने पर आप खड़े होते, हाथ मिलाते तथा भेंट अंकवार भी करते थे। साथ ही घर के सभी लोगों की कुशल भी पूछ लेते थे। यदि सफर की हालत में किसी नगर या इलाके का कोई मिलता तो उससे वहाँ के लोगों का हाल जरूर पूछते थे। चेलों अथवा सेवकों में से यदि किसी से कोई त्रुटि या गलती हो जाती तो आप उसे अनदेखी कर जाते थे। यदि कोई किसी के पीछे-पीछे शिकायत करता तो आप शिकायत करने वाले को सांत्वना देते थे और निन्दनीय पर गर्म होते थे किन्तु जब वह व्यक्ति जिसकी शिकायत हुई थी हुज़ूर के सामने आता तो आप उससे कुछ भी न कहते फिर भी

Scanned with CamScanner

आप कुछ नपे-तुले शब्द उससे जरूर कहते थे। जिनसे वह व्यक्ति लज्जित हो जाता और पापों का प्रायश्चित कर लेता था। इन सबके पश्चात् आप उस पर इतनी दया करते कि शिकायत करने वाला देखकर चकित हो जाता था। चाहे कोई कितना ही गल्ती किए हो तथा आप क्रोधित से दिखायी भी पड़ते हो किन्तु आप के समक्ष आने पर गजब से पूर्व आप की दया उसको ढ़क लेती थी। यदि किसी की बात पर आप नाराज़ होते तो वह आप के सामने से चला जाता था। पुनः थोड़ी देर बाद वह आप के सामने आता तो आप अपनी नाराज़गी पर खेद करते तथा कुछ न कुछ उसको जरूर प्रदान करते थे। आपका हृदय दर्पण था सब कुछ उसमें दिखाई देता था। सबका वाह्य और अंत आप देखते थे फिर हर व्यक्ति की बात आप स्वीकार करते थे। कभी कोई यह जान नहीं पाया कि आप ने उसकी बात नहीं माना है। आप अपने सामने किसी को लज्जित नहीं होने देते थे। वास्तविकता यह हैं कि आप दया-दान के भण्डार तथा कृपा के सिन्धु थे। प्रत्येक दशा में भक्तों-सेवकों पर एक समान दया-प्रेम तथा सहानुभूति रखते थे। कभी किसी को सजा देना पसन्द तक नहीं करते थे। बड़े-बड़े दोषों को तुरन्त क्षमा कर देते थे।

हुज़ूर वारिस पाक स्वभावतः अत्यन्त कृपालु-दयालु तथा दानी थे। प्रत्येक लोगों से प्रसन्नचित्त तथा मुस्कराते हुए मिलते थे। दुखियों पर विशेष ध्यान देते, आपके पास उपस्थित लोग कभी यह नहीं जान पाये कि सरकार की कृपा दृष्टि किस पर अधिक अथवा कम है। सभी अपने को गौरवान्वित समझते थे। इटावा की एक घटना है हुज़ूर किसी मकान में जा रहे थे। रास्ते में दर्शनार्थियों की बहुत भीड़ थी। लोग धक्के खा रहे थे। इसी बीच एक व्याकुल आदमी भागता दौड़ता आपकी ओर आ रहा था। सेवकगण ने उसे पीछे हटा दिया उसने दीवार पर सर दे मारा। हुज़ूर ने देखा और स्वयं उसके पास जाकर खडे हो गये। उस व्यक्ति ने चरण चूमा और रोने लगा। थोड़ी देर बाद आपने उससे जाने की स्वीकृति चाही और कहा 'अगर तुम इजाज़त दो तो हम चले जायें।' जब उसने विदा किया फिर आप आगे पधारे। हाजी मुहम्मद शाह साहब वारसी ब्यान करते है कि एक बुजुर्ग हमको सफर में मिले जो हुज़ूर वारिस पाक के शिष्य थे। उन्होंने अपने चेला बनने की घटना बतायी। उनके द्वारा हमने हुज़ूर के आचरण और स्वभाव की बड़ाई सुनी थी। मेरे विचार में आया कि इसका अनुभव करना चाहिए। मैं देवा शरीफ हाज़िर हुआ। लगभग साठ-सत्तर बार इधर से उधर चलते हुए सलामों अलैक करता रहा। हुज़ूर पाक मुस्कुराते रहे तथा बार-बार आपके पुनित हाथ सलाम के जवाब में उठते रहे।

मुझसे पूछा तक नहीं कि कौन हो ? क्यों आये हो तथा ऐसी हरकत क्यों कर रहे हो ? मैं खुद लज्जित हुआ और आप के चरणों में गिर गया। आपके हाथों पर बैय्यत कर लिया अर्थात शिष्य हो गया।

सरकार वारिस पाक अपने छोटे-बड़े, अदना-आला सभी चेलों की सेवा सत्कार करने तथा सबकों सांत्वना देने में अपनी मिशाल आप थें। किसी का दिल तोड़ना आप पसन्द नही करते थे। यदि आप किसी के घर जाते होते और बीच रास्ते में दूसरा कोई आप को रोकता तो आप रूक जाते और उसके घर तक चले जाते थे। वृद्धावस्था में जब आप रेल द्वारा सफर करते तो आप का हाथ लोगों के सलाम के जवाब में बराबर उठता रहता था। जहाँ तक दृष्टि सफल होती देखा जाता था कि आपका सिर खिड़की से बाहर और हाथ सलाम के लिए बाराबर उठता रहता था। सरकार वारिस पाक की दया दृष्टि तथा दान बृत्त अपने चेलों के प्रति बराबर बनी रहती थी चाहे कोई दूर हो अथवा निकट। जब कोई चेला आप से कहता कि मैं अमुक स्थान पर नौकरी के सम्बन्ध में जा रहा हूँ तो आपकी आँखें आंसुओं से भर जाती थी। जब कोई आपका मुरीद किसी कष्ट अथवा कठिनाई में होता तो आप अपने बिछौने पर बेचैन हो जाते, करवट बदलने लगते, व्याकुलता में उठने-बैठने लगते थे। उपस्थित गण सोचने लगते थे कि कहीं कोई परेशान हो रहा है। कुछ दिनों पश्चात् जब पता चलता तो देखने वाले कारण तक पूछते थे। आप अपने प्रेमियों की व्याकुलता से बेचैन हो जाते। इस सम्बन्ध में कुछ आगे अंकित घटनायें पाठकों को अवश्य मिलेगी।

आप का आचार-विचार इतना उत्तम था कि आज संसार में कोई भी व्यक्ति ऐसा हो जिसको यह कहने का अवसर मिले कि सरकार वारिस पाक हमसे रूष्ट अथवा नाराज़ थे। आगन्तुक व्यक्तियों के खाने-पीने तथा आराम का बहुत ध्यान रखते थे। आप मिलने वालों से खड़े होकर मिलते थे। जब बुजुर्ग और आलिम आपसे मिलने आते तो आप सच्चाई और प्रेम के साथ उनसे मिलते थे। उनका आदर-सत्कार करते थे। जब आपको मालूम होता कि कोई बुजुर्ग तपस्या के निमित्त कहीं बैठ गये हैं और वह अपना स्थान नहीं छोड़ सकते हैं तो आप ख़ुद जाकर उनसे मिल आते थे। आप इस सीमा तक पहुँचे हुए थे कि अपने-पराये का शब्द तक भी जुबान पर नहीं आता था। क़ुरआन पढ़ने वालों तथा याद करने वालों और अरब निवासियों को आप विशेष सम्मानित करते थे। सफर खर्च के साथ-साथ मिठाई, एहराम और अन्य वस्तुऐं भी प्रदान करते थे। आप इस प्रकार कहते

Scanned with CamScanner

थे 'हमारा तुम्हारा ख़ून एक है।' 'हम तुम एक हैं न।' दूसरों से मिलते समय भी आप कहा करते थे 'हम और यह एक हैं।' अपने चेलों की तरह दूसरे मत के चेलों से भी उनके गुरुजन की बड़ाई करते 'हम और वह एक हैं, तुम तो अपने ही हो। एक ही वास्ता है, हमारा तुम्हारा बिरादरी का वास्ता है।' आप सत्य और प्रेम का आदर करते थे, जो लोग किसी ख्याल से मिलते आप उनके अहंकार तथा घमण्ड को तोड़ कर उनसे मिलते थे। जैसा कि एक साहब की घटना है (उनका नाम लिखना उचित नहीं है) आप दस-बारह चेलों के साथ देवा शरीफ हाजिर हुए। इन लोगों को सरकार की सेवा में हाज़िर किया गया। आपको जलाल (फ़क़ीरी का क्रोध) आ गया, सेवक इस बात को जानते थे कि आपका जलाल थोड़ी देर के लिए होता है। अत: उक्त लोगों को कोठे पर ठहरा दिया गया और आवभगत की गयी परन्तु जब वह हुज़ूर के सामने आते आपकी नज़रे गर्म हो जातीं थी। किसी पर यह भेद नहीं खुलता था आखिर बात क्या है? दूसरे दिन हाजी अवघट शाह वारसी साहब और उनके ख़लीफा को साथ लेकर हुज़ूर की सेवा में पहुंचे और प्रार्थना किया कि हुज़ूर यह अमुक स्थान के रहने वाले सैय्यद हैं,पीरी मुरीदी भी करते हैं। आपने बैठने की आज्ञा दे दिया। उन शाह साहब ने कहा कि आप मेरे सम्बन्ध में कुछ अपने मुख से आशिर्वाद दें कि मेरा अन्त भलाई पर हो। आप ने कहा 'मुहब्बत है तो हो जायेगी फिर कहां मुरीद क्यों फिरेंगे? हमारा तुम्हारा ख़ून एक है।' बिदा होते समय शाह साहब को तहबन्द (एहराम) और एक जोड़ा औरतों का वस्त्र दिया फिर मिठाई और सफर खर्च भी देने का हुक्म दिया। विचित्र बात ये थी कि शीघ्र ही ऐसे लोगों का सुधार हो जाता था और कोई भी हुज़ूर के चौखट से दुखी और निराश नहीं लौटता था।

ऐसी ही एक घटना अलीगढ़ की है। मुंशी अलह यार खाँ निवासी अलीगढ़ ब्यान करते हैं कि हुज़ूर वारिस पाक हाफिज़ हसन साहब के मकान पर थे। अलीगढ़ के तहसीलदार सैय्यद सुलैमान शाह ने लोगों से सुना था कि हुज़ूर के ख़िदमत में जो जाता है उसे अपनी बात कहने की जरूरत नहीं पड़ती है। आप स्वयं उसका जवाब कह देते हैं। परीक्षा लेने की गरज़ से वह हज़रत वारिस पाक की ख़िदमत में जाने लगे। हुज़ूर ने उनके पहुंचने के पूर्व हाफिज हसन साहब वारसी को आदेश दिया। यहाँ के तहसीलदार साहब आते हैं उनको वापस कर दो, हम उनसे बात नहीं करेंगे। आदेश का पालन हुआ। दूसरे दिन फिर अज़माईश के लिए तहसीलदार साहब चले किन्तु फिर सरकार ने उन्हें वापस कर दिये। तीसरे दिन

उनका विचार बदल गया और तहसीलदार साहब रोते हुए कुछ मिठाई और एहराम लिए पैदल हुज़ूर की सेवा में उपस्थित हुए। पाँव चूमे और मुरीद हो गये। आगे चलकर अच्छे प्रेमियों में गिने जाने लगे। अत: सिद्ध है कि जब तक कोई व्यक्ति पवित्र हृदय और शुद्ध मन से हुज़ूर के पास नहीं आता, आप से मिल नहीं पाता और यह भी विदित है कि जब तक आप उसके विचारों की धुलाई नहीं कर लेते, वह आप तक नहीं पहुँच पाता था। अत: जैसे आप ख़ुद पवित्र मन और शुद्ध हृदय के थे उसी तरह दूसरों का भी बना लेते, तब मिलते थे। किसी बुरी बात का आपसे प्रकट होना तो दूर आप लोगों की बुराईयों को दूर करके उनसे मिलते थे।

एक बार सरकार वारिस पाक के आस्ताने पर एक अरबी ठहरे हुए थे। बहुत ही क्रूर स्वर में अरब निवासी ने किसी भारतीय व्यक्ति को 'हिन्दी बत्ताल' कहा। यह आवाज हुज़ूर के कान तक पहुँच गयी। आप ने अरबी साहब को बुला कर कहा कि अरब साहब हिन्दी क्यों बत्ताल है? (बत्ताल का अर्थ है तुच्छ मनुष्य)। क्या उन्होंने रसूल सल्ल० के घर को बेचिराग़ किया है? क्या उन्होंने इतरते रसूल (रसूल की औलाद) की बेइज़्ज़ती की है? अथवा मक्का और मदीना के सम्मान में कोई अन्तर पैदा किया है? अरबी महोदय बहुत लज्जित हुए और तोबा किया। इसके बाद आपने उनके ऊपर दया किया और कुछ वस्तुऐं भी प्रदान कियां। आप सम्पूर्ण बुराईयों को घृणा की दृष्टि से देखते थे। जिस प्रकार आप अच्छे विचारों के स्वामी थे, उसी प्रकार दूसरों के विचारों को भी पवित्र बना देते थे।

मुहम्मद नाज़िम अली फज़ली मदरसा फ़ुरकानिया से अंकित है कि एक बार हुज़ूर वारिस पाक मौज़ा मुहम्मदपुर में ठहरे थे। मैं उस समय बीमार था सोचता था कि किसी अल्लाह वाले से मुलाकात करूं। मैंने जब सुना कि हज़रत पधारे हैं और मिलने के लिए पहुंचा, आप कोठे पर थे, औरतें आपको घेरे हुए थीं। एक बार, दो बार मिलने गया, उत्तर मिला पर्दा है। दूसरी बार लौटते हुए अपने मन में कहा मिलना हो तो मिलिये वरना अब हम नहीं आयेंगे। तत्काल कोठे से आवाज़ आयी पर्दा समाप्त हुआ, जिसका जी चाहे आये। मैं सेवा में उपस्थित हुआ। हुज़ूर वारिस पाक लिहाफ के अन्दर से ही 'कौन है? कौन है?' कहते हुए उठ बैठे। सहानुभूति दर्शाते हुए मेरी पीठ पर दो मुक्के लगाये। सिर खोलकर अन्तत: ध्यान में हो गये पुन: कहा 'बस' मैं सलाम करके चला गया। उसी मकान में एक बार नाज़िम अली साहब फज़ली के सम्बन्ध में आपने कहा 'यहां के हाकिम हैं,हाकिम।' मौलाना सैय्यद अली नकीशाह नक्शबन्दी लिखते हैं -

Scanned with CamScanner

एक बार हुज़ूर मौज़ा मुहम्मदपुर बिसुनपुरा में विद्यमान थे। उसी ग्राम में एक दरवेश रहते थे। आप से मिलने नहीं आये, किसी ने आप से कहा कि यहाँ एक दरवेश रहते हैं, जो आपसे मिलने नहीं आये। आपने कहा 'फ़कीर के पास गरज़ वाले ज्यादा आते हैं, उस दरवेश को ख़ुदा की तलब होगी, पीर ने बता दिया यहाँ आके क्या करता?' हुज़ूर वारिस पाक किसी से बदगुमान नहीं होते थे और दूसरों को भी बदगुमानी से परहेज़ करने की शिक्षा देते थे। सभी बुरी और ख़राब बातों को मन, वचन और कर्म से बुरा मानते थे। जिस पर अधिक प्रसन्न होते उसकी पीठ पर धीरे-धीरे ठोंकने लगते थे। मानो यह बात आपके प्यार में थी। आप कभी किसी को कष्ट और दुःख में नहीं देख सकते थे। मुहम्मद नाज़िम अली फज़ली लिखते हैं कि संयोग से मुझे एक मोकल्लिद आलिम से पढ़ने का अवसर मिला। उनकी संगति का असर मुझमें आने लगा और सूफी, संतों की ओर से लापरवाही हो गयी साथ ही हाजी साहब के प्रति भी विचार खराब हो गये। कुछ दिनों तक यही दशा रही। अचानक यह विचार उत्पन्न हुआ कि अपनी दशा सुधार कर ही दूसरे को देखना चाहिये। एक दिन हाजी साहब किबला की सेवा में पहुँचकर प्रार्थना किया कि मेरे जो विचार थे उनसे मैं तोबा करता हूँ। आपने मुस्कुराकर हाथ में हाथ लिया और तीन बार इस्तग़फ़ार (पापों के प्रायश्चित) करा कर बिदा कर दिया।

मालवी रौनक अली साहब वारसी लिखते है कि हकीम फैय्याज अली साहब अपनी देखी हुई घटना मुझसे इस तरह ब्यान करते हैं कि मासूम अली साहब अपने विचार वालों के साथ टहल रहे थे, बातों के क्रम में आप हाजी साहब क़िबला पर कुछ ताना दे रहे थे। उसी समय हाजी साहब उसी रास्ते निकले और हकीम साहब को सम्बोधित कर कहा 'सुना-सुना, हकीम साहब! आप ने पढ़ा होगा या आप जानते होंगे- मन अमल सालेहन फ लेनफसेही व मन असाअ फ अलैहा' अर्थात् जिसने अच्छा काम किया तो आपने लिए और जिसने बुरा काम किया तो आपने ही लिए किया। आप अपनी ज़बान और मन को दूसरे के लिए क्यों ख़राब करते हैं। फिर कहा 'सुना-सुना हकीम साहब! ऐसा है ना।' यह कहते हुए आप आगे चले गये। आप अपनी शिकायत सुनकर भी लोगों को प्रेम-भाव से समझाते तथा कभी दुःखी नहीं होते थे। उदाहरण के लिए केवल एक घटना अंकित करना अधिक और काफी होगा। मौलाना क्यामुद्दीन साहब फिरंगी महल एक बार आपके पर्दा करने के समय अपने चन्द साथियों के साथ हाजी साहब की बीमारी की पुछार में लेकर में आये किन्तु उनकी ओर उतना ध्यान नहीं दिया जितना उनके साथियों का और

दिया। मौलाना लिखते हैं कि इलताफुर्रहमान साहब रईस बड़ा गाँव ने यह कहा कि हाजी साहब की यह बेरूख़ी कुछ मुनासिब नहीं जान पड़ी। मैंने कहा कि मुझ पर फ़र्ज़ था। हाजी साहब मेरे दादा मौलाना शाह अब्दुलरज़्ज़ाक साहब से मिलने उनके आख़िरी वक़्त में आए थे। मैं उसको पूरा करने आया था। उन्होंने जो उचित जाना किया, रोगावस्था में उनका बरताव पकड़ के लायक नहीं है। मौलाना लिखते हैं कि देवा शरीफ से बांसा शरीफ उपस्थित हुआ फिर बड़ा गाँव में ठहर गया। स्वप्न में मैंने देखा कि हाजी साहब तथा स्वर्गवासी मेरे दादा साहब दोनों साथ ही आये और हाजी साहब ने कहा 'तुमको कोई शिकायत है या तुम कुछ नाख़ुश हुए।' आप जानते हैं कि मैं नाख़ुश नहीं हुआ और न मेरे मन में किसी किस्म का कोई ख्याल ही गुजरा। हाजी साहब ने मुस्कुराते हुए कहा 'मुझे तुम्हारी ख़ुशी से ही मतलब है। यदि तुम नाख़ुश नहीं हुए तो फिर जिसका जो जी चाहे कहे मुझको इसकी परवाह नहीं।' बस मेरी आँख खुल गयी। शेख इलताफ हुसेन साहब को मैंने अपने पास बैठा देखा। उन्होंने मुझसे कहा कि मैंने स्वप्न देखा है कि हाजी साहब क्रोध में मेरी ओर आ रहे हैं और मैं भाग गया। फिर मैंने अपना ख्वाब ब्यान कर उनसे कहा कि तुम उनको फातिहा दिला दो।

आपके इख़लाक की मुख्य विशेषता यह थी कि जो आप से मिलता मुरीद होता अथवा नहीं होता। आप सदा के लिए उसके सहायक और दुःखों के साझी बन जाते थे और आजीवन हर प्रकार की सहायता आप द्वारा मिलती रही। प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष आप अपने लोगों के सहायक थे।

विनम्रता और लघुता का भाव

आपके अन्य गुणों की तरह विनम्रता और ख़ाकसारी भी आप में बेजोड़ थी। आप अपने को प्रत्येक समय छोटा तथा अपनी शक्ति को लघु जानते थे। एक बार सैय्यद सरफ़ुद्दीन साहब मेम्बर एक्ज़ेकेटिव कौन्सिल बिहार एक शीशा जो थर्मामीटर की तरह का था उस पर लिखा था, क्रोध, विद्यता, बुद्धिमत्ता, स्मरण शक्ति, हर्ष, विषाद का अन्दाज़। मुट्ठी में दबाने पर पारा चढ़ता था और मीज़ाज की हालत मालूम होती थी। हुज़ूर ने उस यंत्र को अपनी मुट्ठी में लिया और उसका पारा ऊपर चढ़ना आरम्भ हुआ, हुज़ूर ने उस यंत्र को जमीन पर रख दिया फिर सभी लोगों ने अपनी-अपनी मुट्ठी में लेकर अपनी-अपनी देखना आरम्भ किया और हुज़ूर वारिस पाक से बताया जाता था कि किसकी बुद्धि कहाँ तक है और आप मुस्कुराते जाते थे। अन्त में बैरिस्टर साहब को ख़्याल आया कि हुज़ूर के मिज़ाज़ की दशा तो

Scanned with CamScanner

अभी जानी नहीं गयी है। अतः पुनः हुज़ूर के हाथों में वह यंत्र दिया गया किन्तु उसमें पारा या तेज़ाब पूर्णतः शान्त रहा। बैरिस्टर साहब ने सोचा शायद यंत्र ठीक से दबा नहीं था, इसलिए पारा बढ़ा नहीं है। सरकार का हाथ अपने हाथों में लेकर ज़ोर से दबाया किन्तु पारे की दशा में कोई अन्तर नहीं हुआ और वह ज्यों का त्यों रहा। सब अचम्भे में थे कि अभी और देखा गया अभी कुछ और अर्थात् प्रथम बार पारा चढ़ा था तथा दूसरी बार मानो जम गया है। सब इसी ख्याल में थे हुज़ूर ने उस शीशे को झटक कर ज़मीन पर रख दिया और केवल इतना कहा 'हम कुछ नहीं हैं।' सरकार किसी बात में अपने को प्रकट नहीं होने देते थे। मानो नियम तथा कार्यरूप में आप अपने को नहीं कर चुके थे। अपने अवलम्बियों को यही शिक्षा दिया करते थे।

मौलवी अहमद हुसेन साहब रहरा मऊ के निवासी हैं लिखते हैं कि मेरे भाई मियां जहूर अशरफ साहब अमेठवी हुज़ूर वारिस पाक के साथ एक मौजा में जो देवा शरीफ से पश्चिम की ओर ५.५ मील की दूरी पर स्थित था जा रहे थे कि एक पतली गली में सामने की ओर से एक कुत्ता आ रहा था। हुज़ूर वारिस पाक ने अपना वस्त्र कुत्ते से बचाने के लिए उठा लिया। यह देखकर हुज़ूर अशरफ साहब ने भी अपने कपड़े समेटे। हुज़ूर ने मुस्कुराते हुए पूछा 'तुमने अपने कपड़े क्यों बचाया?' उन्होंने कहा कि जिस भांति हुज़ूर ने कुत्ते की नजासत से अपने एहराम को बचाने के लिए उठा लिया, उसी तरह हमने भी नजासत से बचने के लिए किया। आपके माथे पर बल आ गया और आपने अपनी जांघ पर हाथ मारकर कहा कि मैंने इस विचार से तहबन्द समेटा कि कहीं मेरे कपड़े से कुत्ता नापाक न हो जाय। सरकार वारिस पाक की नम्रता और लघुता के यह भाव थे कि आप प्रत्येक वस्तु से अपने को लघुत्तर समझते थे।

हुज़ूर वारिस पाक प्रत्येक छोटे व बड़े से इस प्रकार मिलते थे जैसे कोई साधारण से साधारण आदमी अपने बड़ों से मिलता हो। आपकी बातों में चरम सीमा की नम्रता पाई जाती थी। आप जिस बिछौने पर विश्राम करते उसी पर बैठे रहते थे। बैठने और उठने में कोई बनावट नहीं होती थी। आपके दरबार में आपके लिए और आगन्तुकों के लिए बैठने का एक ही साधन होता था। राजा हो या रंक अमीर हो या गरीब किसी में कोई अन्तर नहीं होता था। बल्कि आने वालों के लिए आप अपने बिछौने से अच्छा प्रबन्ध कराते थे। सभी के लिए एक समान फर्श या चाँदनी बिछी रहती थी। सेवकों और चेलों से मिलने में भी आपका बर्ताव चेला गुरू जैसा नहीं होता था। आप सभी लोगों से बेधड़क मिलते थे। वयोवृद्धि लोगों

का बहुत आदर करते थे। चाहे वे कैसी भी फटी पुरानी दशा में हों। आप उनका सम्मान करते, खड़े हो जाते तथा उनको अपनी बाहों से लपेट लेते थे। सफेद दाढ़ी वालों का लेहाज़ अधिक करते थे और कहते थे कि आप हमारे बाप की जगह हो यह सब कुछ होते हुए भी आपके व्यक्तित्व का प्रभाव सभी लोगों पर छाया रहता था। आपके उठने बैठने चलने, फिरने सभी व्यावहारों में नम्रता पाई जाती थी। जब कोई क़सीदा या ग़ज़ल हुज़ूर की शान में पढ़ी जाती थी तो आप नज़रें नीची कर लेते थे और जब तक पढ़ा जाता था आप सिर झुकाये रहते थे। समाप्त होने पर सिर उठाते सो भी आपका भाव लज्जायुक्त होता था। आप अपनी बड़ाई और प्रशंसा सुनना पसन्द नहीं करते थे। बहुत से लोगों को क़सायद (बड़ाई की कविता) इत्यादि पढ़ने ही नहीं देते थे। कभी ऐसी कविताओं को लेकर देखते और लिखने वाले को खुश कर देते थे। कविताओं में जहाँ आपका नाम नामी होता वहाँ आप अपना नाम न पढ़ कर हज़रत ख़ादिम अली शाह साहब का नाम अपनी ज़बान से पढ़ते थे। आप अपना नाम अपनी ज़बान से कभी नहीं लेते थे। सेवक भी अपने को सम्मानित मानते थे तथा हुज़ूर उनसे भाई चारे का सम्बन्ध रखते थे। सेवा में रहने वाले लोग भी किसी की सिफारिश निडर होकर करते थे। सलाम आप पहले करते थे। हुज़ूर वारिस पाक के मिज़ाज़ में उत्तम श्रेणी की सहनशीलता और नम्रता मौजूद थी। कभी आदेश के रूप में कोई शब्द किसी के लिए नहीं कहा।

एक घटना हुज़ूर वारिस पाक के शुरू जवानी के ज़माने की है जब लखनऊ नवाबों की राजधानी थी। जिसको आपने बातचीत के सिलसिले में कहा है किन्तु अपना नाम नहीं लिया है। यदि कोई भी बात अनहोनी आप से प्रकट होती उसको पूरी तरह छुपा लेते थे। आप ब्यान करते हैं कि लखनऊ में नवाबों ने कव्वाली बन्द करा दी और कह दिया कि अगर कव्वाली हो तो किसी को हाल न आये। यह मकरूह है। नवाब का नाम याद नहीं शायद सआदत अली खाँ थे। इस हुक्म से लखनऊ में कव्वाली पूर्णरूप से बन्द हो गयी और कभी कव्वाली होती भी थी तो कोई फ़क़ीर डर के मारे नहीं जाता था। उस ज़माने में एक फ़क़ीर लखनऊ में आया। एक मुरीद ने उसकी दावत की। फ़क़ीर ने कहा जब तक कव्वाली नहीं होगी ठीक नहीं है। सबने कहा कि बादशाह का हुक्म नहीं है। फ़क़ीर कहा कि हाल का हुक्म नहीं है। अतः कव्वाल बुलाये गये। बादशाह को भी ख़बर हुई। वह

Scanned with CamScanner

बादशाह एक कुर्ता पहन कर कव्वाली में आकर बैठा, कव्वाली हो रही थी, उस फ़क़ीर ने कव्वालों से कहा अब यह शुरू कर दो :

जहे इज्जो जलाले बूतराबे फ़ख़रे इन्सानी। अली मुशकिल कुशाये शेरे यज़दानी॥

जैसे कव्वाल ने शुरू किया नवाब ने कपड़े फाड़ डाले और बार-बार कहने लगा अली ये मुर्तुज़ा मुशकिल कुशाये शेरे यजदानी। बस वह फ़क़ीर ख़फ़ा होकर चला गया कि मक्कार कव्वाली भी सुनने नहीं देते। जितना भी लोगों ने बादशाह को पकड़ा उसका हाल कम न हुआ। जब फ़क़ीर साहब की बहुत खुशामद की तो उन्होंने पानी दिया जो उसके मुँह में डाला गया और उसे होश आया फिर नवाब ने कहा कि आज से रूकावट नहीं यह हाल मक्र नहीं है।

एकत्व (एकता) का भाव

हुज़ूर वारिस पाक की नज़र में सब एक थे। सभी को आप एक जानते और समझते थे। सब से आप एक ही बर्ताव करते थे और एक होकर सबसे मिलते थे। सभी धर्मो और मतों के लोग आप पर विश्वास रखते थे। जब अंग्रेज़ इसाई आप से मिलते तो आप उनसे भी गले मिलते और आदर सत्कार करते थे। सैय्यद अली असग़र साहब वारसी शाहपुर, जिला- फतेहपुर लिखते हैं कि मेरे सामने एक यूरोपियन हुज़ूर से मिलने आये। हुज़ूर उनसे गले मिले और कहा 'हम तुम एक हैं ना।' फिर आदेश दिया साहब को चाय पिलाओ। सैय्यद मारूफ शाह वारसी ब्यान करते हैं कि जब हिन्दुस्तान के बादशाह की मक्का शरीफ में मृत्यु हुई तो रात में देवा शरीफ ख़बर पहुंची। आप उस समय भोजन कर रहे थे। किसी ने आप से कहा आपने फौरन खाने से हाथ खींच लिया और कहा कि बड़ा बरकत का ज़माना था, अच्छी बादशाही की। बड़ा अमन व अमान रहा। अच्छा हमारे हाथ पर काला कपड़ा बांध दो। जब बसन्त का दिन आता तो हिन्दू लोग आपका बसन्त मनाते और बसन्ती वस्त्र आपकी सेवा में हाजिर करते। आप उसे धारण करते थे। होली के ज़माने में ठाकुर पंचम सिंह मलावली और मर्यादित हिन्दू आपकी दावतों का प्रबन्ध करते जिसे हुज़ूर स्वीकार करते थे।

हुज़ूर वारिस पाक की दृष्टि में हम और तुम का अन्तर नहीं था और न द्वैत्यवाद ही था। प्रत्येक रंग में आप हैं और प्रत्येक रंग आपका है। होली की एक घटना सैय्यद शरफ़ुद्दीन शाह वारसी लिखते हैं कि हुज़ूर पाक सिवान में मेरे एक मुवक्किल अब्दुर्रहमान के घर रूके हुए थे। हकीम मुबारक हुसेन ख़ान बहादुर

मौलवी फज़ले इमाम साहब, यूसुफ इमाम साहब और अहद साहब भी थे। हम लोग हुज़ूर की ख़िदमत में गये, आप उस समय अकेले थे। हुज़ूर उठकर बैठ गये। यह समय फागुन का था, चारों ओर होली का रंग था। हुज़ूर मुझे सम्बोधित कर कहने लगे 'होली गायें सुनोगे।' मैंने अर्ज़ किया कि जरूर सुनेंगे। आप हाव भाव से होली गाने लगे। अदाओं से कुमकुमे फेंके पिचकारी मारा इसके बाद कहा 'होली वाजम फिर फारसी में होली गाने लगे।' मेरी दशा विचारणीय थी। आप आनन्द और मस्ती में थे। आप ने मुझे आदेश दिया गले लग जाओ फिर पुनः कहा 'लहमक लहमी व दम्मक दम्मी।' अर्थात् तुम्हारा मांस या शरीर मेरा शरीर है और तेरा ख़ून मेरा ख़ून है। मुझे अलग किया फिर हकीम मुबारक हुसेन को गले लगाया और वह आग लगी की संसार छोड़ दिया मानों ऊ व सहरा रफ्त दमा दर कूचहा रूसवा शुदेम। (वह जंगलवासी हो गया और मैं गली-गली बदनाम होता रहा।) तब तक नीचे के लोगों को ख़बर हुई। अहद शाह इत्यादि दौड़े ऊपर आये और मैं उनकी सहायता से नीचे उतरा और उनकी आसनी पर बैठा, अहमद शाह मेरी ओर घूर कर देख रहे थे। मैंने देखने का कारण पूछा। आपने मेरे सम्मुख दर्पण रख दिया। मैंने देखा कि मेरी आँखें करंजी (करजीरी) के समान लाल थी, चेहरा ताँबे के समान और मुख पर पसीने की बूंदें आ गई थीं। लगभग उन्तीस दिनों तक कुछ भी न खाया। जब मैं पटना आया तब से मेरी यह दशा हुई कि अशुभ बातों की मुझे सूचना हो जाती थी कि कौन कब बीमार पड़ेगा? उसका फल क्या होगा अथवा कब मरेगा? इसके अतिरिक्त मेरी तबीयत खोई सी रहती। दवा दारू से कुछ लाभ न हुआ। अन्त में मैं जब देवा शरीफ पहुंचा तो अपने आप मेरे मिज़ाज़ का सुधार हो गया और अब ठीक है। इस्लाम धर्म के मतों के सम्बन्ध में कभी कोई बात खिलाफ आप ने न कहा। हर विचार और हर मतों के लोगों को आप आदर देते थे और सम्मान करते थे। प्रत्येक व्यक्ति के बारे में पवित्र विचार और पुनीत धारणा रखते थे। हज़रत सर सैय्यद अहदम खाँ जन्मदाता अलीगढ़ यूनीवर्सिटी के सम्बन्ध में उस समय रूढ़िवादी मुसलमानों के जो विचार थे, वह सब पर विदित है किन्तु हुज़ूर का विचार उनके प्रति बहुत अच्छा था। सैय्यद शरफ़ुद्दीन साहब लिखते हैं कि उन लोगों ने मुझसे कहा जो सरकार वारिस पाक के साथ अलीगढ़ में ठहरे हुए थे। सर सैय्यद की ओर से सरकार से यह प्रार्थना की गई कि सैय्यद साहब हुज़ूर से एकान्त में मिलना चाहते हैं। हुज़ूर ने प्रार्थना स्वीकार किया। कुछ रात बीतने पर सर सैय्यद साहब ने दरवाज़ा खटखटाया। ख़ादिम ने कहा 'कौन?' सर सैय्यद ने

Scanned with CamScanner

कहा 'शैतान।' दरवाज़ा खुला और सर सैय्यद अन्दर आ गये और सरकार वारिस पाक सम्मानपूर्वक मिले। सर सैय्यद अहमद खाँ ने सविनय कहा कि लोग मुझे काफ़िर कहते हैं। हुज़ूर ने कहा गलत कहते हैं। सैय्यद काफिर नहीं होता। सरकार ने कहा है 'सर सैय्यद को बुरा न कहो और बुरा न समझो वह अव्वल दर्जे के मुसलमान हैं।'

सत्य यह है कि हुज़ूर वारिस पाक ज़ाहिरी हालत पर नज़र नहीं करते। वह लोगों की नीयतों को देखते थे। आप प्रेम के चाहने वाले थे। आप सत्य और प्रेम का सम्मान करते थे।

लोगों का आपकी ओर आना और बैय्यत (शिष्य) होना

सरकार वारिस पाक की ओर बड़ी तेज़ी से लोग आने लगे। आपको ईश्वरीय देन प्राप्त थी। आपके मन-वचन और कर्म से जो कुछ प्रकट होता था वह अद्वितीय तथा अति विचित्र था। जिस नगर या इलाके में आप जाते पूरी आबादी आपकी ओर दौड़ती। आपकी मुहब्बत में सभी लोग आ जाते। आपका व्यवहार सब को मोहित कर लेता था। बिना किसी भेदभाव के सभी धर्मानुयायी हिन्दू, मुसलमान, सिख, इसाई, पारसी, यहूदी सभी आपकी ओर खिंचते थे। ऐसा जान पड़ता था कि कोई आन्तरिक शक्ति है जो सबको आकर्षित करती है। और आपके आदर युक्त चौखट पर भीड़ लग जाती है। दर्शनार्थ लोगों का मेला लगा रहता था। योगी, यती, मस्त, रिन्द, पारसा, ज्ञानी, मूर्ख, दार्शनिक, ज्योतषी, वैद्य, शीया, सुन्नी, पारसी तथा अंग्रेज और इसाई इत्यादि का जमावड़ा रहता था। अच्छे, बुरे, पापी पुण्यात्मा किसी के लिये कोई रोकथाम नहीं थी। कोई तड़प रहा होता, कोई रोने में संलग्न, कोई माथा टेके हुए और कोई सिर झुकाये अपने विचारों में मग्न होता था। बड़े दार्शनिक जो सन्तों के अद्भूत कार्यों की हँसी उड़ाते थे तथा नास्तिक जो देवी देवता अथवा पीर, पैगम्बरों, ईश्वर तक को नहीं मानते थे आपके पवित्र हाथों पर अपने पापों का प्रायश्चित करते थे। यह जान नहीं पड़ता था कि आपके आत्मशक्ति का आकर्षण कितना प्रबल था। जो आपके सामने आता आप ही का हो जाता था। कभी-कभी ऐसा होता कि लोगों की भीड़ के कारण राह चलना भी कठिन हो जाता था। पग-पग पर लोग आपके चरण चूमते तथा आँखे बिछाते थे।

सैय्यद मौलवी शरफुद्दीन साहब सिवान ने अपने मुरीद होने की घटना इस प्रकार ब्यान किया है। मेरा निवास स्थान ग्राम नेउरा में है जो पटना से निकट और फुलवारी शरीफ से लगा हुआ है, फुलवारी शरीफ सूफी सन्तों के लिये बहुत समय

से ख्याति प्राप्त है। हमारे गाँव के केवल दो आदमी अब तक मुरीद हो चुके थे। शेष सभी पीरी मुरीदी को नहीं मानते थे। कारण यह था कि उस गाँव में अंग्रेजी शिक्षा तथा अंग्रेज़ियत का बहुत ज़ोर था। मैं अपनी शिक्षा पूरी करके १८८० ई० के अन्त में देश लौट आया था फिर कलकत्ता हाई कोर्ट में अपना नाम अंकित करा कर वकालत आरम्भ कर दिया था। मौलवी अब्दुल करीम साहब बचपन की शिक्षा के मेरे उस्ताद थे। लताफत हुसेन मेरे बचपन के साथी थे जो उस समय कलकत्ता में ही थे। ग्रीष्मकाल में पटना आने पर इन्होंने मुझसे कहा कि मौलाना अब्दुल करीम साहब पश्चिम के एक बुजुर्ग से मुरीद हो गये हैं और साथ ही अपनी बिरादरी के सभी मर्दो तथा औरतों ने भी बैय्यत कर ली है। मैंने लताफत हुसेन से कहा कि जब मैं छुट्टी में घर आऊंगा तो सभी के लिए एक पागलखाना बनवाऊंगा। अभी तक मुझको यह कुछ भी मालूम न हो सका था कि वह बुजुर्ग कहाँ के हैं और क्या नाम है? जब मैं अवकाश पर घर आया अपने उस्ताद मौलाना अब्दुल करीम साहब से मिला और कहा कि अपने मसले, मसायल, सुन्नत, फर्ज़ सभी पढ़ाया किन्तु यह न बताया कि शिष्य होना क्या चीज़ है और जरूरी है या नहीं? मौलाना ने कहा यह और वस्तु है साधारण सम्बन्ध की बात नहीं है। मैंने पूछा कि वह बुजुर्ग कहाँ के थे? कौन थे? तब उन्होंने बताया फिर हम ने पूछा कि पीर साहब में चमत्कार है या नहीं। उन्होंने कहा जाहिर में तो कोई बात नहीं देखा किन्तु उनमें लालच और कामना नहीं पाया।

पहले से ही मेरा विचार था और धारणा बन चुकी थी कि पीर या धर्म गुरू केवल पेट पालने का एक पेशा है जिसके द्वारा लोग रोज़ी-रोटी कमाते हैं। मेरे मन में मौलाना के पीर का इतना सम्मान अवश्य हुआ कि वह संसारिक और दुनियादार नहीं हैं। मैं कुछ दिनों तक यह विचार ही भूल गया। १८८३ ई० के फरवरी या शुरू मार्च में मैं घर पर ही था तथा पीर साहब के पटना आने की खबर चारों ओर थी। मैं दानापुर पहुंचकर पटना जाने के लिये जिस ट्रेन में सवार हुआ हुज़ूर वारिस पाक उसी ट्रेन से आने वाले थे। आपका प्रथम दर्शन उस गाड़ी में हुआ जिसकी गुलामी मेरे लिये धन्य और गौरवमयी हो गई। मेरे भाई खान बहादुर फज़ले इमाम साहब आपके साथ देवा शरीफ से आ रहे थे। दानापुर प्लेटफार्म पर बहुत से लोग आपके दर्शन की प्रतीक्षा में थे। कुछ मिनट में रेलगाड़ी प्लेटफार्म पर खड़ी थी। फर्स्ट क्लास डिब्बे में वह प्रकाश युक्त सूरत दिखाई पड़ी जिसके रूप की बखान नहीं हो सकती। रसीले नेत्र, घुंघराले केश, भोलापन लिये हुए चेहरा, एक मोहनी सूरत

Scanned with CamScanner

लोग आपका चरण चूमते थे जिसको उस समय मैं लोगों की अज्ञानता तथा मूर्खता ही मानता था। मैं लोगों से अलग सूट-बूट धारी यही सोचता था कि कहीं इस गवारूपने की कालिमा मुझे न लग जाय। अलग खड़ा था। मौलवी फज़ले इमाम साहब मुझको स्टेशन पर देख कर बहुत खुश हुए और कहने लगे देवा शरीफ से यहाँ तक कई बार सरकार वारिस पाक ने मुझ से पूछा है 'नसीरूद्दीन का भाई बैरिस्टर, स्टेशन पर होगा कि नहीं, मुझसे मिलेगा कि नहीं।' खान बहादुर मौलवी नसीरूद्दीन साहब वारसी सी० एस० आई० मंत्री स्टेट भोपाल मेरे सगे भाई थे और नेउरा के दूसरे लोगों के साथ वारसी हो गये थे। हुजूर की कदमबोसी के बाद मेरे पास आये और मुझ से पूछा कि हुजूर के पास चलने में तुमको कोई इनकार तो नहीं है। मैंने कहा कि मुझे क्या उज्र हो सकता है? उसी अंग्रेजी वस्त्र में हाथ में सुलगता हुआ सिगार लिये हुए हुजूर के पास डिब्बे में गया। आप ने मुझे अपने बिस्तरे पर बिठा लिया। गाड़ी बाँकीपुर पटना को चल पड़ी। रास्ते में हुजूर ने मुझ से पूछा तुम अंग्रेजी जानते हो। मैंने अर्ज किया 'जी हाँ।' आप ने कहा कि तुम्हारी अंग्रेजी की जानकारी तुम्हारे लिये सवाब (पुण्य) है। यह भी कहा कि यदि तुम कोशिश न करते तो मौलाना अब्दुल हई साहब को जरूर सजा हो जाती (मौलाना अब्दुल हई साहब और मौलाना इब्राहीम साहब निवासी फिरंगी महल पर दरभंगा से एक वारण्ट जारी हुआ था। एक नाबालिग लड़के को भगा ले जाकर मुसलमान कर देने के आरोप में। अदालत के फैसले के अनुसार बाईज्जत रिहा किये गये। इसमें बैरिस्टर सैय्यद शरफुद्दीन साहब ने बिना मेहनताना लिये मुकदमा की पैरवी किया। इसकी चरचा लखनऊ के इलाके में बहुत थी। सरकार वारिस पाक को भी इसकी खबर थी। आपने उसका जिक्र किया।) गाड़ी बांकीपुर पहुँची। दर्शनार्थियों की भीड़ थी। मैं किसी तरह लोगों से बचता-बचाता स्टेशन से बाहर आया। अपने चचेरे भाई ज़हीरूद्दीन साहब के साथ अपनी कोठी पर पहुँचा। सैय्यद जहीरूद्दीन साहब ने मुझसे कहा शुभ-अवसर है। हाजी साहब किबला के शिष्य हो जाओ। मैंने कहा कि चेला होना मेरे विचार में कुछ नहीं है। केवल हाथ पकड़ने से कुछ नहीं होता जब तक दिल को न पकड़े।

अपनी कोठी से नाश्ता करके मौलवी फजले ईमाम साहब के मकान गया जहां सरकार वारिस पाक विश्राम कर रहे थे। वहाँ का दृश्य विचित्र था। दर्शन कर्त्तागण की भीड़ लगी थी। चतुर-मुर्ख, ज्ञानी-अज्ञानी, नीच-ऊँच, शरीफ-रजील, अमीर-गरीब, मर्द-औरत, गायक और गायिकाओं की भीड़ जमी थी। ये सब देखकर मैं

घबराया। आगे देखा मेरे बाल्यावस्था के गुरू अब्दुल करीम साहब इस सम्पूर्ण भीड़ के अगुवा थे। पगड़ी ढ़ीली-ढ़ाली, अर्द्ध-खुली कमर में पीला रूमाल बांधे हुए मस्ती से भरे लाल नेत्र कुछ विचित्र दशा थी। मैंने अब्दुल करीम साहब से आग्रह किया मुझे भी हाजिर होने का आदेश चाहिये। बस सूचना गई और तत्काल बुला लिया गया। कमरे में पहुँचकर मैंने दूसरा नक्शा देखा। हुजूर वारिस पाक लेटे थे और लोग आपका शरीर दबा रहे थे। मेरे बड़े भाई नसीरूद्दीन साहब वारसी सी० एस० आई० हुजूर के पीछे बैठकर उनकी पीठ दबा रहे थे। मुझको देखकर किबला खड़े हो गये और आदेश दिया 'बैठ जाओ! एक तरफ तुम और एक तरफ तुम्हारे भाई।' सरकार वारिस पाक ने प्रथम पूछा कि बैरिस्टर तुम किसी के चेले (मुरीद) हो कि नहीं।' मैंने कहा कि अब तक तो संयोग नहीं हुआ। फिर आप ने कहा 'सिर्फ हाथ पकड़ने से कुछ नहीं होता जब तक दिल को न पकड़े।' मैं अचम्भे में हो गया वही वाक्य जो मेरे मुंह से निकले थे हुजूर वारिस पाक ने सुना दिया। मैं उस समय आधे घन्टे तक आप के सामने रहा। अधिकांश बाते जर्मनी की होती रहीं। हमने पूछा आप जर्मनी गये हैं। आपने कहा 'हाँ! बहुत जमाना बीत गया।' इसके बाद मैं कमरे से बाहर निकल आया। देखा कई सौ आदमी बाहर दरवाजे पर एकत्र हैं। मैंने अपने मन में सोचा यदि मैं अपनी कोठी पर न जाऊंगा तो यहाँ जमीन पर सोना पड़ेगा। मैं इस विचार से चलने को तैयार हुआ ठीक तभी किसी ने आकर कहा हुजूर से विदा ले लो। मैंने उत्तर दिया कि मै यहीं से बिदा हो लूंगा। यदि हाजी साहब किबला बुजूर्ग होंगे तो उन्हें खबर हो जायेगी। अभी मैं कोठे से उतरने ही को था कि रहीमशाह साहब ने कहा कि हुजूर आपको बुलाते हैं। मैं उपस्थित हुआ सरकार ने कहा 'शरफुद्दीन तुम्हें यहां सोने में कष्ट होगा तुम घर पर जाओ। केवल विदा करने हेतु बुलाया है। लोगों ने मुझ से कहा हाजी बाबा का आपकी ओर विशेष ध्यान है। शिष्य हो जाओ। मैंने सब से एक मात्र यही कहा हाजी बाबा ने स्वयं कहा है कि हाथ पकड़ने से क्या होता है जब तक दिल को न पकड़े। दो या तीन दिन पश्चात् हुजूर दरभंगा चले गये और कुछ दिन बाद पुनः लौटे। मुझे यह खबर मिली कि आप मेरे गांव नेऊरा भी पधारेंगे। मेरे बड़े भाई नसीरूद्दीन साहब मुलाज़िमत के कारण घर न पहुंच सके। अतः मुझे उनका तार मिला कि मैं घर पहुंचकर आपका स्वागत करूं। अतः मैं घर पहुंच कर सरकार वारिस पाक की सेवा में तीन दिन रहा। बार-बार मैं बुलाया जाता था और कुछ बातें होती रहती थीं। वह बातें प्रेम और मुहब्बत में सनी हुई थीं। प्रेम के अफसाने थे। मिस्टर जस्टिस हसन

Scanned with CamScanner

ईमाम मेरे पास आये उस समय मैं बैठा कुछ पढ़ रहा था। हसन ईमाम उस समय बहुत छोटी उम्र के थे आकर कहा कि हाजी साहब किब्ला ने याद किया है। मैंने कहा कि तुम चलो मैं आता हूँ। कुछ पढ़ने के पश्चात् मैं सरकार कि सेवा में उपस्थित हुआ। उस समय मेरी इच्छा लेशमात्र भी चेला होने की नहीं थी। मैं जाकर कमरे में बैठ गया। उस समय वहाँ हाजी साहब और बाबा अब्दुर्रहीम शाह बैठे हुए थे। हुजूर अपनी ओजस्वी दृष्टि मुझ पर डाली और जादू की तरह उसका प्रभाव मुझ पर पड़ा। मैं मात्र देखता ही रह गया। मुझे केवल इतना याद है कि मैंने हज़रत का हाथ पकड़ लिया फिर मुझे ज्ञात नहीं हुआ कि शिष्य मुझे कैसे बनाया गया और किन मन्त्रों द्वारा शिष्य किया गया। केवल इतना ही स्मरण है कि हुजूर ने स्नेहपूर्वक एक घूंसा मेरे दाहिने कंधे पर मारा और कहा 'तू भागा-भागा फिरता था। जानता नहीं कि तू मेरा प्यारा है।'

मौलवी सैय्यद अब्दुल गनी साहब बिहारी अपने शिष्य बनने की घटना इस प्रकार लिखते हैं। मेरी चाची साहिबा ने मुझसे कहा था कि मैं मुरीद (शिष्य) होना चाहती हूँ। मैंने उनसे कहा था कि बिहार और उसके इलाके में तो कोई ऐसा दिखाई नहीं देता है। यदि कोई नजर आयेगा तो मैं आपसे बताऊंगा। हुजूर वारिस पाक के ग्राम बेलछी पधारने पर मैं उनकी सेवा में उपस्थित हुआ और मैंने विचार किया कि यदि मेरा मन आपको स्वीकार करता है तो मैं चाची साहिबा को चेला बनवा दूंगा। बेलछी से लौट कर मैंने अपनी चाची से कहा कि बेलछी में एक बुजुर्ग आये हैं आप चाहें तो जाकर शिष्य बन जायें। अतः मेरी चाची, मेरी दो बहनें, मेरी माता, मेरी पत्नी और मैं स्वयं सभी जाकर चेला हो गये। वह समय जनगणना का था। आने जाने वालों के सिवा रात्रि में रूकने वाली महिलाओं की संख्या पांच सौ अंकित की गई थी। यह जनगणना १८९० ई० का अंतिम दिन था। उस समय आगंतुक की भीड़ की यह दशा थी कि सवारी का ऐसा अभाव हो गया कि कहार खोजने से नहीं मिलते थे। जिस गाँव से दो आना चौकड़ी की मजदूरी थी वहां से कहारों ने रूपया दो रूपये तक मजदूरी लिया। चारों ओर से लोग उमड़े चले आते थे। मेरी अपनी बस्ती से कम से कम चालीस स्त्री पुरूष आये जो चेला हुए।

मुंशी अब्दुल गनी साहब वारसी रईसपुर और गनी खां जिला रायबरेली लिखते हैं कि जब हुजूर पहली बार दरभंगा पधारे तो उस जगह झाड़ू शाह नाम के एक फकीर जो बस्ती से बाहर रहा करते थे और जो एक जन समूह के विश्वासपात्र थे हुजूर के पहुंचने से ३ दिन पूर्व ही नगर में प्रवेश किया और ऊँचे टीले पर खड़े

होकर उच्च स्वर में कहने लगे कि यहां ताशा बजेगा, ढ़ोल बजेगी और रोशन चौकी बजेगी। जब वह फकीर नवाब सादिक अली व नवाब अनवर अली के ऊँचे महलों तक पहुंचे तो उनकी कोठी के दरवाजे की ओर देखकर बोले, यह फाटक आदमी ढ़केल देगें। मियाँ के साथ एक दुनियां होगी । कभी अपनी मस्ती में सदा लगाते थे 'कलवखा आवत है जो अब शराब न पी है वह कबहून पी हैं वह का कबहूना मिलिहे।' झाड़ू शाह शहर की सम्पूर्ण गली कूंचों में उमंगपूर्वक आवाज़ देते रहते थे। हुजूर वारिस पाक की अगुआई में वहां के रईसों ने बहुत बड़ा प्रबंध किया। सम्पूर्ण गली कूचों और घर-द्वार पर बिजली के बल्बों द्वारा प्रकाश किया। जुलूस बाजे-गाजे के साथ हुजूर को नगर में लाया गया, उस समय पास पड़ोस ही नहीं वरन् दूर-दूर के लोग लगभग एक लाख से अधिक की भीड़ हुजूर की अगुवानी में साथ थी। नवाब सादिक अली खाँ के कोठे पर हुजूर को रखा गया। लोग चाहते थे कि आप थोड़ी देर विश्राम कर ले किन्तु भीड़ की उमंग और शौक की यह दशा थी कि नवाब के मकान का दरवाजा गिर पड़ा तथा भीड़ का एक अधिक भाग नबाब के कोठे पर वारिस-वारिस कहता हुआ पहुँच गया। लोग दंडवत-प्रणाम कर विदा होते गये। नवाब ने यह विचार किया कि हुजूर की आत्माकर्षण-शक्ति इतनी प्रबल है कि उस भीड़ को रोका नहीं जा सकता है। दरभंगा में लगभग एक लाख लोग शिष्य बने, जब तक आप दरभंगा में रहे वह मस्त फकीर झाड़ू शाह बराबर गलियों में घूमकर सदा (ऊँचे स्वर में आवाज़) देते थे कि शहर का हृदय परिवर्तित हो जायेगा, यदि अब न हुआ तो फिर कब होगा?

दरभंगा से हुजूर वारिस पाक पाड़ा की ओर पधारे। चलते समय उनकी पालकी के साथ बहुत से लोग एकत्र होते गये। दस कोस की दूरी तय करने पर लगभग १० हजार लोग उनके साथ हो गये थे। मिर्जा मुनइम बेग वारिस और नूर मुहम्मद शाह ने हुजूर से प्रार्थना किया कि ये लोग उस समय तक साथ नहीं छोड़ेगें जब तक आप इनकी आत्मा को शान्ति प्रदान कर विदा न करगें। हुजूर ने कहा, 'अच्छा हमारी पालकी किसी टिले पर रख दो और पुकार कर कह दो जिसे शिष्य बनना है वह हमारी पालकी छूले।' अतः ऐसा ही हुआ लोग आदर सहित पालकी छूते-चूमते और आँखों से लगाते थे। तत्पश्चात् एक दूसरे से गले मिलते और प्रसन्न होते थे।

मुंशी अब्दुल गनी वारसी लिखते हैं कि जब हजरत वारिस पाक सैय्यद सालार ग़ाजी रह० के उर्स में शामिल होने के लिए बहराइच गये तो लोगों की भीड़ इस तरह टूट-टूट कर गिर रही थी कि साथ के लोग व्याकुल हो उठे। सरकार को मज़ार

Scanned with CamScanner

तक पहुँचना कठिन हो गया। पुलिस ने भी प्रयत्न किया किन्तु विफल रहे। अन्तः मज़ार की पच्छिम ओर की मस्जिद की चार दीवारी पर बैठ गये और विश्वासपात्र जनों के आग्रह शिष्य बनाना आरम्भ कर दिया। आपने चादर लटका दिया लोग उसको हाथों में पकड़ते-चूमते और शिष्य होते चले जाते थे। लगभग दो घण्टे तक यह क्रम चलता रहा। हुज़ूर की वापसी में प्रयत्न के पश्चात् भी भीड़ से छुट्टी नहीं मिली किसी प्रकार आपको विश्राम स्थल तक पहुँचाया गया। रात्रि के भोजन का निमन्त्रण ठाकुर फतह मुहम्मद खाँ तअल्लुकेदार का था। विश्राम स्थल से ठाकुर साहब का महल एक कोस पर था। जमीदार साहब की डयोढ़ी से भोज्य पदार्थ सुसज्जित ढ़ंग से चला। ठाकुर स्वयं ला रहे थे। रास्ते में आतिशबाजी छूटती और बीस-बीस कदम पर कव्वाली- संगीत इत्यादि होती आती थी। तीन दिन तक हुज़ूर वहाँ टिके हुए थे। बहराम घाट पहुँच कर आप ने कहा 'गनी खाँ जो जिसको मिलना था मिल गया। परिश्रम से कुछ नहीं। हाँ! श्रम का इतना प्रभाव अवश्य है कि मजदूर को मजदूरी मिल जाती है। यह बात कि मन तू शुदम तू मन शुदी (मैं तू और तू मैं हो जाऊं) कठिन है। श्रम तथा प्रयत्न से अन्य लाभ प्राप्त होते हैं जो ज्ञान और कर्तव्य से सम्बंधित होते हैं। मैं और तू का झगड़ा मिटाना प्रेम का कार्य है। प्रेम पर किसी का वश नहीं। प्रेम का वश सभी पर है। सम्पूर्ण संसार का मूल प्रेम है।'

मौलवी हाजी नसीरूद्दीन साहब फतहपुरी ब्यान करते हैं कि मैं एक बार ग्राम चन्द्रा मऊ, परगना मोहलदारा सनईघाट, जिला-बाराबंकी गया। हम ने देखा कि मस्जिद की पर्दा की दीवार दो हाथ गोलाई में टूटी हुई है। मैंने इस छेद (सूराख) के सम्बंध में वहां के लोगों से पूछा। उन्होंने मुझ से बताया कि एक बार हजरत वारिस पाक यहाँ पधारे थे। इलाके के लोग एकत्र हो गये। उस रोज़ जुमा था। लोगों की भीड़ सरकार वारिस पाक को देखना चाहती थी। लोग सोच रहे थे कि जुमा की नमाज़ बाहर ऐसी जगह हो कि सभी लोग हुज़ूर का दर्शन कर सकें। आप ने लोगों की परेशानी का ख्याल कर कहा 'मस्जिद की दीवार जो बाहर है उसमें छेद कर दो। लोग बाहर खड़े हो जायें और उस छेद से देखते रहेंगे। अतः ऐसा ही हुआ और ये सूराख अब तक हुज़ूर की याद में मौजूद है। जहाँ हुज़ूर होते दर्शनार्थियों की भीड़ लग जाती थी। इस खिंचाव का वर्णन कठिन है। ऐसी दशा में हुज़ूर एक-एक करके लोगों को कैसे शिष्य बनाते। ऐसी दशा में चेला बनाने की दो ही सूरत थी। जब कभी भीड़ कम होती तो आप एक-एक को हाथ पकड़ा कर शिष्य बनाते और जब लोगों की भीड़ अधिक हो जाती तो आपके एहराम को पकड़

कर लोग चेला बन जाते या कभी आपने ये कहा कि जिसने मुझको देख लिया वह मेरा शिष्य हो गया। यह सरकार की आत्मशक्ति का बाहुल्य था कि लाखों आदमी देखकर या पालकी छू कर शिष्य हो जाते थे। आपके शिष्यों की संख्या अनगिनत थी कोई हिसाब नहीं था।

हकीम मौलवी महमूद अली साहब लिखते हैं कि वारसी समूह एक ऐसा असीमित ब्याबान है जिसका कोई ओर छोर नहीं है। इस जंगल में लाखों करोड़ों प्रकार के प्राणी छिपे हुए हैं जिनका पता करना बहुत कठिन है। जो जिस रंग में है उसी में परिपूर्ण हैं। प्रेम और दर्द से कोई खाली नहीं है। वारसी गुलामों की पहचान यही प्रेम और इश्क का रंग है। चाहे जिस भांति कोई आपके सिलसिले में आया सभी को आप जानते पहचानते थे। जब कोई शिक्षा-दीक्षा के लिये आपके पास उपस्थित हुआ आप उसे शिक्षा देते थे। कभी आप अपने शिष्यों में से किसी को भूलते नहीं थे। आत्मबल का इतना जोर था कि जो आपको देखकर चेला हुआ उसे भी आप याद रखते थे। काजी अब्दुर्रज़्ज़ाक साहब जो सूफी मुहम्मद हुसेन साहब के शिष्य थे ब्यान करते है कि एक बुजुर्ग ने हाजी वारिस पाक से पूछा कि अनगिनत लोग आपके शिष्य होते हैं इसका कारण क्या है? आपने कहा 'क़यामत के दिन मैं सबको खुदा के सम्मुख कर दूंगा कि तेरे इतने बन्दों ने मेरे हाथ पर तोबा किया है मैं गवाही देने को तैयार हूँ। वह दयावान तथा कृपा निधान है। विश्वास है कि अवश्य ही दया और कृपा करेगा।

मौलाना हाजी अबू मुहम्मद अली हसन साहब अशरफी अल जीलानी गद्दी धारी किछौछा शरीफ लिखते हैं कि दिल्ली में एक फकीर से मुझे मिलने का इत्तेफ़ाक हुआ। बातचीत के मध्य हाजी साहब किब्ला की चर्चा आ गई। उन्होंने कहा कि इस आन्तरिक शक्ति का फकीर इस जमाने में कोई न होगा। हजरत दिल्ली स्टेशन पर रेल गाड़ी में सवार होने के लिए विद्यमान थे। सैकड़ों मर्द-औरत, गुरू-शिष्य सम्बन्ध स्थापन करने हेतु सेवा में उपस्थित थे। आपने आदेश दिया 'जाओ हम ने सबको अपना शिष्य कर लिया।' आन की आन में सब चेला हो गये। यह आत्म-शक्ति का कमाल था। हाजी साहब की बड़ाई कम नहीं थी और ब्यान करने की मुहताज थी। इस प्रकाशमयी हृदय फकीर ने जो कुछ कहा आन्तरिक दृष्टि से सम्बन्धित था। आप, कादरिया, रज़्ज़ाकिया, चिश्तिया, निज़ामियां सभी सम्प्रदायों में शिष्य करते थे। जब लोगों को अलग-अलग चेला बनाते थे तो निम्नांकित शब्द कहलवाते थे :

Scanned with CamScanner

'हाथ पकड़ता हूँ पीर का, हाथ पकड़ता हूँ ख़ुदा और रसूल का, हाथ पकड़ता हूँ पंजतन पाक का।' कभी-कभी आप कुछ विशेष हिदायत भी करते थे। जब बहुत से लोगों को एक साथ शिष्य करते तो उक्त वाक्य सेवक लोग ज़ोर-ज़ोर से कहकर दोहरवाते थे। हुज़ूर वारसी पाक के शिष्य करने के शब्दों में नवीनता पाई जाती है। अन्य पीर लोग दूसरे शब्दों को कहवाकर शिष्य करते थे। शिष्य होने के समय के इन शब्दों की व्याख्या का वर्णन मौलवी रौनक अली साहब वारसी लिखते हैं के एक बार हजरत वारसी पाक पैंतेपुर में विद्यमान थे। आपके सेवक, शिष्य और गुदड़ी धारी फकीर एक स्थान पर बैठ कर आपस में बातें कर रहे थे कि हुज़ूर बिल्कुल नये ढ़ंग से मुरीद करते हैं। ये शब्द, हाथ पकड़ता हूँ पीर का, ख़ुदा और रसूल का पंजतन पाक का, इसमें क्या रहस्य है और कौनसा भेद निहित है? दूसरे ब्रह्मवादी गुरू इस प्रकार के वाक्य इस क्रम से नहीं कहलवाते हैं। सब अपनी-अपनी समझ के अनुसार कुछ बातें कर रहे थे। शाह मकसूद अली वारसी एक कोने में चुपचाप बैठे हुए थे। लोगों के कहने पर शाह मकसूद अली वारसी ने कहा। अल्लाह के एक होने (वहदानियत) रसूल से रसालत और पंजतन पाक से अहलेबैयअत का इकरार और भरोसा है। इसमें हजरत फ़ातिमा ख़ातून जन्नत का वास्ता शफाय का सम्बन्ध है जिस परी को ख़ातून जन्नत की रूहानियत प्राप्त होती है वही औरतों के शिष्या बनाने या मुरीद करने अथवा बैय्यत लेने का हक रखता है। जब सभी लोग सरकार वारसी पाक के समक्ष उपस्थित हुए तो आप ने कहा 'हम पंजतनी हैं, हम पंजतनी हैं, मकसूद सच कहता है।' औरतों की बैय्यत करते समय आप एहराम का दामन पकड़वाते और मुँह फेर लेते थे। हिन्दू लोगों को चेला बनाते समय यह सीख देते थे 'ब्रह्म पहचानों, पत्थर न पूजो, झटका न खाओ।' अंग्रेज़ या यहूदी को शिष्य बनाते समय कहते 'देखो! मूसा कलीमुल्लाह, ईसा रूहुल्लाह, मुहम्मद रसूलल्लाह किसी को बुरा न कहना, हराम न खाना।' आपकी सीख थी, हाथ के सच्चे रहना, अत्याचार न करना, दर्ज़ी के लिए कपड़े न चुराना, कम न तौलना' इत्यादि।

बैय्यत (शिष्य) होने की घटनायें

हुज़ूर वारिस पाक से बैय्यत होने वाले लोगों की संख्या गिनती से बाहर है। जहाँ तक देखा सुना गया है कि एक-एक समय सैकड़ों हज़ारों लोग सरकार को देखकर या छूकर शिष्य हुए हैं। इन सबका लेखा-जोखा रखना असम्भव है किन्तु कुछ विशेष घटनायें जो प्राप्त हुई हैं अंकित किये जाते हैं। जिनसे खुदा की शान दिखाई देती है तथा बहुत से रहस्य प्रकट होते हैं। हज़रत वारिस पाक की यह मुख्य

विशेषता थी किसी दूसरे पीर (धर्मगुरू) के चेले यदि आप से शिष्य होना चाहते तो आप उनको चेला नहीं बनाते थे। हाफिज़ अब्दुल कादिर फतहपुरी जो एक बृद्ध बुज़ुर्ग हैं और वे सरकार वारिस पाक के जवानी के ज़माने को देखे थे, ब्यान करते हैं एक बार सरकार वारिस पाक की सेवा में दो आदमी हाजिर हुए और पूछा कि यदि किसी का पीर पर्दा कर जाय (शरीर त्याग कर दे) और मुरीद कुछ प्राप्त करना चाहे तो दूसरा गुरू बना सकता है या किस तरह प्राप्त कर सकता है। मुरीद को पूर्ण विश्वास करके मुरीद होना चाहिए, चेला हो तो मिट्टी की ढेर से प्राप्त कर सकता है। चौधरी खुदा बख्श स्वयं ब्यान करते हैं कि मैं सरकार के पास था हज़रत फ़ज्जल रहमान का एक शिष्य हुज़ूर के पास शिष्य होने आया। आप ने उससे कहा 'हर जगह एक ही शान देखें। जगह-जगह शिष्य होना मर्दों का ढंग नहीं, ये हरजाई औरतों का तरीका है। प्रयत्नशील होने के पश्चात् भी आपने उस को शिष्य नहीं बनाया।'

हकीम मुबारक हुसेन के शिष्य होने की घटना

हकीम मुबारक हुसेन साहब, अरबी, फारसी के साहित्यकार और कवि थे। तसव्वफ आध्यात्म में कुछ पुस्तकें भी आप ने लिखी हैं। अपनी एहराम धारण करने की बात उन्होंने स्वयं लिखा है। जब मेरी आयु बत्तीस वर्ष होगी, मुझे तहबन्द प्राप्त हुआ। मैं नक्शबन्द सिलसिले में मुरीद था। जब तक मौलाना सैय्यद फखरूद्दीन अली अहमद, हकीम बादशाह जीवित रहे मैं उनकी संगत में रहता था। उनके शरीर त्याग के पश्चात् मैं पटना रहने लगा। उसी जमाने में हाजी वारिस पाक अजीमाबाद आये हुए थे। मैं भी सेवा में उपस्थित हुआ और दो तीन दिन हुज़ूर की सोहबत में रहा। कलकत्ता जाने पर मेरे एक रिश्तेदार ने कहा कि यहाँ एक फकीर रहते हैं उन से मिलो। अतः मैं उस दरवेश से मिला। उन्होंने मुझे देखकर कहा 'गर न बूदे जाते हक अन्दर बजूद। आबो गिलारा कै मलक करदे सजूद' शाह साहब ने आगे कहा 'तुम ने बहुत देर की, फिर मिल के जाना। मैं अपने स्थान पर आया खा पीकर सो रहा। स्वप्न में देखता हूँ वही शाह साहब जगा रहे हैं। इसी प्रकार तीन बार सोया और स्वप्न देखा। प्रातः एक मित्र के साथ मैं शाह साहब के पास पहुंचा, उन्होंने देखते ही कहा 'रात खूब सोये हो।' फिर यह कह कर कि तलाश करो, बिदा कर दिया। घबराहट बढ़ने लगी अजीमाबाद आकर दूसरे दिन उस जमाने के बुजूर्गों से मिलने हेतु चल पड़ा। सर्व प्रथम देवा शरीफ पहुंचा, ज्ञात हुआ हज़रत वारिस पाक सहाली चले गये हैं। सहाली पहुंचकर सरकार का कदम स्पर्श किया। आप मुस्कुरा कर कहा 'आ गये! अच्छा जाओ मजे करो।' मैं हट कर बैठ गया। ज

Scanned with CamScanner

मेरी पुनः बुलाहट हुई हाजिर हुआ। सरकार ने कहा 'जाओ, जाओ! यहाँ दोई (दो होने का भाव) की गुंजाईश नहीं है।' 'तुम शिष्य हो चुके हो, जाओ उसी को करो।' यह सुन कर मैंने सोचा अच्छा! अपना भाग्य यहाँ न सही कहीं और सही किन्तु जो प्रश्न मेरे हृदय में छिपा है उसका उत्तर जब तक न मिलेगा मैं न जाऊंगा। फिर हज़रत ने तलब किया दो तीन बातों का जवाब मिला तथा आदेश हुआ 'अच्छा जाओ! एक सप्ताह दस दिन में अजीमाबाद आऊंगा तो तुमसे मिलूंगा।'

मैं बिदा होकर इलाहाबाद आया कुछ फकीरों से मिला सबने कहा दृढ़ रहो! घबराने की जरूरत नहीं है। फिर मैं अपने पीर (गुरू) के घर जाकर उनके पुत्र उत्तराधिकारी मौलाना मसीहुद्दीन साहब से कहा कि हमारे पीर मुर्शिद ने जबसे शरीर त्याग दिया है। मेरी दशा सोचनीय है। आप मेरी सहायता करें। उन्होंने कहा कहीं तुम्हारे ऊपर हज़रत वारिस पाक की दृष्टि तो नहीं पड़ गयी है। मैंने कहा कि मैं हज़रत के पास से आ रहा हूँ। उपरोक्त मौलवी साहब ने कहा कि इस समय उनके बराबर कौन है? उचित है, जहाँ तुम्हारा हिस्सा हो प्रयत्न करो। फिर सीधा अजीमाबाद आया एक सप्ताह पश्चात् हज़रत सैय्यद वारिस पाक अजीमाबाद पधारें। मैं उनकी सेवा में उपस्थित हुआ। आपने फिर वही शब्द कहा 'जाओ, जाओ।' मैंने एक कविता साकीनामा लिखकर प्रस्तुत किया। आपने खुश होकर कहा 'तू अजली शायर है।' (तुम जन्मजात कवि हो) फिर आपने एक होली की फर्माइश किया। होली लिखकर प्रस्तुत हुई। दो तीन दिन बाद आप सीवान के लिये चले मैं भी साथ हो लिया। सीवान स्टेशन पर मेरी दशा विचित्र हो गई। सरकार की पूरी दया मुझ पर थी। मैंने जो देखा सो देखा कहने में नहीं आ सकता। पुनः मैं हज़रत के साथ गोरखपुर तक चला गया। दो तीन मास पश्चात् फिर मैं फतहपुर में कदम बोस हुआ और एक मसनवी (कविता) लिखकर हुज़ूर के सम्मुख उपस्थित हुआ। सरकार बहुत आनन्दित हुए फिर आपके हुक्म से एक सिजरा अरबी भाषा में लिखा। हुज़ूर के साथ देवा शरीफ तक गया। देवा शरीफ से वापसी के पश्चात् अब मेरा मन खोया सा रहने लगा। मैलाना ने भी रूमी की तर्ज़ में एक मसनवी लिखा जिसमें अपनी एक रात की घटना है। मैंने स्वप्न देखा कि मुझे लोग पीले रंग का कफन पहनाते हैं फिर लोग मेरा जनाज़ा लिये जाते हैं। मुझे आवाज़ सुनाई पड़ी, पानी लाओ! जब मैं पानी लेकर गया तो देखा मेरा अपना जनाज़ा है। मैं हुज़ूर के पास पहुंचकर बहुत रोया। इसी दशा में हुज़ूर ने मुझे गले लगा लिया। मैंने एक तहबन्द तैयार कराकर सैय्यद मारूफ शाह और बेनजीर शाह इत्यादि के साथ हुज़ूर

की ख़िदमत में हाजिर किया। हुज़ूर ने अपना एहराम मुझ को प्रदान किया। उस समय मेरा सपना साकार हो गया। मेरा नाम अब्दुल आद शाह रखा। इससे विदित है कि हुज़ूर वारिस पाक दूसरे लोगों के चेलों को जल्दी अपना शिष्य नहीं बनाते थे। जब मुबारक हुसेन साहब ने अपने गुरू के उत्तराधिकारी से स्वीकृत ले लिया तब हज़रत ने उनको शिष्य बनाया। आप कविता में अपना उपनाम तहैयुर रखते थे। आपकी फारसी कवितायें फारसी भाषा में अधिक जनप्रिय हैं। अतः लिखना व्यर्थ सा जान पड़ता है।

अब्दुल आद शाह साहब वारसी एक साहबे निसबत फकीर गुजरे हैं। आपके शरीर त्यागने की घटना बड़ी रोचक है। हाजी अवघट शाह साहब वारसी लिखते हैं कि जब आप बीमार हुए उस समय आप देवा शरीफ में थे। नवाब अब्दुश्शकूर साहब, धर्मपुर, बुलन्द शाहर ने हजरत वारिस पाक से प्रार्थना किया कि यदि आदेश हो तो मैं आपने घर ले जाकर इनकी दवा-दारू करूं। आपने कहा 'तुम्हारे भाई हैं तुम्हें अख़्तियार है।' नवाब साहब द्वारा शाह साहब धर्मपुर लाये गये। डाक्टरों ने सहमत हो जीवन से निराशा प्रकट कर दिया। आद शाह साहब जहाँ ठहराये गये थे वहीं इनसे विरोध रखने वाले एक मौलवी साहब भी किसी दूसरे मकान में रहते थे। दूसरे दिन लगभग 3 बजे सैय्यद अब्दुल आद शाह का सवाल हो गया। हकीमों और वैद्यों ने नब्ज (नाड़ी) देखकर घोषित कर दिया कि आप जीवन से रहित हो चुके हैं किन्तु मौलवी साहब अपनी ख्याली विरोध के कारण रोगावस्था में भी आद शाह साहब से नहीं मिले। सैय्यद अब्दुल आद शाह के हृदय से एक स्वर उठने लगा जो धीरे-धीरे इतना ऊँचा हुआ कि स्वर साफ-साफ 'अल्लाह, अल्लाह' सुनाई देने लगा। आवाज फैलते-फैलते मौलवी साहब तक पहुंची। नवाब साहब यह देखकर हुज़ूर हाजी साहब को जवाबी तार दिया। सरकार वारिस पाक ने तार पाकर हाजी अवघट शाह से कहा जवाब दे दो 'सुपरदम व तु मायए खेसरा' (मैंने अपनी पूंजी तेरे हवाले कर दिया) तार का जवाब पाकर नवाब साहब ने आद शाह के निकट जोर से सुनाया। आवाज बन्द हो गयी। 23 जिलहिज्जा 1321 हिजरी को आवाज 3 बजे दिन से सात बजे रात तक चार घंटे बराबर चलती रही। आप नवाब साहब के बाग में दफन हुए। रियासत की ओर से प्रत्येक वर्ष आपका उर्स होता है।

मुंशी ज़हूर अली के शिष्य होने की घटना

यह घटना उपर्युक्त घटना से मिलती जुलती है। मुंशी ज़हूर अली बाजीदपुर सूबा बिहार के कुलीन परिवार के थे जो वारसी मत के एक फकीर हैं। वारसी होने पूर्व सैय्यद मोहिब अली शाह मुसाफिर कादिरी कलन्दर के शिष्य थे। वारसी होने की घटना स्वयं लिखते हैं। मैं सरहन में तहसीलदार था। ११ रबीउस्सानी सन्

Scanned with CamScanner

१२९८ हिजरी को मेरी उम्र चालिस की से आगे बढ़ रही थी। प्रात: मैंने एक स्वप्न देखा कि मेरे पिता के गुरू और मेरे गुरू शाह मुसाफिर कादिरी कलन्दर दोनों साथ आये और मुझसे कहा यदि ख़ुदा के जवाँ मर्दों को देखना चाहते हो तो हाजी सैय्यद वारिस अली शाह जो देवा शरीफ से बाढ़ (बिहार) में आ रहे हैं, मेरे साथ चलो तो मैं तुमको उनकी सेवा में पहुंचा दूं। अत: मैं उनके साथ वारसी दरबार में गया। सरकार वारिस पाक ने अपने अंक में भर लिया और कहा 'यह महबूब है और मुझ से है।' आँख खुल गई और मैं ग्यारहवीं का भोजन लोगों में बंटवाकर सरहन से चल पड़ा। रात में बाढ़ पहुंचा हुजूर जिस कमरे में थे उसका द्वार बन्द था। रहीम शाह साहब पुराने सेवक ने जाकर हज़रत हाजी साहब से कहा कि वह तहसीलदार जो रात अपने धर्म गुरू के साथ आये थे उपस्थित हैं। उसी समय कपाट खुला और मैं हुजूर के सम्मुख हुआ। आप अपने दाहिने हाथ की हथेली मेरे हाथ से मलते रहे। जब तक हुजूर बाढ़ में रहे मैं उनकी सेवा में उपस्थित रहा। इस घटना से कुछ दिन बाद जब सरकार वारिस पाक आरा में नसीरूद्दीन साहब वारसी सी० आई० ई० मंत्री भूपाल की कोठी में विद्यमान थे मुझको फकीरी वस्त्र प्रदान किया और फ़जीहत शाह नाम रखा। यही फ़जीहत शाह कलन्दर वारसी मशहूर हुए। इनकी फारसी भाषा की जानकारी अच्छी थी इनकी कविता फारसी में होती।

हकीम सैय्यद अब्दुल आदशाह और फ़जीहत शाह साहब के वाक्यात से जाहिर है कि हुजूर वारिस पाक दूसरे पीरों (धर्म गुरूओं) के चेलों को शिष्य नहीं करते जब तक कि उनके पीर इजाज़त ने देते या स्वयं न कहते। इस प्रकार की बहुत सी बीती बातें हैं कि उस जमाना के बुजूर्गों ने अपने चेलों को और अपने पुत्रों को हुजूर के शिष्य बनने हेतु भेजा।

शाह बद्रूद्दीन साहब के शिष्य होने की घटना

आप सैय्यदना शाह शमसुद्दीन साहब कादरी चिश्ती साबरी रह० के सुपुत्र थे। शाह शमसुद्दीन साहब उस जमाने के विख्यात संतों और फकीरों में एक थे। अपने पीर के आदेश से बारह वर्ष तक भ्रमण करते रहे। हिन्दू सन्तों में भी बहुत दिनों तक रहे। भ्रमण के पश्चात् जब गुरू के सामने आये तो गुरूजी ने आदेश दिया कि पीराने पीर कलिया शरीफ में हाजिरी दो। बारह रबीउल अव्वल को बारह बजे रात्रि में जो बुजुर्ग मज़ार शरीफ पर मिलें उनके शिष्य हो जाओ। अत: हजरत शाह शमसुद्दीन ने ऐसा ही किया किन्तु उस बुजुर्ग ने बड़ी मुश्किल से बैय्यत लिया और सैय्यदना साबिर रह० के मज़ार की ओर संकेत कर कहा इनके सुपुर्द हो। उसी रात

शाह शमसुद्दीन ने एक छन्द रचा जिसका प्रथम पद है :

निछावर अपने मुर्शिद पर कि जिसने हमको दिखलाया।
जमाले आरिजे जेबा अलाउद्दीन साबिर का॥

जब शाह शमसुद्दीन साहब की अन्तिम बेला आई तो आपके सुपुत्र बदरूद्दीन साहब ने आप से बैय्यत करने का आग्रह किया। आपने कहा मेरे पास जो तुम्हारा हिस्सा है वह तो तुम को अवश्य मिलेगा किन्तु मैं तुमको शिष्य नहीं करूंगा। तुमको वसीयत (मरते समय जो किसी से करने को कहा जाता है) तुम हजरत सैय्यद वारिस पाक के शिष्य बनो। यदि ऐसा तुमने नहीं किया तो क़्यामत में तुम्हारा दामनगीर हूँगा। इस जमाने में उनके अतिरिक्त कोई फकीर नहीं है। हाँ! बुजुर्ग तो बहुत हैं और शाह साहब ने नश्वर शरीर का त्याग कर दिया। बदरूद्दीन साहब कहते हैं धीरे-धीरे यह बात मेरे ज़ेहन से निकल गई। मैंने एक स्वप्न देखा कोई कहता है तुम्हारे पिता बुला रहे हैं। पूरब की ओर बाग में हैं। मैं बाग में जाने लगा। मैंने देखा ठीक रास्ते में साँप है जिसका दोनों सिरा पथ के दोनों ओर ज़मीन में फंसा है। मैं साँप को हटाने लगा पर वह नहीं हटा। एक व्यक्ति ने मुझे चाकू दिया और कहा तुम इसको बीच से काटो तो यह हट जायेगा मैंने साँप काटकर हटा दिया और आगे बढ़ा। बाग के और मेरे बीच एक नदी बहती दिखाई दी। मैं नदी को पार करना चाहता था कि मेरे पिता की तपस्या-स्वर मुझे सुनाई पड़ रही थी। मैंने घबराकर आवाज़ दिया 'मैं किस तरह नदी पार करूं कोई नाव बेड़ा कुछ भी नहीं दिखाई पड़ रहा है।' मेरे पिता ने कहा पूरब के रास्ते से आओगे तो मुझ तक पहुंचोगे। इतने में मेरी आँख खुल गयी। मैंने अपने मन में स्वप्न का अर्थ लगाया कि संकेत शिष्य बनने की ओर है और प्रस्थान कर देवा शरीफ पहुँचा। शिष्य हो गया। फिर शाह फ़जल हुसेन साहब वारसी गद्दीनशीन शाह वलायत की ख़ानकाह (कुटी) में विश्राम के लिये रूका। मेरे मन में यह शंका हुई कि हाजी साहब शिष्य करना नहीं जानते सबके सामने मुझको शिष्य किया है जबकि यह कार्य एकान्त में होता है। उसी समय मकान के सहन के चबूतरे पर बैठे हुए शाह फ़जल हुसेन साहब ने मुझको बुलाकर कहा कि तुमने फकीर कहाँ देखे हैं? तुम्हारे पिता अवश्य फकीर हैं जिन्होंने तुमको यहाँ भेजा है। क्या वह स्वप्न तुमको याद नहीं है? यही विचार वह सर्प है और चाकू हमारी बातें हैं। मैंने अपने पिता की बातों का और सपने का अब तक किसी से वर्णन नहीं किया था। ये बातें सुनकर मेरे हर प्रकार के भ्रम मिट गये। मारे भय के मैं हाजी साहब के सामने नहीं गया। शाम को शाह फज़ल हुसेन

Scanned with CamScanner

साहब के पूछने पर, मैंने कहा मारे भय के मैं सरकार में उपस्थित न हो सका। शाह फजल हुसेन साहब ने कहा कि वह कुछ न कहेंगे, जाओ। हमी लोग ओछे हैं जो कह देते हैं। वह तो अथाह सागर हैं। इसके बाद मैं सरकार में हाजिर हुआ। मुझको देखकर हुजूर मुस्कुराये और कहा 'जाओ! बछरायूं में हमारे बहुत चेले हैं। हाल यह था कि उस समय बछरायूं में केवल दो शिष्य एक कादरी साहब दूसरे हाफिज़ अब्दुल मजीद साहब थे किन्तु इस कथन के पश्चात् दो सौ से अधिक चेले हो गये। फिर मुझे फकीरी वस्त्र देकर कहा 'किसी से सवाल न करना चाहे दम निकल जाय और अपने पिता की समाधि पर रहना। यदि तुम यहाँ न आते तो वह क़यामत में तुम्हें पकड़े - पकड़े फिरते।' फिर उपस्थित गण से कहा,'यह खानदानी फकीर हुये हैं, और इनका फकीरी नाम अवघट शाह रखा। अवघट शाह का पद है-

घट घाटीं घाट न अवघट जाने, न जाने कवनो राह।
कृपा भई गुरू वारिस की, जो हो गये अवघट शाह ॥

मदनी शाह साहब के शिष्य होने की घटना

मदनी शाह साहब पवित्र मदीना के रहने वाले थे। अति रूपवान और सुन्दर गुण वाले व्यक्ति थे। हज़रत शाह हाजी इमदादुल्लाह साहब महाजिर मक्की रह० के कथनानुसार हाजी साहब की सेवा में उपस्थित होकर फकीरी वस्त्र प्राप्त किया बहुत दिनों तक इन्होंने अन्न का परित्याग कर दिया था और भ्रमण करते रहे। भ्रमण काल ही में इन्होंने हज भी किया। अरब निवासी होते हुये भी फकीरी वस्त्र पाने के पश्चात् इनको वह आन्तरिक दृष्टि प्रदान हुई कि मस्जिद, मन्दिर और गिरजा में जहाँ भी जाते एक ही शान देखते। कुफ्र और इस्लाम का भेद-भाव इनके हृदय से नष्ट हो चुका था। आगरा के वकील अली अहमद साहब लिखते हैं कि मदनी शाह दो वर्ष आगरा में रहे। दिन भर एक गोसाई जी के साथ शहर में घूमते तथा मन्दिरों में जाते थे। हिन्दू लोग जैसा आदर सत्कार गोसाई जी का करते थे वैसा ही मदनी शाह साहब का भी करते थे। इनके मन्दिरों में जाने से हिन्दू और मन्दिर के लोग बहुत प्रसन्न होते थे। रात में ये दोनों व्यक्ति यमुना के किनारे बने रात की बुर्जियों में रात व्यतीत करते थे। अक्टूबर १९०४ ई० में यमुना नदी के किनारे मदनी शाह ने शरीर त्याग किया तथा कब्रिस्तान पीर गीलानी में इनकी लाश दफन की गई। ऐसी अधिकांश घटनायें हैं जिनसे विदित होता है कि उस काल के आदरणीय सन्तों-साधुओं ने बहुत से लोगों को सुदूर से हाजी वारिस पाक की सेवा में आत्म-ज्ञान से लाभान्वित होने के लिये भेजते रहे हैं।

दारा खान साहब की घटना

शहर लखनऊ में एक धनाढय व्यक्ति दारा खान साहब थे। सदैव नवाबी ढंग में रहते थे। एक रोज अपनी दशा पर दुःख प्रकट करते हुये कहा कि कितना अच्छा होता यदि कोई कामिल वली मिलता जो हुजूर फ़खरे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का दर्शन करा देता। एक रात दारा खान ने स्वप्न में सरकारे दो आलम सल्ल० को देखा और दो बुजुर्गों को भी साथ में देखा। एक साहब ने चरण स्पर्श का संकेत किया। दारा खान ने चरण स्पर्श करना चाहा तब तक उनकी आँख खुल गई। दारा खान को बहुत दुःख हुआ। मस्जिद में बैठ कर उसी रूप का ध्यान करने लगे। तब तक हाजी वारिस पाक को अपनी तरफ आते हुए देखा और चरणों पर गिरकर बार-बार कहने लगे कि मैं आपको खूब पहचानता हूँ। आपने कहा 'जोश में न आओ।' इस प्रसन्नता में खुद खान साहब ने लोगों को भेज दिया और हज के लिये चले गये।

मौलवी कबीरूद्दीन के शिष्य होने की घटना

मौलवी सैय्यद कबीरूद्दीन गाजीपुर के निवासी थे। हैदराबाद दक्षिण में स्कूल मास्टर थे। सैय्यद अब्दुल गनी साहब लिखते हैं कि कबीरूद्दीन साहब ने मुझ से एक दिन कहा कि एक बार उन्होंने स्वप्न में मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लहो अलैहे वसल्लम को देखा कि सरकारे दो आलम कह रहे हैं 'हाजी वारिस अली शाह के शिष्य हो जाओ।' मैंने उनसे कहा कि दो तीन माह पश्चात् मैं घर जाने वाला हूँ। आप मेरे साथ चलें। आपको चेला बनवा दूंगा। उन्होंने कहा मैं इतनी लम्बी प्रतीक्षा नहीं कर पाऊंगा। मैं इसी छुट्टी में जाकर चेला बन जाऊंगा अतः उन्होंने अपने महाजन से ऋण मांगा उसने अपने स्वभाव के विरूद्ध इस बार तुरन्त कर्ज दे दिया। चलते समय सैय्यद कबीरूद्दीन ने मुझसे पूछा कि बाहर से आने वालों के लिये हुजूर के चौखट पर क्या प्रबंध है? हमने उनको बताया कि नवाब अब्दुशशकूर खां और ठाकुर पंचम सिंह द्वारा सम्पूर्ण प्रबन्ध है। आपको फिक्र की कोई जरूरत नहीं। कबीरूद्दीन साहब कहते हैं कि जब मैं रेल द्वारा लखनऊ से आगे बढ़ने पर फज़ले रहमान साहब के एक चेले ने मुझ से यह जाना कि मैं हाजी साहब के यहाँ शिष्य होने जा रहा हूँ तो उसने कहा कि हाजी साहब किसी को रात में ठहरने नहीं देते। इसलिए रात बिताकर जाओ। अतः मैं दस बजे रात को बाराबंकी आया हुआ पूरी रात बिताकर १० बजे दिन में देवा शरीफ जाकर हुजूर की सेवा में उपस्थित होकर चरण चूमा। हुजूर ने कहा 'फकीर के यहाँ आये हो तो खाने की क्या चिन्ता है? भूखे रहना। न मैं किसी को ठहरने को कहता हूँ और न जाने को जिसका मन

Scanned with CamScanner

जितना दिन ठहरने का हो ठहरे।' मैं लज्जित हुआ कि क्यों सारी रात व्यर्थ में बिता दिया। दूसरे दिन शिष्य होकर हैदराबाद के लिए चल पड़ा। पहुंचते ही मेरा वेतन पचास से डेढ़ सौ रूपये हो गया। दूसरी बार जब सेवा में उपस्थित हुआ तो आपने कहा 'यह तो अपने गाँव के अमीर और रईस आदमी हैं। जिसका फल यह हुआ कि मेरी शादी अपने गांव के एक रईस आदमी की इकलौती लड़की से हो गयी।

नादिरशाह काबुली के शिष्य होने की घटना

हाजी अवघट शाह वारसी लिखते हैं कि एक दिन हम लोग सरकार वारिस पाक की सेवा में उपस्थित थे। एक काबुली नादिर शाह नामक उपस्थित हुए। हुजूर को देखते ही दौड़कर हुजूर से लिपट गये। यद्यपि हम लोगों को अच्छा न लगा किन्तु हुजूर की मिलनसारी से हम लोग परिचित थे, चुप हो गये। उन्होंने अपनी भाषा में कुछ कहा और हुजूर ने उसी भाषा में उत्तर दिया। हम लोग कुछ न समझ सके। इसके पश्चात् वह बाहर आए और हम लोगों के साथ बैठ गये। उन्होंने बताया कि मेरा मकान सरहद काबुल में अली मस्जिद में है। मेरा नाम नादिर शाह है। हम ईश्वर से प्रार्थना करते थे कि मुझे किसी प्रकार महामना अली मुर्तुजा शेरे खुदा का कोई उत्तराधिकारी इस समय है अथवा नहीं और यदि है तो पता कैसे लगेगा? इसी विचार में संसार की बातें भूल गई या अली, या अली की रट लगाता रहता था। एक दिन रात को मैंने स्वप्न में देखा कि दो बुजुर्ग मस्जिद में आये और एक ने दूसरे की ओर संकेत करते हुए कहा कि ये मेरे उत्तराधिकारी हैं। जब मेरी निद्रा भंग हुई तो मैं पागलों जैसा हो गया। जिन बुजुर्ग की ओर महामना अली मुर्तुजा ने संकेत किया था उनका वस्त्र मैं पहचानता था। बड़ी मस्जिद देहली के द्वार पर जुमा पढ़ने के पश्चात् खड़े होकर देखने लगा। उसी लिबास में मुझे एक फकीर दिखाई पडे। बड़ी अभिलाषा सहित मैंने उनसे भेंट किया और पूछा यह वस्त्र आपको कहाँ से मिला है? आपका क्या नाम है? उन्होंने मासूम शाह अपना नाम बताया और मुझे देवा शरीफ, जिला- बाराबंकी का पता दिया। मुझे बडी प्रसन्नता हुई और देवा शरीफ उपस्थित हुआ। हाजी साहब को मैंने देखते ही पहचान लिया और शिष्य हो गया। उर्दू, फारसी भाषा की वंशावली माँगा। आनन्दपूर्वक कहने लगे, लोग मेरे विचार का परिहास करते थे। कहते भी थे कि इस जमाने में ऐसा कौन है? अब मैं उनसे मिलूँगा तो कहूंगा तथा वंशावली दिखाऊंगा कि मैं अपनी इच्छा में सफल हुआ। शिष्य बनने के पश्चात् उन्होंने फकीरी वस्त्र चाहा, किन्तु हुजूर ने कहा, 'इस समय तुम अपने मकान पर जाओ, तीन वर्ष बाद फकीर बनाये

जाओगे। सावधान! किसी के सामने मांगने के लिए हाथ न फैलाना। तीन वर्ष पश्चात् जब पुनः काबुली महोदय हाजी साहब की सेवा में उपस्थित हुए। हाजी साहब उस समय रूग्ण शैय्या पर थे। अपने शरीर त्याग के एक दिन पूर्व फकीरी वस्त्र प्रदान कर उनका नाम फकीर शाह रखा और आदेश दिया 'यहाँ से अभी चले जाओ।' उसी रात के अन्तिम भाग में चार बजे शरीर त्याग कर दिया। जिस समय यह समाचार फकीर शाह ने सुना तत्काल एक चीख मारा और अपनी आत्मा परमात्मा को सौंप दिया।

कल्लन शाह के शिष्य होने की घटना

हाजी अवघट शाह एक अर्ज़ी (प्रार्थना पत्र) कल्लन शाह की नकल करते हैं जो निम्नांकित है :-

इस अधम को घर से निकले हुए बीस वर्ष का समय बीत चुका है। घर-बार संसार सबसे स्वतन्त्र होकर जमालुद्दीन शाह साहब का शिष्य हुआ और नव वर्ष तक उनके आदेश का पालन करता रहा। पुनः शाह शरफुद्दीन बू अली कलन्दर के चौखट की सेवा करता रहा। वहाँ से हमको आदेश हुआ कि तुम मीरान साहब की सेवा करो। अब ये गरीब मीरान साहब के दरवाजे पर उपस्थित है तथा चिराग बत्ती करता है। फिर मीरान साहब के आदेशानुसार हमको हाजी साहब का शिष्य होना स्वीकार है। ईश्वर के लिए मेरी दशा पर दया करके इस तुच्छ को अपने शिष्यत्व में रखिये। जब हाजी साहब की सेवा में कल्लन शाह का प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुआ तो आप ने उसे स्वीकार कर सन्तोषजनक उत्तर दिया। तत्पश्चात् कल्लन शाह की दशा में जो परिवर्तन हुआ और जो पद प्राप्त किया, उसकी जानकारी करनाल निवासियों को भली-भांति ज्ञात है।

अब्दुर्रहमान हया के शिष्य होने की घटना

हाजी अवघट शाह से एक प्रर्थना-पत्र नकल है जिसका सारांश इस प्रकार हैं- बहुत दिनों से मेरी इच्छा थी कि मैं किसी ऐसे संत या बुजुर्ग से शिष्य होऊंगा जो मुझे अपने जैसा बना ले। ईश्वर का दर्शन प्रत्यक्ष करा दें। मैं साधारण रस्म व रिवाज के अनुसार शिष्य होना नहीं चाहता था। क्योंकि मैं सुन चुका था गुरू बनना सरल है किन्तु शिष्य होना कठिन है। एक सप्ताह हो रहा है 'करिश्माए वारिस' मेरे अध्ययन में थी और बेदम शाह ब्रह्म- ज्ञान से परिपूर्ण पद्य से यह ज्ञात हुआ-'ऐ सैख तूचीजे दीगरी (गुरू संसार से परे एक अन्य वस्तु है)। अतः आज रात मैंने स्वप्न में देखा एक मस्जिद में रसूले खुदा मु० मुस्तफा सल्ल० विद्यमान हैं और

Scanned with CamScanner

बहुत से औलिया अल्लाह भी सम्मिलित हैं। दोनों नवासे हसन और हुसेन भी विराजमान हैं। सरदारे दो आलम कहते हैं 'ऐ अब्दुर्रहमान! तुम धन्य हो। हम तुझे प्यार करते हैं किन्तु बिना माध्यम के मुझ तक पहुँचना ठीक नहीं है। ये कथन सुनकर सुल्तानुल हिन्द ख्वाजा चिश्ती ने महबूबे इलाही निजामुद्दीन रह० से कुछ संकेत किया और हूजूर महबूबे इलाही ने मेरा हाथ पकड़कर हुजूर हाजी वारिस पाक के पुनीत हाथ में दे दिया। आपने खुशी से मुझे स्वीकार किया। शिष्य कर महबूब शाह पदवी रखा तत्पश्चात् मेरी निद्रा भंग हो गयी और आँख खुल गई। देखा नमाज़ का प्रथम समय था। मैंने इस स्वप्न को दुर्लभ निधि जाना। केवल हाजी साहब के अतिरिक्त अन्य किसी से नहीं कहा। इससे विदित होता है कि बहुत से लोग रसूले खुदा और अली-ए-मुर्तुजा के रूहानी (आत्मिक) प्रेरणा से आकर शिष्य होते थे। दूसरे प्रकार की घटनायें जो अपने ढंग में अद्वितीय हैं जो सरकार वारिस पाक की उच्च आत्म शक्ति की द्योतक हैं।

मुहम्मद अली अजमेरी की शिष्यता की घटना

मुंशी अब्दुल गनी खाँ साहब रईस पुरवा व गनी खाँ जिला-राय बरेली द्वारा लिखित हैं कि एक महोदय हुजूर हाजी साहब किबला(पूज्य) की सेवा में उपस्थित हुए और तत्काल शिष्य हो गये। मिलने-जुलने के उपरान्त ज्ञात हुआ। उनका नाम मुहम्मद अली था। उन्होंने अपनी शिष्यता की घटना इस प्रकार सुनाई। मेरा निवास स्थान मुहल्ला मदार दरवाजा अजमेर है। मैं पंजाब की अश्वारोही सेना का मुलाजिम था। मेरी सैनिक टुकड़ी कोहाट की ओर गई थी। संयोग से मैं अपनी टुकड़ी से बिछुड़ गया तथा दो दिन तक सिर मारता फिरा, तीसरे दिन एक पहाड़ी पर एक सन्त से भेंट हुई। उन्होंने भोजन करने के लिए एक वृक्ष की ओर संकेत कर कहा कि वहाँ से ले लो। उस स्थान पर भोजन मौजूद था। मैंने इच्छा भर खाया और पानी पिया फिर मैंने उनसे आग्रह किया कि मुझे अपनी पल्टन में पहुंचा दीजिए। उन्होंने आँखें बन्द करके चलने को कहा। अभी दस- बीस पग ही चला था कि जब आँखें खोला तो अपनी सैनिक टुकड़ी के साथ था। मैं सोचता था कि मैं ३ दिन अनुपस्थित था और कोई भी यह बात नहीं पूछता कि तुम कहाँ थे? अन्त... बात क्या है? मैंने स्वयं पूछा मैं तीन दिन अपनी टुकड़ी से अलग था मेरी जगह कौन कार्य कर रहा था? लोगों ने कहा विचित्र प्रश्न है। तुम रोज़ मेरे साथ थे और अपना कार्य करते रहे। अनायास मेरा मन नौकरी से विरक्त हो गया और मैंने त्याग-पत्र दे दिया। कोहाट से प्रस्थान किया डेरा गाजीखान में आया और वहाँ से तीस कोस की दूरी पर

जाकर सैय्यद शाह सुलेमान साहब के मजार शरीफ पर पहुँचा और सोचा यहाँ के गद्दी नशीन का शिष्य हो जाऊं। खा पीकर सो गया। उसी रात स्वप्न देखा कि समाधि भवन से वही पहाड़ी वाले महात्मा ने कहा,'तुम अपने घर जाओ। यहाँ शिष्य बनना जरूरी नहीं है।' मैं प्रातः अजमेर के लिये चल पड़ा। अजमेर पहुँचकर तीन दिन ध्यानमग्न(मुराक़बा में) रहा। तीसरे दिन शुभ सूचना प्राप्त हुई कि अवध की ओर जाओ तुमको गुरू प्राप्त होंगे। मैं यह सोचकर घबरा गया कि अवध के किस-किस नगरों में जाऊं? इसी बीच ढ़ाई दिन के झोपड़े में एक महात्मा फकीर सादिक अली साहब रहते थे। उनसे मैंने ये सभी बातें बतायी। उन्होंने एक मन्त्र पढ़कर सोने को कहा। पुनः मैंने सपना देखा कि एक महात्मा आये और कहा तुम्हारे पीर का नाम हाजी वारिस अली शाह है, वह देवा शरीफ में निवास करते हैं। पैदल चले जाओ, देवा लखनऊ के निकट है, वहाँ मिलेंगे।

अब जो यहाँ आकर आपको देखता हूँ तो मेरे अचम्भे का कोई ओर छोर नहीं रहा। यही कल्याणकारी रूप पहाड़ी पर था और वही रूप शाह सुलेमान के समाधि स्थान पर था। यही हैं जिन्होंने अपना नाम और पता बताया था और स्वयं कहा था लखनऊ से पैदल चले जाओ, देवा शरीफ थोड़ी दूर है। वास्तविकता यह है कि सरकार ने हर स्थान और प्रत्येक अवसर पर मेरी सहायता किया था। भगवान को धन्यवाद है कि मैं पूर्ण विश्वास और पुष्टि के साथ शिष्य हुआ। चार दिन देवा में रह कर मुहम्मद अली साहब बिदा हो गये।

मिसकीन शाह रह० के शिष्य होने की घटना

मिसकीन शाह भी हुजूर वारिस पाक के प्रतिष्ठित फकीरों में से हैं। आपकी जन्मभूमि कोट, जिला-फतेहपुर है। इलाहाबाद के आस-पास आपके अत्याधिक चेले पाये जाते हैं। पूज्य हाजी वारिस पाक से शिष्य होकर जिला बाँदा के राजापुर में नदी के किनारे निवास कर लिए थे। सैय्यद अली असगर साहब निवासी शाहपुर जिला-फतेहपुर लिखते हैं कि एक बार हमने मिसकीन शाह से उनके फकीर होने का कारण पूछा तो उन्होंने बताया अकस्मात मेरे मन में ये विचार उत्पन्न हुआ कि फकीरी और ईश्वर की खोज ही जीवन-पूँजी है और जन्म स्वार्थ होना है। अतः यह विचार यहाँ तक दृढ़ और बलिष्ट हुआ कि जंगल, ब्याबानों और पहाड़ों में बहुत दिनों तक घूमता रहा। एक बार पहाड़ी दर्रे में एक अतिवृद्ध फकीर से भेंट हुई। मुझे देखते ही वह संत क्रोधित हो देखने लगे किन्तु मैंने इसकी चिन्ता न कर प्रार्थना किया और कहा कि अब मैं आपके चरण न छोड़ूंगा। तब बड़ी देर के पश्चात् आपने

Scanned with CamScanner

कहा कि तुम अपना हक पूज्य हाजी वारिस अली शाह से पाओगे। मैंने उनसे पता ठिकाना पूंछकर देवा शरीफ हाजिर हुआ। श्रीयुत् हाजी साहब ने मुझे देखते ही कहा 'अपना हक लेने आ गये।' मैंने सिर झुका लिया, फिर कुछ दिनों पश्चात् पूज्य हाजी साहब ने फकीरी नाम मिसकीन शाह रखा और फकीरी वस्त्र प्रदान कर कहा 'हमने मिसकीन (दरिद्र) नहीं बनाया वरन् राजा बनाया है।'

डाक्टर इलाही बख्श के शिष्यता की घटना

श्रीमान् मौलवी हिसामुद्दीन अहमद साहब फजली रईस सरादा जिला मेरट लिखते हैं कि इलाही बख्श साहब १८९२ में बाराबंकी में डाक्टर थे। उन्होंने अपने शिष्य होने की घटना जो मुझसे बताया वह इस प्रकार है। डाक्टर इलाही बख्श पूज्य साहब को एक शरीयत के विपरीत चलने वाले फकीर मानते थे। उनके भाई पूज्य हाजी साहब से शिष्य होना चाहते थे। डाक्टर के रोकने के पश्चात् भी उनके भाई शिष्य हो गये और देवा शरीफ से लौटते समय हाजी साहब ने एक कागज प्रदान किया जिस पर कुरान की आयत लिखी हुई थी। इस आयत में मृत्यु का वर्णन था डाक्टर का ब्यान है कि जब मेरे भाई की मृत्यु हो गई तो मुझे स्वयं हाजी साहब पर अकीदा(ईमान) हो गया।

फ़ज़ल अलीशाह डिप्टी कलेक्टर के शिष्य होने की घटना

फ़ज़ल अली साहब डिप्टी कलेक्टर बड़े हास्य स्वभाव के मनुष्य थे। अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव के कारण पीरी-मुरीदी (गुरू-शिष्य सम्बन्ध) का परिहास किया करते थे। मिर्जा कासिम जान से उनका बड़ा मेल था। जब भी गुरू-शिष्य सम्बन्ध की कोई बात सुनते हंसी में उड़ा दिया करते थे। मिर्जा कासिम जान केवल इतना ही कहकर रह जाते कि यदि यही विचार है तो पूज्य हाजी बाबा के सम्मुख चले जाओ। एक बार अजीजुद्दीन साहब के साथ फ़ज़ल अली भी देवा शरीफ आये, हाजी साहब ने दोनों से हाथ मिलाया और दोनों की पीठ पर घूंसे लगाये। अजीजुद्दीन साहब तो अपनी कोठी को चले गये किन्तु फ़ज़ल अली साहब की दशा विचित्र हो गई। भाव विभोर हो हम लोगों से कहने लगे कि हमको शिष्य करा दो। हमारे घर वालों को भी शीघ्र लाकर हाजी बाबा की गुलामी में डाल दो। उनके अनुरोध पर हम लोगों ने महामना हाजी बाबा की सेवा में प्रार्थना किया कि फ़ज़ल अली साहब शिष्य होना चाहते हैं और प्रीतिभोज का निमन्त्रण भी देते हैं। हुजूर वारिस पाक ९ बजे दिन को फ़ज़ल अली साहब के मकान पर विद्यमान थे और सर्वप्रथम महिलायें शिष्य हुईं और सभी नौकर चाकरों को चेला बनवा लेने के पश्चात् डिप्टी कलेक्टर

फ़ज़ल हुसेन साहब शिष्य हुए।

नूर करीम साहब का फकीरी वस्त्र धारण करना

नूर करीम साहब की घटना शिष्य होने से सम्बन्धित नहीं है। हाँ, इस समस्या पर प्रकाश डालती है कि यदि कोई पूज्य हाजी वारिस पाक से चेला होने के पश्चात् दुर्भाग्यवश यदि शिष्यता से इनकार कर जाय और आत्म ज्ञान प्राप्त करने हेतु किसी अन्य संतों से सम्पर्क स्थापित करता तो उसकी दशा उसके आशा के विपरीत हो जाती थी। काजी नूर करीम साहब किदवई बड़ा गांव, जिला-बाराबंकी में शिक्षार्थियों को शिक्षा देते थे। रोज़े, नमाज़ का नियमित अनुसरण करते थे। एक बार लोगों ने कहा मानिकपुर, जिला-प्रतापगढ़ में जो गद्दीधारी हैं बड़े यश वाले हैं। अतः नूर करीम साहब को उनसे फैज़ लेकर अर्थात् उनकी दानशीलता से लाभ उठाना चाहिए। ऐसा ही हुआ नूर करीम साहब यह कहकर कि आठ दस वर्ष हुए हाजी साहब का शिष्य हुए किन्तु अभी तक कुछ प्राप्त नहीं हुआ। मानिकपुर जाकर शिष्य हो गये और ईश्वर स्मरण तथा आराधना में संलग्न हो गये। हुजूर के बड़े गांव पधारने पर लोगों ने कहा कि मौलवी नूर करीम साहब अविश्वास के कारण मानिकपुर जाकर फकीरी सीख रहे हैं। यह सुनकर हाजी बाबा का आत्म सम्मान उद्वेलित हो उठा। बे धड़क आपके मुख से निकला 'वह सड़ी सौदाई है (पागल और उनमत्त होना) उसको तमीज़ ही क्या है?' इतना कहना था कि मौलवी नूर करीम साहब उनमत्त हो गये और शरीर से वस्त्र उतार कर नंगे हो गये। कुछ दिनों में यह समाचार उनके घर तक भी पहुंचा। सभी लोगों ने यह समझ लिया कि सरकार वारिस पाक की फटकार का फल है। दो तीन माह इसी प्रकार व्यतीत हुए संयोग से हाजी साहब पुनः बड़े गाँव पधारे। नूर करीम साहब के हीत-मित्र व परिवार के लोगों ने हाजी साहब को घेरा मिन्नत-समाजत, आग्रह-अनुग्रह करके नूर करीम साहब की दशा सुधारने की प्रार्थना किया। हुजूर वारिस पाक ने बुलाने का आदेश दिया। लोग उनको झटपट लाये। उनकी दशा देखकर उनके हीत-नात अपने-पराये सभी लोग रोने लगे। नूर करीम जब हुजूर वारिस पाक के सामने लाये गये तो उस समय जन्मजात नंगे थे। जूतों का हार गले में डाले गधे पर सवार थे। करूणा-सागर सरकार वारिस पाक ने घोषित किया इसको स्नान कराओ तत्काल नहलाये गये तथा हुजूर वारिस पाक ने अपना वस्त्र प्रदान किया। वस्त्र पहनते ही नूर करीम साहब की चेतना वापस आ गयी। तत्काल हाजी बाबा के चरणों में गिर पड़े और लज्जित हो रोने लगे। फिर आज से किदवाई साहब ने सरकार वारिस पाक का

Scanned with CamScanner

साथ कभी नहीं छोड़ा। अपनी अविश्वासिता पर सदैव रोया करते थे। हाजी वारिस बाबा की आत्मशक्ति ने नूर करीम साहब में चार चांद लगा दिया। किदवाई की दशा ईश्वर विलीनता में परिवर्तित हो गई। रूप, रंग, उठना, बैठना प्रत्येक बातों में सरकार का अनुकरण पाया जाता था।

हाफिज अहमद शाह अकबराबादी की शिष्यता की घटना

हाफिज अहमद को इनके माता-पिता ने आठ वर्ष की उम्र में ही हाजी वारिस पाक की सेवा में प्रस्तुत कर दिया था। जिस समय उनको शिष्यता का ज्ञान भी नहीं था। अहमद शाह की सामाजिक शिक्षा बचपन से युवावस्था तक पूरी हुई। धार्मिक नियमों के पालन में अतिदृढ़ थे। ध्यान, परिधान इनके विचार फकीरी के विरोध में थे और इसको बुरा मानते थे। बहुधा कहा करते थे कि नासमझी की अवस्था में शिष्य होना विश्वासनीय नहीं है। इसी दशा में बहुत दिनों तक रहे। एकाएक उनकी दशा में परिवर्तन हो गया और इनके मन में ईश्वर दर्शन की अभिलाषा उत्पन्न हुई फिर भी आप हुज़ूर पाक के प्रति अच्छा विचार नहीं रखते थे। पीराने पीर कलियर शरीफ, अजमेर शरीफ सभी पवित्र समाधियों पर ध्यान विभोर होकर बैठे किन्तु यही संकेत प्राप्त हुआ कि जो कुछ प्राप्त होने को होगा जिन्होंने तुम्हे पूर्व शिष्य किया है उन्हीं से होगा। सारांश यह है कि हुज़ूर वारिस पाक से बेफ्रिक होकर जब तक प्रयत्नशील रहे एक कण के बराबर भी सफलता प्राप्त नहीं हुई। पुनः पूज्य हाजी बाबा की सेवा में उपस्थित होकर क्षमा याचना किया और आज आज़ाद फकीर के नाम से मशहूर हैं। इनकी जो दशा हुई वह सभी लोग जानते हैं। इनकी गिनती हुज़ूर के फिदाईयों में होती है। सरकारी आस्ताना के निकट इनकी समाधि भवन है।

मोहिउद्दीन साहब की शिष्यता की घटना

हाजी वारिस पाक के प्रेम प्रभाव से कोई भी वंचित नहीं रहता था और न अपने शिष्यता में आये हुए किसी व्यक्ति को आप कभी छोड़ते थे। उर्पयुक्त बैरिस्टर महोदय की घटना इसी प्रकार की थी। सैय्यद मोहिउद्दीन साहब श्री मौलाना अब्दुल गनी साहब अनुवादक 'तबकातुल क़ुबरा' के सुपुत्र थे। इनकी शिष्यता की घटना मौलाना स्वयं लिखते हैं। जब इनकी अवस्था छः वर्ष की थी। ये अपनी माता और दादी साहिबा के साथ हाजी बाबा की सेवा में उपस्थित हुए थे। हुज़ूर ने इनकी पीठ पर हाथ फेरा दिया था जिससे जवान होने पर स्वयं हुज़ूर वारिस पाक के शिष्य हो गये। जब वह अलीगढ़ में पढ़ते थे तो अपने पिता के साथ आये और ईद के दिन प्रातः शिष्य हो गये। पुनः मैट्रिक पास होने के बाद दर्शनार्थ सरकार

से मिले। पूज्य हाजी बाबा ने हाजी अवघट शाह से पूछा 'कौन है?' उन्होंने अर्ज़ किया कि सैय्यद अब्दुल गनी के पुत्र सैय्यद मोहिउद्दीन हैं। फिर पूछा गया 'क्यों आये हैं?' लोगों ने कहा परीक्षा देकर आये हैं। यह सुनकर हाजी बाबा ने कहा 'पास हो गये।' फिर कहा गया कि अभी परीक्षा देकर आये हैं। आपने कहा 'तुम क्या जानो? यह पास हो गये।' अतः वह पास हुए। जब सैय्यद मोहिउद्दीन ने तीसरी बार हुज़ूर का दर्शन किया तो हुज़ूर ने पुनः कहा 'अभी तो और पढ़ोगे।' अतः ये बी० ए० करके इंग्लैण्ड गये और बैरिस्टर की डिग्री लेकर भारत वापस लौटे। पाश्चात्य शिक्षा और सभ्यता के होते हुए भी हुज़ूर वारिस पाक का प्रेम आपके हृदय में भरा हुआ था। यह चमत्कार पूज्य हाजी वारिस पाक का था कि जिसके ऊपर आपकी दृष्टि पड़ जाती थी वह अपनी कामना अवश्य पूरी करता था और सरकार वारिस पाक को हो जाता था।

शेख़ हुसेन अली साहब का शिष्य होना

शेख़ हुसेन अली साहब नवाब वारसी अपने शिष्य बनने की घटना स्वयं लिखते हैं कि एक बार मैं अपना मकान बनवा रहा था। मकान पूरा होने के लगभग था। संयोग से पानी बरसा और मकान का कुछ भाग गिर गया। मैंने याचना किया कि ऐ शाह हज़ात अब्दुर्रज़्ज़ाक बाँसवी रह०! आप दुआ करें कि मेरा मकान बन जाये। मैं सो गया। मेरा पुत्र जो अभी चार वर्ष का था रोगग्रस्त हो गया। रात को मैंने स्वप्न में देखा कि पूज्य हाजी साहब कहते है कि हुसेन जाओ फुलवारी में खीरा लगा है तोड़ लाओ। मैं गया तो देखा कि खीरा टूटा पड़ा है। लौटकर मैंने कहा कि खीरा टूटा पड़ा है और खाने के योग्य नहीं है। हुज़ूर ने कहा 'जाने दो ख़ुदा इसका बदला देगा और खीरा उसकी दवा होगा।' प्रातः वह पुत्र मर गया परन्तु मुझे कोई दुःख नहीं हुआ। एक वर्ष पश्चात् पुनः पुत्र हुआ उसका नाम वाजिद अली रखा। चार वर्ष पश्चात् इस लड़के को भी वही रोग हुआ। बाराबंकी, फैजाबाद इत्यादि स्थानों पर इस लड़के वाजिद अली का इलाज कराया किन्तु कुछ भी लाभ नहीं हुआ। मैं रौना से गदिया लाया जहाँ वाजिद अली की ननिहाल है। तब तक एक औरत खीरा बेचती हुई वहाँ आई और महिलाओं ने खीरे खरीदे। संयोग से कुछ बीज और खीरे के अंश पलंग पर पड़े रह गये। उस रोगी बच्चे ने कुछ बीज उठाकर मुँह में रख लिया। मैंने इस क्रिया को देखा किन्तु कुछ लजाने के कारण मैंने कुछ नहीं कहा। उस समय से बच्चे का कै और दस्त दोनों बन्द हो गया और बहुत प्रसन्नचित्त दिखाई देने लगा। मेरी पत्नी ने मुझसे कहा कि बताओ बच्चा कैसे अच्छा

Scanned with CamScanner

हुआ ? मैंने कहा कि जब आप बातों में संलग्न थीं ये खीरे के बीज खा गया और तब से इसका रोग दूर हो गया है। मेरी पत्नी ने कहा कि क्या तुमको याद नहीं वह स्वप्न ? हाजी साहब ने कहा था कि खीरा बच्चे की दवा होगी। तब मुझे याद आया। उसी समय दो खीरे मंगाकर खिलाना आरम्भ किया। लड़का स्वस्थ हो गया। कुछ दिनों पश्चात् फिर वाजिद अली बीमार हुआ और फिर खीरा खिलाया गया तो वह रोग मुक्त हो गया।

संयोग से एक दिन शेख हुसेन अली ने यह कहा कि अल्लाह की कसम यदि हाजी साहब नवाबगंज मे मिल जायें तो बिना शिष्य हुए खाना नहीं खाऊंगा। आगे चलकर मैं बड़ा दुःखी हुआ। पश्चाताप करने लगा कि हमने ऐसे महान और आदर युक्त संत की परीक्षा लेने की बात क्यों कह डाली ? मेरे लिए स्वप्न की बात क्या कम थी ? नवाबगंज में एक दुकान से कुछ कपड़े खरीद रहा था तब तक देखता हूँ हाजी साहब पालकी पर सवार चले जा रहे हैं। मैंने दौड़ कर सलाम और बन्दगी किया। हुजूर ने पालकी रोकवा दी और कहा 'क्यों दिल एक है ?' मैंने आग्रह किया मुझे चेला बना लें। आपने फिर कहा 'दिल से एक हैं।' मैं लजाया हुआ खड़ा रहा कि हुजूर पाक ने कहा 'तुम्हारी कुछ सजा होनी चाहिये। अच्छा जाओ! गदिया से मनसब अली को अपने साथ लेकर सतरख आओ।' मैंने प्रार्थना किया कि मैंने कसम खाया है कि जब तक शिष्य नहीं हो लूँगा खाना नहीं खाऊंगा। हुजूर ने कहा 'सतरख में खाना।' आदेश की पूर्ति हेतु गदिया से शेख मनसब अली को अपने साथ लेकर 4 बजे सन्ध्या सतरख उपस्थित हुआ। पूज्य हाजी बाबा ने मुझको देखते ही खाना मंगवाया और रखवा कर कहा 'अब खाना सामने हैं। धैर्य रहेगा। आओ शिष्य हो जाओ।' जब मैं शिष्य होने के लिये समीप पहुँचा। आप ने फिर वही शब्द दुहराया 'दिल से एक हैं।' मैंने क्षमा याचना किया। हुजूर ने कहा 'हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं। वह मुरीद (शिष्य) क्या जो पीर (गुरू) को जाँच कर मुरीद (चेला) न हो, वह गुरू क्या जो समय पर काम न आये ? ऐसा पीर वह कष्ट है जो दुखदाई है।' शिष्य हो जाने के पश्चात् कहा गया कि अब हमारे सामने भोजन करो। यह आपकी उत्तम आन्तरिक शक्ति है जो निकट और दूर समान देखे।

मुस्तकीम शाह साहब का शिष्य होना

हकीम महमूद अली फतेहपुरी लिखते हैं कि मुस्तकीम शाह के पूर्वज काबुल से हिन्दुस्तान आकर अवध के नवाब के यहाँ नौकरी कर लिये थे। फतेहपुर, जिला बाराबंकी में निवास करते थे। ये लोग इतने नये आने वाले थे कि उर्दू न बोल पाते

थे और न समझ पाते थे। हुजूर वारिस पाक जब फतेहपुर आते तो अपने नियमानुसार एक भिश्ती (पानी ढोने वाले) के यहां रहते थे। यद्यपि उस समय मुस्तकीम शाह साहिबा के यहाँ परिवार से कोई भी सरकार वारिस पाक का शिष्य नहीं हुआ था। चूंकि हुजूर की दृष्टि में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष दोनों समान था। कोई बात छुपी न थी, निकट दूर सभी आपके लिये बराबर था। अतः अपने प्रेमियों को अच्छी तरह प्रारम्भ से ही जानते पहचानते थे। सरकार वारिस पाक बिना परिचय ही मुस्तकीम शाह साहिबा के घर पधारे और मुस्तकीम शाह साहिबा के निकट जाकर बैठे। उसी समय उनके पिता ने जो कन्धारी थे एक अपरिचित आदमी को अपने घर में बैठा देखकर क्रोध में आ गये और तलवार लेकर इस निमित चले कि दोनों की गर्दनें उड़ा दें किन्तु कुछ विचारों के अधीन खड़े हो गये और सोचा जब यह आदमी नीचे उतरे तब इसकी गर्दन उड़ा दूं। हुजूर वारिस पाक उनके सामने से चले गये किन्तु वह चुप खड़े रहे। उनको अपने कर्तव्य का ज्ञान ही नहीं रहा। कई बार आने जाने के पश्चात् पूरे घर वाले हुजूर वारिस पाक के अनुरागी हो गये और उस परिवार का प्रत्येक व्यक्ति आपका शिष्य हो गया।

निंद्रावस्था में शिष्यता से लाभान्वित होना

अधिकांशतः दैववाणी या शुभ संवाद स्वप्न में हुआ करती हैं। मुहम्मद साहब के प्रवचनों में सच्चे स्वप्नों की बड़ाई की गयी है किन्तु शरीयत (धार्मिक मार्ग अथवा नियम) ने स्वप्न पर विश्वास करने से रोका है। क्योंकि स्वप्नों की हकीकत तत्काल समझ में नहीं आती है और कभी-कभी फल उलटा होता है। अतः ऐसे स्वप्न अंकित नहीं किये गये हैं जिनको पूज्य गुरू हाजी बाबा ने प्रमाणित नहीं किया है। कुछ महत्वपूर्ण स्वप्न की घटनायें ही लिखी गई हैं :.

चूँ गुलामे आफताबम हमा आफताब गोयम,
न शबम न शब परसतम न हदीसे ख्वाब गोयम।

अनुवाद :- हम चूँकि सूर्य के गुलाम और सेवक हैं अतः हम सब को सूर्य ही कहते है न हम रात्रि है न रात्रि के पुजारी हैं और न स्वप्न की बात कहते हैं।

फजले हुसेन महोदय लेखक पुस्तक *'मिश्कात हक्कानिया'* कहते हैं कि हमने सुना है हुजूर वारिस पाक का स्वप्न में शिष्य करना अवैसिया के ढंग से सम्बन्धित है।

शेख निहालुद्दीन निवासी कुरसी, जिला-बाराबंकी एक देखी हुई घटना का बयान करते हैं कि बम्बई के एक नामवर व्यापारी सेठ अब्दुर्रहमान साहब ने स्वप्न

Scanned with CamScanner

में सरकार वारिस पाक को देखा। चूंकि इसके पहले उन्होंने कभी आपको नहीं देखा था। अत: प्रात: मस्जिद में आने पर नमाज़ के पश्चात् अपना स्वप्न बताया और यह भी कहा कि इस वेष-भूषा का फकीर आज तक नहीं देखा है। अत: मैं उनका पता कैसे करूं? कुरसी निवासी शेख अब्दुल अजीज उस मस्जिद के पेश इमाम (नमाज़ पढ़ाने वाले) थे। उन्होंने सम्पूर्ण स्वप्न सुनने के पश्चात् उक्त सेठ से बताया कि हमारे देहात इलाके में इस शक्ल सूरत के एक फकीर सैय्यद हाजी वारिस अली शाह हैं। सेठ साहब हुजूर का पता निशान पाकर दर्शन हेतु उतावले हो उठे। मौलवी अब्दुल अजीज साहब को साथ लेकर लखनऊ के लिए प्रस्थान कर दिया। जिस समय देवा शरीफ पहुंचकर पुज्य हाजी बाबा के चौखट पर उपस्थित हुए सरकार वारिस पाक ने आपको देखते ही कहा 'तुम शिष्य हो चुके हो। इतने दूर-दराज सफर की क्या जरूरत थी?'

मौलवी रौनक अली साहब लिखते हैं कि मेरी नानी महोदया की शिष्यता की घटना इस प्रकार है कि मेरी नानी हकीम रहमत अली की पत्नी थीं। उन्होंने स्वप्न में देखा कि पूज्य गुरू हाजी वारिस अली बाबा विद्यमान हैं और कहते हैं कि तुम हमसे भयभीत क्यों होती हो? हम तुम्हारे हैं, तुम हमारी हो, शिष्य हो जाओ। सुनते ही मेरी आँख खुल गई और प्रात: भोर तक नींद नहीं आई। प्रात: उन्होंने मियां जी वारिस अली वारसी को बुलवाया और पर्दे से अपना स्वप्न विस्तारपूर्वक मियां जी को सुनाया। इन्होंने बताया कि यह सूरत तथा रूप तो मेरे धर्म गुरू हाजी सैय्यद वारिस अली शाह का है किन्तु वह इस समय बहुत दिनों से मक्का शरीफ की ओर यात्रा कर रहे हैं। उसी समय मियाँ जी लौंडी दौडी-दौडी आई और कहा कि मियाँ आपको एक शाह साहब पूछ रहे हैं। मियाँ जी तेजी से घर के बाहर हुए और देखते हैं कि हुजूर सामने से आ रहे हैं। दौड़कर आपको प्रणाम किया और पैर चूमे। हुजूर ने पूछा यह मकान किसका है? उत्तर दिया कि हकीम रहमत अली साहब का। हुजूर ने कहा 'वह तो हमारे मकतब (पाठशाला) के भाई हैं, कहाँ है? मियां जी ने कहा कि हुजूर अभी आपकी चर्चा चल रही थी। उनकी धर्म पत्नी ने आज स्वप्न में आपको देखा है। आप ने कहा 'बस, बस' वह तो शिष्या है और उनके घर में पधारे।

मुंशी एलाह यार खाँ निवासी अलीगढ़ लिखते हैं कि मेरे पिता डाक्टर थे। उनसे एक व्यक्ति कह गया था कि जब हुजूर वारिस पाक यहाँ आवें तो आप सूचित करने का कष्ट करें। मैं शिष्य होना चाहता हूँ। जिस समय हुजूर बाँदा पधारे उस समय वह आदमी बहुत दूर किसी स्थान पर था। लोगों ने हुजूर वारिस पाक से एक

दिन रूकने का आग्रह किया किन्तु आपने कहा 'अरे, हम नहीं ठहर सकते और वह शिष्य हो गया।' उस व्यक्ति के लौटने पर पूछा गया उसके शिष्य होने के सम्बन्ध में, तब उसने दिन तारीख सहित बताया कि हम स्वप्न में शिष्य हो गये हैं।

मौलवी सैय्यद अली हामिद शाह कादरी चिश्ती गद्दीधारी से लिखित है कि मुंशी सादिक अली साहब निवासी गोपा मऊ, जिला-हरदोई हुजूर वारिस पाक के खिलाफ रहते थे। स्वयं अपनी शिष्यता की घटना का वर्णन करते हैं। जब हुजूर पाक गोपा मऊ पधारे तो मौलवी फाजिल साहब ने मुझसे कहा कि पूज्य हाजी साहब पधारे हैं तुमको भी मिलना चाहिए। मैंने उत्तर दिया कि ऐसे फकीरों से हम मिलना नहीं चाहते और न जाने क्या-क्या कहकर अपने घर लौट आये। आते ही मेरे पेट में दर्द उठने लगा और मैं कष्ट से त्राहि-त्राहि करने लगा। एक वैद्य आये और उनके अथक परिश्रम के पश्चात् भी लेशमात्र लाभ नहीं हुआ। अति दुर्बलता के कारण मैं बेहोश सा हो गया। उस अवस्था में मैंने देखा कि एक भव्य शानदार मस्जिद है और ऋषि-मुनि तथा सम्पूर्ण धार्मिक उच्च लोग एकत्र है। सभी नमाज पढ़कर किसी की प्रतीक्षा में बैठे जान पड़ते हैं। इतने में बाहर कुछ आवाज सुनाई पड़ी सभी आदर भाव से उठ खड़े हुए और बाहर जाकर उनको अपने बीच में करके मस्जिद में लाये। उन्होंने सुन्नत नमाज़ पढ़कर सबको नमाज़ पढ़ाई मैंने लालाईत होकर देखा कि वह बुजुर्ग पूज्य गुरू हाजी साहब हैं। चरण चूमा और शिष्यता के लिए प्रार्थी हुआ। आप ने मेरी प्रार्थना स्वीकार किया और शिष्य कर लिया। आँख खुलने पर मेरी अपनी भूल का ज्ञान हुआ तथा अपने को पूर्ण स्वस्थ पाया। अपने असत्य विचारों को त्यागकर पूज्य हाजी बाबा की सेवा में उपस्थित हुआ। आप हर्षित होकर कहने लगे 'क्या दुबारा मुरीद (शिष्य) होगे?' फिर हुजूर ने कहा, 'तुम्हारा अपराध नहीं है, तुम्हारे नेत्रों की त्रुटि (भूल) है।

हाफिज अब्दुल अहद महोदय फजली निवासी महीरपुर अनुलेखक हैं। मैंने एक आदमी को देखा जो कभी पूज्य हाजी साहब का दर्शन नहीं किया था किन्तु वह स्वप्न में आप से शिष्य हो चुका था। लोगों ने उससे कहा कि स्वप्न का शिष्यत्व माना नहीं जाता और उचित भी नहीं हैं। अत: तुम किसी अन्य संत अथवा बुजुर्ग से शिष्य हो जाओ। जब उसने ऐसा संकल्प किया तो आपने फिर स्वप्न में दर्शन दिया और कहा तुम शिष्य हो चुके हो अब कोई आवश्यकता नहीं। कई बार उसके साथ ऐसा ही संयोग हो चुका है। लोगों के कहने-सुनने से जब कहीं वह जाने की इच्छा करता है तो पूज्य हाजी बाबा ने उसे सांत्वना प्रदान की। इस प्रकार अब उसे पूर्ण

Scanned with CamScanner

विश्वास हो गया है और स्वप्न द्वारा ही उसको शान्ति प्राप्त हो रही है। पूज्य वारिस पाक के अस्तित्व से सदैव उपस्थित या अनुपस्थित रहने वालों के लिए दया-दान चलता रहता था। लोगों को जो निरीक्षण होता था उसमें वास्तविकता होती थी। ऐसे लोगों के मुख से बिना कुछ सुने ही उनके शिष्यता को सत्य और ठीक कहना और उनको पुनः शिष्य न बनाना इस बात को सिद्ध करता है कि ईश्वर ने आपको आत्म-शक्ति तथा आत्म-ज्ञान से सुशोभित और प्रकाशमान किया था। आपको अवैसिया से उत्तम निसबत (लगाव) था जिसका कोई जवाब नहीं।

काजी सुलेमान अहमद का शिष्य होना

दरबार वारसी के समीपस्थ मिर्जा मुहम्मद इब्राहीम बेग शैदा, काजी सुलेमान रईस सुबेहा जिला-बाराबंकी के शिष्य होने की घटना इस प्रकार लिखते हैं। काजी साहब का सौभाग्य इसलिए अकथनीय हैं कि ऐसी कोई घटना अब तक सुनी नहीं गई है। देखने में तो बहुत से लोग स्वप्न द्वारा शिष्य हुए हैं किन्तु इस घटना से एक विचित्र बात ज्ञात होती है। वह यह है कि शिष्यत्व का सम्बन्ध आत्मा से है। इस घटना से यह बात भली-भांति प्रकट हो जाती है। काजी सुलेमान अहमद अति अल्पायु में अनाथ हो गये। आपके पिता और बड़े भाई शाह फजल रहमान साहब के शिष्य थे। उन लोगों ने उसी समय सोचा कि इन्हें भी शिष्य बना दिया जाय किन्तु काजी साहब ने १३१० हिजरी में एक स्वप्न देखा कि एक मकान है और उसमें जमीन ही का फर्श है उस फर्श पर एक संत फकीर बुजुर्ग विद्यमान हैं। दर्शनार्थियों की असाधारण भीड़ लगी हुई है। एक व्यक्ति अपने सिर पर पीला वस्त्र रखकर उपस्थित हुआ और अन्य किसी ने काजी सुलेमान अहमद के शिष्य होने की प्रार्थना की जो स्वीकार हुई। काजी सुलेमान अहमद उच्च वारसी मत की श्रृंखला में पीरो दिये गये। स्वप्न के पूर्व काजी साहब ने पूज्य हाजी वारिस पाक का नाम भी नहीं सुना था तथा न शिष्य होने का कोई विचार ही था। वह अपने धर्म पालन और उपासना को ही ब्रह्मत्व-ज्ञान प्राप्ति का साधन समझते थे। पाँच वर्ष बीतने के पश्चात् १३१५ हिजरी में हाजी वारिस पाक के पिता कुर्बान अली शाह के उर्स में मन बहलाव के विचार से श्री राजा दोस्त मुहम्मद खां साहब के साथ आये। यहाँ आकर काजी साहब ने मकान का नक्शा तथा मकान वाले की मर्यादा और सेवकों की सूरत तथा छवि वही देखी जो स्वप्न में देख चुके थे। जिस प्रकार स्वप्न में पीला वस्त्र सिर पर रखकर जो व्यक्ति उपस्थित हुआ, वही व्यक्ति फकीरी वस्त्र लाया जिसने वहां स्वप्न में इन्हें शिष्य बनवाया था। यहाँ भी शिष्य बनवाया। अतः जो कुछ स्वप्न में

देखा था प्रत्यक्ष इन नेत्रों से देखा। ज्ञातव्य है कि १३१० हिजरी में जब काजी सुलेमान अहमद ने स्वप्न देखा था उस समय तक सिर पर वस्त्र लाने वाला शिष्य नहीं हुये थे तथा न वही शिष्य हुए थे जिन्होंने इन्हें शिष्य कराया। वस्त्र लाने वाले बाबू कन्हैया लाल महोदय वकील अलीगढ़ थे। शिष्य बनवाने वाले राजा दोस्त मुहम्मद खां ताल्लुकेदार महुअना थे। ये दोनों महोदय १३१० हिजरी के पश्चात् शिष्यता में आये हैं। इससे विदित है कि भौतिक संसार की शिष्यता उस शिष्यत्व को पूरा करती है जो आत्म लोक में हो चुकी हैं।

बाबू वारिस अली खाँ साहब महान रईस जगदीशपुर की शिष्यता की घटना

इस प्रकार ये घटना भी लोक-परलोक और लोकान्तर से सम्बन्धित है। श्री बाबू वारिस अली ब्यान करते हैं कि अपनी शिष्यत्व से एक वर्ष पूर्व मैंने सरकार वारिस पाक को स्वप्न में देखा। आपने दो चित्र प्रदान किया। एक मिस्टर आरनाल्ड प्रोफेसर विश्वविद्यालय, अलीगढ़ और दूसरा चित्र अल्लामा (महान पंडित) शिब्ली नोमानी का था। इसके पूर्व कभी हमने इन लोगों को नहीं देखा था। एक वर्ष पश्चात् मैं देवा शरीफ पहुंचा। स्वप्न में जो रूप सरकार वारिस पाक का देखा था और जिस रूप में बैठा हुआ पाया था ठीक उसी रूप में बैठा हुआ पाया। कोई अन्तर नहीं था। स्वप्न के पांच वर्ष पश्चात् अल्लामा शिब्ली रह० को देखा। देखते ही स्वप्न-चित्र द्वारा पहचान लिया और चौदह वर्ष पर इंग्लैण्ड में मिस्टर आरनाल्ड से भेंट हुई और मैंने देखते ही पूर्व परिचित सा जान लिया।

मौलवी मुहम्मद सरफराज वारसी की शिष्य होने की घटना

मौलवी मुहम्मद सरफराज खाँ साहब निवासी शिकोहाबाद पूर्व मैनेजर दरगाह अजमेर शरीफ के पिता अकबर खाँ की मृत्यु के पश्चात् इनकी आयु ग्यारह वर्ष थी। इनके चाचा सूबेदार वजीर खां ने इनके पालन पोषण का भार ग्रहण किया। उक्त मौलवी साहब एक ऐतिहासिक परिवार के स्मृति चिन्ह हैं जो खालिद बिन वलीद की औलाद में हैं। इनका परिवार आदरणीय और सम्मानित था। अपने शिष्य होने की घटना वह स्वयं लिखते हैं जो निम्नानुसार है :

मेरे आदरणीय पिता अबकर खाँ साहब घर पर रहकर गृहस्थी संभालते थे और मेरे चाचा महोदय छावनी पूना में सूबेदार थे। चाचा महोदय एक सदा सोहाग नाम सन्त के चेले थे किन्तु उनके चेला बनने का रहस्य किसी को ज्ञात नहीं था कि पेन्शन लेकर घर आने पर उनका नियम यह था कि दो-दो, चार-चार दिन तक एक

Scanned with CamScanner

कमरे में बन्द रहते थे और इस प्रकार महीने में दो-तीन बार एकान्त में तपस्या करते थे। खाने-पीने तथा अन्य आवश्यकताओं के लिए भी बाहर नहीं निकलते थे। जब एकान्त तापस (मोत्तफिक) होकर बाहर आते उनकी आँखों में लालिमा और मुख पर विचित्र चमक होती थी। उनकी कोई सन्तान नहीं थी। जिस दिन मेरे पिता की मृत्यु हुई मेरे चचा प्रेम विह्वल हो उठे और बोले मेरे प्यारे भाई मुझे क्या मालूम था कि तुम मुझसे पहले चले जाओगे वरना अपनी आयु का एक वर्ष तुम्हीं को दे देता। अभिप्राय यह कि एक वर्ष बाद ही आपने भी शरीर त्याग दिया। नज़ा की हालत (अर्द्धचेतन अवस्था) में मुझे बुलाया और छाती से लगा लिया तथा इतनी ज़ोर से भींचा कि मेरी छाती में कष्ट होने लगा। ऐसा जान पड़ता था कि गर्म लोहे की शलाखें मेरे सीने में डाल दी गयी हैं। तत्पश्चात् मेरे चचा ने इस तरह कहा 'खैर (भला) वारिस तेरा वारिस है।' यह कहते मुझे छोड़ दिया। उस समय मुझे बेहोशी आ गयी और मेरी माता मुझे संभालने लगीं। जब तक मैं होश में आया तब तक मेरे चचा चल बसे थे। उनके अन्तिम संस्कार में सब लग गये। इधर पन्द्रह दिन तक मेरी छाती में कष्ट बना रहा और हृदय में जलन थी। धीरे-धीरे इस दशा में सुधार आने लगा। किन्तु हृदय कि गर्मी कम नहीं होती थी। मेरे मित्रों ने मुझे राय दिया कि मैं शाह अहमद मियाँ साहब का चेला बन जाऊँ। मैंने इस विकल्प को मान लिया किन्तु सात वर्ष बर्मा में रहने के पश्चात् जब देश लौटा तो अहमद मियाँ स्वर्ग सिधार चुके थे। मैंने फिर सोचा मौलाना फजलुर्रहमान साहब की सेवा में चलूं किन्तु घरेलू कामों से फुरसत न मिली और छुट्टी पूरी कर देही कागजात (इलाके के कागज पत्र) में संलग्न हो गया। बरेली में शाह निजामुद्दीन साहब रह० की सेवा में रहा किन्तु वहाँ भी मेरे भाग्य का कुछ नहीं था। उसी ज़माने में मैंने मौलाना फजलुर्रहमान साहब के स्वर्गवास होने का समाचार सुना। मुझे बहुत दुःख हुआ। जिला बरेली से बन्दोबस्त के कागजात का मुहकमा (विभाग) स्थानान्तरित होकर मैनपुरी चला आया। यहाँ जो मकान मैंने किराये पर लिया वह शाह मुहम्मद आरिफ रह० के दरवाजे पर था। सन्ध्या को मस्जिद गया और आरिफ साहब की कदमबोसी (चरण स्पर्श) किया। उस समय वह लगभग सौ वर्ष उम्र के पूरे कर रहे थे। एक दिन एकान्त में उन्होंने मुझसे कहा कि मेरे पास कुछ छोटी सी पूंजी है। मैं चाहता हूँ तुम्हारे सुपुर्द कर दूँ। मैंने कहा कि यह बोझ मुझसे न उठेगा। पूज्य हाफिज़ साहब भी स्वर्ग सिधारे। फिर मैंने अवकाश लिया, घर पर छुट्टी समाप्त कर १४ जनवरी १९०२ ई. को घोड़ा गाड़ी द्वारा अपने परिवार सहित शिकोहाबाद से 9 बजे रात्रि को

चला। मेरे पास उस समय आभूषण इत्यादि लेकर कुल पांच हजार की सामाग्री थी। मौजा बिहार मल से निकलकर सुनसान मैदान में गाड़ी चलने लगी। कुछ पूर्व ही से मैं सो रहा था। शिकोहाबाद से 12 मील की दूरी पर चालीस डाकुओं ने गाड़ी घेर लिया और गाड़ी के यात्रियों को लूटने लगे। निद्रा भंग हुई तो मैंने देखा डाकुओं का आक्रमण मुझ पर भी आरम्भ हो रहा था। उस समय मैंने देखा कि एक सफेद दाढ़ी वाले महात्मा डाकुओं को मेरे निकट आने से रोकते थे। उनकी सहायता देखकर मेरा साहस बढ़ा और मैं डाकुओं का सामना करने लगा। अन्ततः मेरे हाथों चार डाकू मारे गये और बहुत से घायल हुए। चार लाशों को छोड़ शेष घायल लोगों को ढ़ो ले गये। इस वीरता पर गवर्नमेन्ट द्वारा बन्दूक इत्यादि पुरस्कार भी प्राप्त हुए। एक बार दौरे के सम्बन्ध में मुझे शिकोहाबाद जाने का अवसर प्राप्त हुआ। रेसालदार के बाग में कैम्प पड़ा था। एक आदमी द्वारा ज्ञात हुआ कि पूज्य हाजी साहब इटावा से मलावली जाने वाले हैं। ठाकुर पंचम साहब सिंह के यहाँ भी जायेंगे। यह सुनकर मेरे मन में शिष्य होने का विचार उत्पन्न हुआ। उसी समय मैंने सवारी के प्रबन्ध के लिये एक रईस को पत्र लिखा और इसी विचार में मगन लगभग दस बजे रात में मैं सो गया। मेरे डेरे में घड़ों में पानी रखा था और एक मिट्टी के बर्तन में मुँह तक भरी चीनी भी थी। दो चपरासी और दो मेरे निजी सेवक सोये हुए थे और चौकीदारों का पहरा था।

रात के अन्तिम भाग में मैंने स्वप्न देखा। देखता हूँ कि पूज्य हाजी साहब तीन आदमियों के साथ पधारे हैं। देखते ही मैं आदर सम्मान हेतु खड़ा हो गया। मेरे पूछने पर किसी ने बताया कि ये हाजी वारिस पाक हैं। आगे बढ़ कर मैंने सलाम किया और कदम चूमा। पूज्य हाजी साहब ने मुझे गले लगा लिया और कहा 'तुम क्यों इतनी ज़हमत (कष्ट) उठाते हो? मैं स्वयं आया हूँ। क्या चाहते हो? मैंने प्रार्थना किया कि मैं गुलामी में आना चाहता हूँ। हुज़ूर ने जवाब में कहा 'तुम आदि से ही हमारे शिष्य हो चुके हो। तुम्हारे बड़े बाप ने हमारे सुपुर्द कर दिया है। इत्मीनान (विश्वास) रखो।' मैंने पुनः आग्रह किया कि स्वामी मुझे शिष्य कर लीजिये। हुज़ूर ने मेरा हाथ थाम कर कहा 'तुम शिष्य हो चुके हो।' मेरे यह कहने पर कि शिष्य करते समय शर्बत पिलाया जाता है। आपने मुस्कुराते हुए आदेश दिया 'बेनज़ीर शाह,अच्छा प्याला में पानी लाओ।' अतः बेनज़ीर शाह कटोरे में पानी लाये। जो शक्कर की हाँडी मेज पर रखी थी। हुज़ूर ने उसमें से दो मुठ्ठी चीनी कटोरे में डालकर मेज पर से एक पेन्सिल उठाया और पेन्सिल से शक्कर घोलकर शर्बत बनाया। एक घूँट स्वयं पीकर शर्बत मुझे पीने को दिया और कहा पीलो। कटोरे को

Scanned with CamScanner

प्रथम सिर पर रखा और पी लिया। हुज़ूर ने ख़ुदा हाफिज कहा और यह भी कहा अब तुम्हारे आने की जरूरत नहीं है और आप चले गये।

निद्रा भंग हुई और आँखें खुली, मेरा हृदय धड़क रहा था। सोचने लगा कि बात क्या है ? ये सभी लेगा क्या हुए ? होंठो पर ज़बान फेरा तो मिठास मिल रही थी तथा होठ चिपक रहे थे। लालटेन जल रही थी। मैं घबराया हुआ अपने आदमियों को जगाया। शक्कर की हाँडी देखा तो निकाली गयी चीनी का चिन्ह दिखाई दे रहा था। मेरे सेवकों ने कहा कि बड़ी अच्छी सुगन्ध कहाँ से आ रही है ? मानों सम्पूर्ण कमरा महक रहा था। मौलवी सरफराज साहब की शिष्यता अपने ढ़ंग की निराली है। जो कुछ स्वप्न में देखा था स्वप्न के पश्चात् भी दिखाई दे रहा था। आरम्भ से तो मुहम्मद सरफराज को हाजी बाबा के जीवन से कोई सम्बन्ध और न कोई जानकारी थी। एक फकीर का कथन 'खैर वारिस तेरा वारिस है।' कम उम्र के कारण भूल चुका था। मुहम्मद सरफराज साहब ने १४ वर्ष की आयु में एक बार देखा था। उनका विचार समयानुसार शिष्यता हेतु परिवर्तनशील रहा। किन्तु पूज्य हाजी वारिस बाबा उनकी प्रत्येक मुसीबतों में सहायक रहे। डाकुओं के आक्रमण के समय बचाने में उपस्थित थे। स्वयं आकर शिष्य बनाये। तब कहीं जाकर मुहम्मद सरफराज साहब के समझ में अपने चचा का वाक्य वारिस तेरा वारिस है, समझ में आया।

हुज़ूर वारिस पाक के शिष्य बनाने की वृत्त इतनी फैली हुई है कि जिसकी सीमा का कोई ओर नहीं हैं। असिमित संख्या में लोग आपके शिष्य हुए हैं। कोई देश, प्रदेश अथवा स्थान ऐसा नहीं पाया जायेगा जहां आपके नाम लेवा न मिलें। आपके शिष्य करने की विधि भी अलौकिक और लौकिक दोनों प्रकार की रही हैं। आपका व्यक्तित्व, यश, दान, उपदान और दया-कृपा का एक उत्तम आदर्श रहा है। आप ने संसार को एक नया जीवन दान किया है और विश्व में एक नई आत्मा का संचार किया है। जिस प्रकार इस्लाम धर्म के अनुयायियों को शिष्य किया है उसी प्रकार अन्य धर्मों के लोग भी आप द्वारा लाभान्वित हुए हैं और विलक्षण अध्यात्मवाद का दर्शन कर आपको स्वीकारा है। जो आपको एक नज़र देख लेता अथवा जिस पर आप की दृष्टि पड़ जाती वह प्रेम रंग में रन्जित हो जाता था।

अन्य धर्मों के लोगों का झुकाव और शिष्य होना

वर्तमान काल जो ज्ञान शैली के अनुसार पश्चात्य सभ्यता का युग कहा जाता है। जिसके अनुसार निरीक्षण के अतिरिक्त अन्य बातों को व्यर्थ समझा जाता है। ईश्वर ने ऐसे युग के लिए पूज्य हाजी वारिस पाक को सम्पूर्ण विश्वास और यक़ीन बनाकर इस भू-वृत्त पर विद्यमान किया और आपकी आत्म-शाक्ति और आत्म-ज्ञान ने डंका बजा दिया। सम्पूर्ण धर्मों और मतों के लोग आप पर मंत्रमुग्ध और आसक्त थे। हजारों हिन्दू धर्मावलम्बियों ने आपके नाम को साधन बनाकर विनय करते और मिन्नते मानते थे। ख़्वाजा हसन निजामी ऐतिहासिक और आलोचनात्मक ढंग से हुज़ूर वारिस पाक के सम्बन्ध में लिखते हुए समाचार पत्र दिनांक २७ जनवरी १९०९ ई० में अंकित करते हैं :

'कि पूर्व काल में मुसलमान फकीरों के प्रति हिन्दू लोगों को बड़ी श्रद्धा और विश्वास था। हिन्दू लोग मुसलमान फकीरों को अपने साधुओं और सन्तों से अधिक प्रतिष्ठा देते थे। किन्तु उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक यह भाव लुप्त सा हो गया था। ऐसा कोई मुसलमान फकीर भारतवर्ष में नहीं था। जिस पर हिन्दुओं का साधारण झुकाव हो। हाजी वारिस पाक ने अपने आचरण व्यवहार तथा आन्तरिक शक्ति के प्रभाव से इस कमी को पूरा कर दिया। सम्पूर्ण देश के निवासियों का झूकाव पूज्य हाजी बाबा की ओर हो गया। सहस्त्रों हिन्दू धर्म अनुयायी हुज़ूर के शिष्य हो गये। फकीरी वस्त्र प्राप्त कर लिया और बहुत से लोगों ने वारसी वर्दी धारण कर स्वधर्म पर चलते थे। हाजी बाबा ने उर्स (जन्म दिन फ़कीरों का) की तिथियाँ भी सूर्य तिथि के अनुसार निश्चित किया तथा चन्द्र तिथि का हिसाब छोड़ दिया। कार्तिक मास की करवा चौथ को देवा शरीफ का उर्स होता है। कारण यही जान पड़ता है कि हिन्दू मतावलम्बियों को असुविधा न हो। इस उर्स में भिन्न दशाओं और भिन्न-भिन्न मतों के अवलम्बी एकत्र होते हैं। हजारों हिन्दू मर्द, औरत उन्मत होकर या वारिस, या वारिस का घोष करते हुए देवा शरीफ की गलियों में घूमते फिरते दिखाई पड़ते हैं। ईश्वरीय वस्त्र (एहराम) की उत्सव यात्रा आरम्भ होती है। मनौती पूरा करने वाला व्यक्ति एहराम को एक परात में सुसज्जित कर अपने सिर पर रखता है। तत्पश्चात् बाजे-गाजे के साथ या वारिस का घोष करते हुए (जब वारिस पाक विद्यमान थे) सभी लोग हाजी बाबा की सेवा में पीत वस्त्र (एहराम)उपस्थित करते थे। पूज्य हाजी साहब उस वस्त्र को धारण करते और पहना हुआ वस्त्र जो उतारते थे, उन लोगों को दे देते थे। उतारे हुए वस्त्र को लोग उसी स्थान पर सौगात स्वरूप धज्जियाँ

Scanned with CamScanner

करके आपस में बाँट लेते थे। उस समय की उमंग श्रद्धा, सत्य, प्रेम और एकत्व तथा हार्दिक एकता अकथनीय है। छोटे-बड़े, हिन्दू-मुसलमान एक विचार तथा एक रंग में रंगे हुए दीख पड़ते थे। वर्तमान समय में वही पूर्व प्रचलित उत्सव आज भी दृष्टि गोचर होता है। इस उत्सव की भीड़ की कोई सीमा नहीं है। उपस्थित जनो में अधिकांश हिन्दू धर्मावलम्बी होते हैं।

वास्तव में जिन महानुभावों ने वारसी दरबार का यह दृश्य देखा है। वे भली-भाँति जानते हैं कि वह दिल पिघलाने वाला दृश्य होता है। देखा गया है कि बहुधा हिन्दू हाजी साहब का शिष्य होकर इस्लाम धर्म तथा उसके नियमों के इच्छुक हो गये और कुछ लुके-छुपे मुसलमान हो चुके थे। कुछ लोग दरूद शरीफ तथा क़ुरआन की आयतों (श्लोकों) की जाँच भी करते थे। ठाकुर पंचम सिंह रईस मलावली, जिला-मैनपुरी पूज्य हाजी बाबा के अनन्य भक्तों में हैं। वे कठिन तपस्या किये हैं और अध्यात्म ज्ञान से मस्त रहे। जाप-ताप में लीन रहते थे। हुजूर के सम्मुख संसार का कोई वैभव उनकी दृष्ट में तुच्छ था। इसी प्रकार बाबू काशी प्रसाद निवासी इलाहाबाद, पंडित तिलक नारायन मुजफ्फरपुर, राजा सुरूपजीत सिंह तअल्लुकदार सूरतगंज अवध, ठाकुर विशुन सिंह रायपुर बाराबंकी हाजी वारिस पाक के प्रेमी और भक्तों में थे। पंडित श्याम लाल सरकार के प्रेम में मदोन्मत्त होकर हुजूर के फकीर फजीहत शाह से फकीरी वस्त्र प्राप्त कर उनके साथ रहने लगे। बाबू कन्हैया लाल वकील, अलीगढ़ ने विधिवत बीस वर्षों तक लगातार रोज़े रखे। वारसी होने के पश्चात् अद्वैतवाद (तौहीद) और पैगम्बरी या रिसालत (दूतत्व) को स्वीकार करते हैं। अधिकांश हिन्दू सन्तों ने शिष्य होने के पश्चात् संसार विरक्त होकर तपस्या में लीन हो गये जैसे ब्रह्मशाह, मिरआत शाह, दिनदार शाह इत्यादि।

लेखक 'ऐनुल यक़ीन' लिखते हैं कि राजपूत कंचन सिंह ने जगन्नाथ जी की तीर्थयात्रा किया। जगन्नाथ मन्दिर में उन्होंने अपनी आँखों देखा और अपने साथियों को भी दिखाया कि पूज्य हाजी बाबा मन्दिर में प्रकाशमान हैं। लौटने के पश्चात् जब हुजूर के सामने यह घटना प्रस्तुत किया तो हुजूर ने कहा 'ठाकुर जी, हम न होंगे कोई और होगा।' कंचन सिंह ने कहा कि बहुतों ने देखा है। हुजूर मुस्कुराने लगे और पुनः कहा 'अब जगन्नाथजी न जाना। वे उसी समय शिष्य हो गये।' आपका व्यक्तित्व प्रशंसनीय, गुणों से परिपूर्ण तथा पूर्ण विश्वास का दर्पण था। जिसमें ईश्वरीय कलाओं का निरीक्षण होता था। एक बार फैजाबाद में पूज्य हाजी बाबा जैनुल आब्दीन साहब सब-जज की कोठी पर विद्यमान थे। हजारों हिन्दू मुसलमान

आपके दर्शनार्थ उपस्थित थे। एक व्यक्ति पंडित आत्माराम जी धार्मिक वैमनस्ता से परास्त थे। उनको वारिस पाक के पास हिन्दूओं के एकत्र होने का कष्ट था। वह हुजूर पाक के निकट शास्त्रार्थ या वाद-विवाद हेतु उपस्थित हुए। आप ने उनको निकट बैठा कर पद्मावत के पद सुनाना आरम्भ किया। तत्व और तथ्य के रहस्य बताने लगे। पंडित आत्माराम अध्यात्म और ब्रह्म ज्ञान के तथ्यों को सुनकर अपने को भूल गये और मस्ती में धरती पर लोटने लगे जब चेतना लौटी तो मुसलमान हो गये तथा शिष्यता स्वीकार कर लिया।

हुसेन बख्श और मुहम्मद बख्श निवासी जोगीपुरा निकटस्थ हाथरस, जिला अलीगढ़ लिखते हैं कि एक बार प्रकाशपुंज महामना वारिस पाक हाथरस पधारे और श्री मुहम्मद रुकने आलम तहसीलदार महोदय के यहाँ ठहरे। वर्षा हो रही थी, जुमे का दिन था, बहुत से लोग साथ थे। वर्षा में आप मसजिद तक पैदल आये और मसजिद के फर्श पर आपके पदों के चिन्ह नहीं उभरे। हुजूर की ये विशेषता सुना करते थे जो आज आंखों से देखा। उस समय हुजूर हाजी बाबा को देखकर एक सम्मानित हिन्दू मसजिद में उपस्थित हुए और शिष्य हो गये। आदरणीय शैदा साहब लखनवी लिखते हैं कि ये घटना बाबू काशी प्रसाद अग्रवाल रईस इलाहाबाद का है। उन्नाव स्टेशन पर एक बहुत बड़ी भीड़ देखकर अचम्भा हुआ। निकट आने पर पालकी देखा और सोचा पालकी में कोई दूल्हा है साथ में बारातियों की भीड़ है अनायास मन में आया कि मैं भी दूल्हा देखूँ। जब हाजी बाबा के सुन्दर रूप, मोहनी सूरत देखा तो स्वयं मोहित होकर गिर पड़े। होश आने पर सरकार वारिस पाक के शिष्य हो गयें। देवा शरीफ में निवास कर लिया। इनके परिवार वालों ने इनकी दशा देखकर इनका परित्याग कर दिया। ईश्वर ने इस प्रेम पथिक को वह दृढ़ता प्रदान की कि उनकी सारी उम्र प्रेम ही में व्यतीत हुई। अन्ततः हुजूर ही के प्रेम का दम भरते हुए शरीर त्याग कर दिया।

मौलवी रौनक अली वारसी पैंतेपुर लिखते हैं। पैंतेपुर में छोटक नाम का एक मोची था। वह नानक शाही महन्थ की संगति में रहता था। हाजी बाबा की प्रतिष्ठा देखकर उसके दिल में यह इच्छा पैदा हुई कि क्या अच्छा होता यदि मैं अपनी बिरादरी से अलग न होता तथा हुजूर के सेवकों में सम्मिलित हो जाता? हुजूर ने उसकी ओर देखकर कहा मुरीदी दिल से होती है और दिल मुसलमान हुआ करता है। यह शुभ समाचार सुनकर हुजूर के कदमों पर गिर पड़ा तथा शिष्य हो गया। बुद्ध लाल निवासी मिर्जापुर जिनका बाद का नाम मुहम्मद शफी है। बहुत ही सत्य और

Scanned with CamScanner

प्रत्यक्ष भाषी व्यक्ति हैं। इनकी शिष्यता की घटना भी अधिक फलदायक है। जिसकों हमारे ब्रह्मवाद पथ के भाई अमानतुल्लाह खाँ वारसी, मिर्जापुर,उन्हीं की लेखनी से लिखवाते हैं जो निम्नांकित है :

मेरे सत्य गुरू सैय्यद हाजी साहब इस अलबेली मर्यादा और अनोखे अन्दाज से इस संसार में विद्यमान रहे जिसकी वास्तविकता का पता करना या भेद पाना मानव बुद्धि से परे है। प्रत्येक धर्म तथा मत वाले उनके अनुरागी थे। ईश्वर ने जैसा हृदय पात्र जिसको दिया था उसी के अनुसार उसने सरकार को पहचाना। मेरे सरकार ईश्वरीय रहस्य और अध्यात्म के भण्डार थे। जो हम लोगों को समझाने हेतु ईश्वरीय प्रकाश स्वरूप प्रदर्शित हुए। अत: हिन्दू ने आपको कृष्ण महराज के रूप में देखा तो इसाईयों ने ईसा मसीह तथा यहूदियों ने आपके प्रकाशमयी हाथों में मूसा (इसराइलियों के नबी) का चमत्कार देखा, मुसलमानों ने रसूले पाक की सुगन्ध पायी। तात्पर्य यह है कि भगवान ने जिसको दक्ष हृदय तथा देखने वाली आँखें प्रदान किया, वह अपनी योग्यता और सामर्थ्य के अनुसार हाजी वारिस पाक की प्रतिष्ठा का ज्ञान पाया।

जाकी रही भावना जैसी, हरि मूरति देखी तिन तैसी।

आज संसार में कोई ऐसा धर्म और सम्प्रदाय नहीं है जिसमें मेरे सरकार के नाम लेवा नहीं। सामने आकर मुरीद होने वाले की गिनती का तो कोई ठिकाना नहीं है। पर ऐसे लोग भी कम नहीं है जो स्वप्न में शिष्य हुए हैं। फिर वह प्रेम में इतने सजे संवरे हैं कि उनकी बड़ाई नहीं की जा सकती है। मैं खुद अपनी दशा पर विचार करता हूँ तो अचम्भित हो जाता हूँ। मेरी घटना यह है कि मैं हिन्दू परिवार में पैदा हुआ। ख़ुदा और रसूल का नाम तक नहीं जानता था। १८९५ ई० की बात है जब मैं सिकन्दरनामा पढ़ रहा था जिसके आरम्भ में यह पद था।

पनाहे बुलन्दी व पस्ती तुई। हमा नेस्त अन्द उनचे हसती तुई॥

अनुवाद-आकाश से पाताल तक सब तेरी शरण में है। अत: जो कुछ है तू ही है, और सब, कुछ नहीं है। इस पद का अर्थ अपने अध्यापक से समझा। हृदय पर कुछ ऐसा प्रभाव हुआ कि पूर्णत: कुफ्र से मन असन्तुष्ट हो गया और सोचता रहता था। ब्रह्मवाद या ब्रह्मत्व का ज्ञान संसार में किस प्रकार फैला। खोजों से ज्ञात हुआ कि एक ब्रह्म की उपासना की और ईश्वर को एक मानने की सूचना देते हुए समयानुसार अम्बिया और पैगम्बर(सूचना देने वाले) आये और उन्होंने ईश्वर को एक मानने जानने का सम्वाद लोगों को दिया।

१८९५ ई० में इसी विचार में विलीन अपने घर बैठा था। यहाँ तक सोच रहा था कि जब ईश्वर को मारना और जिलाना ही था तो फिर प्रकट करने की आवश्यकता ही क्या थी? इससे अच्छा तो यह होता कि जन्म ही न देता। इसी विचार में सो गया। स्वप्न में देखता हूँ कि एक विशाल मैदान है। उसमें अति सुन्दर हरी-हरी घासें फैली हुई हैं। मैं उसी घासों में चलता हुआ जब मैदान के बीच में पहुँचा तो एक सुनहरा तख्त (चौकी) जो इतना चमकता था कि आँखें चौंधियाँ जाती थीं। सामने पड़ा हुआ था उस पर पाँच संत (बुजुर्ग) बैठे हुए थे और एक अध्यक्ष थे जो बीच में बैठे हुए थे। उनके तेज और प्रताप की यह दशा थी कि उनकी ओर आँख उठाई नहीं जाती थी। दो-दो बुजुर्ग सामने थे जो अध्यक्ष महोदय के दायें और बायें बैठे थे, वही सामने पड़ते थे। उनको सलाम किया। फिर उन्होंने बैठने का संकेत किया और मैं उन सबके सम्मान को ध्यान में रखते हुए चौकी पर एक किनारे बैठ गया। एक बुजुर्ग अरबी भाषा के पद पढ़ने लगे। जब वह पढ़ना समाप्त किये तो मैंने प्रार्थना किया कि मुझे भी एक पद्य याद है आदेश हो तो मैं भी पढ़ूं। उन्होंने कहा पढ़ो। मैं ने वह पद्य सुनाया। सभी मस्ती में झूमने लगे। जब सब बैठ गये मैं भी बैठ गया। मुख्य स्थान पर बैठे हुए बुजुर्ग ने एक साहब से कहा 'इनकों समझा दो।' उन्होंने मुझ से कहा कि तुम्हारा पहला ख्याल शंका पर निर्भर था। उसको अपने मन से निकाल दो। यदि ईश्वर को (अल्लाह जल्ले जलालहू) मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को संसार में भेजना न होता तो संसार नहीं बनाता। अच्छा जाओं।' जब मेरा स्वप्न टूटा तो स्वप्न के प्रभाव से मैं प्रभावित था। उस दिन से सोचने लगा कि कुछ करना चाहिए। किन्तु न किसी से जान पहचान थी और न मैं कुछ जानता था। किसी तरह यह पता चला कि दरूद शरीफ की बरकत से जिसने जो कुछ पाया अत: एक दूकान से दरूद शरीफ की एक पुस्तक खरीद लिया और कुछ दरूद याद कर लिया। दिन भर मन्दिर में बैठकर दरूद शरीफ चुपके से पढ़ा करता था और जब रात हो जाती तो इस्माइल शाह चिश्ती के मज़ार पर जाकर बैठा दरूद शरीफ पढ़ा करता था।

१८९६ ई० की घटना है जब मैं एक रात मज़ार शरीफ पर बैठा दरूद शरीफ पढ़ रहा था। मुझे प्यास मालूम हुई। उस समय चाँद पूर्णत: अपनी चाँदनी बिखेर रहा था। मैं कुएं पर गया, पानी निकाल कर पिया और रस्सी डोर रखते हुए मैंने देखा कि पास ही गूलर के वृक्ष तले एक बुजुर्ग खड़े हैं। मैं उनके निकट जाकर उनको सलाम किया और हाथ चूमे और पूछा कि आपका निवास स्थान कहाँ है? और वह बुजुर्ग यह कहकर कि 'सुनो, सुनो! तुम्हारा हिस्सा मेरे यहाँ है।' कह कर ग़ायब हो गये।

Scanned with CamScanner

मैं दो ढ़ाई वर्ष तक इसी फिक्र में पड़ा रहा। एक दिन बातचीत के सिलसिले में मिर्जा कासिम जान से मैंने अपनी बात कहा और मिर्जा साहब ने मुझे एक तस्वीर दिखाई। तस्वीर देखते ही मैं पहचान गया और गूलर वृक्ष के नीचे खड़े बुजुर्ग का रूप आंखों के सामने घूम उठा। मैं उसी वर्ष कार्तिक के मेले में मिर्जा कासिम जान के साथ देवा शरीफ हाजिर हुआ। हुजूर वारिस पाक के चौखट पर पहुँचकर देखा की दरवाज़ा बन्द है और लोगों की भीड़ जमा है। मैंने द्वार पर जंज़ीर खटखटाया। मैं सुन रहा था कि हूजूर पाक ने कहा 'नूर मुहम्मद शाह सुनो' सुनो! मिर्जापुर से एक लड़का आया है। उसको बुला लो।' दरवाजा खुला और मैंने भीतर जाकर सलाम अर्ज़ किया तथा पाँव चूमें। मन में सोचा कि क्या अच्छा होता यदि अपना मुख खोल देते तो मैं उनका रूप देख लेता? क्योंकि हुजूर चादर में मुँह ढांके हुए लेटे थे। मन में विचार आते ही हुजूर पाक उठकर बैठ गये और मैं आपके दर्शन से लाभान्वित हुआ। पवित्र कर कमलों को बोसा दिया। आप ने मुझसे कहा 'सुनो,सुनो! हमारी तुम्हारी पुरानी मुलाकात है। अच्छा जाओ, अब फिर मुलाकात होगी।' मैं सौभाग्य से उसी वर्ष शिष्य हो गया और मैं मुहम्मद शफीक के नाम से मशहूर हुआ। तात्पर्य यह है कि हुजूर वारिस पाक पर मुसलमानों की भांति हिन्दू भी निछावर हो रहे थे। उनके धार्मिक पन्डित, साधु, संत, नानक, शाही, दासी इत्यादि भी आदर करते थे। सभी विचार और मतावलम्बी हुजूर वारिस पाक की सेवा में उपस्थित होकर आपके यश और कीर्ति से लाभ उठाते थे। बहुत से हिन्दू साधु और संत हुजूर के शिष्य हो गये।

हाजी अवघट शाह वारसी लिखते हैं कि एक बार हुजूर वारिस पाक के दरबार में एक नानक शाही उदासी उपस्थित हुए जो अमृतसर के निवासी थे। उन्होंने अपने आने का कारण यह बताया कि बहुत दिनों से मेरे मन में यह बात उलझी हुई है कि ईश्वर मनुष्य में है अथवा इस शरीर से अलग है। मैंने इस समस्या को अधिकांश साधु सन्यासियों के समक्ष उपस्थित किया। सभी ने कुछ न कुछ समझाया किन्तु मुझे सन्तोष नहीं हुआ। अब इस दरबार में हाजिर हुआ हूँ। अवघट शाह साहब कहते हैं कि इनके सम्बन्ध में पहले भी मैंने सुना था। अतः इनको तत्काल हुजूर वारिस पाक की सेवा में ले गया। हुजूर वारिस पाक एक चबूतरे पर विश्राम कर रहे थे। जब द्वार खुला तो उदासी फकीर शिर झुकाये हुये हुजूर तक पहुँचे। चरण स्पर्श कर पुनः वापस चले आये। अन्य कोई बात नहीं हुई। उदासी महोदय ने कहा, 'आज मुझको शान्ति प्राप्त हुई और सन्तोष भी हो गया। आगे उन्होंने कहा दरवाजा खुलते

ही मेरी दृष्टि हुजूर पर पड़ी और मेरे नेत्रों के सामने धरती से आकाश तक ज्योति दिखाई दी और सूरत यही है। आगे जब मैंने चरण स्पर्श किया तो इस सूरत के अतिरिक्त और कुछ नहीं दिखाई देती थी। उदासी सन्त कई दिनों तक देवा में ठहरे और बाद में चले गये। ऐसी घटनायें आये दिन हुजूर के समक्ष उपस्थित होती थीं और आप उसका समाधान कर दिया करते थे। सत्य तो यह है कि आपके अस्तित्व द्वारा ईश्वरीय शक्ति का दर्शन होता था। समक्ष आने पर कठिन समस्यायें भी प्रत्यक्ष हो जाती थी।

हुजूर वारिस पाक की सेवा में बड़े-बड़े साधू तथा प्रत्येक पन्थ के सन्त आते थे और हुजूर उनका आदर करते थे, प्रेम और सहानुभूति भी दर्शाते थे। कहते थे कि हम और तू एक हैं, ना। जहाँ कही आप जाते हिन्दू सन्त साधू सत्य विश्वास के साथ आप से मिलते थे। यदि उनको कहीं यह ज्ञात होता कि हुजूर वारिस पाक इस पथ से जाने वाले हैं तो वह पथ पर खड़ा होकर प्रतीक्षा करते तथा दर्शन से लाभ उठाते। मुंशी अब्दुल गनी खाँ लिखते हैं कि मुहम्मद याकूब बेग वारसी, मुनइम बेग वारसी और रहीम शाह साहब इत्यादि से मैंने सुना है, जब हुजूर वारिस पाक बनारस पधारे थे उस समय विचित्र दृश्य देखने को मिले। जब हुजूर की पालकी राजघाट पहुँची तो बनारस के पंडित और पुजारी तथा गद्दीधारी महंथ जो कभी अपना स्थान न छोड़ते थे सभी हुजूर वारिस पाक की सेवा में आये तथा प्रेम और श्रद्धा के साथ रहे। कुछ साधु तो पालकी के बांसों में हाथ लगाये हुए थे। आप ने एक स्थान पर पालकी रोकवा कर सबसे कहा 'हम और तुम एक हैं। अब आप हमें सहर्ष आज्ञा दें कि हम एक आदमी के घर जायें।' सभी लोगों ने स्वीकार किया और एक हकीम साहब के यहाँ सरकार ठहरे। कुछ महन्थ लोगों ने भोजन भेजवाया। कुछ महंथों ने फल-फूल मेवे और अन्य उपहार अर्पित किये। दूसरे दिन विदा होते समय एक पंडित महंथ हुजूर को बिदा करने आये थे। बिदा होते समय उनके नेत्रों से आँसू बह रहे थे। वारिस पाक का प्रेम-प्रभाव लोगों में तीव्र गति से प्रवाहित होता था। हाजी अवघट शाह साहब लिखते हैं कि एक साधु मुझसे बछरायूं में मिले और पूछा कि आप यहाँ कैसे आये किसके शिष्य हो? मैंने हुजूर का आदरणीय नाम बताया। साधु महाराज ने आवेशपूर्वक कहा कहाँ है वह फकीर हैं? फकीर बहुत कम होते हैं। औलिया और पीर बहुत होते हैं तथा यह पद सुनाया :

हद पीये तो औलिया, बेहद पीये तो पीर।
हद बेहद दोऊ पिये तो उसका नाम फकीर॥

Scanned with CamScanner

तत्पश्चात् कहा मैंने यह बात हाजी साहब के अतिरिक्त और किसी में नहीं देखा है। तुमको बड़ा पीर मिला। श्रेष्ठ गुरू प्राप्त हुए।

हाजी अवघट शाह एक दूसरी घटना लिखते हैं कि छंगा शाह मज़्ज़ूब (बेसुध फकीर) पंजाब के एक प्रसिद्ध दरवेश थे। जब मुझसे पीराने पीर कलियर शरीफ में भेंट हुई तो बड़े प्रेम से मिलें और पूछने लगे तुम किस खानदान में शिष्य हुए हो? मैंने कहा कि चिश्तिया कादरिया। कहने लगे कि खानदान जबरदस्त है। पुनः पूछा किसके शिष्य हो? मैंने हुज़ूर का नाम बताया। प्रभावित होकर कहने लगे। पीर भी बड़ा जबरदस्त मिला। अतः और बातों के अतिरिक्त तुम्हारे पीर बड़े फकीर हैं। एक बात यह है कि सैय्यद हैं और सैय्यद से जमीन आसमान काँपते हैं तथा सभी वस्तुयें डरती हैं।

मौलवी मुहम्मद सरफराज अहमद खाँ अन्वेषक शिकोहाबाद भूतपूर्व प्रबन्धक दरगाह अजमेर शरीफ लिखते हैं कि १८९७ ई० में अपने कुछ मित्रों के साथ सिंगा पट्टिङ्ग की पहाड़ियों पर जाने का संयोग हुआ। पहाड़ी के मन्दिर में एक हिन्दू साधु का दर्शन हुआ। वहाँ के जन साधारण में उक्त साधु सम्मानित थे। कई भाषाओं उर्दू, हिन्दी, अरबी फारसी इत्यादि के ज्ञाता थे। उनकी अवस्था लोगों के कथनानुसार १२५ वर्ष थी। मुझे देखकर मुस्कुराये और मेरी भूतपूर्व घटनाओं का बयान कर भविष्यवाणी भी करने लगे। अन्त में कहा तू एक ऐसे श्रेष्ठ वली-कामिल के विशेष मान्य लोगों में है जो आज संसार में अद्वितीय हैं। तुम्हारे ऊपर जितनी आपत्तियां आयेगी सब स्वयं समाप्त हो जायेगी और तुम सुरक्षित रहेगा। वह भविष्यवाणी सरफराज साहब के शिष्य होने के पूर्व ही उस साधु ने किया था। जब मौलवी सरफराज साहब को हाजी साहब से शिष्य होने का विचार भी नहीं था। उक्त घटना इस बात का द्योतक है कि सर्व साधारण हिन्दू के अतिरिक्त आदरणीय महात्मा तथा संत भी पूज्य हाजी बाबा की वलायत को स्वीकार करते थे और उनकी सेवा में उपस्थित होकर अध्यात्म ज्ञान प्राप्त करते थे। वे किसी प्रकार भी मुसलमानों से कम नहीं थे। कुछ नास्तिक विचार के लोग जो यह कहते थे कि इस्लाम धर्म सत्य और आत्म-शक्ति की घटनाओं की आनन्द दायक प्राचीन कहानी है। अगर यह सत्य भी हो तो आज ऐसे सिद्ध और ज्ञानी महात्मा क्यों नहीं उत्पन्न होते हैं? हाजी साहब का अस्तित्व इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है जिसे लोग आंखों देख रहे हैं। प्रेम और हृदय विजय से एक संसार ही आदरणीय हाजी वारिस अली शाह का भक्त और सेवक है।

खान बहादुर मौलवी बशीरूद्दीन साहब संस्थापक इस्लामियां हाई स्कूल,

इटावा, सम्पादक, दैनिक समाचार पत्र अलबशर, हुज़ूर के समाधिस्थ (पर्दा) होने पर दुःख व्यक्त करते हुए समाचार पत्र अलबशर दिनांक १८ अप्रैल १९०५ में लिखते हैं कि आपका पन्थ अति सन्धिकारक (सुलहकुल) था। किसी धर्म और पन्थ या मत की अभिव्यक्ति आपसे मिलता और आप उससे सहानुभूतिपूर्वक बातें करते थे। मुसलमानों के अतिरिक्त बहुत हिन्दू भी आपके शिष्य थे। आपका व्यक्तित्व इस बात का प्रमाण है कि इस्लाम धर्म का प्रचार जितना बादशाहों और आलिमों के वाज-नसीहता से नहीं हुआ उससे अधिक अध्यात्मवादी सूफी सन्तों द्वारा हुआ है।

सम्पादक समाचार पत्र 'वकील' दिनांक २७ जनवरी १९०९ ई० में श्री ख़्वाजा हसन निजामी लिखते हैं कि हमने स्वयं देखा है कि बहुत से हिन्दू लोग हाजी साहब की मुरीदी के कारण इस्लाम धर्म के ढ़ंगों को पसन्द करने लगे। कुछ लुकें-छुपे मुसलमान ही थे। कुछ लोग दरूद शरीफ और क़ुरआन की आयतों को सहर्ष पढ़ते थे। केवल हिन्दू ही नहीं, सिक्ख, पारसी, यहूदी इसाई सब आपके अनुरागी थे। अंग्रेजों ने तो मुसलमान होकर फकीरी वस्त्र धारण कर लिया। अधिकांश फकीर विदेशों के लोग हुए जिनके फकीरी नाम आप ने रूमी शाह, विलायती शाह रखे थे। ये सभी यूरोपियन थे।

१२८५ हिजरी की घटना है। जो पुस्तक 'तोहफतुल असफिया' में अंकित है। एक बार सरकार वारिस पाक लखनऊ में अमीनाबाद मुहल्ले में हिदायत अली साहब जमीनदार धौरहरा के मकान पर विद्यमान थे। उस समय अन्य कई सम्मानित लोग भी उपस्थित थे। संयोगवश मिस्टर ब्राउन हेड क्लर्क कमीशनरी आफिस बहराइच, रास्ता पकड़े चले जा रहे थे। जैसे ही हुज़ूर वारिस पाक के पुनीत मुख पर उनकी दृष्टि पड़ी तो उनकी चेतना विचलित हो गयी और अचेत होकर गिर पड़े। जब उनको होश आया तो वे मुसलमान हो गये और हुज़ूर से आज्ञा लेकर हज करने चले गये और अपना पूरा जीवन इस्लाम धर्म के प्रचार में बिता दिया।

हाजी अवघट शाह लिखते हैं कि बेदम शाह वारसी एक पत्र रहीम शाह साहब को लिखते हैं कि आप मिस्टर केमील फ्रान्सीसी की शिफारिश सरकार वारिस पाक में अर्ज कर दीजिए। उनको स्वप्न में पूज्य हाजी बाबा का दर्शन हो चुका है। यही कारण है कि वह शिष्य होने के लिए व्याकुल हैं। हुज़ूर ने उनको शिष्य करना स्वीकार कर लिया। तत्पश्चात् मिस्टर केमील हाजी वारिस पाक की सेवा में देवा शरीफ उपस्थित हुए। उन्होंने अपना नाम भी परिवर्तित कर दिया। नया

Scanned with CamScanner

नाम अब्दुल वारिस रखा। सुना गया उस समय वह बम्बई में हैं। हाजी सैय्यद गफूर शाह वारिसी ने अंग्रेजी भाषा में एक जीवनी सरकार वारिस पाक की छपवायी जिसमें लिखा है कि मिस्टर हेनरी, ट्राफिक इन्सपेक्टर अजमेर और मिस्टर जानसटन सुपरीटेंडेण्ट पुलिस भी आपके शिष्य हुए। बम्बई के मशहूर पारसी दोसा भाई पुत्र धनजी और उनकी दो बहनें भी शिष्य हुईं। एक और दोसा भाई पुत्र मुकुरजी भी शिष्य थे। कुछ ऐसी घटनाएं भी लिखित हैं जो हुजूर वारिस पाक के अन्तिम जीवन में घटी हैं और उन्हें उपस्थित सेवकों ने याद रखा था। कुछ बातें आपके भ्रमण काल की हैं जिनका ज्ञात होना कठिन है।

जनाब मौलवी अब्दुल अहद फिरंगी महल मैनेजर मदरसा चश्मा-ए-रहमत गाजीपुर जो अपने जमाने में प्रसिद्ध आलिम थे। अपनी यात्रा की एक घटना लिखते हैं, जो बड़ी रोचक हैं, अतः उसी प्रकार लिखी जाती है। नवाब हुसेन मियां साहब मंगलौर प्रदेश की बुलाहट पर काठियावाड़ गया था तो लौटते समय गुजरात से अजमेर की तरफ आने में रात को रेल पर सो रहा था। मेरे पाँव की ओर एक बेंच पर एक मारवाड़ीन और उसके बगल बेंच पर उसका लड़का था और एक बेंच पर मैं था। बेंच की खाली जगहों पर कुछ रख दिया था। सोजद स्टेशन पर डिब्बे में किसी के आने की आहट मिली। मेरी आँख खुल गयी। मैंनी देखा एक अंग्रेज डिब्बे में आया और किनारे के बेंच पर बैठना चाहा। मैं तुरन्त उठ कर अपना सामान हटाने लगा। उस अंग्रेज ने अति कोमल स्वर में कहा कि आप क्यों कष्ट करते हैं? मैं एक तरफ बैठ जाऊंगा। मैंने सामान हटाकर बेंच खाली कर दिया और सो रहा। मैंने सुना 'हे भगवान! मेरी दशा पर दया कर मुझे घोर कष्ट है। तू क्यों मुझे मेरी सहन शक्ति से अधिक कष्ट देता है? ऐ पीर (गुरू) तू भी मेरी खबर नहीं लेता।' इस अन्तिम शब्द ने मुझे सावधान कर दिया और मैं उठ बैठा। देखा तो वह अंग्रेज अपनी असह्य पीड़ा से कराह रहा है। मैंने पूछा आपको क्या कष्ट है? उसने कहा कि मैं बहुत बीमार हूँ। मुझे अधिक बुखार है। तिल्ली में कीड़े पड़ गये हैं। मैंने नाड़ी देखा बहुत अधिक बुखार था और कहा आप को डाक्टरों ने गलत राय दे दिया है इस रोग का रोगी एक सप्ताह से अधिक नहीं जी सकता है। उसने कहा आपका मकान कहाँ है? मैंने बताया लखनऊ में है। पुनः मैंने कहा कि क्या मैं आप से कुछ पूछ सकता हूँ? उसने उत्तर दिया कि पूछ सकते हैं। मैंने पूछा आप ने अपनी व्याकुलता में ईश्वर से दया की प्रार्थना किया। उसी दशा में यह भी कहा था ऐ पीर (गुरू) तू भी खबर नहीं लेता। इसका क्या अर्थ है? उसने कहा मैंने यह न कहा होगा। मैंने कहा आप

ने जरूर कहा था। मुस्कुरा कर कहने लगा आधीरता में मुख से निकल गया होगा। मैंने फिर कहा इसमें कुछ असलियत जरूर होगी, नहीं तो ऐसा वाक्य एक अंग्रेज के मुख से नहीं निकल सकता। वह टालता रहा और मैं उसके पीछे पड़ा रहा। अन्ततः कहने लगा सुनिये साहब! आप लखनऊ के निवासी हैं वहाँ के लोगों को अवश्य जानते होंगे, हुसेन हेम्जा और कुछ किंग कालेज के छात्रों के सम्बन्ध में पूछा, जिनको मैं जानता था। उनकी दशा बतलाया इसके पश्चात् वहाँ के अरबी टीचर मुहम्मद फज़लुल्लाह साहब के सम्बन्ध में भी पूछा। मैंने कहा वह मेरे ससुर थे। यह सुनते ही वह खडा हुआ और कहने लगा मैं आप से मिलूँगा। वह मेरे उस्ताद (अध्यापक) थे, फिर कहा अब मेरी नाड़ी देखिये। मैंने देखा तो लेशमात्र भी बुखार नहीं था। उसन कहा आप से मिलकर ऐसी प्रसन्नता हुई कि मेरा बुखार उतर गया। खुदा आपको खुश रखे। उस व्यक्ति ने पूछा कि आप होविल साहब को जानते हैं? मैंने कहा कि उनकी तारीफ सुना हैं। उन्होंने बताया कि वह मेरे चचा थे। वह फ्रांसिसी थे। फिर पूछा लखनऊ के फकीरों को आप जानते हैं। मैं बहुत दिनों से गाजीपुर में रहता हूँ। बचपन में हमने चुप शाह को देखा है। पुनः कहा कि हाजी साहब को जानते हैं। मैंने उत्तर दिया हमने उनको बचपन में देखा था। मेरे मामू इत्यादि उनके चेले थे। अतः वह गदिया में आते थे। चूंकि महिलाओं से सिर में तेल डलवाते थे। इसलिए मैं उनको अच्छा नहीं मानता था। उसने मुझसे पूछा कि आपने उनके कुछ चमत्कार भी देखे थे। मैंने कहा हाँ वह वर्षा काल में भी नंगे पैर चलते थे। किन्तु पैरों में कीचड़ या पानी कुछ नहीं लगता था, न फर्श पर कोई धब्बा अथवा दाग ही पड़ता था। उसने कहा और कुछ। मैंने कहा यह क्या कम चमत्कार है कि दूसरे धर्मावलम्बी भी उनके शिष्य होते थे। मंगरौल की प्रथम यात्रा में जब आगरा घूमने के उद्देश्य से मैं गया तो जेलखाना के दारोगा के यहाँ कई दिन रूका रहा। वहाँ डाक्टर जेलखाना पंडित राम प्रसाद से भेंट हुई। उनका रूप अति पवित्र, लम्बी दाढ़ी और माथे पर चन्दन का टीका देखने को मिला और वह सदैव कुछ पढ़ा करते थे। पूछने पर पता चला कि वे दरूद शरीफ पढ़ा करते हैं। नमाज नियमित ढंग से अदा करते तथा क़ुरआन भी पढ़ते हैं। कई दिन एक साथ रहने के पश्चात् मैं उनसे बहुत हिल मिल गया था। अतः एक दिन उन्होंने यह भी कहा मैं मुसलमान हूँ और पूज्य हाजी बाबा का शिष्य हूँ। अपने शिष्य होने के सम्बन्ध में कहने लगे। स्वप्न में एक बड़े दरबार में पहुँच गया। जहाँ पूज्य हाजी वारिस पाक भी थे। मैं आप से पूछा यह कैसी बैठक है? आप ने बताया 'यह दरबार हज़रत रसूले

Scanned with CamScanner

मकबूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का है। संकेत से बताया यह अबू बकर रजि० यह हजरत उसमान रजि०, यह हजरत अली रजि० हैं। मैं अबू बकर की सेवा में उपस्थित हुआ और पूछा हज़रत रसूले ख़ुदा कहाँ विद्यमान है? उन्होंने कहा तू उन्हें नहीं देख सकता। मेरा स्वप्न टूट गया। मुझे अति कष्ट हुआ। सहारनपुर आने पर मैंने मौलाना कासिम नानौतवी स्वर्गीय से पूछा मेरे दर्शन से वंचित रहने का क्या कारण था? उन्होंने पूछा कि तुम हुक्का तो नहीं पीते हो। मैंने उसी समय हुक्का, अफीम का त्याग कर दिया। इस कारण मैं बीमार पड़ गया। किन्तु मैंने कभी उक्त वस्तुओं का सेवन नहीं किया और चार बार रसूले ख़ुदा का दर्शन कर चुका हूँ। फ्रांसीसी महोदय हमारी इन बातों का अति आनन्द ले रहे थे तथा ध्यानपूर्वक मेरी ओर देख रहे थे। जब मैं ये कहानी समाप्त कर चुका। फिर आप ने पूछा कि आप ने पूज्य हाजी बाबा का और कुछ चमत्कार देखा या सुना हैं। मैंने कहा हाँ। फिर बोले वह क्या हैं? मैं कहने लगा डुमराँव के मौलवी शरफुद्दीन साहब मेरे एक मित्र अब्दुस्समद द्वारा ब्यान करते हैं :

मैं शराब पीने का आदी था। बिना मदिरा पान, मैं एक घन्टा भी चैन से नहीं रह पाता था। एक बार देवा शरीफ जाने की इच्छा से चला। रास्ते में पीने की आवश्यकता हुई। दानापुर के होटल में मदिरा की बोतलें प्राप्त न हो सकीं, फैजाबाद, बाराबंकी तमाम ढूंढा परन्तु मदिरा नाम की वस्तु नहीं मिल सकी। देवा शरीफ पहुँचने पर कई दिनों तक पीने की इच्छा न हुई। मेरे मन में यह बात बैठ गई कि हाजी बाबा को मन्जूर है कि मैं शराब छोड़ दूं। अतः मैं तोबा कर लिया और पुनः कभी मदिरापान नहीं किया। उक्त साहब ने कहा और कुछ। फिर मैं कहने लगा- मेरे बड़े मामू को खेलाने वाली नरहिन नाम की एक दाई थी। उसकी बहन हज करके लौटी तो लोगों से कहा कि हाजी बाबा से मक्का में मैं मुरीद हो गई हूँ। किन्तु हाजी साहब बकरीद के दिन गदिया में थे। अतः लोगों ने उसे पागल समझा और दीवाना मान लिया। फिर नरहिन की बहन यही कहती और कसम खाती थी। यह कह मैंने अपना आश्चर्य प्रकट किया। फ्रांसीसी महोदय ने कहा मुझे आपके आश्चर्य पर आश्चर्य है। नरहिन की बहन सच थी वह काबा में मुरीद हुई। और नरहिन भी सच्ची थी क्योंकि उसने वारिस पाक को गदिया में देखा था। ख़ुदा की कसम हाजी साहब की एक समय में भिन्न-भिन्न स्थानों पर बहुत से लोगों को शिष्य कर लेते थे। मैंने कहा। शायद यही कारण है कि आपने व्याकुलता में पीर को स्मरण किया था। वह कहने लगे कि हाँ वही मेरे धर्म-गुरू हैं। आप मेरे शिष्य होने

की घटना सुनिये। यद्यपि आपको आश्चर्य होगा पर मै ईश्वर को साक्षी कर कहूंगा।

मेरी अल्पावस्था में मेरे पिता का देहान्त हो चुका था। मेरी माता जवान थी। पूर्व प्रथा के अनुसार मेरी माता पर्दे में रहती थी और मैं उनकी रक्षा और देखभाल का विशेष ध्यान रखता था। एक दिन मेरे बैरे ने कहा कि मेरी माता के पास एक फकीर आते हैं और देर तक भीतर रहते हैं। यह सुनकर मेरी क्रोधाग्नि ज्वलित हो उठी और जी में आया कि अभी उसको गोली मार दें। धीरे-धीरे क्रोध शान्त हुआ। मैंने बैरे से पूछा, संत कब आते हैं? उसने प्रत्युत्तर में कहा कभी महीनों के पश्चात् और कभी जल्दी-जल्दी ही आ जाते हैं। मैंने उसे आदेश दिया कि जब भी वह आयें हमें सूचित करो। जब बैरा चला गया तो मैंने अपना तमंचा(पिस्टल) जो दुनाली था गोलियों से भरकर अपनी कोट की जेब में रख लिया और दृढ़ निश्चय कर लिया कि जब भी मैं देखूंगा एक गोली से शाह साहब को और दूसरी से अपनी माता को समाप्त कर दूंगा। यही चिन्ता रहती थी कि यह कार्य जल्द पूरा कर दूं। संयोगवश सप्ताह के अन्दर ही मेरे बैरे ने मुझे सूचित किया कि इस समय शाह साहब आये हैं और भीतर हैं। मैं तुरन्त उठा और दरवाजे पर से ही पिस्टल निकालने के लिये जेब में हाथ डाला। प्रयत्न करने के पश्चात भी पिस्टल हाथ नहीं आ रहा था। जब उठाता छूट जाता था। इसी दशा में मैं आंगन तक पहुंच गया। मैंने देखा की शाह साहब सिरहाने और मेरी माता करबद्ध रूप में पैताने बैठी हुई थी तथा कुछ कह रही थीं। बेधड़क मैं बढ़ता चला जाता था किन्तु तमन्चा हाथ में नहीं आता था। निकट पहुँचते ही शाह साहब ने मेरी ओर देखकर कहा 'आओ! आओ बेटा, आओ! मेरी माता इतनी भयभीत थी कि चीरो तो खून नहीं। शाह साहब ने मेरा हाथ पकड़ कर बिठा लिया और बोले 'तू मेरा बेटा है और यह मेरी बेटी है।' तत्काल मैंने कहा कि आप क्या चाहते है? मैं मुसलमान हो जाऊँ।' उत्तर मिला 'तू तो मुसलमान ही है और तेरी माँ भी मुसलमान है।' मैंने कहा कि क्या करूं? आदेश हुआ 'अपवित्र वस्तुयें न खाया करो और जिस तरह जी चाहे उस तरह रहो। मैं एक आदमी दूंगा उससे खाना पकवाया करो। वजीर खाँ उसका नाम है।' मैंने कहा कि बहुत अच्छा। कुछ दिनों बाद एक व्यक्ति आया और बोला मेरा नाम वजीर खाँ है। शाह साहब ने मुझे भेजा है। मैंने उसको भोजन बनाने के लिये नौकर रख लिया। सत्तरह वर्षों तक वह मुझे भोजन बनाकर खिलाता रहा। जब मैं बीमार होता था तो वह भोजन द्वारा ही मेरी दवा कर लेता था। मुझे कभी दवा के प्रयोग करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। जब से वह मर गया मैं बराबर बीमार रहता हूँ। वर्षो से मैं स्टेशन सोजद पर स्टेशन

Scanned with CamScanner

मास्टर हूँ। रोगावस्था में अजमेर के अस्पताल में जा रहा हूँ। बातें समाप्त न हुई थीं कि अजमेर स्टेशन आ गया। साहब ने मुझसे कहा दो चार दिन अजमेर रूकें किन्तु मैंने समय के अभाव में क्षमा याचना कर लिया। चलते समय मैंने उनसे कहा कि तिल्ली में कीड़ो का विचार हृदय से निकाल दीजिये। परीक्षा विधि मैं बताये देता हूँ मिट्टी के बट्टे (कूजे) में कडुआ तेल लीजिये। यदि तेल का गन्ध और स्वाद मिले तो जानिये कि डाक्टरों की राय गलत है और यदि न मालूम हो तो क्रमशः आठ दिन भोजन के पश्चात् पीजिये स्वस्थ हो जाइयेगा। आठ दिन बाद तेल का स्वाद मिलने लगेगा। यह स्वस्थ होने का चिन्ह है। वस्सलाम (धन्यवाद)

इस घटना से विदित है कि अन्य जातियों के लोगों का हृदय भी हूजूर वारिस पाक की मान मर्यादा से कितना प्रभावित था। हुजूर की शिष्यता से लाभान्वित होना केवल इसाईयों तक सीमित नहीं है वरन् हर धर्म और पन्थ में आपका प्रभाव प्रत्यक्ष है।

श्री ख़्वाजा हसन निज़ामी देहलवी दिनांक २४ मार्च १९०९ ई० के समाचार पत्र **'वकील'** में लिखते हैं कि हाजी साहब को न केवल भारत के हिन्दू-मुसलमान ही संत और बुजुर्ग मानते थे बल्कि यूरोप के निवासियों में भी उनके बुजुर्गी की चर्चा थी। थाना भुवन जिला मुजफ्फरनगर निवासी मिस्टर हबीब अहमद जो इस समय इंग्लैण्ड में हैं और हाजी साहब के शिष्य हैं। उच्च अंग्रेजी शिक्षा भी प्राप्त किये हैं। पाश्चात्य सभ्यता में जीवन भी व्यतीत करते हैं। इंग्लैण्ड निवास काल में इनकी भविष्यवाणी और अलौकिक बातों के वर्णन की बहुत चर्चा थी। जैसा कि अध्यात्मवाद के प्रारम्भिक शिक्षार्थियों को होता है। किन्तु अंग्रेजो के लिए पूर्णतः यह बात नवीन थी कि कोई व्यक्ति बिना जाने एक अपरिचित के बातों का ज्ञान करा दे। क्रमशः मिस्टर हबीब की चर्चा बढ़ती गयी। भारतीय छात्र भी उनके चमत्कार का पूर्ण विश्वास करने लगे। मेरे एक मित्र अब्दुल कादिर साहब बैरिस्टर एटला देहली को भी इंगलिसतान में रहते समय भेंट का अवसर प्राप्त हुआ था। वे कहते हैं कि मिस्टर हबीब आन्तरिक ज्ञान में असाधारण योग्यता रखते हैं। भविष्य की घटनाओं के सम्बन्ध में जो कुछ सूचना देते वह सत्य होती। हमने अब्दुल कादिर साहब के पास एक पुस्तक में मिस्टर हबीब अहमद द्वारा लिखित देखा कि सैय्यद करामत हुसेन जज हो जायेंगे। किसको यह ज्ञात था कि सैय्यद करामत हुसेन हाई कोर्ट के जज बन सकते हैं। यद्यपि हम जानते है कि अध्यात्म, सूफीवाद में यह कोई कमाल नहीं है। किन्तु इस समय बुजुर्गों और साधू संतों की अवनती इस सीमा तक पहुँच चुकी

है 'कि उनमें प्रकटन-शक्ति अथवा दैव ज्ञान का अभाव मात्र है। इस विचार से मिस्टर हबीब अहमद के योग्यता की सराहना करनी पड़ती है कि वे ऐसे देश में सूफी संतों का महत्व दर्शा सकते हैं तथा सभी शक्ति स्रोत उनको हाजी साहब से प्राप्त हुई है।

स्पेन का एक राजकुमार जो मुसलमानों की अध्यात्म-पराकाष्ठा का अन्वेषक था। अपने विचार के अन्तर्गत लन्दन में आया था। मिस्टर हबीब अहमद के चमत्कारों की बड़ाई सुनकर उनसे भेंट किया। विश्वासपात्र होकर उनसे शिक्षा प्राप्ति करनी शुरू की। प्रभावित होकर उसने अपना नाम परिवर्तन भी कर दिया। यहाँ तक कि अपने जीवन सम्बन्धी नियमों-उपनियमों का परित्याग कर दिया। उनके शिष्य के समान भी हो गया। हजारों रूपये मिस्टर हबीब अहमद को दिया और वे खर्च करते रहे। लोगों ने स्पेनी राजकुमार को बहकाया। परन्तु वह किसी की नहीं सुना। आगे चलकर जब उसे ज्ञात हुआ हि हमारा गुरू एक भारतीय पीर का मुरीद है और वह बुजुर्ग अभी जीवित हैं तब वह भारत चला आया। देवा शरीफ आकर पूज्य हाजी बाबा का दर्शन किया। देश वापसी पर अपने मित्रों से कहा, 'मैंने भारत में एक नेत्र देखा है जिसमें सम्पूर्ण संसार विद्यमान है। उस नेत्र के प्रभाव ने मुझे कम्पित कर दिया।' वास्तव में वह नेत्र हाजी साहब की न थी वरन् उनके एक साधारण शिष्य की थी। जो उनके पास उपस्थित था। पूज्य गुरू हाजी साहब के सम्बन्ध में मात्र इतना ही कहा कि तुम अंदाजा कर सकते हो कि जिसके शिष्य ऐसे है वह स्वयं कैसा होगा? यह मत एक ऐसे देश के निवासी का है जो फकीरों तथा सत्य साधकों का परिहास करते हैं जिनके अनुकरण में हमारे देशवासी भी संत साधुओं में आस्था नहीं रखते है।

ख़्वाजा हसन निजामी साहब ने जिस स्पेनी राजकुमार का वर्णन किया है उसका नाम क्वांटगलाजरा है। हाजी अवघट शाह साहब वारसी उसकी उपस्थिति की घटना इस प्रकार लिखते हैं-जब इनको हाजी बाबा के महान दरबार में लाया गया तो सरकार वारिस पाक खड़े हो गये। उनके साथ स्पेनी अनुवादक भी थे। इन लोगों को रईस मलावली के ठाकुर पंचम सिंह की कोठी पर ठहराया गया। मिस्टर क्वांट ग्लाजरा ने मलीना का एक तहबन्द (फकीरी वस्त्र) क्रय कर अपने शिर पर रखे हुये हुजूर वारिस पाक की सेवा में उपस्थित हुए। आप ने उसे धारण कर बैठने का आदेश किया। तत्पश्चात् वे बैठ गये। हुजूर ने फरमाया कैसे आये हो? क्या काम है? अनुवादक द्वारा उन्होंने कहा 'हमको कोई वस्तु नहीं मिलनी चाहिये। मात्र

Scanned with CamScanner

इन्हीं आँखों से ईश्वर को देंखे और क्या ? हुजूर ने मुस्कुराते हुए कहा 'आशिक को माशूक ही की जरूरत हुआ करती है। मनतू शुद्व, तूमन शुदी (मैं तू हो गया और तू मैं हो गया।) पुन: कहा 'हम तू वहाँ एक जगह होंगे। जाओ तस्दीक (पूर्ण विश्वास)नहीं हुआ, हो जायेगा।' मिस्टर क्वांट गलाजरा ने उसी समय शिष्यता स्वीकार कर लिया तथा विदा होकर अपने निवास पर चले आये। उतारा हुआ एहराम जो इनको प्राप्त था प्रेम और विश्वास सहित दिन भर अपने शरीर पर ओढ़े रहे। रात में कव्वाली संगीत का आनन्द लिया। प्रात: हुजूर ने बिदा कर दिया। हाजी अवघट से उन्हें विशेष स्नेह हो गया जो यथावत बना रहा। पत्र व्यवहार का सम्बन्ध भी चलता रहा। मिस्टर क्वांट गलाजरा से सम्बन्धित कुछ बातें अब्दुल कादिर बैरिस्टर एटला ने फजल हुसेन साहब वारसी मिश्कात हक्कानिया के लेखक को अपने पत्र द्वारा सूचित करते हैं :

मिस्टर हबीब अहमद बहुत दिनों से इंगलिस्तान में निवास करते हैं तथा सन्तोषपूर्ण जीवन यापन करते हैं। उन्होंने अंग्रेजी में एक पुस्तक लिखी थी जिसका नाम मिस्ट्रीज आफ साउण्ड एण्ड नम्बर है, (अर्थात स्वर और संख्या के रहस्य) इस पुस्तक के लन्दन में छपने पर अन्वेषक से समूहों में अत्याधिक तर्क-वितर्क हुआ। वहाँ के ज्ञान प्रेमी या पूर्वी सभ्यता के लोग लेखक से भेंट करने के इच्छुक हुये। इनमें से एक क्वांट गलाजरा साहब स्पेन निवासी हबीब अहमद से मिले, मुझसे क्वांट साहब से भेंट नहीं हुई। मेरे जमाने में कभी वे इंग्लैन्ड नहीं आये थे। लेकिन मुंशी हबीब अहमद के पास आने वाले पत्रों द्वारा मुझे ज्ञात हुआ कि मुंशी हबीब अहमद से उनको विशेष श्रद्धा है और उन्हें पूर्व ज्ञान तथा भाषाओं के अध्यन का शौक हो गया है। जनाब मौलवी सैय्यद अली बलगरामी द्वारा सैय्यद मुहम्मद अशकरी को एक उचित वेतन पर बुलाया। दो वर्ष तक मौलवी साहब मिस्टर क्वांट साहब के साथ रहे। क्वांट साहब को यह शौक पैदा हुआ कि वह भारत आकर हाजी साहब से मिलें। अत: भारत आकर हाजी साहब की सेवा में उपस्थित हुए। पुन: भारत से जाने के पश्चात् क्वांट ग्लोजरा ने एक पत्र में लिखा कि हाजी साहब के दर्शन से अत्यन्त आनन्दित और लाभान्वित हुआ। यात्रा के सम्पूर्ण कष्ट सुलभ हो गये। हाजी साहब की महत्ता अवर्णनीय है। उनके शिष्यों में एक व्यक्ति ऐसा देखा जिसके नेत्रों में अथाह स्नेह जल और आकर्षण है बराबर उसी जल में सदैव स्नान करता रहूं।

काउन्ट गलाजरा एक पत्र एहतेशाम अली बैरिस्टर एटला मुनसफ़ सहसराम

के नाम निम्नांकित है जिसको हुजूर वारिस पाक की जवाबी अंग्रेजी भाषा में सैय्यद गफूर शाह साहब हसामी अली वारसी ने लिखा है :

माई डियर ! मिस्टर एहतेशाम । अपने प्यारे जिन्दा काबा शाह वारिस अली से मिलने के पश्चात मेरा हज समाप्त हो गया। अत: मैं मिस्र वापस जा रहा हूँ।

आपका मित्र :-

काउन्ट गलाजरा आफ संतेटकड़ा

इस प्रकार के अनेको पत्र मिस्टर गलाजरा के हैं जिनसे सरकार वारिस पाक की मुहब्बत टपकती है और उनका अध्यात्म झलकता है। ये सभी बातें मिस्टर काउन्ट गलाजरा को सरकार वारिस पाक के एक दृष्टि की देन है। उनके आन्तरिक ज्ञान के अनुमान हेतु उनका पत्र हाजी अवघट शाह को लिखा पर्याप्त है जिसमें उन्होंने पूज्य हाजी वारिस पाक के ईश मिलन तिथि और समय का ज्ञान काउन्ट गलोजरा को फ्रांस में निरीक्षण होता है। इसी प्रकार अन्य अंग्रेजों की घटनाये हैं किन्तु उपस्थित इन बातों की छानबीन नहीं किया और न किसी को इसकी चिन्ता थी। कारण विशेष उनका प्रेम मस्ती और विशेष ज्ञान था। उनका इश्क विशेष उनको इस ओर आने ही न देता था। मस्ती और मदहोशी के सिवा वे लोग कोई अन्य कार्य नहीं रखते थे।

दूसरी ओर हुजूर वारिस पाक अपने कोई चमत्कार व्यक्त नहीं होने देते थे कभी भी अपने द्वारा प्रकट को छुपाने का प्रयत्न करते थे। यदि कभी कोई बात अपने भक्तों और सेवकों से कहते तो वे शिक्षाप्रद होती या जिनके लिये कही जाती उनके लिए सुधारकारक होती। जैसा कि तोहफतुल असफिया में लिखा है। पूज्य हाजी वारिस पाक ने जब रूस की यात्रा आरम्भ किया तब उनके साथ आरिफ अली जौनपुरी भी थे। संयोगवश रूस की एक शाही वंश की बालिका हुजूर के प्रेम बिहवल हो उठी और सुख वैभव त्याग दिया। खुद वह रूस के मुसलमानों के गाँव में रहने लगी। इस घटना को नवाब हुसेन अली वारसी ने लिखा है कि हुजूर पाक की जुबानी हमने सुना है जिसका सारांश ये है। हुजूर एक बाग की सैर करने गये थे। संयोग से वहाँ बहुत सी रूसी सुकुमारियाँ मौजूद थी। मौलवी आरिफ जौनपुरी एक लड़की पर आशिक हो गये और उसी के हो गये। सरकार वारिस पाक का साथ तक छोड़ दिया। हुजूर पर एक लड़की मोहित हो गयी किन्तु हुजूर को अपनी ओर आकर्षित न देखा तो उसने पूछा क्या आप किसी पर आशिक है ? आपने कहा 'हाँ।' उस लड़की ने कहा 'क्या वह हमसे अधिक रूपवान है।' हुजूर ने कहा 'सम्पूर्ण

Scanned with CamScanner

संसार अधिक सुन्दर और रूपवान है। उसके समान संसार में अन्य कोई नहीं है।' राजकुमारी ने आग्रह किया, 'हम भी उस पर आशिक होंगे। बताइये वह कौन है?' हमने कहा वह हर जगह है और हर चीज़ में है, उसके बहुत से नाम हैं। एक नाम अल्लाह जल्ले जलालहू है। उसकी आशिकी का ढ़ंग 'लाइलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह है।' उसने पवित्र मन से कहा और कसम खाकर कहा कि मुझे अब इसी से काम है और किसी से मतलब नहीं रहा। राजकोष से उसको उचित वजीफा मिलता जिसके बारे में उसने हुज़ूर से पूछा था कि मैं इसको क्या करूं? सरकार वारिस पाक ने उसको बताया। तुम जिसके ऊपर मोहित हो उसके पथ में दीन दुखियों, असहायों तथा विधवाओं में बाँट दो। गरीबों के बालक बालिकाओं के विवाह में देना। वह बहुत प्रसन्न होगा। उस लड़की ने पूछा आप चले जायेंगे तो हम क्या करेंगे? हमने कहा 'उसी को याद करना।' फिर उसने कहा कि इस स्थान से निकट एक गाँव है। उसमें हम रहेंगे। अब यहाँ न रहेंगे। आप चलकर हमको वहाँ बिठा दीजिये। हमने उस को वहाँ बिठा दिया और किसी प्रकार एक रात उस गाँव में रहे फिर बिदा हो गये। उस लड़की का नाम जूफा था। छः वर्ष वह जीवित रही इसके बाद स्वर्गवासी हो गयी। पहाड़ पर उसकी कब्र है। उसका कुल (ईश प्रार्थना) होता है तीन ख़त उसके आये थे। हुज़ूर के इतना कहने पर नादिर हुसेन ने पूछा। मौलवी आरिफ अली के इश्क का क्या फल हुआ? आपने कहा 'दाढ़ी मुंड़ी थी। दूसरे दिन हमारे पास आ गये। हमने कहा क्या किया?' कहने लगे कि जो हुआ सो हुआ।

हुज़ूर पाक की यात्रा घटनायें अति मर्यादित होती किन्तु खेद है कि उनके सम्बन्ध में हमारे कानों तक बहुत सी बाते नहीं पहुँची। इसी प्रकार अपने देश के दूरस्थ स्थानों की घटित समाचार नहीं प्राप्त हो सके । बात यह थी कि हुज़ूर वारिस पाक अपनी बातें बहुत कम कहते थे और उनके साथ रहने वाला कोई एक व्यक्ति स्थायी रूप में नहीं था। वास्तविकता यह थी कि प्रतिदिन विचित्र बातें प्रकट होती थीं और सम्पूर्ण धर्मों के लोग आपके पद चिन्हों पर जान देते थे आपका व्यक्तित्व इस्लाम धर्म का प्रत्यक्ष प्रमाण था। इसलिए सभी लोग आपके प्रेम के मतवाले बने रहते थे और आपके व्यक्तित्व में ईश्वर-प्रकाश छनता रहता था जिसपर मानव रूपी पतिंगे टूट-टूट कर गिरते रहते थे।

शिष्यों में प्रेम बाहुल्य

हुज़ूर वारिस पाक का जीवन सम्पूर्ण गुणों से परिपूर्ण था। अतः लोगों का प्रेम और ध्यान भी आपकी ओर अधिक पाया जाता था। साधारणतः आपके शिष्य बहुत अधिक थे। और विशेष रूप से सब में प्रेम-शक्ति तथा प्रेम-भाव एक समान रूप से मौजूद था। प्रेम भाव में बहुत से शिष्य अपनी मिसाल आप थे। प्रेम बाहुल्यता के कारण वह दीवाना और अपने आप से बाहर हो चुके थे। उन्होंने अपनी दीन (धर्म) और दुनिया की चिन्तानहीं थी। उनकी सम्पूर्ण सम्पत्ति और इच्छायें हुज़ूर से आबद्ध थीं। वे लोग मौलाना रूम के इस पद को चरितार्थ करते थे।

चूँकि जाते पीर रा करदी कुबूल। हम खुदा दर जातश आमद हम रसूल।

अर्थात गुरु ही को सब कुछ मानते थे। गुरुब्रह्मा गुरुविष्णु, गुरुदेवो महेश्वराः-

उनका उद्देश्य था। ऐसे शिष्यों की श्रद्धा और आस्था अकथनीय है। अपनी सामर्थ्य के अनुसार लोग आप की खुशी और रज़ा के लिए धन खर्च करते थे। हजारों रूपये दीन और कंगालों में बाँटते रहते थे। ऐसे रईस, धनवान लोग जो देवा के निवासी थे और उनको वारसी दरबार में स्थाई आदर और सम्मान प्राप्त था जैसे फज़ले हुसेन साहब वारसी गद्दी नशीन शाह विलायत, सैय्यद मारूफ शाह वारसी, घसीटे मियां साहब इत्यादि हैं। बाहर के लोगों में अनगिनत लोग हैं जो दर्शनार्थ देवा शरीफ आते और बहुत सा धन हुज़ूर के चरणों में अर्पित कर लोगों में बांट देते थे। खाने पीने की वस्तुयें गरीब भूखों को बांटते थे। राजा दोस्त मुहम्मद खाँ महुवना जिला-सुल्तानपुर ईदुलफितर के अवसर पर देवा शरीफ आते और दूध, छुहारे, खुर्मा, सेवईंया और तहबन्द इत्यादि वारसी फकीरों में बांटते थे। शेख इनायतुल्लाह साहब तअल्लुकेदार सैदनपुर इदुल अज़हा के अवसर पर हुज़ूर वारिस पाक तथा उनकी सेवा में उपस्थित सज्जनों सहित निमन्त्रित करते थे। ईदुल अज़हा से दो दिन पहले ही सभी लोगों को अपने घर सैदनपुर ले जाते थे। हुज़ूर वारिस पाक वहीं नमाज़ अदा करते थे। इस शुभ अवसर पर शेख इनायतुल्लाह साहब हस्त मुक्त होकर खर्च करते थे। मिलादें कराते थे, फकीरों को वस्त्र देते थे।

नवाब मुहम्मद अब्दुशकूर धर्मपुर जब देवा शरीफ आते थे तो सरकार वारिस पाक की दावतों का प्रबन्ध करते थे। हफ्तों देवा शरीफ में ठहरते और अपने निवास के समय में प्रतिदिन दोनों समय अच्छे भोजन प्रस्तुत करते थे। मोहर्रम की दसवीं तिथि तक लगातार हुज़ूर के आस्ताने पर डंगे तैयार कराते थे। दसवीं को सबील (प्याऊ) चलवाते थे और इमाम हुसैन की नज़र करते थे। हाजी साहब के विसाल

Scanned with CamScanner

मिशकात-ए-हक़्क़ानिया

(जीवनी वारिस पाक)

लेखक
मौलवी फ़ज़ल हुसैन साहब सिद्दीक़ी वारसी

जुबैरी बुक डिपो
आस्ताना रोड़, देवा शरीफ, बाराबंकी (यु.पी.)

Scanned with CamScanner

(दुनिया से पर्दा करने) के बाद भी उनके इस नियम में कोई अन्तर नहीं आया। दूसरे धनी और अमीर लोग भी हुजूर वारिस पाक के नाम पर बहुत सा धन व्यय करते थे। ऐसे लोगों में ठाकुर पंचम सिंह, रईस मलावली जिला मैनपुर, ठाकुर भगवान सिंह, राजा दोस्त मुहम्मद खाँ वारिसगंज महुअना, अब्बास हुसैन खाँ जमींदार बाबूपुर, चौधरी लताफत हुसेन रामदाना, शेर मुहम्मद खाँ रायपुर, जिला सीतापुर, शाह हुसैन खान साहब लंगर (भण्डारा) चालू रखते थे। अपनी बारी का एक दिन भी किसी दूसरे को देना कष्टदायक था। भण्डारे में साधारण भोजन नहीं तैयार किया जाता था।

पंचम सिंह और ठाकुर भगवान सिंह होली पर्व के अवसर पर देवा शरीफ उपस्थित होते थे। सरकार वारिस पाक के सभी सेवकों फकीरों को जो देवा शरीफ उपस्थित रहते थे, वस्त्र बदलवाते थे। प्रत्येक सेवक, धोबी, हज्जाम, भिश्ती, झाड़ूकश इत्यादि को पुरस्कार देते थे। दो-दो मास की बारी द्वारा लंगर जारी रहता था। अन्य रईस और अमीर भी भण्डारे में भाग लेने का प्रयत्न करते थे किन्तु अवसर नहीं मिल पाता था। डेयोढ़ी पर बैठने वाले गरीबों, भिखारियों को आगन्तुकों द्वारा दान प्राप्त हो जाता था। धनी मानी सम्पन्न लोगों के अतिरिक्त साधारण लोगों को भी कभी-कभी यह शुभ अवसर प्राप्त होता था। मुख्यत: अधिक अवसर साधारण लोगों को ही प्राप्त होता था। जब हुजूर उनके मकान पर पधारते तो उनकी रात शबेबरात और दिन ईद बन जाता था। जिस भाग्यशाली व्यक्ति को यह शुभ अवसर प्राप्त हो जाता वह अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति और सामग्री को हुजूर ही का समझता था और एक विचित्र उमंग और उल्लास लोगों में दिखाई पड़ता था। हुजूर के आने की खुशी में लोग अपना घर-बार सहर्ष लुटा देते थे।

मौलवी हफीज हसन साहब अमीन, दीवानी अलीगढ़ के घर जब हुजूर आते तब उनके पिता घर की समस्त सामग्री और सम्पत्ति लुटा देते थे। यहाँ तक कि हुजूर के चले जाने पर बर्तन और जिन्स तथा अन्य समाग्री कर्ज लेकर प्रबन्ध किया जाता था। जेवर, कपड़े, बर्तन, नकदी कोई चीज़ भी नहीं छूटती। केवल शरीर पर पहने हुए वस्त्र ही रह जाते थे। यदि किसी के घर हुजूर किसी कारण से नहीं जा पाते तो उसका जीना दूभर हो जाता। वह अपनी जान तक नष्ट करने के लिए तैयार हो जाता था। जब हुजूर उसकी दशा से प्रभावित होते तो उसके यहाँ पधारते थे। हुजूर के नाम पर मिटने वाले अपनी वस्तुओं तक को हुजूर के नाम से सम्बन्धित कर देते थे। राजा दोस्त मुहम्मद खाँ महुवना जिस ग्राम में निवास करते थे उसका नाम वारिसगंज

रखा है। ठाकुर पंचम सिंह और सैय्यद मारूफ शाह ने अपने बागों के नाम वारिस बाग रखे हैं। मारूफ शाह ने अच्छे आम के वृक्षों के नाम वारिस पसन्द रखा है। सैय्यद गनी हैदर वकील सरकार गया ने अपने मकान पर मोटे अक्षरों में होवल वारिस खुदवाया है।

हाजी आयशा बीबी वारसिया रईस गया जो बहुत ही दानी स्वभाव, पवित्र हृदय श्रद्धा और प्रेमी महिला हैं। पवित्र आस्ताना (समाधि भवन) के बहुत से शानदार भागों को उन्होंने बनवाया है। संगमरमर की मुसहरी और मदरसा वारसिया इन्हीं के साहस की देन है। बहुत से लोगों के पास इस समय तक सौगातें मौजूद हैं जैसे वस्त्र, बाल, दाँत, सैकड़ों वस्तुयें लोगों के पास सुरक्षित है। मौलवी सैय्यद गनी हैदर वारसी रईस गया की आदरणीय पत्नी ने हुजूर के सौगात का एक अमूल्य भण्डार एकत्रित किया है। बहुधा लोगों ने अपनी सन्तान के नाम हुजूर वारिस पाक के श्रेष्ठ नाम से सम्बन्धित कर नामकरण किया है। जैसे गुलाम वारिस, नेयाज वारिस अब्दुल वारिस, वारिस फातिमा, वारिस बानो, कनीज वारिस इत्यादि इत्यादि।

पूज्य हाजी बाबा जिस पालकी द्वारा पधारते थे। उस पालकी को बड़े-बड़े धनी, अमीर और रईस कहाँरों को हटाकर स्वयं पालकी उठाते थे। बांकीपुर में सैय्यद सर्फुद्दीन साहब वारसी स्वयं पालकी अपने कन्धों पर लेकर कोसों तक दौड़े हैं। पालकी ढोना तो एक बड़ी बात है। लोग पालकी छू लेने को ही अपना सौभाग्य मानते थे। देखा गया है कि हुजूर के वजू (हाथ मुँह धोने) के पानी को प्रसाद समझकर आपस में बाँट लेते थे। कोई पीता और कोई आँखों से लगाता था। कोई सिर और मुख पर मलता था। कुछ लोगों के पास वह पवित्र जल आज तक सुरक्षित है। देखा गया है कि काजी मुनीर आलम साहब दरभंगा ने पूज्य हाजी बाबा को अपने घर ले जाते समय अपनी दाढ़ी से रास्ता साफ करते हुए घर ले गये थे। उनकी मकान की कुर्सी ऊँची थी अत: उन्होंने सीढ़ी को तोड़वा दिया और स्वयं सीढ़ी के स्थान पर खड़े हो गये। जिस पर होकर हुजूर और उनके साथी गुजरे। अभिप्राय यह है कि जो आदर सम्मान पूज्य हाजी बाबा का संसार के प्राणियों की दृष्टि में था अथवा जो प्रेम और श्रद्धा शिष्य अथवा चेलों के हृदय में थी उससे 'फआनो रब्बोका हत्ता यातेकल यक़ीन' (बस बन्दगी करो अपने रब की जहाँ तक यकीन और विश्वास तुम्हें प्राप्त है का अर्थ समझ में आता है।)

मौलवी अहमद साहब वकील आगरा अपने भतीजे मियाँ मेहंदी का हाल लिखते हैं जिसका सारांश यह है कि जब मैंने अक्टूबर १९०४ में देवा जाने का

Scanned with CamScanner

इरादा किया तो मियाँ मेहंदी अली खाँ ने अपने सभी सम्बन्धियों से कहा कि मेरा इरादा एहराम (पीत वसन) लेने का है। आप लोगों से विदा लेता हूँ और सम्पूर्ण सम्पत्ति और जायदाद खुदा के सम्पूर्ण सुपुर्द करता हूँ। इस बात से उनके अनेक निकटवर्ती और सगे सम्बन्धियों को भारी दुःख हुआ। मियाँ मेहंदी एहराम पोशी की लालसा और कदमबोसी के शौक की यह दशा थी कि उन्होंने जिस दिन से यात्रा आरम्भ किया उसी दिन से पानी के अतिरिक्त भोजन त्याग कर दिया। बाराबंकी स्टेशन पर उतर कर पैदल देवा शरीफ तक यात्रा किया क्योंकि जहाँ हुज़ूर प्रकाश पुंज हों वहाँ सवारी से जाना अशिष्टता है भोजन इसलिये त्याग दिया कि ऐसे पवित्र स्थान स्वर्ग भूमि में मल-मूत्र त्यागना सभ्यता से परे है। यह कोई एक ही बात नहीं ऐसे अनेकों शिष्य हैं जिन्होंने गुरु-चरणों से दलित भूमि या निवास स्थान को स्वर्ग मान लिया। अनेकों सुख वैभव का परित्याग कर पूज्य हाजी बाबा के चरणों में अपना जीवन व्यतीत कर दिया है।

खान बहादुर मौलवी बशीरुद्दीन साहब सम्पादक 'अलबशीर' हुज़ूर वारिस पाक के शरीर त्याग पर शोक व्यक्त करते हुए लिखते हैं :

आसाधारण शिष्यों की बात तो अलग है। हाजी साहब के साधारण शिष्य जितना प्रेम और स्थाई विश्वास अपने हृदय में हाजी बाबा के प्रति रखता था उतना अन्य पीरों (गुरुओं) के शिष्यों में नहीं देखी जाती है। अतिशयोक्ति न होगी कि पूज्य हाजी बाबा के शिष्यों का प्रेम श्रद्धा अत्यधिक थी। उपर्युक्त लेख से विदित है कि सन्त साधुओं और बुजुर्गों के दिलों में भी हुज़ूर वारिस पाक के शिष्यों की श्रद्धा, आस्था और प्रेमभाव की चेतना है।

हुज़ूर वारिस पाक की दरगाह में अपने-अपने विचारानुसार लोग कई प्रकार से आते थे। हिन्दू लोगों को कुछ परिक्रमा करते और भुईपरी करते आते थे और मुसलमान अपनी ढंग की रियाज़तों (तपस्याओं) द्वारा पहुँचाते थे। उनके हृदय में कितना उल्लास, कितनी प्रसन्नता उनमें पाई जाती थी जो देखते ही बनता था। उनका प्रेम भाव दूसरों के हृदय को उद्वेलित कर देता था। उनके मनोभाव का वर्णन लेखनी की शक्ति के बाहर है। इस समय जब कि पूज्य वारिस पाक हम लोगों की बाह्य दृष्टि से ओझल है या दिखाई नहीं देते पर लोगों में वही प्रेम और भाव बना हुआ है जो जीवन काल में लोगों का था। सैय्यद मारुफ शाह साहब हुज़ूर वारिस पाक पुराने प्रेमियों में हैं। आज भी हुज़ूर का वही पूर्ववत सम्मान और आदर करते हैं जैसे हुज़ूर पाक के जीवन में करते थे। उनके तरीके अदब से प्रकट करते हैं कि उनके

पूर्ण और स्थाई विश्वास की सीमा कहाँ तक थी? उनके कर्म और वचन से विदित होता है कि वह हुज़ूर को विद्यमान और सब कुछ देखने वाला समझते और जानते हैं। यह शिष्य की विशेष मर्यादा है जैसा तुराब अली कलन्दरया का कथन है-

हाजिर, नाजिर मुरीद उस तरह जाने पीर को। जिस तरह अहवाल बंदा से खुदा आगाह हो। मारूफ शाह साहब इतना प्रेम विभोर हैं कि उनके विचार में किसी की टीका टिप्पणी का कोई ध्यान नहीं रहता है। न किसी के हंसी मजाक की कोई चिन्ता ही करते हैं। अपने विचार और विश्वास में पूर्णतः विलीन दिखाई पड़ते हैं। उपस्थितगण विशेष प्रभावित हो जाते हैं जब वह अपने हार्दिक तपन (सोज) और पिघलाव से प्रार्थना करते हैं। ऐ मेरे मालिक महाराज, मेरे स्वामी! अमुक व्यक्ति की ओर से अमुक वस्तु आपके समक्ष सादर उपस्थित की जाती है। आप इसे स्वीकार करें। पीर परस्ती (गुरु पूजन) की यह दशा केवल पूर्वी सभ्यता के निवासियों में ही नहीं पायी जाती वरन् पाश्चात्य सभ्यता के व्यक्ति भी हुज़ूर के प्रेम रंग में सने दिखाई देते हैं। उदाहरणार्थ शरफुद्दीन साहब बैरिस्टर का नाम प्रस्तुत किया जाता है जिनके प्रेम सम्बन्धी मनोभाव आश्चर्यजनक हैं और प्रेम हेतु शिक्षाप्रद हैं। यहाँ तक कि स्वयं हुज़ूर पाक ने उनके प्रति कहा 'लहमक, लहमी, व दम्मक दम्मी' हमारा शरीर तुम्हारा शरीर है और तेरा रुधिर मेरा रुधिर है।

शेख बशीर हुसेन साहब किदवई बैरिस्टर एटला निवासी इंग्लैण्ड हुज़ूर वारिस पाक के प्रति अपना विश्वास भाव इस प्रकार लिखते हैं जिसका सारांश निम्नलिखित है-बचपन ही में मैं वारिस पाक का शिष्य हो गया। यद्यपि मेरे दोनों बड़े भाई मौलाना शाह फजलुर्रहमान साहब रह० के शिष्य थे तो भी हाजी बाबा में बड़ी श्रद्धा और विश्वास रखता था और स्वभावतः उनकी ओर आकृष्ट था। भौतिकवादी यूरोप की बहुत खाक छाना था। लगभग सभी प्रसिद्ध नगरों तथा रूस की भी यात्रा किया था। नई-नई भौतिकी खोजों और वर्तमान तरक्की पर विचार किया और महान मैकाले की धाक मेरे हृदय पर जमी थी। तथापि हुज़ूर वारिस पाक के निकट आकर जो कुछ भी हमको प्राप्त हुआ है। उसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती। मुझे बचपन से ही आश्चर्य था वह कौन सी शक्ति है अथवा कैसा आकर्षण है? जो सभी के मन को मोहित और आकर्षित कर रहा है। विचित्र दशा है, ज्ञानी मूर्ख, काफिर-मुसलमान, मस्त, होशियार, नयी और पुरानी रोशनी वाले सभी खींचे चले आते थे। हाजी बाबा की वेश-भूषा सरल और साधारण थी। न तो गुरुदेव किसी के लिये दुआ करते और न किसी के लिए बद्दुआ (अभिशाप) ही करते। झाड़ फूंक छू

Scanned with CamScanner

मन्त्र का जमाना था किसी से कोई सम्बन्ध नहीं था। यहाँ तक कि किसी को अपने पास अधिक देर तक बैठने भी न देते थे। फिर भी लाखों मनुष्य प्रत्येक श्रेणी के महिला पुरुष आप पर अपनी जान तक अर्पित करने को तैयार रहते थे। यद्यपि हमने उनके द्वारा कोई अनहोनी या चमत्कार नहीं देखा। फिर भी मुझे दृढ़ विश्वास है कि यदि वह चाहते तो उनके एक इशारे में संसार तहस-नहस हो सकता था। पूज्य हाजी वारिस पाक के प्रति सभी विचार और ज्ञान वालों का प्रेम बना हुआ था जिससे विदित है कि ईश्वरीय ज्योति और शक्ति के प्रभाव के समक्ष सम्पूर्ण ज्ञान और विज्ञान की शक्ति व्यर्थ है।

पूज्य हाजी वारिस बाबा एक अद्‌भुत ईश्वरीय चमत्कार थे। जिनसे सभी प्राणी प्रभावित हो जाते थे। उनसे सम्बन्धित और प्रेम-भावी अपनी सम्पूर्ण आशाओं को हुज़ूर वारिस पाक से आबद्ध कर लेते थे। वह अपने धर्म और संसार सबको हुज़ूर के एक संकेत पर अर्पित करने को तत्पर रहते थे। शैदा मियाँ वारसी लिखते हैं कि बिहार के सफर में आप सेखपुरा जाते थे। हकीम याकूब बेग वारसी खैरावादी भी साथ थे। अचानक उनका दस वर्षीय पुत्र पहाड़ पर से गिर पड़ा। उनका गाँव पहाड़ की तलहटी में स्थित था। किन्तु हकीम साहब सरकार के प्रेम वंशीभूत थे। वह घबराये नहीं। अति धैर्यवान बने रहें। कुछ समय पश्चात् जब लोग उस बालक को उठाकर लाये तो आश्चर्य की सीमा न रही। उसे कहीं चोट भी नहीं आयी थी आपने मुस्कुरा कर कहा, 'याकूब यदि तुम घबरा जाते तो लड़का जीवित न बचता जो ख़ुदा पर भरोसा करता है। ख़ुदा उसकी जरूर मदद करता है।' ऑनरेबुल जस्टिस सरफ़ुद्दीन साहब वारसी के प्राण निछावर करने की एक घटना गनी हैदर साहब वारसी लिखते हैं। जब हुज़ूर दरभंगा में विद्यमान थे। सरफ़ुद्दीन साहब भी उनके साथ थे। जिस घर में ये लोग थे उसमें का कपड़े का पंखा लकड़ी सहित टूट गया। मौलवी सरफ़ुद्दीन साहब ने उस पंखे को अपनी गर्दन पर रोककर सरकार वारिस पाक को बचा लिया। हुज़ूर एक हल्की मुस्कान सहित बोले,' बैरिस्टर चोट तो नहीं आयी।' हाथ जोड़कर कहा कि प्राण हाज़िर है। हुज़ूर ने अपनी आन्नदमयी अवस्था में कहा 'ला तर्कबुस्सलात व अन्तुम सोक्कारा' का अर्थ बताओ। शरफ़ुद्दीन साहब ने कहा अर्थ है कि नशा की दशा में नमाज़ के निकट न जाओ। हुज़ूर ने कहा हाँ। हाँ। नशा किस चीज़ का? इश्क का या शराब का। तत्पश्चात् अपने बाँये हाथ की ओर इशारा करके कहा, 'इसको सिजदा करो तो शिर्क है।' पुनः एक विशेष अनुमान से देखकर कहा 'इसको सिजदा करो तो ठीक इस्लाम है।' सैय्यद साहब

कहते हैं इस कथन पर मेरी दृष्टि के सामने एक बिजली सी चमक उठी। उसके प्रकाश से प्रभावित होकर मैंने अपना सिर सिजदे में रख दिया जो कुछ दर्शनार्थ था उसका वर्णन सीमा से परे है।

अपके शिष्यों में ऐसे लोग भी थे जिनकी नजरों में संसार की प्रत्येक वस्तु आपके रूप अनुप के प्रति तुच्छ थी। वास्तविकता यह है कि हुस्न और ईश्क का एक जमाना था जिसको ईश्वर ने आप में प्रकट किया। तात्पर्य यह है कि लोगों का आप से आत्मीय सम्बन्ध था। साधारणतः जो प्रेम शिष्यों के हृदय में था वह अद्वितीय था। आपके समाधि भवन पर दर्शनार्थियों का जमघट रहता है। उमंग और उल्लास सहित **अस्सलातो वस्सलामो अलैका या इब्न रसूलुल्लाह** (ऐ रसूलल्लाह के बेटे! आप पर सलात और सलाम है) के नारे लगाये जाते हैं और प्रत्येक व्यक्ति का मनोभाव कहता हुआ जान पड़ता था कि हमें धन सम्पत्ति नहीं चाहिए। यदि हमें कुछ चाहिए तो आप की गुलामी चाहिए।

प्रेम-समर्पण

हुज़ूर वारिस पाक का जीवन काल जितना महान और सम्मानित था उसकी बड़ाई अकथनीय है। आपकी एक भाव-भांगीमा पर एक संसार ही न्यौछावर होने को तैयार था। त्याग-परित्याग की ऐसी उमंगे दिख पड़ती थी कि दर्शक आश्चर्य चकित हो जाता था। आप, लोगों के हृदय सम्राट थे। आप के आन्तरिक प्रभाव से सभी प्रभावित थे। प्रेमावेश में जो कुछ हुज़ूर के दर्शन कर्त्ताओं से प्रकट हुआ वह सामायिक और क्षणिक नहीं था, वरन् स्थायी और सुदृढ़ था तथा उन चिन्हों को काल-चक्र मिटा न सका। ऐसी बहुत सी घटनायें मिलती हैं कि शिशु काल ही में चेला हुए। जवान होकर हुज़ूर का आदर सत्कार भी करते रहे तथा हुज़ूर के प्रेम में लीन रहे। इस सम्बन्ध में सैय्यद मोहियुद्दीन साहब बैरिस्टर एटला की शिष्यता की घटना ऐसी है जो लोगों को आश्चर्य में डाल देती है।

डाक्टर सैय्यद रियाजुद्दीन साहब ने लेखक मिश्कात हक्कानिया से पूछा। बात क्या है कि हुज़ूर वारिस पाक छोटे-छोटे बच्चों को शिष्य कर लेते हैं? जो पूर्णतः अबोध होते हैं और जिनको देखी हुई सूरत की पहचान भी नहीं होती किन्तु जब वह बड़े होते हैं तो उनका हृदय हुज़ूर वारिस पाक के प्रेम से ओत-प्रोत दिखाई देता है और प्रेम-विभोर रहता है। उन्होंने इसके उत्तर में जो कुछ भी कहा हो पर बात यही समझ में आती है कि यह विचित्रता पूज्य हाजी बाबा के आन्तरिक शक्ति का चमत्कार है और आपकी प्रेम धारा का प्रवाह है जो इसमें छोटे, बड़े, बच्चे और

Scanned with CamScanner

बूढ़े पड़ते हैं वह उनके प्रेम से वंचित नहीं रहते। अपना अंश उनको अवश्य प्राप्त होता है। जिन्होंने हज़रत का दर्शन किया है केवल उन्हीं तक प्रेम पुश्तों तक प्रेम बन्धन में बँधा रहा है और आज भी है। यही वह प्रेम चिन्ह है जो हुज़ूर वारिस पाक से प्रदान हुआ तथा सर्वदा अमिट भी है। पिता ने जो कुछ दान-उपदान अपने काल में जिस भाँति किया था, उसी भाँति उनके पुत्रों ने भी उन बातों को जीवित रखा। सोचनीय है कि लोग वैभव और सुख सामग्री होते हुए भी नंगे पाँव देवा की गलियों में फिरते हैं। उत्तम बिछौने छोड़कर धरती पर लेटते हैं तथा वैभव का परित्याग कर कष्ट से स्नेह करते हैं। यह सब प्रेम-भाव तथा परित्याग है।

बहुत से लोगों ने गरीबों के सहायता के निमित्त जिससे हाजी बाबा बहुत प्रसन्न होते थे। बड़ी-बड़ी सम्पत्ति वक्फ (दान) कर दिया था। जैसे ठाकुर पंचम सिंह, रईस मलावली जिला मैनपुरी ने दो हजार रूपये वार्षिक की सम्पत्ति हुज़ूर के आस्ताने (चौखट) के लिये दान किया है। सैय्यद गनी हैदर साहब गया जिला और उनकी श्रीमती महमूदुन्निशा वारसिया की ओर से पांच सौ बीघे भूमि नरायणपुर गंजूरी जिला गया में दान स्वरूप है। जिसकी वार्षिक आय लगान देने के पश्चात् 254 रूपया है। सैय्यद गनी हैदर साहब ने अपने पुत्रों की घर-बार सबका पूर्ण भाग दे दिया है किन्तु ग्राम नरायणपुर गंजुरी किसी को नहीं दिया, दान स्वरूप ही रहा।

इस भांति अनेकों लोगों ने सम्पत्ति, भूमि भवन, आदि वक्फ किया है जिनकी आमदनी से प्रकाश, स्वच्छता, मरम्मत, पानी, फर्श, गरीबों में विभाजित करना मस्जिद और उसके आवश्यक सामानों में उसकी आय व्यय होती है।

शिक्षा दीक्षा

पूज्य हाजी वारिस बाबा को नख से शिख तक प्रेममय था। वह जिसका हाथ पकड़ लेते थे तत्काल उसके हृदय में प्रेम प्रवाहित हो जाता था। उस शिष्य को शिक्षा की आवश्यकता नहीं होती। इस प्रेम मार्ग में तप-जप कोई महत्व नहीं रखता था। केवल हुज़ूर का हाथ पकड़ लेना सब कुछ था। इसी को लोग धर्म और संसार हेतु वरदहस्त समझते थे। शिष्यों का प्रेम-भाव और अटूट विश्वास उनको सभी वस्तुओं से निश्चिंत कर देता था। उनका मंत्र और जप केवल एक शब्द (या वारिस) ही है। अधिकांश शिष्य यही नाम रटते-रटते पराकाष्ठा तक पहुँचे हैं। मौलाना अब्दुल करीम साहब जिला मुंगेर का ब्रह्मचर्य और पवित्रता विख्यात है। जिनका तप छिपे तौर पर या वारिस था और वे हाजी बाबा का ध्यान करते थे। जिसके प्रभाव से उनके उपर निमग्नता और विलीनता की दशा छा गयी। संसारिक

सम्बन्धों से अलग होकर एकान्त में पड़े रहते थे और उसी रूप में प्राण त्याग भी किया।

एक बार की बात है मौलवी सैय्यद अली रशीद वारसी बाँकीपुर ने अंगूठे के नख से दबाकर लिखने का अभ्यास किया था। इसी प्रकार एक कागज पर यह चरण लिखकर सरकार वारिस पाक की सेवा में भेज दिया जो निम्न था -

हबीबे ख़ुदा का है वारिस अली।

संयोगवश उसी समय राजा दोस्त मुहम्मद साहब तअल्लुकेदार महुवना का एक पत्रक हुज़ूर को इस आशय का मिला कि मुझे नित्य प्रति पढ़ने हेतु कोई मंत्र प्रदान किया जाय। सरकार वारिस पाक ने उसी समय आदेश दिया कि यही कागज लिफाफे में बन्द करके भेज दो और लिख दो इसी को जपा करें। इसी जाप से राजा साहब में अध्यात्म के विशेष गुण दृष्टिगोचर होने लगे। तात्पर्य यह है कि पूज्य हाजी वारिस बाबा के नाम वारिस का जाप करने तथा अनवरत पढ़ने से सम्पूर्ण कठिनाइयां समाप्त हो जाती है। मिर्जा मुहम्मद इब्राहीम बेग शैदा नकल करते हैं कि अजमेर शरीफ में एक मैमन को देखा। जो गुर्दा के दर्द में पड़ा था। जब कभी कुछ आराम पाता थोड़ी, थोड़ी देर पश्चात् या वारिस कहता है। दूसरे दिन उसको दर्द से छुट्टी मिल चुकी थी। मैंने उस से पूछा कि कल बार-बार तुम किस बुजुर्ग का नाम ले रहे थे। उसने कहा नाम वाले का तो पता-ठिकाने का ज्ञान नहीं है किन्तु बहुत दिन हुए स्वप्न में एक दरवेश (फकीर) ने कहा था कि जब कोई कष्ट हो या वारिस कहा करो। मैं सदैव ऐसा ही करता हूँ। मेरा कष्ट दूर हो जाता है। कल भी इस प्राण घाती दर्द से इसी नाम द्वारा मेरी जान बची है। इस समय पूर्ण स्वस्थ हूँ। हाजी बाबा के पुनीत द्वार की यह घटना है कि एक वृद्धा कुरसी कस्बा से चार कोस चल कर प्रति दिन सरकार वारिस पाक के चरण स्पर्श हेतु आती थी। कुछ समय सरकार के पास बैठती पर जब हुज़ूर के सेवक उसे बाहर कर देते तो विवश होकर चली जाती थी। पूर्ववत वह एक दिन प्रातः उपस्थित हुई और अपनी व्याकुलता में ही हुज़ूर वारिस पाक के चरण स्पर्श किया। नियमानुसार लोगों ने उसे बाहर कर दिया, महान आस्ताने के पूर्वी दिशा के कुएँ में वह या वारिस कह कर कूद गई। सभी लोगों ने यह सोचा कि कुआँ पुराना और गहरा है साथ ही उसका व्यास भी छोटा है अब यह बुढ़िया जीवित न होगी। शैदा साहब वारसी ठाकुर पंचम सिंह, सैय्यद गनी हैदर ये सभी लोग जो वहाँ थे दौड़ कर पहुँचे तो देखा कुएँ का जल सूख गया था। भूमि दिखाई दे रही थी और बुढ़िया आराम से खड़ी या वारिस का जर्ब (नारा, उद्घोष)

Scanned with CamScanner

लगा रही थी। अमीर बख्श भिश्ती ने उसको कुएँ से बाहर निकाला। हम लोग उसे देखकर दंग रह गये। उस वृद्धा को कहीं चोट नहीं थी। वह पूर्ववत अपने घर चली गयी। उसका नाम भोली था। इस घटना के पश्चात् बहुत दिनों तक जीवित रही। सैय्यद गनी हैदर साहब ने उस बुढ़िया द्वारा लेखक मिश्कात-हक्कानिया को यह घटना सुनवाया था। वह बुढ़िया हाफिज प्यारे साहब के यहाँ रहती थी। उसका कहना है कि मैं सिर के बल गिरी थी। परन्तु मुझे ऐसा लगा कि किसी ने मुझे बिठा दिया है। तात्पर्य यह है कि हुजूर का प्रेम और महान नाम का जाप ही सम्पूर्ण तपस्या थी। आपके शिष्य इन्हीं द्वारा उच्च और महान हुए और आज भी होते हैं। हुजूर के शिष्यों की दशा यह कहती हुई जान पड़ती है।

ख़ुदा से तेरा चाहना चाहता हूँ। मेरी आरजू देख क्या चाहता हूँ?

सैय्यद मुहम्मद इब्राहीम शाह वारसी पूज्य हाजी बाबा के अन्तिम काल में देवा शरीफ में उपस्थित हुए। इस हाजिरी के पूर्व रियासत रामपुर में पदासीन थे। मुंशी फज़ले हुसैन साहब लेखक मिश्कात हक्कानिया से स्वयं ब्यान करते हैं कि मेरा इरादा था कि मैं पूज्य हाजी बाबा को रियासत रामपुर ले जाऊँ किन्तु हुजूर के दरबार का वाह्य ढंग देख कर कि उनके शिष्यों को तप-जाप की कोई शिक्षा नहीं दी जाती है और न कोई नियम, पाबन्दी और न कोई प्रबन्ध है। मुझे यह ख्याल आया कि आपको शिक्षा देना नहीं आता और न दूसरे सम्प्रदाय की भाँति नक़ूश (चिन्हों) इत्यादि की शिक्षा दी जाती है। फिर मैं आपकी सेवा में उपस्थित हो रामपुर चलने की प्रार्थना किया। आपने कहा 'हम को तो कुछ आता नहीं है, हम क्या चलें? इस कथन से मैं लज्जित हुआ पर मुझे यह ख्याल आया कि गुरू जनों के हृदय पर इस प्रकार की आभा आभासित हुआ करती है, ऐसा ही हुआ होगा। शिक्षा तो नक्शबन्द सम्प्रदाय की ही अच्छी है। मैंने पुनः प्रार्थना किया हुजूर आप वहाँ चले, अच्छा स्थान है। इस पर आप मुस्कुराये और कहा,'वहाँ बड़े-बड़े क़ाबिल (योग्य) हैं और बहुत तरीकों (सम्प्रदाय) के लोग हैं, नक्शबन्द, कादिरिया, चिश्तिया, और तरीके (पंथ) तो बहुत हैं। शतारिया, ओवैसिया, शाजलिया, मलामतिया इत्यादि हैं। हर एक की शिक्षा भी अलग-अलग है। नक्शबन्दिया वाले कहते हैं मुकामात अशरा (दस स्थान) में पाँच आलमे अम्र (आदेश का पाँच संसार) और पाँच प्राणी लोक हैं प्रत्येक लोक में कल्बे रूह इत्यादि बहुत सी बातें बताया और दायरा इत्यादि से सम्बन्धित बातें बताकर कहा एक स्थान पर कुछ गर्म होकर आप ने कहा दयार-ए-ऊला में पीर-मुरीद (गुरू-शिष्य) दोनों को सावधान रहना चाहिये।

मोहद्दिद साहब ने ढ़ाई दायरा (वृत्त) और बढ़ाया है। सानिया सालसा कौस इस प्रकार नक्शबन्द सम्पूर्ण दायरा और उनकी विशेषताओं का वर्णन किया जिसे आज तक मैंने किसी पुस्तक में नहीं पाया। अन्ततः कहा नक्श इत्यादि सब ढ़कोसले हैं। सैय्यद साहब कहते हैं कि मैंने कहा बिस्त-दर-बिस्त का नक्श बहुत प्रसिद्ध है। आप ने पुनः कहा नक़ूश बहुत हैं। नक्श की तारीफ यह है कि पूरे नक्श में कोई अंक दो बार न आये। इसी प्रकार धारा प्रवाह में नजूम, ज्योतिष के ऐसे गुण बतायें जिसको आज तक मैंने देखा और न सुना था। फिर अन्त में कहा 'यह सब शहियात-खुराफात है। मेरे यहाँ तो केवल प्रेम ही प्रेम है और प्रेम की तारीफ यह है कि किसी वस्तु का प्रेम, प्रेमी को अन्धा और बहरा बना देता है। जब मनुष्य ईश्वर का हो जाता है ईश्वर उसका हो जाता है।' ये सब कुछ सैय्यद इब्राहीम शाह की शंका का जवाब था। वरन् सरकार वारिस पाक की शिक्षा या प्रभाव जो कुछ था सो प्रेम ही था। जो हाथ पकड़ते ही शिष्यों को प्राप्त हो जाता था जैसा उसका पात्र और जैसी उसकी योग्यता होती थी। हुजूर वारिस पाक ने कहा है 'मेरे यहाँ तो प्रेम ही प्रेम है।'

जिन लोगों ने पूज्य हाजी बाबा से शिक्षा की इच्छा किया। आप ने उनकी स्थिति-अनुसार उनको अवश्य ही कुछ बताया किन्तु वह भी भिन्न-भिन्न लोगों हेतु अलग-अलग था। अतः दी गई शिक्षा क्रमबद्ध होना असम्भव है। क्योंकि आपके शिष्यों की संख्या अनगिनत है और आप किसी एक स्थान पर स्थाई ढंग से नहीं रहे। आपका अधिकाँश जीवन यात्रा तथा भ्रमण में रहा जिससे भिन्न-भिन्न स्थानों पर किसी को क्या शिक्षा हुई किसी को पता नहीं है? जीवन काल के अन्तिम भाग में लोगों की शिक्षा अवश्य होती किन्तु किसी के लिये कुछ और किसी के लिये कुछ और इस्लाम धर्म वालों की शिक्षा भी उनकी आवश्यकतानुसार थी। किसी के लिये फ़राएज़ (मुख्य कर्तव्य) पर और किसी के लिये सुन्नत फराएज़ (अनिवार्य और अनिवार्य) दोनों के लिये कहा किसी को मंत्र जाप की शिक्षा हुई। उदाहरण कुछ ख्याति प्राप्त लोगों के नाम जो परहेजगार और ईश्वर से डरने वाले (मुत्तकी) थे जैसे मौलाना अब्दुलकरीम साहब शेखपुरां, मौलाना मुफ्ती अबूजर साहब सम्भल, नजमुद्दीन साहब बाँकीपुर, हाफिज अब्दुल कय्यूम साहब करनाल, हाजी गुलाम मुहम्मद साहब गुजराती, हिदायतुल्लाह साहब मोहद्दिस सूरती, मौलवी अब्दुल अजीज साहब बिहारी इत्यादि इत्यादि। अधिकांश ऐसे हैं जो अपनी इबादत-रियाज़त में अद्वितीय थे। शेख मज़हर अली किदवाई को आदेश था प्रति दिन एक पारा (अध्याय)

Scanned with CamScanner

क़ुरआन शरीफ पढ़ने का। हाफिज़ खुदा बख्श साहब जो अन्त में अहमद शाह कहलाये के लिये नमाज़ माकूस का आदेश था, कन्हैयालाल एडवोकेट को सदैव भूख व्रत धारण करने का। इसी प्रकार जिन लोगों को जप-तप और मनन-चिन्तन की शिक्षा दी गई उसमें भी भिन्नता पाई जाती है। किसी को आदेश हुआ, कोई सांस (स्वास) खाली न जाय अर्थात् स्वास के साथ ईश्वर स्मरण किया जाय किसी के लिये समय की पाबन्दी लागू किया गया ईश्वर के एक ही नाम का जप कई लोगों को कई ढंग से हुज़ूर वारिस पाक देते। उदाहरण स्वरूप वली शाह 'हक' की जाप में हृदय पर ऐसी चोट (जर्ब) लगाते थे मानो किसी वस्तु पर हथौड़े की चोट पड़ रही है। मासूम शाह इसी शब्द को इस प्रकार करते थे जिसकी जर्ब ऊपर की ओर होती थी। हक्कुल्लाह शाह इसी नाम 'हक' का जाप करने में जर्ब लगातार और अविरल हुआ करता था। यतीम शाह साहब इसी हक का जाप स्वांसों के विचार सहित करते थे नियामत अली शाह का जाप 'जिक्र असदी' था। नियामतुल्लाह शाह जाकिर अस्बात (ईल्लाह के जापक) थे। रहीम शाह साहब को पास अन्फास (स्वांसानुसार) प्रत्येक दो जर्ब का निर्देश था।

एक बार हुज़ूर वारिस पाक ने अहमद वारसी से कहा 'जिस ढंग से मशाएख़ीन (बुजुर्ग लोग) जिक्र सेह जर्बी (एक प्रकार का जाप) सिखाते हैं उसका लाभ क्षणिक होता है। हाँ! यदि इस ढंग से किया जाय तो आत्म-शुद्धि हेतु अधिक लाभदायक होता।' यह कहकर तीन बार उस जाप को आप ने कर के शाह साहब को समझाया। मिर्जा इब्राहीम बेग वारसी लिखते हैं कि हम ने स्वयं देखा है जब हुज़ूर यह जिक्र (जाप) करते थे तो आपके हृदय के नीचे तीन पसलियां क्रमशः प्रत्येक जर्ब पर हृदय के ऊपर चढ़ जाती थीं। शाह शाकिर अली कहते हैं कि हाफिज अहमद शाह वारसी अकबराबादी एक बार रात में देवा शरीफ पहुँचे और उसी समय हुज़ूर की सेवा में हाजिर हुए। हुज़ूर वारिस पाक इस्तिंजा (लघु शंका) हेतु उठे और निवृत्त हो बिछौने पर आ कर जाप करने के आसन में बैठ गये तथा तीन बार ज़िक्र किया। प्रथम बार के ज़िक्र (जाप) में सम्पूर्ण कक्ष ओजमयी हो गया। प्रकाश मनोहर और सुहावना था जो अकथनीय है। दूसरी बार सम्पूर्ण कक्ष में आप ही आप हैं। तीसरी बार भी यही दशा थी चारों ओर आप ही दिख पड़ते थे। पुनः आप विश्राम करने लगे वह कुछ ऐसा दृश्य था जिस की कांति और विभूति का वर्णन करना कठिन है।

मिर्जा मुहम्मद इब्राहीम बेग शैदा लिखते हैं कि एक बार हुज़ूर वारिस पाक

कुछ अस्वस्थ हो गये। उनकी सेवा सुश्रुषा में चार सेवकों ने बड़ी सावधानी और लगन से किया। सेवा कोई बहुत असाधारण न थी पर हमारे महान गुरू ने उन सेवकों से कहा 'वह शग्ल' (तप) जो प्रत्येक सम्प्रदाय और पंथों के साधु, महात्माओं के लिये अनिवार्य है और मनुष्य को गुप्त रहस्यों से सूचित करता है और खोजी को ख़ुदा से मिलाता है। वह तप (शग्ल) सुल्तानुल अज़कार है। उसके तापी को अनेकों बाधाओं के सम्मुख होना पड़ता है और जब बहुत दिनों तक तपस्या करता है तो हज़ार में एक तपस्वी को प्रारम्भिक दशा की खबर होती है। लेकिन हम तुम को आसान तरीका बतादें जिसमें तुमको कोई कठिनाई न हो। यह कह कर आप ने उन लोगों को शग्ल सुल्तानुल अजकार की शिक्षा दिया और आपकी प्रदत्त शक्ति द्वारा वे लोग शीघ्र सफल हुए और दो ही चार दिन में उस तप की प्रारम्भिक अवस्था का प्रदर्शन होने लगा।

शैदा मियाँ वारसी कहते हैं कि एक बार एक अच्छे तहबन्द फकीर ने मुझसे कहा आओ हम तुम को 'जिक्र असदी' बता दें। मैंने समय टालने के लिये उन से कहा कि दो सप्ताह बाद बता दीजियेगा और उसी दिन से इस जाप के गुण और लाभ पता लगाने में संलग्न हो गया। मुझे ज्ञात हुआ कि शाह शमसुद्दीन साहब कलन्दर पानीपती को जिक्र असदी अधिक प्रभावशाली था। इसकी चर्चा मैंने सरकार वारिस पाक के समक्ष रखा तो हुज़ूर ने कहा 'जिक्र असदी' लाभप्रद अवश्य है। किन्तु जिसका नाम असदी है वह कठिन भी है। इसलिये कि ज़ाकिर (जापक) को अनिवार्य है कि जब जिक्र असदी करे तो प्रथम शेरे खुदा के रूप का स्मरण और ध्यान करे। इसकी सफलता यह है कि जापक जनाब अली शेरे खुदा में ऐसा विलीन हो जाये कि जाप के समय उसके अंग प्रति अंग से शेरे खुदा अली मुर्तुजा की मर्यादा प्रकट होने लगे।

एक बार की बात है कि रात के ९ बजे होंगे। मैं हुज़ूर की सेवा में उपस्थित हुआ। हुज़ूर ने कहा, 'मारूफ शाह दरवाजा बन्द कर दो।' मैंने आदेश का पालन किया। हुज़ूर ने मुझसे पूछा 'जिक्र असदी' देखोगे। मैंने अर्ज़ किया जरूर देखूंगा फिर कहा 'डरोगे तो नहीं।' मैंने कहा कि हुज़ूर मालिक हैं। आदेश हुआ एक कोने में बैठ जाओ। मैं एक कोने में बैठ कर हुज़ूर की ओर देखने लगा। आप दो ज़ानू (वज्रासन) बैठ गये और आप के कांतिमयी मुख पर लालिमा दौड़ने लगी। थोड़ी देर में मैंने देखा। आप का सम्पूर्ण शरीर सिंह रूप में परिवर्तित होने लगा। आँखें लाल-लाल पूंछ शिर पर रखी हुई। उस समय मैं अति भयभीत हो गया मानों मेरी

Scanned with CamScanner

जान निकलने वाली ही थी। क्रमशः आप का शरीर जो सिंह रूप था धीरे धीरे सिमटने लगा और पुनः आप स्वरूप में आगये। उस समय मेरा भय कम होने लगा और मैं भी अपनी दशा में हुआ और हुजूर के कदमों में गिर पड़ा। पुनः आप ने कहा 'मारूफ शाह ज़िक्र असदी इस का नाम है।' एक बार पीराने पीर गौस पाक ज़िक्र असदी कर रहे थे, इसी दशा में उनके सुपुत्र सामने आ गये , आपने उनको एक थप्पड़ मारा। इस जाप में जापक की दशा बदल जाती है। इसी कारण से हमने तुमको एक कोने में बैठने को कहा था।

पूज्य हाजी बाबा के यहाँ नियम प्रबन्ध नहीं था। वास्तव में जो कुछ था आप का आदेश और आप की वाणी थी। आपके समक्ष सबकी दशायें प्रत्यक्ष थीं अतः आप उन दशाओं के अनुसार ही शिक्षा देते थे। एक बार कार्तिक के मेले में मुंशी अमीर जान मुन्सफ सहसराम ने मिर्जा मुहम्मद इब्राहीम बेग शैदा से कहा कि मेरी इच्छा है कि हाजी बाबा कोई मंत्र जाप मुझे सिखावें। शैदा लिखते हैं मैंने उसको हाजी बाबा के पास उपस्थित किया तथा नम्रतापूर्वक उनकी बात कहा,'हुजूर आनन्दित हुये और ईश्वर के एक नाम की शिक्षा बताई।' मुन्सफ के साथ उनके भाई, दो भतीजे और दो पुत्र भी थे। उन्होंने क्रमशः प्रत्येक की प्रार्थना पर कुछ समय शान्त होकर किसी को ''या अज़ीज़ो'' किसी को ''या रहमानो'' किसी को ''या मूजीबो'' किसी को ''या ग़फूरो'' पढ़ने का आदेश दिया। प्रत्येक की प्रार्थना पर हुज़ूर कुछ समय रूकते विचार करते थे, जिससे जान पड़ता है कि हुज़ूर प्रत्येक के अन्तःकरण का निरीक्षण करते और डाक्टर की भाँति रोगों का निराकरण कर आप ने जप की शिक्षा दी। इसी भाँति शाकिर साहब वारसी ने अपने लिये जप की शिक्षा हेतु प्रार्थना किये। हुज़ूर ने 'जिक्र इस्मजात' जलाली कायदे से बताया और उसी समय अहमद अली शाह वारसी की प्रार्थना पर उनको भी इस्मजात की शिक्षा दी किन्तु दूसरे ढ़ंग से। विदित है कि जैसी जिसकी दशा थी उसीके अनुसार उन्हें शिक्षा और निर्देश दिया गया।

शेख हुसैन अली साहब वारसी लिखते हैं कि हाफिज असगर अली जमीदार मसौली बहुधा शिक्षा के लिये हुज़ूर से प्रार्थी होते थे। आप कह दिया करते कि कठिन है। एक दिन हाफिज साहब के आग्रह पर आपने कहा 'अच्छा प्रातः कुरआन शरीफ'' पढ़ा करो किन्तु नमाज़ 'कज़ा (समय से छूट जाना)' न होने पाये। कुछ दिन के बाद नमाज़ छूट गई जो आनन्द प्राप्त हो रहा था बन्द हो गया।

शेख हुसैन अली साहब लिखते हैं कि मियाँ अब्दुस्समद ने हुज़ूर से प्रार्थना

किया कि हमें जप की शिक्षा दें। आप ने कहा पढ़कर क्या करोगे? किन्तु वह आग्रह करते रहे। आपने मजहर अली साहब को सम्बोधित कर कहा 'ये कहते हैं कि हमको कुछ पढ़ने के लिए बता दीजिए। यदि हम बता दें तो ये पढ़ेंगे?' पुनः मियां अब्दुस्समद से कहा १०० बार कलमा इस प्रकार पढ़ लिया करो। मज़हर अली ने कहा कि इतना सहन नहीं कर सकते हैं। फिर कहा ५१ बार कर लिया करो। आग्रह-अनुसार ५१ और पुनः २१ बार पढ़ने का निर्देश हुआ। मियाँ अब्दुस्समद चौथे दिन उपस्थित होकर कहने लगे हुज़ूर आज दो दिन से मेरे मुँह से खून अधिक निकलने लगा है। हुज़ूर ने कहा तुम इसको सहन नहीं कर सकते क्या करोगे? जो काम करो उसमें सच्चे रहो तो सब अच्छा हो सकता है।

मौलवी नादिर हुसैन वारसी लिखते हैं कि हमने स्वप्न में देखा कि पूज्य हाजी उकड़ू बैठे हुए निर्देश दे रहे हैं नादिर हुसैन 'ला ईलाहा इल्लल्लाहो' का जप करो इस आदेश के प्रभावानुसार मेरी यह दशा हुई कि जब मैं उकड़ू बैठ गया तो स्वतः 'ला ईलाहा इल्लल्लाहो' का विचार पैदा हो गया। कुछ दिन पश्चात् जब मैं हुज़ूर की सेवा में उपस्थित हुआ पूछा कि क्या मैं इस मंत्र जप को हर समय पढ़ता रहूँ। आप ने कहा तुम वकालत करते हो जब फुरसत मिले तब पढ़ा करो। अतएव पूज्य हाजी बाबा के शिक्षा का ढ़ंग इस प्रकार था -

सनदुल मोहद्दसीन मौलवी मुहम्मद क्यामुद्दीन अब्दुल बारी फिरंगी महल लखनऊ लिखते हैं कि मौलवी अब्दुल बाकी निवासी मदीना तैय्यबा से सुना है वे कहते थे कि मुझसे एक बुजुर्ग ने बयान किया कि मेरा और हाजी साहब का रेल में साथ हो गया। उन्होंने एक जिक्र जप बताया। मैं उसे करने लगा। मैं उसमें इतना विभोर हुआ कि अन्य संसारिक सम्बन्ध विच्छेद हो गये। यहाँ तक कि नमाज़ के समय का ज्ञान तो होता था किन्तु उस जप को छोड़ नहीं पाता था। कई वक्त की नमाज़ छूट गयी। बाद में उन्होंने अपने धर्म गुरूओं के कथनानुसार इस जप को छोड़ दिया। ये जप अपने किस्म का बेजोड़ था। जिसका प्रभाव तत्काल होता था। किन्तु ये सब जप-तप आप के विशेषताओं में नहीं गिना जाता है। आपके शिष्यों के लिए इनकी प्राप्ति अनिवार्य नहीं थी। अनिवार्य विशेषता यह है कि बिना श्रम और बिना याचना के एक दृष्टि में शिष्यों को स्वतः उपलब्ध हो जाता था। हाथ पकड़ते ही हाजी बाबा कुछ न कुछ अवश्य प्रदान कर देते थे। यह बात केवल शिष्यों के लिये विशेष न थी। अपितु जो भी आपकी सभा में उपस्थित होता कुछ न कुछ अवश्य लेकर जाता था। अपने-पराये का कोई भेद-भाव नहीं था। सबके प्रति समान भाव

Scanned with CamScanner

होता था। शाह फज़ले रहमान रजी० के शिष्य नाज़िम अली साहब लिखते हैं कि एक बार मौज़ा खेवली निकटस्थ देवा में हुज़ूर वारिस पाक विद्यमान थे। मैं सन्ध्या से पूर्व उपस्थित हुआ। हुज़ूर एक चबूतरे पर विश्राम कर रहे थे। आपके सिरहाने की ओर थोड़ी सी जगह खाली थी। वहाँ बैठने का आग्रह किया किन्तु मर्यादा को ध्यान में रखते हुए मैं बैठ न सका। हुज़ूर उठ बैठे और मैं सामने बैठ गया। आपने सेज़ के से लुब्बे लुबाब उर्दू मसनवी मौलाना रूम मंगवाया और प्रथम अध्याय की प्रस्तावना के दो पद पढ़कर ऐसी दृष्टि डाला कि मैं परास्त हो उठा। इसके पश्चात् मुझे सामने से विदा कर दिया। उस समय की मेरी दशा अकथनीय है। घर वापस आकर शीघ्रता से मसनवी मंगवाया किन्तु उसके पढ़ने से कुछ समझ न आया। हज़रत मौलाना साहब रहमतुल्लाह अलैह से मसनवी पढ़ने का आदेश लिया फिर तो दो चार सतर पढ़ना कठिन था। वह एक नज़र थी और यह एक अनुमति।

मौलाना तहैय्युर रहमतुल्लाह अलैह ऐनुल यकीन में लिखते हैं कि ईश्वर दर्शन के इच्छुक ने बूअली शाह कलन्दर पानीपति के मज़ार पर चिल्ला कशी (चालीस दिन की तपस्या) आरम्भ किया। उसकी आशा यह थी कि अब गुरू ध्यान क्यों नहीं होता है? कलन्दर साहब ने उसको शुभ सूचना दिया कि वह पूज्य हाजी बाबा के दरबार में हाजिरी दें। वह सरकार वारिस पाक की सेवा में उपस्थित हुआ। आपने उसको देखते ही कहा कि अफ़यून न खाया करो। उसने कहा तब तो मेरी जान पर आ बनी है। आप ने कहा 'यही कारण है कि तुम अपने उद्देश्य को नहीं पहुँचते।' वह आदमी फूट-फूटकर रोने लगा। आपने उसका हाथ पकड़ कर कहा यह किसका हाथ है? उसने देखा तो उसी के मुर्शिद (गुरू) का हाथ है। व्याकुल होकर हाथ चूमने लगा और बार-बार आँखों से लगाने लगा। पुनः आपने कहा आँखें बन्द करो उसने आँखें बन्द किया और अपने उद्देश्य को प्राप्त कर लिया और हंसता हुआ चला गया।

मौलाना सैय्यद अब्दुल गनी साहब वारसी लिखते हैं कि मौलवी मुहम्मद इस्माईल साहब जो मेरे लड़के सैय्यद मोहियुद्दीन के शिक्षक नियुक्त थे। शाह उम्मीद अली जौनपुरी के शिष्य थे। मेरे मकान पर उस समय जब बहुत से मित्रों की बैठक लगी थी कहा कि मैं जब जिक्र (जप) करता हूँ तो उन्माद की दशा उत्पन्न हो जाती है, मेरे पीर मुर्शिद (गुरू) भी जीवित नहीं हैं। इसकी दवा किससे पूछूं इस पर एक जपी मौलवी रहीमुद्दीन साहब ने कहा कि जप के आदि तथा अन्त में दरूद शरीफ़ पढ़ लिया करो। कई दिनों इसी भाँति जप चलता रहा। किन्तु कोई

लाभ नहीं हुआ। जब हुज़ूर वारिस पाक बेलछी आये हम लोग वहीं थे। सन्ध्या को मौलवी इस्माईल साहब भी उपस्थित हुए। जब एहराम बदलने हेतु हुज़ूर बाहर शामियाने में पधारे तो इस्माईल साहब ने कदमबोसी किया और पुनः सवेरे वापस चले गये। उनके आने जाने का ज्ञान किसी को नहीं था। जब दूसरे दिन अपनी पत्नी को साथ लेकर आये तो उनसे पूछा गया बात क्या है? उन्होंने बताया जब कल सन्ध्या को हुज़ूर शामियाने में आये तो हमने उनको अपने पीर की सूरत में देखा और पूर्णरूपेण वही शक्ल देखा जो अपने गुरू की उनके जीवन में देखा था। मेरे धर्मगुरू ने बताया था और यह चिन्ह महान सन्त और बुजुर्ग का है। इसके अपेक्षा जब रात्रि में सोया तो हमने देखा कि हाजी साहब आये और मुझे जप की शिक्षा भी दिये कि इस प्रकार करना चाहिए। अतैए उस समय जिक्र किया तो जनून (उन्माद) का कोई प्रभाव नहीं था। मैंने सोचा ऐसे बुजुर्ग बड़ी भाग्य से मिलते हैं यही कराया है कि अपने पुरेधर वालों को शिष्य कराने हेतु लगाया हूँ। इससे विदित है कि अन्य सिलसिले (सम्प्रदायों) के लोग भी आकर शिष्य होते और आप सब को एक समान जानते थे।

मौलवी वारिस अली साहब निवासी उतरौली जिला अलीगढ़ जो एक जाकिर और शागिल (जगी और तपी) थे। मियां मुहम्मद शाह पीलीभीत के शिष्य थे। अपनी घटना इस प्रकार ब्यान करते हैं। हुज़ूर वारिस पाक एक बार पीलानी जिला पीलीभीत के तहसीलदार तजम्मुल हुसैन साहब के यहाँ ठहरे हुए थे। मैं भी उपस्थित हुआ उस समय जब मैं जिक्र करता था मेरे मन में अन्य विचार उत्पन्न होने लगते थे। मैंने हुज़ूर से यह कहा। आप ने मुस्कुराते हुए मुझे एक युक्ति बताई और फिर मेरा मन कभी दूषित नहीं हुआ। यह बात मैंने अपने गुरू से कहा उन्होंने मुझको आदेश दिया। तुम अनिवार्य रूप से इसका पालन करो और नमाज़ में भी ऐसा ही किया करो और इमामत (नमाज़ पढ़ाने) से बचा करो। मौलवी वारिस अली का ब्यान है कि हुज़ूर ने जो युक्ति मुझे बताया था उस से मुझको बहुत लाभ हुआ किन्तु विचित्र बात यह है कि जब कभी मेरे मन से हुज़ूर का आदेश मिट जाता था हुज़ूर मेरे समक्ष दिखाई देते थे और मुझे याद दिलाते थे। मुझे तुरन्त स्मरण हो आता था। यद्यपि मैं हाजी बाबा का शिष्य नहीं था पर उनकी दया का जो मेरे प्रति थी ब्यान नहीं किया जा सकता है।

काजी अब्दुर्रज़्ज़ाक मारहवी सूफी मुहम्मद हुसैन साहब मुरादाबादी के मुख्य शिष्यों में थे। ब्यान करते हैं कि मुझको दो तीन बार हुज़ूर वारिस पाक की सेवा में

Scanned with CamScanner

उपस्थित होने का अवसर प्राप्त हुआ है जिससे हुजूर को मेरे प्रति विशेष कृपा दृष्टि है। उनके समाधिस्थ होने के पश्चात् भी अनेकों बार स्वप्न में हुजूर का दर्शन प्राप्त कर चुका हूँ। एक बार मुझे कुछ विशेष परेशानी थी। आप ने स्वप्न में एक दरूद शरीफ बताया जो बहुत प्रभावी सिद्ध हुआ जो अब तक मेरे जप में है। नाजिर हुसैन साहब वारसी नग्रामी लिखते हैं कि एक बार हुजूर मेरे मकान पर विद्यमान थे। मेरे पूज्य पिता कादिर बख्श जो बड़े जपी-तपी सन्त थे। मौलाना फज़ल रहमान रजी० के शिष्य थे। हुजूर ने उनसे कहा बड़े मियाँ जो श्वांस निकले अल्लाह के नाम के साथ निकले। जो सांस बिना अल्लाह के नाम के निकलती है वह मुर्दा है और बड़े मियाँ एक जप ऐसा है जिसका सम्बन्ध न साँस से है न जबान से। मेरे पिता ने कहा कि यह हुजूर का जप है। आप ने पुनः कहा बड़े मियाँ हो जाता है, सुना बड़े मियाँ हो जाता है। तीसरे दिन हुजूर को विदा करने हेतु मेरे पिता आये तो उन्होंने मेरे पिता से कहा 'आओ बड़े मियाँ मिल लें, दुनिया का क्या एतबार है?' यह कहकर मोआनका किया और पालकी में सवार हुए मैं भी साथ था। इच्छुक लोगों के मकान पर होते हुये गढ़ी बहलोल को चल दिये। जब मैं घर आया तो मेरे पिता ने पूछा हज़रत को पहुँचा आये। कहाँ तक गये थे? मैंने बताया नग्राम की सरहद तक गया था। हुजूर ने मुझे विदा कर दिया। फिर पूछा आगे क्यों न गये? मैंने कोई उत्तर नहीं दिया। आगे मेरे पिता ने कहा कि आज हुजूर की हमारे ऊपर बहुत कृपा हुई है।

हमारे खानदान नक्शबन्दिया में सात लतीफे कल्बी है। ३ लतीफे हमारे हर समय चलते हैं, जब अति श्रम किया जाता है तो चौथा लतीफा चालू होता है। आज जब हाजी बाबा ने मुझे छाती से लगाया उसी समय से सातों लतीफे चालू हो गये हैं। इस घटना से दो-तीन माह पश्चात् मेरे पिता की यह दशा हुई कि एक सीटी के समान स्वर उनके मस्तिष्क में ज्ञात होने लगा। एक दिन ऐसा हुआ कि भोजन करते समय उनके हाथ पाँव काबू से बाहर हो गये। भोजन सामने से उठा लिये गये। हकीम साहब के निदान में कोई रोग नहीं आया। हकीम साहब कुछ दवा दारू देकर चले गये। इधर आपके मस्तिष्क की सीटी की आवाज़ बढ़ने लगी। इसी समय श्री अहमद मियाँ साहब सुपुत्र मौलाना शाह फज़ले रहमान साहब अमेठी से नग्राम आये सीटी की आवाज़ की बात सुनकर उन्होंने कहा आपका सुल्तानुल ज़िक्र खुला है मैं बाबा साहब से अर्ज़ कर दूंगा। धीरे धीरे यह स्वर बढ़ते-बढ़ते सम्पूर्ण शरीर में फैल गया।

मौलवी शेख कादिर बख्श फज़ली, नग्रामी पर जो घटनां घटित हुई ऐसी ही घटनायें सरकार वारिस पाक द्वारा अधिक प्रकट होती थीं और ये आप की विशेषताओं

में है कि बिना माँगे और बिना श्रम ही आप प्रदान कर देते थे। इसमें भी अपने और अन्य शिष्यों में कोई अन्तर नहीं था चाहे अपने पराये जो भी हों सफल होकर लौटते थे।

मौलाना हाजी कारी शाह अहमद मुख्तार जो हाजी अब्दुल हकीम चिश्ती, कादरी खलीफा हाजी इम्दादुल्लाह साहब महाजिर मक्की रह० के शिष्य थे। १३१३ हिजरी में इस्लामिया हाई स्कूल इटवा में अरबी व फारसी के टीचर थे। मौलाना एक बुजुर्ग बाप के बेट थे इसलिए पैत्रिक सम्बन्ध से भी एक विशेष स्थान रखते थे। हुजूर वारिस पाक के इटावा पधारने पर अति प्रेम और विश्वास सहित हुजूर की सेवा में उपस्थित हुए। प्रथम दिन कुछ बातचीत करके मौलाना को विदा कर दिया फिर उपस्थित लोगों से कहा 'यह मौलवी साहब तो अभी बच्चा हैं। इनके पिता बुजुर्ग आदमी हैं।' दूसरे दिन जब मौलाना पुनः हुजूर की सेवा में हाज़िर हुए आपने खड़े होकर मौलाना को सीने से लगाया। मौलाना पर कैफियत छा गई। मौलाना का कहना है कि मेरी ऐसी दशा थी कि मुझे उपस्थित लोगों की आवाज सुनाई नहीं देती थी। आपने उस समय हज़रत हाजी साहब से जो दो चार बातें सुना उनके कहने के अनुसार वह उनके हृदयपट पर ऐसी अंकित हुई जो अमिट थी। हुजूर के एक खादिम की इच्छा पर हुजूर ने एहराम बदला और उतारा हुआ एहराम मुझे देने का आदेश किया। पुनः सीने से लगाया। मेरी दशा और घोर हुई। मेरी दशा यह थी कि दरबार के जो बुजुर्ग वहाँ खड़े थे उनकी आवाजें मुझे पूर्णतः सुनाई नहीं देती थी मेरे कान दूसरों की बात नहीं सुनपाते थे। हुजूर वारिस पाक ने उनसे कहा 'लाओ इनको तो हमी दे देंगे।' आप ने एहराम लेकर अपने हाथों मेरे सिर पर रखा और फरमाया 'लो आओ।' एक बार फिर मिल लें और पुनः मेरी पीठ पर थपकी दिया और कहा 'अल्लाह मआकुम' घर आने पर इन सम्पूर्ण बातों को अपने पूज्य पिता को लिखा। उन्होंने प्रतिउत्तर में मुझे लिखा कि यह संकेत है इस बात की ओर कि हर समय अल्लाहमयी (ईश्वर मेरे साथ है) का स्मरण और ध्यान रहे। इसके दो वर्ष पूर्व मैंने अपने आदरणीय पिताजी से प्रार्थना किया था कि वे मुझे शिष्य कर लें। मेरे पिता जी ने इस्तखारा गौसिया (गौस पाक के शगुन लेने का ढंग) बताया। इस इस्तखारा (शगुन) के पश्चात् एक रात मैंने देखा कि एक ओजस्वी व्यक्ति ने मेरा बायाँ कन्धा पकड़कर मेरे पिता के पास पहुँचा दिया जो एक सुन्दर महल में विराजमान था। पिता की तवज्जह (ध्यान) से जो कुछ मुझे प्राप्त हुआ वह कहने सुनने की बात नहीं है। जिस दिन मैं पूज्य हाजी वारिस बाबा की सेवा में उपस्थित हुआ मेरी स्मरण शक्ति ने कार्य किया उससे यही विदित होता है कि हाजी बाबा ही

Scanned with CamScanner

वह रूप था जिसने स्वप्न में मेरा कन्धा पकड़ कर मुझे मेरे पिता के पास पहुँचाया था। अत: मेरे दिलने इसकी सत्यता का मुझे विश्वास दिलाया।

मेरे हृदय की विचित्र दशा थी मुझ पर कुछ ऐसी अवस्था छाई रहती थी कि मेरा पठन-पाठन और सीखाना पढ़ाना सब कुछ कठिन हो गया। इसी समय मैंने नौकरी से त्याग पत्र दे दिया और अपने पिता की सेवा में उपस्थित हुआ। उन्होंने कहा इस समय हाजी बाबा मुकाम सैर में हैं अत: उनके शिष्यों के हृदय पर भी उसी का प्रतिबिम्ब पड़ रहा है। अत: यही कारण है कि वह नमाज़ पढ़ते नहीं दिखाई देते हैं। अपने पिता के संगत में रहते-रहते तीन महीना पश्चात् मेरी दशा पूर्ववत हो गयी। मेरे पिता ने कहा जो वस्तु पूज्य हाजी बाबा ने तुम्हें दान किया था। उसे हमने क्रियात्मक रूप में तुमसे अधिग्रहण कर लिया है। तुम्हारे जीवन के अन्तिम काल में तुम्हें पुन: प्राप्त होगी। अभी तुमसे संसार में बहुत कार्य लेना है।

मौलाना हाजी कारी अहमद मुख्तार सिद्दीकी जो अपने काल के शरीयत और तरीकत दोनों के अनुसार आदरणीय थे। आपके भाषण बहुत प्रभावशाली होते थे। कई सम्प्रदायों (सिलसिलों) से गद्दीनशीनी प्राप्त थी। अपने पिता के आदेशानुसार १३२० हिजरी में मक्का शरीफ जाकर हज़रत मौलाना मुहम्मद इस्माइल रह० द्वारा सम्प्रदाय शाजलिया के नियमानुसार चिल्ले और तपस्या कर प्रमाण-पत्र और अनुमती प्राप्त किया। १३२१ हिजरी में मौलवी मुहम्मद अब्दुलहक इलाहाबादी महाजिर मक्की की सेवा में रहकर नक्शबन्दिया सम्प्रदाय की शिक्षा प्राप्त किया और एक साल बाद प्रमाण-पत्र और शाजरा प्राप्त किया। १३२२ हिजरी में पूरे ९ मास दरबारे रिसालत मआब में उपस्थित रहे। वहाँ सैय्यद मुहम्मद सईद कादरी मदीन और हज़रत मौलाना मुहम्मद अमीन से तरीके कादरिया की सनद और उत्तराधिकार प्राप्त किया। उक्त मौलाना का लेखन है कि अपने चचाज़ाद मुहम्मद हामिद मरहूम (स्वर्गीय) की अवस्था देखकर और उनकी जबानी सुनकर पूज्य हाजी बाबा के दर्शन की अभिलाषा मेरे मन में उत्पन्न हुई। मेरे स्वर्गीय भाई ने अपनी मृत्यु से छः, सात दिन पूर्व ही मुझे अपनी पूरी दशा सुनाया था जिसका आवश्यक भाग अग्रलिखित है:

मुहम्मद हामिद बहुत दिनों तक ब्रह्म ज्ञानी और महापुरूषों की खोज में घूमते रहे। इसी बीच अवध में उनका भ्रमण हुआ और वह पूज्य हाजी बाबा की सेवा में उपस्थित हुए। हाजी बाबा के समक्ष प्रवेश से द्वारपाल ने रोका। हाजी बाबा ने स्वयं आवाज़ देकर इनको आने की अनुमति दिया। उपस्थित होकर चरण चूमकर किनारे

बैठ गये। इनके मन में ये विचार हुआ कि ये बुजुर्ग जिनके रोम-रोम में प्रकाश की किरणें फूटती दिखायी पड़ रही हैं कहीं ईश्वर तो नहीं किन्तु ईश्वर द्योतक अवश्य हैं। अत: इनसे शिष्य होना चाहिए। अभी इसी विचार में थे कि हुज़ूर ने हाथ बढ़ाने को कहा और उनके हाथ पर हाथ मार कर कहा 'मियाँ इस तरह शिष्य हो जाया करते हैं।' उस समय से उनकी जो आन्तरिक दशा हुई उसे तो गुरू ही जानते हैं। प्रत्यक्ष इतना अवश्य देखा गया कि दो वर्षों तक रोग शय्या पर पड़े-पड़े व्यतित कर दिया। उनके पिता ने रोग मुक्त करने के प्रयत्न में हज़ारों रूपये व्यय कर दिये किन्तु ब्रह्मवादी गुरू की लगाई हुई अग्नि जीवन के अन्त तक बुझ न सकी। यहाँ तक कि प्राण पखेरू उड़ गये। इन घटनाओं से विदित है कि अन्य सम्प्रदाय और पंथों के आदरणीय लोग भी हाजी बाबा की शिक्षा का महत्व तथा अन्य विशेषताओं को मन से स्वीकार करते थे और विशेषता यह थी कि जिसको जो कुछ देना होता था सरकार उसको एक ही दृष्टि में प्रदान कर देते थे। आदेश भी देते थे किन्तु उनके आदेश का महत्व बेजोड़ होता था। जिससे लोगों को शान्ति मिल जाती थी।

सैय्यद मारूफ शाह कहते हैं कि एक अफगानी हुज़ूर पाक की सेवा में उपस्थित हुआ और प्रार्थना किया मुझको एहराम (फकीरी वस्त्र) प्रदान हो और कुछ शिक्षा दी जाय। सरकार ने मुझको आदेश दिया कि अफगानी महोदय को समझाओं। मैं अपने मकान पर ले गया शिक्षा का महत्व समझाया किन्तु वह कुछ नहीं समझे। अन्तत: मैंने पूछा कि तुम अपने घर वालों से इज़ाज़त ले लिये हो। अफगानी महोदय ने कहा कि मैंने अनुमति तो किसी से नहीं लिया है यह तो अपना विचार है। तत्पश्चात् व्याकुल हो, जाने के लिए उठ खड़े हुए। शीघ्रता में कहा हज़रत से मेरा सलाम कह देना। पूरे एक वर्ष बाद वह हुज़ूर की सेवा में उपस्थित हुए। आप ने उनको देखते ही वस्त्र देने का आदेश दिया। वस्त्र धारण कर जब उपस्थित हुए तो आपने अपने चेहरे कि ओर संकेत करते हुए कहा 'यही सूरत है इसको देखते रहना।' इतना सुनते ही वह आनन्द विभोर होकर हुज़ूर वारिस पाक के चरणों का चुम्बन किया और विदा हो गये। सैय्यद मारूफ साहब कहते हैं कि मैं आश्चर्यचकित हो गया जब कि अफगानी साहब को मेरे समझाने पर कोई बात समझ में न आयी और आज हुज़ूर के दो शब्दों से पूरी सांत्वना प्राप्त हो गयी। सच तो यह है कि हुज़ूर के दरबार में दानशीलता के अतिरिक्त और कुछ न था। देखने में जो शिक्षा थी वह नाममात्र थी। उनके सम्पूर्ण गुणों तथा चमत्कारों का वर्णन मानव शक्ति से परे है। आप का कथन है 'अगर प्रेम है तो हज़ार कोस पर भी हम

Scanned with CamScanner

तुम्हारे पास हैं।' मिर्जा इब्राहीम बेग शैदा लिखते हैं कि एक बार मैं सेवा में उपस्थित था कि मग़रिब की नमाज़ के बाद हुज़ूर ने कहा 'या बासितो' पढ़ा करो। देखने में उस समय कोई सामने नहीं था कुछ दिनों बाद संयोग से एक वारसी मिला बातचीत करते हुए उसने कहा कि इस के पूर्व मैं गरीब और ऋणी था एक दिन मगरिब की नमाज़ के बाद मैंने सरकार का ध्यान किया हुज़ूर की सूरत ध्यान स्थिर हो गयी उसी दशा में आपने आदेश दिया 'या बासितो' पढ़ा करो।' मैंने आदेश का पालन किया और अचानक मेरी दरिद्रता और परेशानी, खुशहाली और समृद्धि में परिवर्तित हो गयी। शैदा मियाँ वारिस का कहना है कि उस समय मुझे स्मरण हुआ कि उस दिन सन्ध्या के नमाज़ के पश्चात् इसी भाग्यशाली के बारे में हुज़ूर वारिस पाक ने आदेश दिया था। हुज़ूर वारिस पाक के कथन और उनकी शिक्षा से सम्बन्धित अति आश्चर्यजनक घटनायें हैं।

उपस्थित अनुपस्थित सभी लोग आपकी यशकीर्ति से एक समान लाभान्वित होते थे। हुज़ूर वारिस पाक का कथन है कि जो जिसका अंश है वह उसको अवश्य दिया जाता है। चाहे जीवन में या मरते समय और नहीं तो उसकी कब्र में ठूंस दिया जाता है। यह कीर्ति आधारित कथन वारिस पाक के दरबार का कार्यक्रम है। तसव्वुर (अनुध्यान) के सम्बन्ध में भी हुज़ूर ने अपने अनुचरों को सरल ढंग से ध्यान करने की चेतावनी दी है और विशेष लोगों को विशेष आदेश दिया है। बहुधा संकेतों से यह सिद्ध होता है कि ईश्वर अभिलाषियों के हेतु ध्यान पात्र (तसव्वुर) ही पर्याप्त है। प्रत्येक किस्म की उन्नति केवल ध्यान मात्र से हो जाती है। जैसा कि हुज़ूर ने कहा है 'एक सूरत पकड़ ले।' वही सूरत यहाँ, वहीं कब्र में, वहीं हश्र में साथ होगी।

मिर्जा मुहम्मद इब्राहीम बेग शैदा वारसी लिखते हैं शेख एनायतुल्लाह साहब वारसी तअल्लुकादार ने एक दिन हुज़ूर से प्रार्थना किया कि मुझे कोई वजीफा (मंत्र पढ़ने) की शिक्षा दें। आपने मुस्कुराते हुए कहा शेखजी जब कोई मुसीबत हो तो हमारी सूरत का तसौव्वर किया करो। हुज़ूर ने अनुध्यान (तसव्वुर) का ढंग भी अनेकों रूप में बताया है किन्तु अधिक लाभदायक और सरल शैली यही बताया है कि पहले अनुध्यान करें जब रूप स्थिर हो जाय तो उस रूप सहित हृदय की ओर ध्यान लगावें और हृदय को नेत्र से देखें। हुज़ूर अनवर की शिक्षायें कुछ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में होती थी। बहुधा एकान्त में ही शिक्षा देते थे। जिनका ज्ञान उन्हीं को है। जिन्हें शिक्षा दी गई है। जो कुछ लिखने आया है प्रत्यक्ष घटनाओं पर निर्भर है।

हुज़ूर वारिस पाक की आत्म-शक्ति कीर्ति, और विभूति को घेरे में नहीं लाया जा सकता है।

हज़रत मौलाना हकीम शाह मुबारक हुसैन निवासी हुसेनपुर, पोस्ट-भववा शाहाबाद जो एक ख्याति प्राप्त बुजुर्ग हैं। अपनी आँखों से देखी हुई घटना ब्यान करते हैं कि देवा शरीफ में आपके आस्ताने से बाहर कुछ लोग तसव्वुर (अनुध्यान) के सम्बन्ध में वाद-विवाद कर रहे थे। कुछ लोगों का कथन था कि पूज्य हाजी बाबा की आकृत सामने रखते हैं। किन्तु पूरी तरह आपका रूप जम नहीं पाता है। और कुछ यह कहते थे कि स्वप्न में हम आपकी मुखाकृति देखते हैं और वही दो चार दिनों तक स्मरण रहती है फिर धीरे-धीरे भूल जाती है। शाह मुबारक हुसैन शाह वारसी ब्यान करते हैं कि मैं उन लोगों के सम्बन्ध में कुछ जानता नहीं था पर देखने से यह जान पड़ता था कि वह लोग हाजी साहब के शिष्यों में से हैं। उनको सम्बोधित कर कहा शेख (गुरू) के द्वार पर और इस प्रकार का आपसी बातचीत उचित नहीं यहाँ जो कुछ है, प्रत्यक्ष है, देखते रहो, यही सूरत हृदय में आ जायेगी। वह लोग आश्चर्य से मेरी ओर देखते हुए चुप हो गये। मैं पूर्ववत हाजी साहब के समक्ष आकर एक जगह बैठ गया। हाजी बाबा ने मुझे सम्बोधित कर कहा 'अच्छा उन लोगों को बुलाओ।' मैं सोचने लगा कि यह वाक्य किसी अन्य व्यक्ति का प्रश्नोत्तर होगा अथवा कोई शख्स आपकी तल्लीनता देख वापस हो गया है। अत: आप उसको बुलाने को कहते हैं और उसका भ्रम मुझ पर हो गया है। आपने पुन: कहा 'नहीं नहीं।' जब आपने उन लोगों से कहा तो वह लोग लज्जित हो गये। अब मैंने समझा कि यह हमारी बात है और अपने मन ही मन हुज़ूर के सदाचार की सराहना करने लगा कि उन लोगों की बात को जो बात कर भी नहीं सकते हैं को आप इतनी दूरी से सुन रहे थे और जानकार थे। उनके लज्जित होने की दशा भी आप देख रहे थे। उनके सांत्वना भी आप चाहते हैं। यही कारण है कि लोग आप पर प्राण न्यौछावर करने को तैयार हैं। मैं उन लोगों को क्यों टोका? यह मुझसे बड़ी भूल हुई। पूज्य हाजी बाबा हमारे दादा के मिलने वालों में हैं। इनके मन को मैंने ठेस पहुँचाया है। उसी समय हाजी साहब ने कहा-'क्या खूब तुमने हमारे मतलब को अच्छा समझा? मगर यह अवसर नहीं है। तुम उनको बुला लो। तुम्हारे कथन की पुष्टि कर दूं।' तुरन्त मैंने बाहर से लाकर उन लोगों को हुज़ूर के सामने पेश किया। उस समय हाजी साहब तन्मयता में थे। हम सभी लोग एक किनारे बैठ गये। थोड़ी देर में हम लोगों की ओर मुँह करके कहा 'देखो! ज्योंहि हम लोगों ने मुँह फेरा देखा

Scanned with CamScanner

कि सामने दीवार में एक गोल चक्कर प्रकाश का चमक रहा है। प्रकाश बहुत तेज है। पूरा कमरा प्रकाश से भर उठा फिर दीवार में प्रकाश से एक गोल छिद्र सा हो गया। हम लोग उसी ओर देख रहे थे। उस छिद्र में पूज्य हाजी बाबा की आकृति दिखाई दे रही है। जैसे आईने में देख रहे हों। हाजी बाबा ने उन लोगों से कहा-यही शिक्षा हमारे खानदान की है। किन्तु विश्वास और पश्चाताप् के पश्चात् यह पर्दा आँखों से हटता है। मेरी ओर संकेत हुआ। इनके हाथ चूमो। इतना कहकर हुज़ूर फिर तल्लीन हो गये। मैंने उन लोगों से कहा कि हुज़ूर के चरण चूमो और स्वयं बाहर चला आया। जब बाराबंकी स्टेशन पर पहुँचा तो मैंने उन्हें भी आते देखा। वह लोग मेरे पास आये और कहने लगे कि पूज्य हाजी बाबा ने चलते समय हम लोगों को आदेश दिया कि जाकर हिदायत करने वाले का हाथ चूमना, तुमसे स्टेशन पर भेंट होगी। नूर मियाँ से पूछ लेना। मैंने देखा कि वे सभी गुरू प्रभाव से प्रभावित थे। मैंने उनसे कहा कि जाओ तुम लोग बड़े भाग्यशाली हो कि तुमने अपने गुरू के चमत्कार अपनी आंखों से देखा है और मैंने भी वह देखा है जो आज तक कभी नहीं देखा था। हुज़ूर वारिस पाक ने दोनों को सम्मानित और सन्तुष्ट किया।

हज़रत शाह मकसूद अली साहब उत्तराधिकारी शाह नसीरूद्दीन साहब साबरी ब्यान करते हैं कि एक बार सरकार वारिस पाक की सेवा में उपस्थित हुआ उस समय मुझे ज्ञात हुआ कि कोई शिष्य हो रहा है मैं बाहर बैठ गया। थोड़ी देर में मैंने देखा सरकार वारिस पाक बाहर चले जा रहे हैं। उसी समय एक सेवक ने मुझसे कहा चलिये आपको सरकार बुला रहे हैं। मैं विस्मित हो उठा अभी हमने बाहर जाते हुए देखा है और लौटे भी नहीं हैं और बुला रहे हैं। इसी आश्चर्यावस्था में उपस्थित हुआ। आप ने मुझसे कहा अभी एक व्यक्ति शिष्य होकर बाहर गया है। हमसे जो आदमी शिष्य होता है। हम उसे अपना सा बना लेते हैं। फिर उसका कर्म है और उसका भाग्य है जो सूरत चाहे ग्रहण कर ले। ऐसी ही घटना मुहब्बत शाह साहब खलीफा (उत्तराधिकारी) नासिरूद्दीन चिश्ती साबिरी रह० ने दरबार वारसी में देखा है और ब्यान किया है। सत्यता यह है कि देखने वालों ने अति विचित्र निरीक्षण किये हैं। जिनके समक्ष कोई चीज़ नहीं रह जाती है। हुज़ूर अपनी आत्म- शक्ति चमत्कारी ढंग से क्षण मात्र में प्रदान कर देते थे। हुज़ूर वारिस पाक का यह गुण विशेष उत्तम था जो अल्लाह वालों के निक़ट सम्पूर्ण गुणों से उत्तम माना जाता है।

मौलवी रौनक अली साहब वारसी-रज्जाकी का कथन है कि एक बार हुज़ूर वारिस पाक के एक मुरीद (शिष्य) के सामने कुछ अज्ञानी लोगों ने यह चर्चा कर

दिया कि हुज़ूर वारिस पाक के यहाँ कुछ शिक्षा-दीक्षा नहीं होती है। इस कारण उस शिष्य के मन में कुछ शंका उत्पन्न हो गयी। जब वह सरकार हाजी बाबा में उपस्थित हुआ तो आपने बात-चीत के बीच इस भाँति कहा-एक बार हमसे और एक बहुत बड़े तपस्वी से बात हो गयी। वह कहते थे जपी का ऊँचा पद है। हमने कहा यदि जपी 'जाप्य' हो जाय। उन्होंने कहा 'बन्दा, ख़ुदा नहीं हो सकता।' हमने उत्तर दिया यहाँ बन्दा और ख़ुदा की तो कोई बात ही नहीं है। यह जपी और जाप्य की चर्चा है। क्या फज़्कुरूनी अज़्कोरोकुम ? (तुम मुझको याद करते हो तो मैं तुझे याद करता हूँ।) को भूल गये ? केवल जाप से क्या लाभ है ? जब तक जाप्य (मज़्कूर) जपी (जाकीर) का जप न करे। हमारे यहाँ जप-तप कुछ नहीं है और फिर सब कुछ है। हुज़ूर वारिस पाक की शिक्षायें उनके जीवन में और मृत्यु पश्चात् समान हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि औलिया अल्लाह को मौत नहीं है जिसका अनुभव सभी सम्प्रदायी सन्तों को है।

शिक्षा की कुछ विशेषतायें

हुज़ूर वारिस पाक के शिष्यों का विशेष लक्षण यह है कि उनके हृदय में तपन और पिघलाव उत्पन्न हो जाता है। धार्मिक संत बुज़ुर्गो का आदर सत्कार और उनके प्रति सत्य विश्वास के गुण पैदा हो जाते हैं। पूज्य हाजी बाबा के दरबार में अश्रु परित नेत्र वालों का दर्शन अधिक मिलता है। वारिस पाक का नाम लेने वालों में विशेष प्रेमभाव होता है जो कुछ भी था हुज़ूर के प्रभाव का फल था, शिक्षा और उपेदश का नहीं था। हुज़ूर वारिस के यहाँ हल्का (घेरे में बैठकर जप करना) नहीं होता था शिष्य और सेवक सभी पर ध्यान दिया जाता था। तात्पर्य यह है कि कोई नियम प्रतिबन्ध ऐसा नहीं था जिसको तालीम अथवा शिक्षा की संज्ञा दी जाय। नेत्र बन्द करके जो प्राणिधान (तसव्वुर) या कार्य इत्यादि होता है। हुज़ूर ने उसकी भी कोई विशेष शिक्षा नहीं दिया है। जैसा कि हुज़ूर वारिस पाक की बाल्यकात की घटना के सम्बन्ध में अंकित है कि हज़रत अब्दुल मुनइम शाह रजी० की खानकाह (आश्रम) में एक फकीर नेत्र बन्द करके बैठने पर आपने कहा था 'मन काना फी हाज़ेही आमा फहोवा फिल आख़िरते आमा' बचपन से लेकर अन्त तक यही शिक्षा रही। जैसा कि सैय्यद सरफुद्दीन साहब वारसी लिखते हैं कि हुज़ूर वारिस पाक मुझसे बहुधा कहा करते थे कि आँख बन्द कर लेने से क्या होता है ? 'मन काना फी हाज़ेही आमा फहोवा फिल आख़िरते आमा' ईश्वर द्योतक प्रत्येक जगह मौजूद है तमाशा देखो।

Scanned with CamScanner

एक बार मैं रेल यात्रा में हुज़ूर पाक के साथ था। आप बर्थ पर लेटे हुए थे। मैं नीचे बैठा हुआ था। आखें बन्द थी। मन में सोच रहा था। इसमें आग और पानी है। इसमें हज़रत भी हैं और मैं भी हूँ। दोनों ओर फैले हुए जंगल हैं। हज़ारों जीव जन्तु हैं यह सब कुछ वही है। इतने में हुज़ूर ने मेरे कन्धे पर एक घूंसा मारकर कहा 'दूसरा भी है।' मैंने प्रार्थना किया कि आँखें हो तो देखूं। आप मुस्कुराकर लेट रहे।

मौलवी रौनक अली वारसी रज्जाकी अनुलेखक हैं कि नक्श बन्दिया सम्प्रदाय के एक फकीर जो समाधि में विशेष अभ्यस्थ थे। श्रीमान की सेवा में उपस्थित हुए हुज़ूर वारिस पाक उस समय आराम फरमा रहे थे और कुछ लोग बैठे हुए थे। नक्शबन्दी महोदय को अवसर मिल गया एक कोने में बैठकर समाधि आरम्भ कर दिया। अपने मोराकबा (समाधि) से वह हुज़ूर की विशेषता जानना चाहते थे। थोड़ी देर में हुज़ूर उठ बैठे। उनको मोराकबे में देखकर आपकी मुखाकृति लाल हो गयी। आपने कहा 'आखें बन्द करके क्या देखते हो? आँख बन्द करके देखा तो क्या देखा? आँख खोल कर देखो, आँखों के होते हुए अन्धा हो जाना ईश्वर की कृति की निन्दा है। उस फकीर ने अपने नेत्र खोले जैसे ही पूज्य हाजी बाबा की ओर दृष्टि गयी विवश होकर वह फकीर उनके कदमों पर गिर पड़ा। ख़ुदा जाने उसने क्या देखा? केवल इतना ही कहा कि सम्पूर्ण जीवन मोराकबा (प्रणिधान) में व्यतीत कर दिया किन्तु आज हाजी बाबा के क्रोध में जो दान मर्यादा देखा है। वह किसी में नहीं पाया। आज मेरी मेहनत सफल हो गई। शिष्य होने के लिए उस फकीर ने बहुत अनुमय विनय किया किन्तु हुज़ूर ने स्वीकार नहीं किया तथा प्रति उत्तर में कहा हम किसी के शिष्य को छीन लेना पसन्द नहीं करते। उनके धर्म गुरू के सम्बन्ध में समान भाव से कहा जब उनके शिष्य हो तो हमारे शिष्य हो। फकीरी में सभी सम्प्रदाय एक हैं, दो नहीं है। इससे विदित है कि बन्द आँखों पर खुली आँखों को वरियता देते थे। मिर्जा मुहम्मद इब्राहीम बेग शैदा वारसी लिखते हैं कि लखनऊ के जवार में एक वयोवृद्ध और बहुत बुजुर्ग फकीर थे जिनको शग्ल आईना में ऐसी महारत थी कि उनके अवधान से प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित होता था। मैं उसकी सेवा में जाता था। संयोग से एक संगीत समारोह में उन्हीं बुजुर्ग के इस कीर्ति से विमुख होना पड़ा। कुछ दिनों बाद वह देवा पधारे। उनको देखकर मुझे भय हुआ कि यह हाजी बाबा से मेरी शिकायत जरूर करेंगे और मैं अवश्य ही दण्डित हूंगा। अतः पहले ही चलकर हुज़ूर से यह घटना ब्यान कर दूँ। ज्योंहि मैं पहुँचा वह बुजुर्ग भी साथ ही आये। हुज़ूर ने उनसे मोआनका (भेंट अंकवार) किया और कहा कि

तुम्हारी तवज्जह (ध्यान) की ख्याति है। हम पर भी डालो वह बुजुर्ग चरणों में गिर पड़े और कहा मेरी क्या मजाल जो आप पर तवज्जह डालूं। हुज़ूर ने सेवक से मिठाई वगैरह मंगाकर दिया। वह चले गये। मैंने प्रार्थना किया कि यदि वह आप से तवज्जह डालने को कहते तो क्या होता? आपने कहा हम तवज्जह डालते। मैंने आग्रह किया कि यदि आप तवज्जह डालते हैं तो कभी हम लोगों पर भी तवज्जह (ध्यान) डालिए आपने मुझे निकट बुला कर कहा 'यह तवज्जह डालना तो एक प्रकार का तमाशा है असल तवज्जह वह है कि यदि मोती पर तवज्जह डाल दें तो वह पानी हो जाय।' इसी कथन का कुछ अर्थ मेरे समझने में नहीं आया तथा पुनः मैंने कहा यदि पत्थर पर ध्यान डाला जाय तो क्या हो? आपने कहा 'वह पत्थर मिट्टी हो जाय।' अब इस कथन का अर्थ मेरी समझा में आया कि तवज्जह उस को कहते हैं हजाबे तऐयुन (नियोजन का भेद नियुक्ति का पर्दा) को उठा दे और मूल से मिला दे जैसे मोती जिसका मूल पानी है या पत्थर का मूल मिट्टी है किन्तु एक ऐसा भेद बाधक है कि अपने मूल से अलग हो गये। पूरी ध्यान का यह प्रभाव है कि बाध्यता को दूर कर मोती को पानी और पत्थर को मिट्टी बना दे अर्थात मूल में परिवर्तित कर दे। यही ध्यान यदि मानव हृदय पर डाला जाय तो वह अपनी मूल से मिल जाय और परमात्मा से लग जाय तथा 'फी अनफो से कुम अफाला तब सोरून' की वास्तविकता प्रकट हो जाय। हुज़ूर वारिस पाक के कथनों से विदित हो रहा है कि उनकी दृष्टि प्रत्येक बात की हकीकत और मूल पर थी। आप कभी नियमित रूप से शिक्षा नहीं देते थे और न कभी मुख्य रूप से चिन्तन, मनन की ओर ही दृष्टि डालते थे किन्तु विचित्रता यह थी कि आपके अनुचर और अनुयायी लोगों में इस प्रकार के भी लोग पाये जाते हैं जिन से ज्ञात होता है कि लोगों की शिक्षा दिक्षा अवश्य हुई हैं। विश्वस्त सूत्रों और प्रमाणित लोगों से सुना गया है कि हुज़ूर किसी कार्य को प्रत्यक्ष होना नहीं चाहते थे। आपको बातों के गुप्त रखने का विशेष ध्यान था। ऐसे कार्यों से घृणा करते थे जिन से कोई मान सम्मान प्रकट हो। यही कारण है जिस से हुज़ूर पाक ने प्रत्यक्ष रूप में ऐसा कोई ध्यान नहीं डाला है जिस पर तवज्जह या ध्यान डालने की क्रिया सटीक हो सके। बल्कि ऐसा देखा गया है कि जिन लोगों ने ऐसा किया वह दोष के भागी और दण्डित हुए।

सैय्यद अली शाह चिश्ती कादरी गद्दी धारी साँडी, जनपद हरदोई लिखते हैं कि हुज़ूर वारिस पाक साँडी में विराजमान थे। किला कि मस्जिद में ठहरे हुए थे। निकट की खतीबों वाली मस्जिद में एक वारसी फकीर एहराम पोश नमाज़ पढ़ने

Scanned with CamScanner

हेतु आये। उनका एक पीर भाई भी नमाज़ पढ़ने आया जिसका नाम रहम रहमान था। जब दोनों नमाज़ पढ़ चुके तो न मालूम किस बात पर दोनों एक दूसरे पर तवज्जह (ध्यान) करने लगे। रात्रि के नमाज़ तक यही दशा रही दोनों का मुकाबला चलता रहा। अन्त में मुंशी रहम रहमान अचेत हो गये। इधर यह घटना घटी और उधर हाजी साहब उठ बैठे और खादिम को बुला कर आदेश दिया 'रहम रहमान बेहोश हैं। उनको खतीबो वाली मस्जिद से उठा लाओ।' खिरकापोश (गुदड़ी धारी से कहना तू बिल्कुल कमज़र्फ़ (अपात्र,अधम) हो सहन नहीं कर सकता और दूसरों पर प्रभाव डाल कर अपने गुणों का प्रदर्शन चाहते हो। अपना नुकसान अपने हाथों करता है। मैं तुझ को छुपाता हूँ, तू ज़ाहिर होता है। जब दोनों हुज़ूर वारिस पाक के दरबार में हाज़िर हुए तो हुज़ूर के आदेश से मुंशी रहम रहमान पर पानी का छींटा किया गया वह अपने होश में आये और फकीर पर अपनी अप्रसन्नता प्रकट किया। उस समय सभी उपस्थित गण भयभीत हो रहे थे। एहराम पोश साहब हुज़ूर के चरणों में गिरकर रोने लगे। किसी प्रकार उनकी क्षमा याचना स्वीकार हुई। सारांश यह है कि हुज़ूर वारिस पाक कोई ऐसा कार्य पसन्द नहीं करते जिसमें कोई विशेष गुण प्रकट हो अथवा जिससे प्रभावशाली होने का बोध हो जाय। आप अपने फकीरों के सम्बन्ध में कहते थे 'हम फकीर बनाना चाहते हैं और ये मशायख (बुजुर्ग) बने जाते हैं।' हुज़ूर वारिस पाक का मार्ग तल्लीनता और अचेतनावस्था पर निर्भर था। वास्तविक और यही आप की मूल शिक्षा थी। आपके शिष्यों में जलन और द्रवता होना अनिवार्य था। किन्तु बहुत से बुजुर्ग कैफ (मस्ती) और हाल वाले थे। पर वारसी मशरब (पंथ) में लोगों की भी कमी नहीं है जो धार्मिक नियमों (शरीयत) का विचार रख कर कभी कौवाली की मजलिस में सम्मिलित नहीं होते थे और न पसन्द करते हैं किन्तु प्रेम भाव और अन्य दशाओं में दूसरे से पीछे नहीं हैं। हुज़ूर वारिस पाक अपने शिष्यों की शक्ति और स्वभाव के अनुसार ही यश और कीर्ति से लाभान्वित करते थे किन्तु ऐसे लोग जो यह प्रतिवाद रख कर कि कैफ और हाल कोई वस्तु नहीं है। उन्हें आप अवश्य ही आनन्दातिरेक की अवस्था में ला देते थे।

मौलवी मुहम्मद इसहाक साहब वारसी ईटावा और मुंशी जाकिर अली अपने आँखों ब्यान करते हैं कि एक बार पूज्य हाजी बाबा के आदरणीय पिता सैय्यद कुर्बान अली शाह रजी० का उर्स था। एक धर्मोपदेशक महोदय खड़े हुए धर्मोपदेश दे रहे थे और हाल वालों व आनन्दातिरेक व्यक्तियों पर कटाक्ष कर रहे थे। इस व्यंग पर श्रोताओं में से किसी ने कहा कि हम से क्या कहते हो उन से क्यों नहीं कहते जो इन कारणों के कारण हैं ? इस पर उपदेशक महोदय को क्रोध आ गया और सीधे

वारिस बाबा के दरबार में पहुँच गये। वहाँ किसकी हिम्मत थी जो कुछ कहे। वहाँ जाते उपदेशक महोदय आश्चर्यचकित होकर शान्तमय खड़े हो गये। उनकी जुबान पर एक शब्द नहीं आया। लोगों ने बताया हाल (रोमांच) वालों के सम्बन्ध में आप कहते हैं कि सभी नरकीय (दोज़खी) और मरदूद (रद किये हुए) नामाकूल हैं इत्यादि बातें बोल रहे हैं। उनकी ओर देखकर आपने मात्र इतना कहा, 'मौलवी साहब तो बड़े साहबेलाल (रोमांच वाले) हैं।' फिर क्या उनकी दशा परिवर्तित हो गयी पदों को चूमकर झूमने लगे और इसी मस्ती में कव्वाली में पहुँच गये। हाल पर हाल आने लगा। ज्ञान और उपदेश सब कुछ भूला दिया बिना जल की मछली के समान सड़क पर तड़पते रहते थे।

मुंशी अब्दुलगनी साहब वारसी रईसपुरवा, गनी खान जिला रायबरेली लिखते हैं कि पूज्य हाजी वारिस बाबा रायबरेली में विराजमान थे। जनसमूह एकत्र था। लोगों पर मस्ती विराजमान थी। लोग झूम रहे थे। इसी में केवल दो आदमी परिहास कर रहे थे। एक अफगान और दूसरे रज्जब खान। दोनों की विरोधात्मक बातों से लोगों को कष्ट हो रहा था। एहराम का जुलूस हुज़ूर के निवास स्थान पहुँचा और जुलूस कव्वाली की सभा में परिवर्तित हो गया। हाजी बाबा सभा में न आकर मकान में ही विराजमान थे। आपके सामने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष समान था। इस सभा में तीन व्यक्तियों को अति वेग से हाल (रोमांच) आया। इनमें एक तो वही अफगान महोदय थे और दूसरे रज्जब खान तथा तीसरे अब्दुर्रहीम निवासी रायबरेली थे। जिनके सम्बंध में ज्ञात हुआ कि यह भी उस परिहास और व्यंग में सम्मिलित थे। इन तीनों की दशा यह थी कि हर एक को दस-दस व्यक्ति पकड़ते थे किन्तु यह रूक नहीं पाते। कभी सिर पटकते कभी रोते, गिड़गिड़ाते और कभी उठकर नाचने लगते थे। वस्त्र फट गये, सम्पूर्ण शरीर आहत हो गया। कव्वाली भी समाप्त हो गयी किन्तु दो दिन तक यह अचेत रहे। तीसरे दिन जब हुज़ूर बिदा होने लगे तो मम्मन खाँ मकान मालिक ने प्रार्थना किया कि हुज़ूर! ऐसा ज्ञात होता है कि ये तीनों इसी दशा में मर जायेंगे। आपने आदेश दिया इनका हाथ मुँह धुला दो और थोड़ा सा पानी पिला दो। आदेश का पालन हुआ और उनकी चेतना लौट आयी। ये तीनों जीवन पर्यन्त दशा और हाल (रोमांच) के पात्र रहे। गनी खान कहते हैं कि एक बार जब रज्जब खान से भेंट हुई तो मैंने हाल पूछा तो हुज़ूर का नाम आने पर रोने लगे तथा बार-बार अपनी त्रुटि पर लज्जित होने लगे। यही कहते थे कि अहो! क्या सरकार हैं ? ताड़ना के स्थान पर ऐसी सम्पत्ति प्रदान की गयी जिससे दोनों लोक में आदर

Scanned with CamScanner

मिला। वारसी दरबार में जो भी आरोपक उपस्थित होता वह स्वयं अपने आरोप का प्रतिउत्तर हो जाता था।

मुहम्मद याकूब खान वारसी नकल करते हैं कि मेरे भाई मुहम्मद नासिर खाँ निवासी रनजीतपुरा, जिला-उन्नाव एक बार १८८४ ई० के उर्स में जो सफीपुर में होता है सम्मिलित थे। उनको ख्याल हुआ, कितना अच्छा होता यदि हम भी साहबे हाल हो जाते। अत: वह देवा शरीफ महामना पूज्य हाजी बाबा की सेवा में प्रार्थी हुए आप ने कहा 'तुमको भी शौक पैदा हुआ है।' तत्पश्चात् विदा कर दिया। एक बार रनजीतपुरा में शाह नियामतुल्ला साहब रह० के समाधि भवन पर कव्वाली हो रही थी। मुंशी मुहम्मद नासिर खाँ भी शरीक हुए। उस समय उनको ऐसा हाल आया कि वह तीन दिन तक बेहोश रहे। पुन: महामना हाजी बाबा की सेवा में उपस्थित होकर आग्रह किया। ऐसे हाल से तो बड़ी हानि है। आपने कहा 'अच्छा जूते पहना करो जब तक जूते न उतारोगे हाल न आयेगा।' अब मुंशी मुहम्मद नासिर महोदय कि यह दशा है कि जब तक जूते पहने खड़े रहते हैं या किनारे सभा में बैठे रहते हैं उनको हाल नहीं आता किन्तु जब जूते निकाल कर सभा के बीच आते या बैठते उनको हाल हो जाता था। यह सब जो कुछ भी था महामना हाजी बाबा के पुनीत और यशमयी कथन का प्रसाद था। जैसा हुजूर ने कहा है 'यहाँ कुछ नहीं है और फिर सब कुछ है।' हकीकत यह कि आपके प्रेम भाव में स्थिर होना और आपके गुणों का बखान करना वारसी अनुचरों हेतु सब कुछ है और इसके सामने जप-तप सभी व्यर्थ हैं।

रियाजत नाम है तेरी गली में आने जाने का।
तसव्वुर में तेरे रहना इबादत इसको कहते हैं।

तपस्या, पराक्रम और शिक्षा ऐसे तो माननीय हाजी बाबा के अनुचरों हेतु कड़ी तपस्या की शिक्षाओं का बाहुल्य है किन्तु उनमें से कतिपय यहाँ अंकित हो रही हैं : जिन से रियाजत, मोजाहिदा और घोर तप का विशेष रूप पाठकगण के सन्तोष हेतु प्राप्त है। यद्यपि मान्यवर हाजी वारिस बाबा के दरबार में दान महादान का महाव्रत चालू था किन्तु आपकी शिक्षा से अधिक प्राणियों ने लाभ उठाया है। साथ ही आपके आत्म बल ने आपकी शिक्षाओं में चार चाँद लगाया है। यही कारण है कि अति कठिन कार्य भी सरल हो गये हैं। उपस्थित-अनुपस्थित, निकट दूर कोई भी असफल नहीं रहा है। भगवान भक्तों की कामनाये पूरी हुई अर्थात हरिदर्शन सुलभ हुआ है। आपकी शान और मर्यादा के अनुसार ही आपके अनुचर और

सेवकों ने भी स्थिरता, स्थायीत्व और लगन से कार्यरत होकर दृढ़ता और पुरूषत्व का प्रमाण दिया है। यदि किसी हल्का बगोश (प्राप्तदीक्षी) को जब कभी आप कड़ी तपस्या की शिक्षा देते तो अपनी ईश्वर प्रदत्त शक्ति द्वारा उसकी इतनी सहायता करते कि उस तपस्वी का चमत्कार लोगों को चकित कर देता था। मान्यवर हाजी बाबा के प्रेम में जो घोर कष्ट और यातनायें वारसी अनुचरों ने सहन किया है उनका स्मरण होते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। यों तो अस्थाई और सामायिक तपस्या लगभग प्रत्येक शिष्य के सामने आयी होगी परन्तु उदाहरणार्थ कुछ कड़ी रियाजतों (घोर तपस्याओं) का वर्णन किया जाता है जो अद्वितीय है।

मुस्तकीम शाह जी निवासी अजमेर को आदेश हुआ कि 'आँख न खोलना और संसार की कोई वस्तु न देखना।' अत: सत्तर वर्ष से अधिक समय व्यतीत हो गया। वह वारिस पिया के आदेश पालन से आँखें बन्द रखा और संसार की वस्तु को नहीं देखा। इसके विपरीत हाफिज गुलाब शाह महोदय वारसी अकबराबादी को आदेश हुआ 'आँख न बन्द करो, जागते रहो।' अत: इस आदेश के पश्चात् चालिस वर्ष जीवित रहे किन्तु उन्होंने कभी आँख बन्द नहीं किया और न कभी सोये। पत्थर का सहारा लेकर बैठे रहते थे। अब्दुर्रज्जाक शाह वारसी को आदेश हुआ 'बात न करो।' इस आदेश का ब्यौरा श्रीमान शैदा मियां वारसी इस प्रकार लिखते हैं कि शाह महोदय जिला बाराबंकी के निवासी थे। किन्तु 'बाढ़' जिला-पटना में अधिक रहते थे। एक बार महामना हाजी पुनीत वारिस बाबा बाँकीपुर में खान बहादुर फज़ले इमाम के घर विराजमान थे। बहादुर अली खान साहब रईस, बाढ़ के साथ अब्दुर्रज्जाक शाह भी हुजूर की कदम बोसी में हाज़िर हुए और कदाचित कोई बात बेमौके मुँह से निकल गई जिस पर महामना हाजी बाबा ने कहा 'चुप रहो।' उसी समय से शाह साहब चुप हो गये। दो वर्ष पश्चात् जब मान्यवर हाजी बाबा बाँकीपुर पधारे तो कुछ सम्मानित लोग अब्दुर्रज्जाक शाह को अपने साथ ले गये और एक स्वर होकर पूज्य हाजी बाबा से प्रार्थना किया कि शाह साहब को बहुत कष्ट हो रहा है। अत: बोलने का आदेश प्रदान कर दिया जाय। मान्यवर हाजी बाबा ने शाह महोदय को सम्बोधित कर कहा 'बात करना चाहते हो' शाह साहब चुप रहे। थोड़ी देर मौन रह कर महामना ने कहा 'वज़ादारी (किसी एक ढ़ंग से जीवन प्रयत्न रहना) के विरूद्ध है। अब क्या बोलोगे? थोड़ी उम्र जो शेष है इसको यूँही काट दो।' यह सुनकर शाह साहब के नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगी। फिर पूज्य हाजी बाबा ने मुस्कुराते हुए कहा 'अब्दुर्रज्जाक शाह दुनियां में तो क्या बोलोगे? कब्र में भी नकीरैन को जवाब न

Scanned with CamScanner

देना।' तत्पश्चात् मुँह पर हाथ रखते हुए कहा 'अब्दुर्रज्जाक शाह यदि खुदा भी सवाल करे तो जवाब न देना।' यह सुनकर शाह साहब बहुत आनन्दित हुए और चरण स्पर्श किया। सम्पूर्ण उपस्थित जन पर एक विचित्र दशा छायी हुई थी। इस घटना के ठीक एक वर्ष बाद शाह अब्दुर्रज्जाक साहब ने नश्वर शरीर का परित्याग कर दिया।

खुदाबख्श साहब को सम्पूर्ण धरती से उगने वाली वस्तुओं और पशुओं को खाना वर्जित था। बहुत दिनों तक वह राख को पानी में घोल कर पीते रहे। अन्त में यह आदेश हुआ कि अमुक सीमित स्थान में उगने वाली वस्तुओं को बिना नमक, मिर्च खा लिया करो। इस प्रकार छत्तीस वर्ष तक उस महापुरूष ने आस-पास की घासों को उबाल कर खाया। यह भी वारिस मियाँ के प्रेम का एक चमत्कार था। इस कठोर आदेश पालन में शाह खुदाबख्श साहब ने अपने आचरण को अति दृढ़ता से प्रमाणित किया जिसकी मिसाल असम्भव है।

मान्यवर हाजी बाबा के एक फकीर जंगली शाह थे। जो रियासत महमूदाबाद के एक जंगल में रहते थे। एक बार की बात है कि पूज्य हाजी बाबा उसी रास्ते से गुजर रहे थे। इस यात्रा में माननीय हाजी बाबा के साथ श्री मिर्जा मुहम्मद इब्राहीम बेग शैदा भी थे। मिर्जा महोदय कहते हैं कि आपने थोड़ी देर रास्ते में विश्राम किया। एक फकीर ने इस्म 'हक' की जर्ब (नारा) लगाया और हुजूर के कदमों पर सिर रख दिया। चन्द मिनटों के बाद आपने जाने को कहा 'जंगली शाह जाओ।' यह आदेश पाकर वह चले गये। उनकी घबराहट भरी आँखों को देखकर मैं चकित रह गया। मैंने हुजूर से पूछा यह कौन थे? आपने कहा 'पहले यह बहुत खुशहाल थे। और योग्य भी। किन्तु जबसे फकीर हुए हैं हमने कह दिया है कि पशुओं के साथ रहा करो।'

मिर्जा मुहम्मद इब्राहीम बेग शैदा लिखते हैं कि मिरआत शाह जो एक हिन्दू थे। हुजूर के प्रेम में संसार का त्याग करने को तैयार हुए थे। एक बार मुझसे कहा कि सरकार से प्रार्थना कर दो कि मुझको कुछ योग शिक्षा प्रदान कर दें। उनकी इस इच्छा को हुजूर के सामने पेश किया। आपने आदेश दिया कह दो 'भोग में योग करें।' मैंने करबद्ध आग्रह किया कि मैं भोग में योग स्वयं नहीं जानता फिर उनको कैसे समझाऊं? आपने कहा प्रथम वह वस्तु भोजन करें जो अपनी जाति का बीज हो जैसे आलू, अरूई, कन्द इत्यादि। यदि इनको खाया जायेगा तो मानो इनका बीज कट गया। हाँ आम, खरबूजा, कद्दू इत्यादि का गूदा खायें और बीज को रखा करें

जब इसकी आदत हो जाये तो गूदा ग्रहण करना भी त्याग दें और भूख निवारण हेतु फली को सूंघ लिया करें। जब यह सध जाय तो सूंघना भी त्याग दें और इच्छा शान्ति के लिए मात्र देख लिया करें और जब इतनी शक्ति हो जाय तो देखना असल भोग में योग है। इस आदेशानुसार शाहजी ने आचरण आरम्भ किया। किन्तु खेद है कि शीघ्र ही उनकी मृत्यु हो गयी और पता न चल सका कि इस योग का कहाँ तक उन्होंने साधना किया था?

माननीय अहदशाह साहब का स्वभाव भी इसी ढंग का है। उनके अधिकांश कर्म योग से मिलते जुलते हैं। शैदा वारसी लिखते हैं कि एक बार सरकार वारिस मियाँ ने उनको आदेश दिया 'अहद शाह! योग इच्छा दमन को कहते हैं और इच्छाओं का त्याग (नफ्सकुशी) अनिवार्य है। अतः क़ुरआन इसकी शिक्षा देता है। 'लनतनालुल बिर्र हत्ता तुनफेकुना मिम्मा तो हिब्बून' अर्थात जिससे अधिक प्रेम करते हो उसे त्याग दो। फकीरों का मार्ग यह है कि इन्सान को अधिक प्रेम अपने आराम और सुख से है। अतः फकीर को चाहिए की सुख साधनों का त्याग करें और सुख का विचार अपने मन से निकाल दें। भगवान प्रेम में प्रत्येक कष्टों को सहन करे।

एक धुरन्धर पण्डित जो बगदाद शरीफ के निवासी थे। ईश्वर प्राप्ति की इच्छा से संसार त्याग कर वैरागी हो गये और हुजूर का शिष्य हो फकीरी वस्त्र धारण कर लिया। आपने उनका नाम बोगदादी शाह रखा और भ्रमण का आदेश दिया। कुछ दिनों पश्चात् मिश्र यात्रा से वापस होकर जब पूज्य हाजी बाबा की सेवा में उपस्थित हुए तो आपने पुनः नेपाल और चीन की यात्रा का आदेश दिया। बोगदादी शाह ने उसी समय यात्रा आरम्भ कर दिया। इस यात्रा से लौटने पर हुजूर वारिस मियाँ ने उनसे कहा फटे पुराने जूते सी कर चार पैसे रोज़ की मजदूरी किया करो। सन्ध्या को दो पैसे से रोज़ा अफ्तार (व्रत पारन) करो और शेष गरीबों में बांट दिया करो। उस महापुरूष ने इसी भाँति बहुत दिनों जीवनयापन किया और अंततः स्वर्गवासी हो गये। एक अन्य बीबी हज्जिन फकीरी वस्त्र धारणी को आदेश था कि खड़ी न हो। उस महिला आदेश पालक ने ऐसा आचरण किया जिस के कारण उसकी दोनों टाँगें बेकार हो गयी और शेष जीवन इसी दशा में व्यतीत कर अलीगढ़ में मृत्यु को प्राप्त हुईं।

रूमीशाह यूरोपियन हुजूर के तहबन्द पोश फकीर थे। उनको आदेश था कि बिना मांगे और बिना इच्छा जो मिल जाय उसका आधा स्वयं ग्रहण करो और शेष आधा गरीबों मुहताजों को दिया करो। शाह साहब अधिक दिनों तक अज़ीमाबाद में रहे और मुंगेर में इनकी मृत्यु हुई। शैदा मियाँ वारसी कहते हैं कि आदरणीय पिता

Scanned with CamScanner

को आदेश हुआ कि जो कुछ पढ़ा है भूल जाओ। मैंने देखा था कि अन्तिम समय मेरे पिता हस्ताक्षर तक नहीं कर पाते थे। एक बार मेरी बहन बोगदादी कायदा (बाल पोथी) पढ़ती थी भूलने पर उसको भी न बता सके।

श्रीमान शैदा मियाँ वारसी लिखते हैं कि एक समय कस्बा मलावाँ, जिला उन्नाव में महामना हाजी बाबा विराजमान थे। भोजन के पश्चात् मुझसे कहा कि जहाँ और मेहमान उपस्थित हैं। वहाँ जाकर कहो कि शिमला के लोग अलग हो जाएं और शिमला वालों को तुम अलग भोजन कराओ। मैंने जाकर पता किया तो पाँच बूढ़े व्यक्ति और एक लड़का शिमला निवासी मिले। मैंने अलग उनको खाना खिलाया किन्तु उनमें से एक व्यक्ति खाना नहीं खाया और रो-रो कर कहने लगा- आज हमसे क्या पाप हुआ कि हम लोगों को अलग भोजन कराया गया? मैं भी उदास हो उठा और जाकर हुजूर को सूचित किया। आदेश हुआ उनको यहाँ बुला लाओ। मैंने जब उनको हुजूर में पेश किया तो आपने उनसे कहा 'जमील शाह तुम्हारा कोई दोष नहीं, हम खुद भूल गये।' उसी समय खाना खिलाया गया और जमील शाह को सरकार ने आदेश दिया 'अब तुम रोज़ा (भूख व्रत) रखा करो।' तहबन्द (वस्त्र) और मिठाई देकर उनको विदा कर दिया। रात्रि में जब एकान्त हुआ मैंने हाजी बाबा से पूछा मान्यवर! यह जमील शाह कौन थे? आपने कहा 'यह हमारे शिष्य हैं। चालीस वर्षों से शिमला के दर्रे में रहते हैं। यह अन्न नहीं ग्रहण करते हैं। पहाड़ी में एक रेशेदार वृक्ष होता है। उसी का अर्क (रस) पी लेते हैं। किन्तु आज हम अपना आदेश भूल गये और भोजन करा दिया।

मिर्जा मुहम्मद इब्राहीम बेग शैदा लिखते हैं कि जब मैं कर्बला गया था तो सैय्यद जव्वाद अली उस समय कुंजी मालिक थे। उनके आदरणीय पिता ने स्वयं मुझे खोजकर मान्यवर हाजी बाबा का समाचार वर्णन किया और उस समय की बातें बताई जब पूज्य हाजी वारिस बाबा अरब और ईराक में विराजमान थे और सरकार वारिस मियां की आत्मा शक्ति के अधिकार का वर्णन किया जिनका किसी को पता नहीं था। मैंने एक बुढ़िया को देखा जिसका नाम भी राबिया था। राबिया बसरी की बात तो सुना ही था। इस राबिया वारसिया को भी अपनी आँखों से देखा जो सुख वैभव से सम्पन्न होते हुए भी सदैव रोज़ा रखतीं और बोरिया ओढ़न-डासन बनाया था। कठोर तपों के वही लोग भागी है जिनका नाम ईश्वर प्रेमियों में आदि ही से भगवान की सूची में अंकित है।

स्थानापन्न और प्रतिनिधित्व समस्या

महान वारसी सिलसिले (पंथ) में प्रतिनिधित्व और उत्तराधिकार समस्या विवादग्रस्थ है। जिसके अनुसार अनेकों विचार उत्पन्न हुए और प्रसारित हुए हैं। यद्यपि मूल पुस्तक लेखक बहुत दिनों तक भ्रम में रहे हैं और भिन्न-भिन्न कथनों के कारण खिलाफत (स्थानापन्न होना) सज्जादगी (गद्दी नशीनी) को स्वीकार भी करते रहे हैं किन्तु विशेष खोजों और छानबीन से जो तथ्य प्राप्त हुआ उससे उक्त भ्रम दूर हो गया है। वास्तविकता यह है पूज्य हाजी वारिस बाबा से किसी को न तो खलीफा बनाया (प्रतिस्थापित किया) और न गद्दीधारी किया और न माननीय हाजी बाबा किसी नियम प्रबन्ध का पालनकर्ता थे। उनका कोई ढ़ंग अन्य बुजुर्गों जैसा न था न तो शिक्षा दीक्षा दूसरे बुजुर्गों से मिलती-जुलती थी। न शिष्य बनाने का ढ़ंग ही दूसरे सम्प्रदायों जैसा था। ऐसी दशा में यह समस्या आपके यहाँ नहीं थी इस सम्बन्ध में आपके कथन निम्नानुसार हैं :

'बलीसा-ए-बख्शिश' में है कि हुजूर वारिस मियाँ का कथन है 'प्रेम पद (मंजिले इश्क) सर्वोच्च और महान है। जप-तप से जो प्राप्त होता है प्रेम उससे उत्तम पद देता है और मैं मजहब-ए-इश्क (प्रेम धर्म) रखता हूँ। इस धर्म (मिल्लत) में सज्जादगी (स्थानापन्न) इत्यादि नहीं है। जो व्यक्ति प्रेम जाल में फंसा है तथा प्रेम की मादकता से मस्त है वह मेहतर हो या चमार, वह मुझसे है।'

मौलवी शेख मुशीर हुसैन किदवई बैरिस्टर एटला निवासी इंग्लैण्ड लिखते हैं कि मैंने बार-बार हुजूर की जबानी सुना है कि हमारा मशरब (पंथ) इश्क का है, इश्क (प्रेम) में प्राप्त करने की क्रिया (कसब) नहीं, खुदा की देन होती है। हमारा कोई खलीफा नहीं। इश्क में खिलाफत किसी के साथ प्रतिबन्धित नहीं। जिसके मन में इश्क हो। मौलवी नादिर साहब लिखते हैं कि हुजूर वारिस मियां ने नवाबगंज बाराबंकी में मुझे आदेश दिया कि हमारी मंजिल इश्क है जो कोई दावा करे वह बातिल (झूठा) है। नादिर हुसैन तुम से कोई अंग्रेज पूछे तो यही कह देना। मैंने अर्ज़ किया यदि लेफ्टीनेन्ट गर्वनर जनरल भी पूछेंगे तो यही कहूंगा जो आपने आदेश दिया है। काजी बख्शिश अली साहब को आदेश किया वह तहरीर लिखित कागज लाओ और मुंशी जी को दे दो। काजी साहब ने प्रार्थना किया तहरीर एक ही प्रति है जो रखी गई। आपने पुन: कहा 'वही लाओ।' काजी साहब वह आदेश-पत्र लाकर हुजूर को दे दिया। आपने उस को पढ़ा और मुझे दे दिया। जो मूल पुस्तक लिखते समय मुंशी मुशीर हुसैन साहब किदवई के पास मौजूद रही है। यही तहरीर

Scanned with CamScanner

मौलाना अब्दुल आद शाह ने अपनी पुस्तक ऐनुल यकीन में भी नकल किया है। जिसमें खिलाफत और सज्जादगी को समाप्त कर दिया है। सत्य यही है कि पूज्य हाजी वारिस बाबा ने किसी को अपना स्थानापन्न और उत्तराधिकारी का नामकरण नहीं किया है। अब प्रश्न यह उठता है ऐसे ही जब आपने किसी को अपना अधिकार नहीं दिया तो वारसी फकीर लोग जो शिष्य करते हैं उनका यह कार्य कहाँ तक उचित है। इसका उत्तर पूज्य हाजी वारिस बाबा के हालात और वाकेयात का अध्ययन करने से जो कुछ हकीकत का पता निशान मिलता है वह यह है कि मान्यवर हाजी वारिस बाबा का फकीरी मार्ग पूर्णत: पृथक था। आप पूर्णत: तसलीम रजा के मानने वाले और आवद्ध थे। यही आपका मूल मार्ग था। कभी कोई वाह्य प्रबन्ध आपने नहीं किया और न उचित ही समझा। सम्पूर्ण कार्य ईश्वर के हवाले थे। आप स्वभावत: किसी कार्य को उचित नहीं समझते थे। जो किसी स्वार्थ और आशा पर आलम्बित होते थे। जप-तप जो कुछ भी हो नि:स्वार्थ होना पसन्द करते थे। यद्यपि आपने किसी को खिलाफत का प्रमाण नहीं दिया किन्तु स्थानापन्न की विभूति से अवश्य ही विभूषित किया है।

जिन लोगों को आप ने खिरका एहराम या तहबन्द (फकीरी वस्त्र) प्रदान किया है उनमें भी विभिन्नता है। किसी को तहबन्द मात्र दिया है और किसी को तहबन्द के साथ लगोंटा भी धारण करने का आदेश हुआ है और कुछ लोगों को उक्त दोनों वस्तुओं के साथ नामकरण से सम्मानित किया है। किसी को खुली शिक्षा दी गई और कुछ को आन्तरिक शिक्षा दी गई। महामना पूज्य हाजी बाबा के हितोपदेशों का ज्ञान करना और समझना अति कठिन है। अत: कोई ठीक राय स्थापित नहीं की जा सकती है कि आप द्वारा घटित घटनाओं के रहस्य क्या हैं?

पूज्य गुरू मान्यवर हाजी वारिस अली बाबा का खिरका (फकीरी वस्त्र) देना अपने जीवन को मिटा देने का सबक देना था। क्योंकि बहुधा लोगों को फकीरी वस्त्र देते समय आपका आदेश होता था कि लो यही जीवन का वस्त्र है और यही कफन है। किसी जपी-तपी को आपने खिलाफत नहीं दिया इससे विदित है कि आपकी शिक्षा फना (मिटने) होने की थी और आपको मिटाने को थी। जो अपनी हस्ती को मिटा दे उसे यह पद प्राप्त हो जायेगा फिर उससे जो कार्य होंगे वह अख्तियारी नहीं होंगे वरन् उस शक्ति का होगा जिसमें उसने अपने को विलीन कर दिया है। तोराब अली कलन्दर रह० के कथनानुसार-

जब तक ख़ुदी है जब ही तलक है ख़ुदा जुदा।
गैबतगर आपसे हो तो हक का ज़हूर है।।

जब अपने अस्तित्व में ईश्वर का अस्तित्व प्रकाशमान हो जाता है तो मानवी इच्छायें समाप्त हो जाती हैं। मानो तालिब मतलूब हो जाता है अथवा साधक साध्य हो जाता है। वास्तविकता की यह चरम सीमा है और यही उत्तराधिकार का शुद्ध प्रमाण है जो अमिट और विनाश मुक्त है। स्थानापन्न होने के अभाव में पीरी मुरीदी (शिष्यता गुरू होने की) नहीं रूकती है। पूज्य हाजी बाबा ने अपने प्राप्त दीक्षा को शिष्य बनाने से रोका नहीं है। जिन लोगों का ऐसा विचार है उन्हें सरकार वारिस मियाँ के पवित्र अध्यात्म और उनकी आत्म-शक्ति का बोध नहीं है। इसके प्रमाण स्वरूप ऐसी घटनायें मौजूद हैं जिनसे विदित है कि हुजूर वारिस मियाँ के जीवन काल में भी आपके मर्यादित फकीरों ने बैय्यत ली है अर्थात शिष्य बनाया है।

हाजी मुहम्मद शाह साहब वारसी लिखते हैं कि हिदायतुल्लाह साहब वारसी मुहद्दिस सूरती की घटना है जैसा कि उन्होंने मुझसे ब्यान किया है कि शाहजहाँपुर में हम से एक एहराम पोश वारसी फकीर मिले जो बड़े जपी और तपी थे। मैंने उनसे एक बार कहा कि यदि आपके पीर (गुरू) मिल जायें तो मैं अवश्य शिष्य हो जाऊं। उन्होंने अपने हाथ की ओर संकेत करके कहा कि यह वही हाथ है। इसके बाद मुझे शौक हुआ और मैं देवा शरीफ आकर हुजूर के पास हाजिर हुआ। आप कहने लगे ये हाथ और वह हाथ दो नहीं है पुन: मैं हुजूर के हाथ पर शिष्य हुआ।

मिसकीन शाह वारसी, यतीमशाह वारसी, मासूम शाह वारसी इत्यादि के अतिरिक्त और भी फकीर थे जो वारसी पंथ को शिष्य बनाते थे। उन फकीरों के बनाये हुए शिष्य जब हुजूर की सेवा में उपस्थित होते और शिष्य बनना चाहते तो आप उनसे फरमाते 'सुनो तुम हमारे मुरीद हो यह हाथ और वह हाथ एक ही है। उनसे और हमसे मुहब्बत रखो।'

आप पूर्व शिष्यता को ही मानते और पुन; शिष्य नहीं बनाते थे। आपकी दृष्टि प्रत्येक बात की कमाल पर थी। एहराम प्रदान करना मानो अध्यात्म प्राप्त करने का प्रलोभन था और अपने अस्तित्व को मिटा देना शिक्षा और दीक्षा थी। यदि चाह सत्य होती तो हुजूर वारिस पाक की आत्म-शक्ति पलक मारते ही प्रत्यक्ष परिवर्तन कर देती थी। महामना हाजी वारिस पाक की प्रत्यक्ष शिक्षा तो प्रेम ही थी और जिसको आप शिक्षा देते थे उसे प्रेम भी प्रदान करते थे। उसमें उन्नतशील होना चाहने वाले के शौक और साहस पर निर्भर था। प्रेम की चरमता यह है कि प्रेमकर्ता स्वयं प्रीतम

Scanned with CamScanner

अथवा प्रेम पात्र हो जाय। अपने अस्तित्व को मिटा दे। जब यह सटीक हो गया तो उसके कर्म भाव प्रीतम के कर्म भाव हो जाते हैं अर्थात उसके कार्य आचरण सभी प्रीतम के कार्य और आचरण हो जाते हैं और प्रेमकर्ता स्वयं कुछ नहीं रहता है। अत: आपके फोकरा (फकीर का बहुवचन) जिनको सफलता प्राप्त हो चुकी थी वह लोगों को शिष्य कर लेते थे। हाल यह था कि आप किसी फकीर को शिष्य बनाने से नहीं रोकते थे। जो अपने को इसके योग्य समझता शिष्य कर लेता था और जो अपनी कमी देखता था वह लोगों को लाकर हुजूर से मुरीद करा देता था। यही कि आज भी ये दोनों रूप मिलते हैं। इस समय भी हुजूर में ऐसे फकीर मौजूद हैं जिनसे होने हेतु एक जन समूह शिष्यता में आ रहा है और लोग उनकी मान सम्मान में सब कुछ करने को तत्पर हैं और उनकी यश कीर्ति से लाभान्वित हो रहे हैं।

महान सम्प्रदाय वारसिया के संतों और बुजुर्गों के प्रति मेरा ही व्यक्तिगत अनुमान नहीं वरन् इस जमाने के समस्त सम्प्रदायों के संतों, फकीरों तथा बुजुर्गों का भी अनुमान ऐसा ही है। उदाहरण स्वरूप कुछ पत्र निम्नांकित हैं जिससे मेरे विचार की पुष्टि हो सकेगी। मौलवी ख्वाजा शाह अब्दुस्समद देहलवी स्थानाण्न मौलाना मुहम्मद फखरूद्दीन चिश्ती रजी० लिखते हैं :

हज़रत हाजी शाह वारसी अली कुदसल्लाहो सिर्रहू भारत के अन्तिम युग के बुजुर्गों में ऐसे प्रसिद्ध हैं जिनके महान होने में अध्यात्म मार्गियों में किसी को लेश मात्र शंका नहीं है। बहुत से इनके नाम लेवा और इनकी दानशील सेवा से यश प्राप्त करने वाले ऐसे देखे गये हैं जिनमें चिश्तियों और कादरिया से घनिष्ट लगाव पाया गया। यद्यपि जिन फकीरों को उक्त प्रशंसति महोदय (हज़रत ममदूह) की सेवा में रहने का अवसर भी प्राप्त नहीं हो सका है फिर भी उन विशेष सेवकों को विशेष अवस्था और हाल में देखा गया है। उनमें के कुछ तो वैराग्य और ब्रह्मचर्य में संलग्न पाये गये हैं। यह फकीर दुआ करता है कि ईश्वर हाजी बाबा के इस मार्ग को स्थिर रखे और यह सब अपने महान धर्मगुरू का अनुकरण शरीयत में करें और आन्तरिक ब्रह्मवाद का अनुकरणकर्ता रहे। (फकीर मुहम्मद अब्दुस्समद अली मन हो।)

हज़रत मौलाना शाह अबू अहमद अली हसन साहब गद्दी नशीन किछौछा शरीफ लिखते हैं कि बिना शिक्षा-दीक्षा के ही पूज्य हाजी बाबा ने जिन पर हार्दिक ध्यान डाल दिया वह महा सन्तों या महान पुरूषों में से एक हो गया। ऐसे कुछ लोग मुझसे मिले हैं। जो साधारण वेष-भूषा में होते हुए भी अध्यात्म के विचार से महान थे।

शरीयत तरीकत ज्ञाता शाह मुहम्मद सुलैमान साहब फुलवारी शरीफ पटना

लिखते हैं : कि माननीय महामना हाजी वारिस अला शाह आत्मज्ञ ब्रह्मवेत्ता और मस्त थे। दो-चार बार नहीं वरन् बीसों बार मैं उनकी सेवा में उपस्थित होकर उनके अध्यात्म से लाभ उठाया हूँ। उनकी संगति में रहने वाले शिष्यों में अब्दुल हई साहब जगौरी और हिदायतुल्लाह साहब वारसी को अच्छे सालिक और अन्वेषक पाया है। उक्त कथनों से विदित है कि दूसरे मार्गों और पंथों के लोगों ने भी हुजूर पाक की सराहना की है और उनके तथा उनके शिष्यों को भी प्रतिष्ठित पाया है और वह उनके आत्मज्ञान और अध्यात्म के साक्षी हैं। यद्यपि पूज्य हाजी बाबा ने किसी को उत्तराधिकारी नहीं बनाया और न खलीफा नियत किया फिर भी अपने फकीरों को वह पद प्रदान किया जो स्थानापन्न होने से उत्तम हैं। आप रूढ़िवादिता को पसन्द नहीं करते थे। और प्रबन्ध और इन्तेज़ाम या व्यवस्था को स्वीकार नहीं करते थे। आपकी दृष्टि मूल तथ्य पर होती थी। 'जालेका फज्लुल्लाहे यूतीहे मैय्यशाओ वल्लाहो जुल फदलिल अज़ीम' दृष्टि केन्द्र था। जैसाकि आपका कथन है ब्रह्मज्ञान श्रम द्वारा प्राप्त करने की वस्तु नहीं है, ईश्वर प्रदत्त है। पूज्य हाजी बाबा ने अपने सम्पूर्ण कर्मों को ईश्वरीय शक्ति में निहित समझते थे। उनकी एक ही दृष्टि लोगों को दक्ष कर देती और आपका खलीफान बनाना खिलाफत से इनकार है किन्तु इसका अर्थ यही होता है कि आपने दूसरों को शिष्य करने की मनाही भी किया है। यदि ऐसा होता तो हुजूर के ज़माने में जिन लोगों ने बैय्यत लिए हैं उन्हें अवश्य रोका गया होता तथा उनकी पकड़ भी हुई होती किन्तु आपने उनकी बैय्यत को अपनी बैय्यत स्वीकारा और उन शिष्यों को दोबारा शिष्य भी नहीं किया। अत: इससे यह बात साफ हो गयी है कि महामना हाजी बाबा के आन्तरिक प्रभाव से लोग इस योग्य जायें और जिनको हाजी बाबा के अस्तित्व में पूर्णरूपेण विलीन हो चुके हैं, वह इस योग्य हैं। जब उनकी दशा में परिवर्तन हो जायेगी और जो भी कर्म होगा वह उनका अपना न होगा। ऐसे ही लगाव वालों हेतु आपका आदेश 'यह हाथ और वह हाथ दो नहीं है' सार्थक होता है। आप अपने चेलों को अपने अस्तित्व को मिटा देने की शिक्षा देते थे जो अध्यात्म की चरम सीमा है।

यही वह शिक्षा है जिससे हुजूर के शिष्यों से सुख, वैभव और अहं सम्बन्धी विचारों को समाप्त कर देती है। अत: आपके प्रेम वालों और प्रेमियों की प्रत्यक्ष प्रेमियों की पहचान यही है कि वे लोग दिखावटी और बनावटी बातों से विरक्त होते हैं तथा प्रेम राग में मस्त रहते हैं। मान-सम्मान, धन-सम्पत्ति और सुख-वैभव की इच्छाओं और मोह का दमन कर इन्हें समाप्त कर देते हैं। यही फर्क है और इसका

Scanned with CamScanner

अनुयायी फकीर होता है या मानवपूर्ण मनुष्यत्व को प्राप्त कर लेता है। यही जनाब रसूले मआब सल्ल० की शिक्षा का मूल तत्व है जिस पर रसूले खुदा सल्ल० ने फक्र (गर्व) किया है और जिसके सम्बन्ध में 'अल फक्र फखरी' कहा है। धन्य हैं वह लोग जिन्होंने पूज्य हाजी वारिस बाबा के अध्यात्म से लाभ उठाकर अध्यात्मवाद पथ में पर्दापण किया है।

दानशील ऋणि पद

फैज़ान वलायत का अर्थ है वली पद की उदारता। अब हम इस विषय में सरकार वारिस मियाँ की वलायत की कीर्ति और यश का वर्णन करना चाहते हैं। जैसा देखने में आया है कि महामना हाजी वारिस मियाँ के जीवन प्रारंभ से ही उनका यश पूर्णरूपेण प्रकट हो रहा है। मान्यवर हाजी बाबा सम्पूर्ण यश-कीर्तियों के स्रोत थे। किन्तु उनका एकत्र करना असम्भव है। कारण यह है कि मान्यवर ने सूदूर देशों की यात्रा में अपना जीवन व्यतीत किया है। आपके यात्रा काल में अनेकों ढ़ंग से बहुसंख्यक लोगों ने अध्यात्म से सम्बंधित लाभ उठाया है। आपके यश और कीर्तियों को सीमित करना कठिन है। दूसरे सम्प्रदाय के आदरयुक्त संतों को भी इसका बोध है जैसा कि समयानुसार उनके कथनों से प्रकट है और अग्रिम अध्यायों से ज्ञात होगा।

मौलवी नाजिम अली साहब फजली मदरसा आलिया फ़ुर्कानिया को एक पत्र लिखकर लेखक मिश्कात हक्कानिया ने हाजी बाबा की विशेषताओं को जो उनकी जानकारी में था, माँगा था। अत: उनका जवाबी पत्र इस प्रकार है :

आपका पत्र मिला वास्तव में हमने हाजी बाबा के हालात बहुत कम लिखे हैं। रोगावस्था के कारण आठवें, दसवें दिन जब कुछ दशा ठीक रही तो कुछ देर लिखने का अवसर मिला। पुन: जब रोग ने ज़ोर मारा तो दो सप्ताह, तीन सप्ताह तक उधर देखने का अवसर नहीं मिला। ये तो मजबूरी है। मान्यवर हाजी बाबा के उत्तम गुणों के पूछने पर मुझे आश्चर्य है। आप बाह्य कीर्ति कथाओं और गुप्त कीर्ति कथाओं पर ध्यान नहीं दिये हैं अर्थात मेरे निकट अल्लाह वालों को यश गुणों की प्राप्ति सम्पूर्ण उत्तम गुणों को प्राप्त होने के पश्चात् होती है। अत: कौन सी विशेषता इससे उत्तम हो सकती है। मान्यवर हाजी बाबा का यश और उनकी विभूतियों का प्रकाश सूर्य के समान फैला हुआ है। हर एक छोटा बड़ा इससे लाभान्वित है। जिस प्रकार आपकी खूबियों का विस्तार है। उसी भांति आपकी यश-कीर्ति भी उत्तम और महान है। आपको विभूति से सम्बन्धित लोगों में अधिकांश अति महान हुए हैं। जिनमें कुछ लोगों के सम्बन्ध में पूर्ववत लिखा जा चुका है। पूज्य हाजी बाबा के

ऐसे प्रेमियों और शिष्यों के बारे में जो कुछ आपके प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष कमालों से लाभान्वित हुए हैं। हमारे ज्ञान से परे हैं। यदि कुछ लोगों के नाम हमारे ख्याल में हैं। तो हम उन्हें भलीभांति ब्यान नहीं कर सकते। हम मानते हैं कि महान और ऐसे बुजुर्गों के कथनों पर लोग अधिक विश्वास करेंगे जिनको अधिक लोग मानते हैं। और जिनकी बुजुर्गी को लोग स्वीकार करते हैं। ख़िलाफत की समस्या के सम्बन्ध में ऐसे ही बुजुर्गों के कथन उपस्थित किये गये हैं। किन्तु मेरे विचार से उनके नाम प्रकट करने की जरूरत नहीं है और यदि हम अपने विश्वास लिखें तो वह हुज़ूर के यश और दयाशीलता के लिए काफी नहीं है और हो भी कैसे सकता है जब भिन्न-भिन्न देशों और भिन्न-भिन्न मुल्कों के कोने-कोने से प्रत्येक श्रेणी के लोगों में आपके पुनीत प्रतीक उपलब्ध हैं। एक ही रूप अथवा एक वस्त्र में न दिखकर वह अनेकों रूप रंग और वेशों में आप की कीर्ति और आपके यश का प्रदर्शन हैं। अत: जिन लोगों के नाम हमारी जानकारी में हो कहीं पाठकगण की दृष्टि में उससे भी उत्तम कीर्ति दर्शित हो। ऐसी दशा में किसी का नाम लेना दु:साहस ही है। यह कैसे बताया जा सकता है कि किस मुल्क में कौन मुरीद है। यात्रा की घटनायें कभी वारिस पिया ने कहा ही नहीं या कहा भी तो एक दो वाक्य उपदेशार्थ। तो भी इस अवसर पर कुछ ऐसे चर्चे किये जाते हैं जिनसे विदित होता है कि आदरणीय हाजी बाबा की कीर्ति और यश पूरे विश्व में चलता हुआ दिखाई पड़ रहा है।

जैसा कि मिर्जा इब्राहीम बेग शैदा लखनवी कहते हैं कि एक समय मैंने हुज़ूर पाक के संकेत द्वारा जब अरब की दूसरी यात्रा किया तो हुज़ूर ने मुझे कई निर्देश दिये। उनमें का एक आदेश यह था कि 'जब तुम रात में महमूदिया पहुँचना वहाँ दही न खाना वरन् बीमार हो जाओगे। यदि कोई बुढ़िया आग्रह करे तो अठन्नी दे देना।' ऐसा ही हुआ जब मैं महमूदिया नामक स्थान पर रात में पहुँचा तो दही बेचने वालों के अलावा एक वृद्धा भी आई। उस वृद्धा ने दही लेने का आग्रह किया। मैंने यह समझकर कि दही का मूल्य दे दूंगा। मैंने दही ले लिया मूल्य चुकाने से पहले ही मेरे बद्दू सेवक ने उसमें से कुछ खा लिया। साधारणत: उस पूरी दही का दाम डेढ़ आना था। वह मैं देना चाहा किन्तु नहीं लिया, मैंने कुछ और बढ़ा कर दिया। किन्तु उसने नहीं लिया। मैंने कई बार कीमत बढ़ाया लेकिन उसने लिया नहीं। अन्त में उस बुढ़िया ने हंसकर कहा 'मेरे भाई अठन्नी दे दो।' मुझे मान्यवर हाजी बाबा की बात स्मरण हो गई और वहीं की बांधी हुई अठन्नी तुरन्त खोलकर उस वृद्धा को दे दिया। इसके बाद वह भाव विह्वल हो फूट-फूटकर रोने लगी प्रेम भाव में वियोग

Scanned with CamScanner

की शिकायत करने लगी।

माननीय शैदा वारसी लिखते हैं कि उस यात्रा में मुझे यह भी निर्देश था कि जब तुम बगदाद में हज़रत कम्बर के मज़ार पर जाओगे तो प्यास मालूम होगी। वहाँ यहूदी रहते हैं इस वजह से तुमको पानी नहीं मिलेगा मगर कोई औरत पिला भी देगी। रास्ते की दूरी तय करने के कारण प्यास लग गई किन्तु थोड़ी ही देर में एक अरबी नस्ल की महिला मुझे अपने घर ले गई और सहानुभूतिपूर्वक खुर्मा खाने को दिया और पानी पिलाया मेरा हाल पूछने लगी। फिर वह ईश्वर भक्त महिला ने अपनी आप बीती कहने लगी। प्रथम तो उसने इशारे में कहना शुरू किया फिर हाजी बाबा की चर्चा करने लगी, उसने व्याकुल होकर कहा पच्चीस वर्ष तक विरह दुःख झेलती रही किन्तु अब यह दरुण दुःख सहा नहीं जाता है। हमने उस महिला को ध्यानपूर्वक देखा उसके पास अनफास (स्वांस जप) गतिमान था और बुर्के के भीतर पीले रंग का कपड़ा कफन हेतु दिखाई पड़ रहा था। उस प्रेम दीवानी को वारसी सौन्दर्य से अति लगाव था। इसी प्रकार हुज़ूर का दिया हुआ नैनसुख का आधा तहबन्द उनके कथनानुसार नजफ अशरफ के उस बुजुर्ग को देना था जो मांगे। नजफ अशरफ में एक वृद्ध सज्जन मिले जिन्होंने आते ही कहा हमारी अमानत दो और यह भी बताया कि सरकार वारिस का मैं भी एक तुच्छ सेवक हूँ।

मौलवी सैय्यद शरफुद्दीन साहब पटना लिखते हैं कि मेरे चचेरे भाई ने जब कर्बला और बगदाद की यात्रा की तैयारी करने लगे तो उन्हें निर्देश हाजी बाबा ने दिये। प्रथम यह है कि जब तुम बगदाद पहुँचोगे तो अमुक गली में जाना। वहाँ तुमको एक यहूदी बूढ़ी महिला मिलेगी। उस से तुम पानी मांगना वह तुम्हें अपने घर ले जायेगी उसका वृद्ध पति जो अन्धा है उस से मेरा सवाल कह देना। वहाँ पहुँचकर ऐसा ही हुआ। दूसरा निर्देश था कि एक टुकड़ा चादर का हुज़ूर ने देकर आदेश किया था कि कर्बला में जो व्यक्ति इसको मांगे दे देना और मेरा सलाम कह देना। वहाँ भी ऐसा हुआ।

हाजी अवघट शाह वारसी कहते हैं जब फज़ले हुसैन साहब वारसी गद्दी नशीन कन्जुल मारफत मक्का शरीफ हज के लिये गये तो हाजी इमदादुल्लाह साहब रह० के मेहमान हुए। एक दिन हाजी साहब ने उनसे कहा चलो हम तुम्हारे एक गुरू भाई को बता दें। फज़ले हुसैन साहब कहते हैं कि हमने उनके साथ जाकर देखा कि एक साहब हनफी मुसल्ले पर खड़े हैं। उनकी ओर संकेत कर हाजी इमदादुल्लाह साहब महाजिर मक्की रह० ने कहा। यह तुम्हारे पीरभाई हैं और यहाँ के कुतुब

(ध्रुव पद प्राप्त) हैं न किसी से बात करते है न बोलते हैं सदैव जप में संलग्न रहते हैं। ये अपने नाम का ही जप करते हैं इनका नाम अब्दुल हई है। फज़ले हुसैन साहब वारसी कहते हैं कि ये बुजुर्ग सर्वदा हनफी मुसल्ले पर रहते हैं। जब इमाम नमाज़ पढ़ाने आते हैं तब यह अलग हो जाते हैं। ये बुजुर्ग अपने होश में नहीं थे। उनकी दशा मस्ती की थी। हाजी इमदादुल्लाह साहब महाजिर मक्की ने एक और पीर भाई को बताया, जो काबा की कुंजी रखते थे।

हाजी असगर अली साहब जमीदार मसौली बाराबंकी लिखते हैं कि जब मैंने हज के लिये मक्का जाने का विचार किया तो मेरे मन में यह विचार हुआ कि पूज्य हाजी बाबा मेरे सम्बन्ध में कुछ कहें कि मैं यात्रा करके सकुशल लौट आया। इस विचार से मैं हाजी बाबा की सेवा में उपस्थित हुआ। आपने देखते ही निर्देश किया 'ख़्वाजा सरफ़राज अली कुंजी धारक मदीना तैय्यबा से मिलना। यदि जीवित होंगे मुलाकात हो जायेगी जब वापस आना तब हाल मालूम होगा।' इस कथन से मैं संतुष्ट हुआ और हज के लिए प्रस्थान कर दिया। मदीना शरीफ पहुँचने पर ज्ञात हुआ कि सरफ़राज अली शाह की मृत्यु हो गई थी जो हाजी बाबा के शिष्य थे। एक ब्योवृद्ध अब्दुल कादिर महोदय ब्यान करते हैं कि एक बार हमने हाजी वारिस बाबा से रोम और शाम देश के सम्बन्ध में पूछा। आपने अनेक विचित्र घटनायें सुनाई और बहुत से लोगों के शिष्य होने की चर्चा किया। वास्तविकता यह है कि आपके यश कृत्यों से कितने लोगों ने और कहाँ तक लाभ उठाया इसका पता लगाना असम्भव सा है। जैसा कि श्रीमान शहजादा गुलाम मुहम्मद का कथन है कि वारसी गिरोह एक ऐसे असीमित और बीहड़ जंगल के समान है जिसका पता लगाना दुरूह है। इस जंगल में लाखों करोड़ों किस्म के अमूल्य पदार्थों के भण्डार हैं जिनको कोई समझ नहीं सकता। मान्यवर अब्दुल गनी साहब वारसी बिहारी लिखते हैं कि पूज्य हाजी बाबा बेलछी में विद्यमान थे एक तहबन्द पोश (फकीरी वस्त्र धारी) औरत बंगाल से आई चरण स्पर्श कर आग्रह किया कि मुझको किसी स्थान पर बिठा दिया जाय। हुज़ूर ने कहा 'अभी नहीं अभी नहीं।' और उसको आदेश दिया ज़नाना में जाकर ठहरो। औरतों से पूछने पर ज्ञात हुआ कि वह महिला छोटा सा कपड़ा बिछा कर बैठ गई, जो औरत उसके समीप आती उसे रोकती नहीं थी किन्तु रजस्वला महिलाओं को अपने पास बैठने नहीं देती थी। जब मान्यवर बाबा बेलछी जाने लगे तो बहुत से लोग एकत्रित थे। श्रीमान एक किनारे खड़े थे जब पालकी पर सवार होने लगे तब सम्पूर्ण जन समह वियोग व्यथा में दुःखी था। घंटों यह दशा रही उसी

Scanned with CamScanner

समय बंगाली महिला फूट-फूट कर इस प्रकार रोई कि उसके रोने से सभी प्रभावित हो गये। इस प्रकार बहुत से लोग उस समय देखे गये जब मान्यवर वारिस बाबा वृद्धावस्था में देवा शरीफ में विश्राम करने लगे। जिनको देखकर प्रत्येक आदमी चकित हो जाता था किन्तु किसी को पता न था कि उक्त लोग कब शिष्य हुए और उनको क्या शिक्षा दी गई?

माननीय सैय्यद मारूफ शाह महोदय का ब्यान है एक दिन मैं पूज्य हाजी बाबा की सेवा में उपस्थित था। उसी समय एक दरवेश (फकीर) मान्यवर हाजी बाबा की सेवा में हाजिर हुए। सरकार वारिस पाक ने किसी दूरस्थ स्थान का नाम लेकर जो मुझे याद नहीं रहा पूछा 'तुम वहाँ से कब चले?' उन्होंने अर्ज किया, दो घंटे हुए। मैं सोचता रह गया कि इतनी अधिक दूरी मात्र दो घंटे में कैसे तय की गई आखिर किस सवारी से की गई। फकीर महोदय को हाजी वारिस पाक ने विदा कर दिया और मैं अपने विचार में लीन हुजूर की डयोढ़ी के किनारे एक गली में खड़ा था। उस फकीर से मैंने पूछा कि आखिर इतनी लम्बी दूरी आपने कैसे समाप्त किया। शाह साहब ने मुस्कुरा कर कहा चल कर दिखा दूँ और गतिमान हो गये। जैसे सूखा हुआ पत्ता तेज़ हवा में उड़ता हो, उड़ते दिखाई देने लगे। मैंने यह भी उनसे पूछा कि यह पवित्रता और कोमलता आप को कैसे प्राप्त हुई? उन्होंने उत्तर दिया आत्म प्रयत्न से इन्द्रिय दमन से, कम खाने से क्योंकि पेट भर खाना आत्मा के लिए कष्ट है और जब प्राण को कष्ट है तो आत्म शक्ति कैसे उत्पन्न हो सकती है।

माननीय सैय्यद मारूफ शाह साहब का दूसरा कथन है कि एक बार मैं अपने गाँव नहरौल गया था। वहाँ उस समय एक मलंग शाह रहते थे। वह मेरे पास आये बडे प्रेम से मिले। प्रेम भरी बातें करते रहे। प्रीत युक्त स्वर में कहने लगे। मेरी ओर से कहना, देवा की गलियों में कंकड़-पत्थर अधिक है महामना हाजी साहब को कष्ट होता है। जब वह चलते हैं उनके तलवों में कंकड़-पत्थर चुभकर कष्ट देते हैं। मेरे हृदय को दु:ख होता है। यदि आदेश हो जाय तो सारे मकानों को गिराकर भूमि को बराबर कर दूँ। नये मकान और बराबर भूमि की सुन्दर गलियाँ बन जायेगी और मेरी तरफ से हाजी बाबा को प्यार भी कर लेना। मुझे यह वाक्य अच्छा न लगा मैंने मलंग शाह से कहा कि ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए। प्रेम में भी अदब का ध्यान रखना चाहिए। दो एक दिन में मैं भी देवा शरीफ आया और मेरे पश्चात् मलंग शाह भी हुजूर के दर्शनार्थ देवा शरीफ पहुँचे। अपनी अनुनय-विनय करते रहे सबका संतोषजनक उत्तर पाते रहे। अन्तत: मलंग बाबा ने पुन: सरकार से वही गाँव वाली

बात कहने लगे। सरकार वारिस पाक उनकी इस बात पर अप्रसन्न होकर उन्हें जाने का आदेश दे दिया।

मान्यवर हाजी अवघट शाह साहब द्वारा लिखित है कि एक दिन की बात है। ग्रीष्म ऋतु थी। दिन के चार बजे होंगे। आस्ताना शरीफ के बाहर कुछ लोग टाट पर बैठे बातें कर रहे थे। उसी समय एक फकीर आये जो देखने में हिन्दू जैसे लगते थे। कांधे पर खारूवे की खोर्जी थी। बालों का जूड़ा था। दाढ़ी मूंछ पूरी बढ़ी हुई थी। तुम्बी और चिमटा हाथ में था। आधी बाँह का कुर्ता और धोती धारण किये हुए थे। आते ही उन्होंने कहा कि मुझे पूज्य हाजी बाबा की सेवा में पहुँचा दीजिए। मैंने कहा आईये पधारिये। ऐसी क्या जल्दी पड़ी है? रुकिये पहुँचा दिये जायेंगे। किन्तु उन्होंने किसी की न सुना और व्याकुल हो कहने लगे कि मुझे ले चलो। आज पूज्य हाजी बाबा के दरबार से हिस्से बंट रहे हैं। मुझसे जंगली शाह ने कहा है। जल्द पहुँचो नहीं तो बंट जायेगा। मैं बुन्देलखण्ड से दौड़ा चला आ रहा हूँ। मुझे इसी समय पहुँचा दो। खोर्जी से लोटा निकाला और कूएँ पर जाकर हाथ मुँह धोये तत्पश्चात् हाजी साहब की सेवा में उपस्थित हुए। उन से मान्यवर हाजी बाबा ने जो कुछ कहा वही समझे किन्तु देखा गया कि आगन्तुक आनन्द विभोर होकर बाहर आये और मस्जिद में जाकर दो रकात नमाज़ शुकराना अदा किया। यह घटना तो हाजिर होकर अपना हिस्सा मांगने की थी किन्तु कुछ ऐसे भी उपस्थित हुए कि किसी ने नहीं समझा कि क्यों आये और क्या ले गये?

श्री ठाकुर पंचम सिंह मलावली नकल करते हैं कि माननीय शाह फज़ल हुसेन साहब वारसी गद्दी नशीन कन्जुल मारफत मुझ से ब्यान करते थे कि एक अरब निवासी मेरे पास आये जो फटेहाल थे। मुझसे उन्होंने सरकार की डयोढ़ी का पता पूछा मैंने उनसे कहा कि आप थोड़ा विश्राम लें। मैं आपको पहुँचाये देता हूँ। वह इतनी जल्दी में थे कि रूक न सके पता पूछा और चल दिये। मैं भी उनके साथ ही गया। डयोढ़ी का द्वार बन्द था। अभी वह कुछ कहने भी नहीं पाये थे कि बन्द दरवाजे से एक हाथ बाहर हुआ जिसको आदर से चूमकर तुरन्त विदा हो गये। हमने उनको रोकना चाहा किन्तु वह चले गए। इस तरह की बहुत सी बाते हैं जो प्रति दिन घटित होती रहती थी और उनके सम्बन्ध में किसी को कोई ज्ञान नहीं है।

हाजी अवघट शाह वारसी लिखते हैं कि एक बार हम लोग हुजूर वारिस पाक की डयोढ़ी के बाहर चबूतरे पर बैठे हुए थे। एक साहब फकीरी वस्त्र धारण किये हुए आये और बैठ गये। उन से पूछा गया कि शाह साहब कहाँ से आये हो? शाह

Scanned with CamScanner

साहब ने कहा कि जहाँ से सब आये। कहाँ जाओगे? उन्होंने कहा कि जहाँ सब जायेंगे। फिर पूछा आपका मकान कहाँ है? उन्होंने कहा इसकी खबर नहीं है। फिर उन्होंने हुजूर की सेवा में उपस्थित होने का आग्रह किया। उनको शाम को हुजूर की सेवा में पेश किया गया। आपने आदेश दिया इनको छः ख़ुराकें दी जायें। वह मेरे साथ वापस आये। मुझसे कहने लगे कि मैं एक रात बछरायूं की सोहराब शाह वाली मस्जिद में ठहरा था। वहाँ सब अच्छी तरह हैं। मैंने उनका नाम पूछा तो जंगली शाह नाम बताया और निवास स्थान बताने स इन्कार कर दिया। विदा होकर चले गये फिर शाम को आकर अपनी छः ख़ुराकें मांगा जो मैंने उनको दिया फिर पूछा आप तो अकेले हैं ये छः हिस्से कैसे ले चले। उन्होंने हंसकर कहा कि हमारे साथ पाँच आदमी और हैं जिनको बस्ती में आने का आदेश नहीं है। पुनः वह वापस नहीं आये। ख़ुदा जाने वह किस तपस्या में संलग्न थे कि उन्हें जंगल में रहना पड़ता था

कुछ ऐसी घटनायें लोगों ने देखा है जिससे यह विदित होता है कि उस समय के मज़्ज़ूब फकीर भी पूज्य हाजी वारिस बाबा के अधीन थे। जैसा कि श्रीमान मौलवी अहमद हुसैन साहब लिखते हैं कि एक दिन मान्यवर हाजी बाबा लखनऊ की अमीनाबाद सराय में विद्यमान थे। आपने स्वयं कहा 'मुहम्मद शाह से मिलेंगे।' मुहम्मद अली शाह एक मज़्ज़ूब (आकृष्ट) फकीर थे (मज़्ज़ूब एक किस्म फकीर होते हैं जो अनाप-शनाप बकते रहते हैं) जैसे ही आप ने दरवाजे पर कदम रखा देखने में आया कि एक आदमी दूर से आ रहा है। कभी उसकी चाल मंद और कभी तेज़ होती थी कभी मस्ती में झूमता हुआ दिखाई दे रहा था। निकट आने पर सुना गया कि उसकी ज़बान पर यह सदा (बोल) थी। 'पुल तक, पुल तक' आपने आदेश दिया 'पीपल तक, पीपल तक' पर वह अपनी धुन में मस्त था। दुबारा हुजूर ने कहा 'पीपल तक, पीपल तक' फिर भी उस ने नहीं सुना। तीसरी बार आपने कहा 'मुहम्मद अली शाह! पीपल तक, पीपल तक।' मज़्ज़ूब फकीर ने अपनी बन्द आँखें खोल दीं और आदेशानुसार पीपल तक, पीपल तक की सदा लगाते हुए उत्तर की ओर चले गये इसके बाद आप अन्दर आ गये। रहस्य किसी के समझ में नहीं आया

मौलवी नादिर अली साहब वारसी नग्रामी लिखते हैं कि मुंशी मुहम्मद हुसैन साहब वारसी ने मुझ से अपनी एक घटना इस प्रकार ब्यान किया कि जब मै बन्दोबस्त विभाग में जिला-बस्ती में मुलाजिम था। वहाँ एक मज़्ज़ूबा (मस्त फकीरनी) आती थी और सब को बुरी-बुरी गालियाँ देकर पैसे वसूल करती थी। मुझको भी गालियाँ देकर पैसे मांगे। मैंने भी उससे अधिक गालियाँ उसको दिया और क्रोध मे

जूते मारने की धमकी भी दिया। मैंने उससे कहा कि मैं तुम्हारे ऊपर विश्वास नहीं रखता, जानती हो किसका मुरीद हूँ। वह चुप हो गई। हफ्ता दस दिन के अन्दर ही मेरे ऊपर कई शिकायती अर्जिया आफिस में पहुँची। मैं इन दरख़्वासती को लेकर महा दयालु सरकार वारिस पाक के दरबार में उपस्थित हुआ। जब अपनी हालत बताया तो हुजूर ने कहा किसी को गालियाँ न दिया करो और न जूता मारने को कहो। उस समय मुझे याद आया कि हमने उस बुढ़िया मज़्ज़ूब को गाली दी थी और जूते मारने को कहा था। नौकरी पर आने पर सभी प्रार्थना-पत्र दाखिल दफ्तर हो गई। वही मज़्ज़ूब बुढ़िया फिर मिली और हंस कर कहने लगी, अब जूते मारो। मैंने कहा अब तो गालियाँ दो। बुढ़िया मुस्कुराती हुई चुप हो गई।

बहुधा देखा गया है कि फकीर साधु, मज़्ज़ूब, मस्त और होशियार सभी प्रकार के फकीर आपके अधिकार में रहे हैं। जैसा कि मुंशी अब्दुल गनी साहब वारसी रईसपुरवा, गनी खाँ साहब जिला रायबरेली लिखते हैं कि जब मान्यवर हाजी बाबा विराजमान हुए हैं उस जमाना में वहाँ बस्ती से बाहर कर्बला में जहाँ ताजिया दफन होती है, एक झाड़ू शाह नाम के मज़्ज़ूब (मस्त फकीर) रहा करते थे। वृक्षों की छाँव में निवास करते थे। पूज्य हाजी बाबा दरभंगा पहुँचने के तीन दिन पूर्व वह शहर में आए। जगह-जगह ऊँचे टीलों पर खड़े होकर कहते थे। यहाँ ताशा बजेगा, यहाँ बिगुल बजेगा, यहाँ रोशन चौकी बजेगी। इसी प्रकार सदा लगाते हुए नवाब सादिक अली और नवाब अनवर अली महोदय की कोठी तक पहुँचे। कोठी के फाटक की ओर संकेत करके कहने लगे यह फाटक आदमी ढकेल देंगे। आगे बढ़ते हुए एक विचित्र सदा (ध्वनी) लगाने लगे। 'कलवरवा आवत है, जो अब शराब न पीहें, ऊ कभी न पीहे, ओका कबहु ना मिलहे।' पूरे नगर की गली-कूचों में यही सदा लगाते फिरते थे। दशा यह थी कि नगर निवासियों को मान्यवर हाजी बाबा के आगमन की कोई सूचना नहीं थी और न किसी विशेष प्रबन्ध का ही ज्ञान था।

माननीय सैय्यद शरफुद्दीन साहब वारसी और अन्य सम्मानित लोगों ने श्रीमान हाजी बाबा के आगमन पर विशेष तैयारी किया। इस अगुवानी में जिन बाजों का नाम झाड़ू शाह ने लिया था वह सब उस आगमन समारोह में बजे। नगर की सड़कें बिजली के कुम-कुमों द्वारा प्रकाशित थीं। जब वारिस मियाँ नगर में पधारे तो लाखों लोगों की भीड़ एकत्र हो गई। लोग पालकी छूने की उमंग में बढ़ रहे थे। मान्यवर हाजी बाबा का विश्राम स्थल का प्रबन्ध नवाब सादिक अली महोदय की कोठी के दो मंजिले पर था। आप उन्हीं के मेहमान थे। झाड़ू शाह जिनकी फकीरी को सभी

Scanned with CamScanner

लोग मानते थे जो कर्बला छोड़कर कहीं नहीं जाते थे। उस दिन प्रात: से ही नवाब साहब के दरवाजे पर जमे थे। जब कोई भीतर प्रवेश करना चाहता तो आप कड़े स्वर में कहते 'तू कहता है हाजी मियाँ आये हैं।' कुछ लोग झाड़ू शाह से भयभीत होकर लौट गये। इसी बीच मिर्जा मुनियम शाह वारिस जो पूज्य हाजी बाबा के निकटस्थ थे किसी कारण नीचे आये फिर जब कोठे पर जाने लगे तो पूर्ववत वह क्रोधित होकर दौड़े और कहने लगे 'तू कहता है हाजी मियाँ आये हैं।' मिर्जा मुनियम बेग ने कहा कि मैं कहता हूँ कि हाजी मियाँ आये हैं और तू क्या अन्धा है कि तू नहीं देखता? क्यों लोगों को परेशान कर रहा है? मिर्जा मुनियम बेग से झाड़ू शाह कहने लगे कि तुम महाराज के साथी हो तुम में मैं क्या कह सकता हूँ? इतनी प्रार्थना अवश्य है कि हाजी मियाँ का सूरत दिखा दो। उनको सूचना देने मिर्जा साहब जाने लगे तब तक झाड़ू शाह लपक के कहा क्या कहोगे? कहूंगा कि एक फकीर साहब श्रीमान का दर्शन करने आये हैं। अच्छा हुआ कि मैंने आप को बुला लिया। आप केवल इतना कह दीजिये 'चेला दाता करीम शाह का गुलाम आप का कदम चूमने के लिए हाजिर है।' इससे अधिक एक शब्द न कहना। उन्होंने जाकर यही कहा। पूज्य हाजी बाबा ने हाज़िर होने की स्वीकृति दी। सुनते ही झाड़ू शाह उठे और द्वार पर खड़े एक सिपाही की पगड़ी झट से उतार लिया और अपना शरीर छुपा कर आदर सहित उपस्थित होकर चरण स्पर्श किया। पूज्य हाजी बाबा ने स्नेहपूर्वक कहा 'मुलाकात हो गयी' फिर विदा। इस घटना से विदित है कि मस्त और मज़्ज़ूब सभी फकीर आपके अधीन थे।

विशेष दशाओं से वंचित करने की घटनायें भी देखी गई हैं। ऐसे लोग जो सांसारिक सम्बन्ध रखते हुए प्रेम-पथ में चलने के योग्य हैं और सामाजिक सम्बन्धों का निर्वाह भी कर सकते हैं यदि उनमें विशेष खिचाव उत्पन्न हुआ तो मान्यवर हाजी बाबा ने तुरन्त उनकी अवस्था का परिवर्तन भी कर देते थे अर्थात् उनको आकर्षण शक्ति से वंचित कर देते थे। जैसा कि मौलवी रौनक अली साहब वारसी रज्जाकी पैंतेपुरी अपने आदरणीय पिता मकसूद अली शाह० की घटना लिखते हैं कि मकसूद अली शाह को हाजी मनसब अली शाह की संगति में रहने का अधिक अवसर प्राप्त हुआ था। हाजी मनसब अली शाह साहब के देहावसान के पश्चात् मकसूद अली शाह परास्त अवस्था (मगलूबुलहाल) होकर दो वर्षों तक घूमते फिरते रहे। संयोग वश एक दिन पूज्य हाजी बाबा से भेंट हो गई। जब पूनीत हाजी वारिस बाबा ने एक दृष्टि उन पर डाली तो यकायक उनका खिंचाव सलूक अर्थात् मार्ग पालन की

अवस्था में हो गया। होश में आते ही वारिस मियाँ के शिष्य हो गये। आगे चलकर उनकी गिनती पूज्य हाजी बाबा के सच्चे प्रेमियों में होने लगी। काजी रहमत अली साहब अकबराबादी लिखते हैं कि मुहल्ला गालिबपुरा, आगरा निवासी करीमबख्श चिल्लाकशी (चालीस दिन का घोर तप) के अभ्यस्थ थे। आगे उनकी हालत दीवाने जैसी हो गई। बराबर उनके मुख से झाग निकलता रहता था और लोग उन से घृणित रहने लगे। संयोग से जब मान्यवर हाजी बाबा मेरे घर पधारे तो कुछ लोगों ने उनको मेरे घर के सामने द्वार पर खड़ा कर दिया था। जब प्रकाश पुन्ज वारिस मियाँ बाहर पधारे तो लोगों के करीम बख्श साहब को वारिस मियाँ के कमलवत चरणों में डाल दिया। मान्यवर हाजी बाबा ने उनकी पीठ पर अपना पवित्र हाथ रखकर तीन बार 'होशियार, होशियार, होशियार' कहा और विदा कर दिया। करीम बख्श साहब को होश आ गया और आजीवन वह होश में रहे। पूज्य हाजी वारिस बाबा के मुनि पद की यह विभूति थी कि जिसको चाहा एक दृष्टि में बेहोश कर दिया और एक ही दृष्टि में जिसे चाहा होश वाला (ज्ञानी) बना दिया आपके पुनीत अस्तित्व से हर प्रकार के अनेकों लाभ होते थे।

शिष्यता विभूति

जिस प्रकार महामना वारिस मियाँ की दानशीलता और अन्य कीर्तियों की गणना कठिन है उसी प्रकार शिष्यता की विभूतियाँ भी असीमित हैं। आपकी शिष्यता और आप में आस्था रखने वालों को ऐसा जरूर देखा गया है कि उनके मन या हृदय प्रेम पीड़ा से प्रभावित है। उच्च पद प्राप्ति प्रत्येक को मिली है। अधिक या कम सब ने अपनी पात्रता के अनुसार अवश्य पाया है। मान्यवर हाजी बाबा प्रेम-पदार्थ के इच्छुक थे। मुख्यत: प्रेम ही इस महान पंथ का मूल है और यही मुख्य शिक्षा थी 'मुहब्बत है तो हज़ार कोस पर भी हम पास हैं।' अत: जिसको जितना आप से प्रेम है जितना विश्वास और श्रृद्धा है उतना ही उसके लिये कल्याण और उपकार है। सर्वविदित है कि गुरू का कर्त्तव्य है कि अपने शिष्य का पथ प्रर्दशन करे तथा मार्ग दिखाये। वास्तव में हमारे पूज्य गुरू वारिस मियाँ शिष्यों के भवसागर नौका के खेवनहार हो जाते तथा जीवन-मरण के प्रतिभूत हो जाते थे। जैसा कि चौधरी खुदा बख्श महोदय वारसी जो व्योवृद्ध और सम्मानित बुजुर्ग हैं, वर्णन करते हैं कि हमने मान्यवर हाजी बाबा के कमलवत मुख से कई बार सुना है यहाँ दीन भी हैं और दुनिया भी है।' (अर्थात् स्वर्ग और नर्क दोनों हैं) जिसका जो जी चाहे ले ले और यदि दोनों की जरूरत है तो दोनों हैं। बहुत सी ऐसी घटनायें सुनने में

Scanned with CamScanner

आती हैं कि जो आदमी जिस विचार और उद्देश्य से शिष्य हुआ सफल हुआ। यदि कोई उद्देश्य नहीं होता तो लोग महामना वारिस बाबा की महिमा और सम्मान से प्रभावित होकर ही शिष्य हो जाते थे। जो सत्य और स्वच्छ मन से शिष्य होता। श्रीमान हाजी बाबा उनकी प्रत्येक दशा में सहायता करते थे और आपकी शिष्यता के प्रभाव ने उनके इच्छानुसार उनको सफल बनाया।

हाजी मुहम्मद शाकिर खान वारसी पुत्र मौलवी मुहम्मद नासिर खाँ साहब कोर्ट इन्सपेक्टर राय बरेली लिखते हैं कि खुदा बख्श नामक खान्सामा मान्यवर हाजी बाबा से शिष्य हुआ। उसकी पत्नी को अज्ञात कोई ऐसा रोग था कि वह दिन समाप्त होने के पश्चात् सदैव मुर्छित हो जाया करती और सम्पूर्ण रात इसी दशा में बीतती थी। शिष्य होने के पश्चात् खुदा बख्श के घर से पत्र आया कि उसकी पत्नी का रोग अपने आप अच्छा हो गया और अमुक तिथि से वह मूर्छित नहीं हुई है जो तिथि उस पत्र में रोग निवारण की थी ठीक उसी तिथि को वह शिष्य हुआ था। शिष्यता का द्रुतगामी प्रभाव तुरन्त प्रकट हुआ।

शेख महबूब अली रहमानी कलकत्ता के एक महादानी सेठ थे। उनके भाई महमूद अली की घटना है कि उनके घर वाली को गर्भपात हो जाया करता था। कोई उपाय सफलीभूत नहीं होती थी। अन्ततः वह देवा शरीफ आकर शिष्य हो गये अपने घर वापस लौटने पर उनकी पत्नी गर्भवती हुई और पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम नियाज़ वारिस रखा। यह भी शिष्य होने पर निर्भर नहीं था। चाहे कोई शिष्य हो या न हो यदि पूज्य हाजी बाबा पर विश्वास और श्रद्धा रखता और इच्छुक होता उसकी मनोकामना अवश्य पूरी होती थी। हकीम मिर्जा फतह अली बेग नक्शबन्दी मोजद्दी निवासी सादाबाद, जिला-मथुरा लिखते हैं कि मेरे एक सम्प्रदायी भाई मुहम्मद खाँ जो एक जपी और प्रतिष्ठित तपस्वी थे अपनी आँखों देखी घटना ब्यान करते हैं कि एक महाशय बहुत धनी और सम्पन्न आदमी थे किन्तु उन्हें अपने निःसन्तान होने का घोर दुःख था। सदैव इसी चिन्ता में रहते थे कि उनको कोई सतान हो जाय। संयोग से जब पूज्य हाजी बावा आगरा नगर में विराजमान हुए आपको देखकर उनके मन में विचार उत्पन्न हुआ। इस महात्मा को घर लाना चाहिए। हो सकता है इनके पुनीत चरणों की विभूति से मेरी कामना पूर्ण हो जाये। वह तुरन्त महामना हाजी वारिस बाबा की सेवा में उपस्थित हुए और करबद्ध प्रार्थना किया कि ऋषिराज मेरा निमन्त्रण स्वीकार करें। आपने उनकी प्रार्थना स्वीकार किया। उस श्रद्धावान व्यक्ति ने अपने घर की सफाई कराया घर, द्वार को सुसज्जित किया। मुख्य मार्ग से द्वार तक

जल छिड़काव कराया। पूज्य महात्मा की आगमन में सभी हर्षित थे क्योंकि आवश्यकता दीवानी होती है जैसा कि गृह स्वामी को उनकी इच्छा ने दीवाना कर दिया था। इससे पूर्व उक्त गृहस्वामी ने किसी तान्त्रिक से एक तंत्र सन्तान उत्पत्ति हेतु अपने मुख्य द्वार पर गड़वा दिया था। पूज्य हाजी बाबा उस स्थान पर पहुँच कर ठीक गढ़े हुए तंत्र पर अपना एक पुनीत पैर रखकर आदेश दिया 'यह क्या शैतानी हरकत है इसको अभी निकाल कर फेंको।' उसी समय आदेश का पालन हुआ। बड़ी उमंग और बड़े उत्साह से मान्यवर हाजी बाबा को गृह प्रवेश कराया गया। हम लोगों ने देखा था कि गृहस्वामी की मनोकामना पूरी हो गई और वह सन्तानवान हो गये। इस तरह की हजारों घटनायें देखी गई हैं कि अनेकों लोगों की अभिलाषा पूरी हुई है। वारिस पिया का कथन है 'आशिक का मुरीद बे-ईमान नहीं मरता।' इस कथन का विश्वास केवल देखी गई घटनाओं द्वारा होता है कि जो लोग बोल नहीं पाते थे या बोलने से मजबूर थे वह भी स्वच्छ स्वर में पवित्र कलमा (मंत्र) पढ़ते हुए संसार से विदा हुए।

मौलवी हकीम महमूद अली महोदय लिखते हैं कि शेख हामिद अली साहब जगबरी मुझसे ब्यान करते थे कि उनके मकान की एक सेविका थी जो रूक-रूक कर बोला करती थी। साफ बात उसके मुँह से नहीं निकलती थी। मेरे घर वालों ने बहुत प्रयत्न किया कि उसको कलमा तैय्यबा (क़ुरआन का पवित्र मंत्र) सिखा दें। किन्तु वह अपनी जबान से कह नहीं पाती थी। संयोग से हाजी पिया पधारे और घरवालों ने उसको शिष्य करा दिया। थोड़े दिनों पश्चात् वह रोगग्रस्त होकर मर्णासन्न को प्राप्त हुई। मरने के समय अपने मुख से कलमा-ए-तैय्यबा शुद्ध उच्चारण से पढ़ रही थी। लोगों को ऐसा देख सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ और वह नौकरानी यही पढ़ते-पढ़ते स्वर्ग सिधार गई। ऐसे लोगों को भी देखा गया है जिनका सम्पूर्ण जीवन दुराचार में व्यतीत हुआ और शिष्यता की विभूति से उसका अन्त सफल रहा। मान्यवर सैय्यद सरफ़ुद्दीन महोदय वारसी लिखते हैं कि हबीबुल्लाह खाँ निवासी पटना बड़े शराबी और दुराचारी थे। किन्तु मरते समय उनकी बड़ी विचित्र दशा थी। मृत्यु से थोड़ी देर पूर्व उन्होंने अपने निकट सम्बन्धियों से कहा कि मुझे स्नान करा दो और पवित्र वस्त्र पहना दो। इसके पश्चात् पलंग पर बैठने से इंकार कर दिया और भूमि पर लेट गये। साथ ही एक दूसरा बिस्तरा भी बिछवाया और कहा पूज्य वारिस पिया पधारे हैं। इसी दशा में लाईलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह पढ़ते-पढ़ते स्वर्ग को सिधार गये।

मौलवी रौनक अली साहब वारिस रज्जाकी पैंतेपुरी लिखते हैं कि मेरे एक

Scanned with CamScanner

सम्बन्धी की एक नौकरानी थी जो वारिस पिया की शिष्य थी। जब पूज्य वारिस बाबा के समीप होती तो मृत्युभय को अवश्य प्रकट करती। सदैव भयभीत रहा करती। ऐसा संयोग हुआ कि वह किसी से फंस गई और उसे अनुचित गर्भ रह गया। जिसके घर रहती थी उसने घर से निकाल दिया। एक झोपड़ी में प्रसव किया फिर वह रोगग्रस्त हो गई। उसे सरसाम का चक्कर पड़ने लगा। अन्त में लोगों को दया आ गई और उसको स्नान करा दिया। जब मर्णावस्था को हुई तो पूर्णतः होश में थी और आतुर हो पुकारती थी कि मेरे धर्म गुरू पधारते हैं, उनके चरण स्पर्श करो और कलमा पढ़ते-पढ़ते शरीर त्याग दिया। जिस समय उसका अन्तिम संस्कार हो रहा था उसके मुख पर लालीमा फैली हुई थी। उसका अन्त सफल हो गया। पूज्य हाजी वारिस पिया के शिष्यत्व का यह प्रभाव था। कभी सुना गया था 'सूगा पढ़ावत गणिका तर गई थी।' और यहाँ देखा गया कि नौकरानी स्वयं पढ़ कर तर गई।

कुछ ऐसी घटनायें देखने में आई है कि शिष्यता के पश्चात् जिन लोगों ने आपसे सम्बन्ध विच्छेद कर लिया था उन्हें भी आपने मरते समय सहायता पहुँचाया है और उनकी लाज रख लिया है। जैसा कि सैय्यद शरफुद्दीन साहब ब्यान करते हैं। खान बहादुर मौलवी फज़ले इमाम महोदय से मुझको अधिक प्रेम था। पूज्य हाजी बाबा से वह हमसे पहले शिष्य हुए थे। मान्यवर हाजी बाबा उन पर अधिक प्रेम दृष्टि रखते थे। जब महामना वारिस पिया पटना पधारते तो फज़ले इमाम महोदय के अतिथि हुआ करते थे। एक बार श्रीमान फज़ले इमाम महोदय को कर्बला-ए-मुअल्ला (आदरणीय इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का शहादत स्थल) जाने की इच्छा हुई। पूज्य हाजी बाबा से जाने की स्वीकृति लेने हेतु देवा शरीफ आये। आदेश लेकर कर्बला चले गये। इसके कुछ दिनों बाद में वारिस पिया की सेवा में उपस्थित हुआ। मान्यवर हाजी बाबा से बात-चीत के बीच फज़ले इमाम महोदय की भी चर्चा आ गई। आपने कहा 'फज़ले इमाम कर्बला तो गये हैं, कहीं शिया न हो जायें।' मैंने हाथ जोड़कर कहा कि मान्यवर! आपने यह क्या कह दिया? फिर आप द्वारा कहा गया 'मुकद्दरात का जवाब नहीं अर्थात् भाग्य में जो लिखा है उसका कोई क्या उत्तर देगा? अतः ऐसा ही हुआ। वापस होने के पश्चात् मौलवी फज़ले इमाम महोदय ने अपने धर्म परिवर्तन की घोषणा कर दिया। ऐसा करते हुए भी फज़ले इमाम साहब को हाजी बाबा के प्रति वही प्रेम रहा। किन्तु लज्जा के कारण या लोगों के बहकाने से वह शिया होने के पश्चात् हाजी बाबा की सेवा में उपस्थित नहीं हुए। कुछ दिनों पश्चात् मृत्यु शैया पर पड़ गये। दस पन्द्रह दिन पश्चात् मैं उनसे मिलने

गया। उन्होंने मुझसे पूछा मेरे रोग के सम्बन्ध में तुम्हारी क्या राय है? मैंने कहा भाई मरना तो है ही, अतः आपको वीरों की भाँति मरना चाहिए। यह सुनकर वह चुप हो गये। उनके नेत्रों से आँसू दौड़ने लगे। उन्होंने कहा भाई तुमने बहुत अच्छा कहा अब मैं मरने हेतु पूर्णतः तैयार हूँ। उनकी दशा यह थी कि कभी अचेत होते तथा कभी सचेत रहते थे। मैं अपने वकालत पेशे में कहीं जाने वाला था। जब दूसरी बार उनसे भेंट करने गया तो थोड़ी देर के लिए वह चेतनावस्था में थे। उन्होंने मुझे पहचान लिया और कहा कि भाई मेरे निकट आओ। यह कहकर मूर्छित हो गये। मैं उनके निकट खड़ा अपने मन में पूज्य वारिस पिया का स्मरण कर मन ही मन प्रार्थना किया। शिया हों अथवा सुन्नी आखिर आप ही के हैं। इस समय कौन इनके काम आयेगा। यह विचार कर मैं उनके पास से लौट आया और गन्तव्य स्थान को चला गया। इसके तीसरे दिन उनकी मृत्यु हो गई। सन्ध्या का समय था ठीक उसी समय मुझे ज्ञात हो गया। यह मैं नहीं कह सकता कैसे ज्ञात हुआ यह एक हृदयावस्था थी। मैंने अपना दिल थाम लिया और मुख से निकल पड़ा **इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन**। उस समय मेरे पास गनी हैदर महोदय मौजूद थे। उन्होंने कहा खैरियत है। मैंने कहा मौलवी इमाम की मृत्यु हो गई। मेरे एक सम्बन्धी सर सैय्यद अली इमाम जो घर में थे दौड़कर आये और कहने लगे, यह केवल आपका ख्याल है। सारांश यह है कि जब मैं पटना गया तो ज्ञात हुआ कि वही समय उनके मृत्यु का था। एक आदमी ने मुझसे कहा जब वह मरने लगे तो उन्होंने कहा अब मेरी अन्तिम बेला है। एक आदमी मेरे कान के पास आयतल कुर्सी (कुरआन का एक मंत्र) पढ़े और दूसरा कलमा-ए-तौहीद पढ़े। मृत्यु के पूर्व उन्होंने होश में आकर कहा रज्जब खाँ उठो खड़े हो जाओ। आदर-सत्कार करो, पूज्य हाजी पिया पधार रहे हैं। पुनः क्रोधित हो यही कहा तब उनका सेवक रज्जब खड़ा हो गया। इस घटना से विदित है कि पूज्य हाजी पिया ने हाथ पकड़ने की लाज रख लिया। कितना ध्यान था अपने शिष्य का जिसने अपने गुरू देव को भुला दिया था किन्तु कितने महान हैं ये गुरू जिन्होंने मृत्यु के समय भी दर्शन देकर शिष्य की आत्मा को शान्ति प्रदान किया।

भूल बैठे हैं हम उनको चाहते हैं वह हमें।
उल्टी मौजे मारता है हुस्न ऐ दरियाये इश्क॥

बहुधा लोगों ने देखा है कि पूज्य वारिस पिया ने मरते समय अपने शिष्यों की सहायता स्वयं उपस्थित होकर किया है। मरने वालों के अतिरिक्त वहाँ उपस्थित लोगों ने भी वारिस पिया का विराजमान होना अपनी आँखों से देखा है। किन्तु इस

Scanned with CamScanner

अवसर पर हम केवल शिष्य होने की बरकत (विभूति) का वर्णन करते हैं अन्यथा ऐसी अनेकों घटनायें लोगों के सामने आई हैं जो इस बात का प्रमाण है कि कितने दुराचारी और कामी लोगों की दशा पलक मारते ही आपने बदल दिया है और पाप मय जीवन स्थान पर लोगों का जीवन पवित्र हो गया है।

मौलाना तहैय्युर वारसी आपनी पुस्तक ऐनुल यकीन में लिखते हैं कि सतरख के जमींदारों में से एक जमींदार महोदय पूज्य हाजी वारिस पिया के शिष्य थे। वह मदिरापान की लत रखते थे और अधिक पीते थे। एक रात जमीदार महोदय ने वारिस पिया के दरबार की शोभा का दर्शन स्वप्न में किया और फिर मान्यवर हाजी वारिस बाबा की सेवा में उपस्थित हुए। आपके श्री चरणों को पकड़ कर रोने लगे और बहुत रोये। यह कोई नहीं जानता था किस विचार से वह रोते थे या उनका तात्पर्य क्या था। परन्तु देखा गया कि इसके पश्चात् मदिरापान की उनकी लत छूट गई। बात यों हुई कि जब वह मदिरा और प्याला लेकर कहीं पीने हेतु बैठते पूज्य वारिस पिया को सामने पाते थे और आपके अपमान की भय से मदिरा का प्याला उनके हाथ से छूट जाता और काँपने लगते थे। बार-बार ऐसा ही हुआ और उनकी यह बुरी लत छूट गई और उनका पीना समाप्त हो गया।

शेख हुसैन अली महोदय नवाब सादा मऊ लिखते हैं कि एक आदमी वाहिद खाँ नामक निवासी नानपारा चरम सीमा के पियक्कड़ थे। उन्होंने वारिस पिया की शिष्यता स्वीकार कर लिया। वारिस पिया सफर में थे। हम लोग मान्यवर हाजी बाबा के साथ थे। वाहिद अली खाँ भी साथ हो गये। बहराइच में पूज्य वारिस बाबा शेख रहमुद्दीन महोदय के घर विराजमान थे। मैं एक कमरे में सो रहा था। वाहिद खाँ ने शराब की एक बोतल लाकर मेरे बिस्तर के निकट रख दिया। जब मैं उठा तो बोतल अपने निकट देखकर मुझे घोर दुःख हुआ। पूछने पर नूर मुहम्मद शाह सेवक ने कहा यह बोतल वाहिद खाँ ने रखी है। कितना भी कहा जाता है किन्तु यहाँ से नहीं उठाते हैं। मैं क्रोध में उठा और महामना वारिस पिया के सम्मुख हो प्रार्थना किया। वाहिद खाँ ने मेरे बिस्तर के निकट शराब की बोतल रख दिया है। यदि गिर पड़ी तो हम लोगों के कपड़े खराब हो जायेंगे। मान्यवर निकलवा दें। उनके वस्त्रों से शराब की गन्ध आती है। मान्यवर महोदय ने कहा 'वह शराब पीता है?' यह सुनकर मैं चुप ही रहा। आपने उसी समय वाहिद खाँ को बुलाया और आदेश दिया 'तुम शराब पीते हो, खूब पीओ' जो काम मनुष्य करे उसकी हद (सीमा) को पहुँचा दें। दूसरे दिन जब वारिस पिया गन्डारा जाने लगे तो वाहिद खाँ मान्यवर को पालकी

के सामने बोतल लिये खड़े थे। आपने कहा 'वाहिद खाँ गन्डारा चलो, गन्डारा चलो।' गन्डारा पहुँचकर श्रीमान ने एक दिन विश्राम किया। वहाँ भी वाहिद खाँ नशे में मस्त थे। इसके पश्चात् बड़नपुर बहराम घाट में हुजूर निमन्त्रित थे। वहाँ भी वाहिद खाँ शराब लाये। जब यहाँ से पूज्यमान बाबा विदा होने लगे तो खान साहब ने आकर आपको सलाम किया। तब पुनः आपने कहा 'वाहिद खाँ, अब तो खूब पी चुके। अब तुमको क्या करना चाहिए? बस हो चुका।' वाहिद खाँ ने निवेदन किया, श्रीमान, हाँ।' 'वाहिद खाँ तुम अपने द्वार पर पड़े रहो, तुम को किसी से क्या काम?' वाहिद खाँ ने यह आदेश सुनते ही बोतल और गिलास उसी समय पटककर तोड़ दिया और सीधे अपने घर नानपारा चले गये। वहाँ जाकर अपने दरवाजे पर बैठ गये। शराब छूट गयी। किसी अन्य नशे में मस्त हो गये। शेख हुसैन अली महोदय लिखते हैं कि छः मास बीतने पर मैं उनसे मिलने गया तो उनको विचित्र दशा में पाया। वह सदैव निमग्न और विभोर रहते थे। वह किसी को पहचानते भी नहीं थे। उन्होंने मुझको भी नहीं पहचाना। खाने पीने सब कुछ से विरक्त थे। यदि किसी ने भोजन दे दिया तो खा लिया नहीं तो निश्चिंत बने रहते। वही शराब पीकर धुत रहने वाले वाहिद खाँ जो अब प्रेम सागर में डूबे हुए हैं। यहीं तक नहीं देखा गया है। अपितु मान्यवर वारिस पिया ने क्षण मात्र में लोगों की दशा बदल दिया है।

मौलवी सैय्यद गनी हैदर लिखते हैं कि एक बार पूज्य हाजी वारिस पिया, खान बहादुर सैय्यद नसीरूद्दीन साहब सी०आई०ए० के घर विराजमान थे और पूर्ववत दर्शनार्थ भीड़ एकत्र थी। मौलवी सुबहान अली साहब डिप्टी कलक्टर निवासी आरा, जिला-शाहाबाद भी मान्यवर वारिस पिया के शिष्य हुए। जब बाहर आये तो जहाँ कुर्सियाँ लगी हुई थी बैठ गये। उपस्थित सज्जनों ने उनको धन्यवाद कहा। उसी समय उनके मित्र यावर हुसैन गया भी पहुंचे इन्होंने धन्यवाद न देकर एक आलोचनात्मक वाक्य कहा 'लो अब क्या? अब तो छूट खेलो' उपस्थित प्रेमी जनों को तो अति कष्ट हुआ और सुबहान अली महोदय को भी घोर कष्ट हुआ। इसी दशा में अभी लोग थे कि मान्यवर वारिस पाक का एक सेवक दौड़ता हुआ आया और सुबहान अली खाँ को वारिस पाक के पास उपस्थित किया। आदेश हुआ बैठ जाओ। जब बैठ गये तो वारिस पिया ने कहा 'हाथ लाओ।' खान साहब ने घबराकर कहा 'अभी तो मैं शिष्य हुआ हूँ।' पूज्य हाजी बाबा चुप रहे फिर कुछ मंत्र पढ़ें और पढ़वाये। पुनः शिष्यता को नवीन कर उनकी पीठ पर एक थपकी देकर कहा 'जाओ अब छूट खेलो।' फिर उनकी समझ में पुनः शिष्यता की बात आयी। १९०२ या

Scanned with CamScanner

१९०३ में सैय्यद गनी हैदर अली महोदय से फिर उनकी भेंट हुई जब वह गया में डिप्टी कलक्टर थे। उन्होंने कहा इस शिष्यता की पुनरावृत्ति का प्रभाव मेरे ऊपर गहरा पड़ा। इसके पश्चात् मैं ईश्वर से डरने लगा और सदैव भयभीत रहने लगा और इसका प्रभाव मेरे आचरण पर पड़ने लगा। यह मान्यवर वारिस पिया का पुनीत यश था कि एक व्यक्ति के व्यंग पर आपने अपने शिष्य का जीवन ही बदल दिया। भगवान से हर हाल में डरना यह कोई साधारण गुण नहीं है। उसी को यह दशा प्राप्त हुई जिसको ईश्वर ने प्रदान किया।

पूज्य गुरूदाता वारिस ने अपने कुछ शिष्यों के भौतिक प्रेम को वास्तविक प्रेम में परिवर्तित कर दिया करते थे। आपकी शिष्यत्व का अनेकों प्रभाव हुआ करता था। किन्तु अन्ततः लोगों को सत्य पथ प्राप्त हो ही जाता था। आपके शिष्यत्व प्रभाव का मुख्य गुण था कि प्रत्येक शिष्य को कुछ न कुछ प्रेमांश अवश्य मिलता था। पूज्यदाता वारिस का पुनीत हाथ पकड़ते ही हृदय की आन्तरिक शक्तियां और मनोवृत्तियां प्रभावित हो उठती थी और उनका अन्तिम फल अलौकिक या सत्य प्रेम था। ऐसी घटनायें अधिकांश सुनने में आती हैं किन्तु उनका आद्योपान्त विश्वसनीय सूत्रों से प्राप्त करना कठिन है। अतः यहाँ एक घटना हाफिज प्यारी साहब का उदाहरण स्वरूप लिखा जाता है जिसको उन्होंने स्वयं अंकित कराया है जिससे यह विदित होता है कि ईश प्राप्ति के पथ का गुरू किस भाँति अपने शिष्य को लौकिक प्रेम से आलौकिक प्रेम में परिवर्तित कर देता है। अतः इस घटना को उचित जानकर अंकित किया जाना आवश्यक जान पड़ा। यद्यपि यह घटना स्वयं एक प्रेम कथा है। पूज्य दाता वारिस का आंतरिक प्रेरणायें और अकथनीय कथन सम्मिलित है।

हाफिज प्यारी की घटना उन्हीं के मुख से

श्री हाफिज प्यारी महोदय का कहना है कि मेरी आयु लगभग सोलह वर्ष होगी। मैं लखनऊ में पढ़ता था। पूज्य हाजी बाबा के आदरणीय पिता माननीय सैय्यद कुर्बान अली शाह जिनसे परमात्मा राजी हैं, के उर्स में देवा आया और अपने एक सम्बन्धी चाचा के घर ठहरा। पूज्य वारिस बाबा का मैं शिष्य था। अतः महामना की सेवा में चरण स्पर्श हेतु उपस्थित हुआ। उसी समय मेरे गाँव (बड़ा गाँव) के कुछ लोग हाजी वारिस दाता से मेरे चाचा नूर करीम शाह साहब की मृत्यु के सम्बंध में बातें कर रहे थे। नूर करीम शाह की मृत्यु के पश्चात् मेरा गाँव आपके फकीर से खाली हो गया है। यह सुनकर मान्यवर दाता वारिस ने कहा 'फकीर का स्थान खाली नहीं होता जो उसके योग्य होता है पाता है।' उसी समय पूज्य वारिस दाता ने मुझे एक पुस्तक प्रदान कर विदा कर दिया। जिसमें लिखा था कि कोई धनवान

किसी सुकुमारी पर आशिक हुआ। उसके प्रेम में अनेकों यातनायें झेली, कष्ट भोगे, रात-दिन उसके घर का चक्कर लगाने लगा। कुछ दिनों पश्चात् उसकी एक फकीर से भेंट हुई। उसने फकीरों जैसा जीवन स्वीकार कर एक निश्चित स्थान पर बैठ गया। कुछ दिनों पश्चात् उस लड़की को ख्याल हुआ कि किस कारण मेरे आशिक ने मुझे भुला दिया। अतः घर से निकलकर अपने आशिक के पास पहुँची और प्रेम त्याग का कारण पूछा। न जाने उस फकीर ने उससे क्या कहा कि वह भी पाँव तोड़कर एक स्थान पर बैठ गयी। उस पुस्तक का यही सारांश था। आपने यह पुस्तक देकर मुझको दो बार प्रतिदिन पढ़ने का आदेश किया।

वह पुस्तक लेकर मैं आनन्द मग्न होता हुआ अपने चाचा के घर आया। अपनी चाची से कहा वारिस दाता ने मिठाई और यह पुस्तक दिया है कि प्रतिदिन दो बार पढ़ा करना। अतः ऐसा हुआ कि घर की महिलाओं को भी पुस्तक सुनने की इच्छा हो गई। मैं रोज पढ़ता और घर की स्त्रियां बैठकर सुना करती थी। अतः मैं नित्य-प्रति उस पुस्तक को सुनाता और सभी स्त्रियां सुनती थीं। मेरे चाचा की बालिकायें क़ुरआन पढ़ती थी। एक दिन चाची साहिबा (महोदया) ने कहा मेरी लड़कियाँ बड़ी हो गयी हैं। अब बाहर के किसी पुरूष से पढ़वाना उचित नहीं है। तुम घर के लड़के हो। क़ुरआन शरीफ पढ़ा दिया करो। मैं उन बालिकाओं को पढ़ाने लगा। उनकी सबसे बड़ी लड़की तीसरा अध्याय पढ़ती थी जिसको लोग प्यारी कहते थे। मेरी अविवेक का युग था। किन्तु मुझे उसके पढ़ाने में आनन्द आता था। मैं यही चाहता था कि वह पढ़ा करे और मैं सुनता रहूँ और वह चाहती थी कि वारिस दाता की दी हुई पुस्तक मैं पढ़ा करूं और वह सुना करें। उर्स शरीफ समाप्त होने पर कुछ दिन रहकर मैं अपने गाँव चला गया। वहाँ जाने पर ज्ञात हुआ कि मेरी बहन का विवाह होने वाला है और इस विवाहोत्सव में मेरे सभी सम्बन्धीजन आने वाले हैं। विवाह के अवसर पर मेरी चाची महोदया तथा उनकी लड़कियाँ भी आयीं। जब वे लोग जाने को हुए तो मेरे घर वालों ने उनकी बालिकाओं को कुछ दिन और रहने का आग्रह किया। चाची ने कहा यदि हाफिज़ मेरी बच्चियों को क़ुरआन शरीफ पढ़ा दिया करें तो इस शर्त पर इन बच्चियों को छोड़ सकती हूँ। मेरी माता जी ने कहा वह तुम्हारा लड़का है अवश्य पढ़ायेगा। मैंने दत्तचित होकर पढ़ाना आरम्भ कर दिया। कुछ दिनों में कलाम मजीद समाप्त हो गया। मेरी संलग्नता के कारण यह बात लोगों में फैल गयी। धीरे-धीरे मेरे चाचा को सूचना मिली। उन्होंने तुरन्त सवारी भेज दिया। जाने के बाद दोनों पक्षों में विरहाग्नि भड़की। देखने वाली औरतें घबरा उठीं।

Scanned with CamScanner

चलते समय उस लड़की ने कहा कि भाई! आप देवा शरीफ कब आइयेगा। मैंने उत्तर दिया 'तुम्हारे जाने के पश्चात् मैं भी आता हूँ। दूसरे दिन उन लोगों की गाड़ी देवा शरीफ पहुँची और मैं भी उसी शाम को उनके घर पहुँच गया। अन्ततः यह निश्चित हुआ कि मैं प्रतिदिन सन्ध्या को आकर शेष क़ुरआन पढ़ा दिया करूंगा।

प्रतिदिन सन्ध्या की नमाज़ के पश्चात् बड़े गाँव से चलता और ९ बजे रात तक देवा शरीफ पहुँचता और प्रातः बड़े गाँव पहुँचकर भोर को नमाज़ पढ़ता। दो ढ़ाई वर्ष इसी प्रकार चलता रहा। देवा शरीफ के लोगों में मेरे आने जाने पर कानाफूसी होने लगी। उस लड़की के पिता ने आकर घर वालों को डाँटा फटकारा और आदेश दिया कि मेरे घर में हाफिज अब्दुल करीम को किसी रूप में आने न दिया जाय। पूर्ववत जब मैं उसके मकान पर पहुँचा तो उस लड़की की माँ ने मुझे घर आने से रोक दिया। वह लड़की एक पुस्तक देने के बहाने से बाहर आयी और मुझसे कहा, सभी लोगों का गुमान है कि इस मकान की छत पर जिन रहते हैं। यदि तुम चाहो तो जिन बनकर छत पर आ सकते हो किन्तु यदि लोग जान लेंगे तो तुम्हारी जान पर आ बनेगी। उसकी माँ बिगड़ गई और उसे तत्काल बुला लिया। मैंने अपने मन में यह ठान लिया कि मैं 'जिन' अवश्य बनूंगा। चाहे तो कुछ हो। उसी समय बड़े गाँव आया अपने घर से कुछ रूपये लेकर लखनऊ पहुँचा। जिन बनने की तैयारी हेतु एक थान कपड़ा, इत्र, अगरबत्ती, मिठाई कोयले और दियासलाई इत्यादि और कुछ लोहे की छड़ें भी लेकर देवा शरीफ पहुँचा। थान के एक छोर में सारा सामान बांध दिया। और दूसरा छोर अपनी कमर में बाँधा। सलाखों की सहायता से कोठे पर पहुँचकर सारे सामानों को ऊपर खींच लिया। कहीं अगरबत्ती जलाया कहीं लोबान सुलगाया। कहीं दीप जलाकर रख दिया। सम्पूर्ण छत सुगन्ध से भर उठी। उस समय मैं अपने विचार के अनुसार कोठे से आंगन से इल्लल्लाह कहकर कूद गया। लड़की तो इस बात को जानती थी किन्तु अन्य घर वालों की निंद्रा भंग हो गई। सभी महिलायें घबरा गई। व्याकुलता में 'या हाजी बाबा' 'या ख्वाजा बाबा' 'या मुनियम शाह' हमारी मदद करो। उसकी माँ इतनी भयभीत थी कि जिन्नों का रूप देखने के भय से उसने घर के सभी दीप को बूझा दिया। मैंने धाक जमाने के लिये बोली बदलकर कहा 'तुम रोज़ कहती रही हो कि हमने जिन्नों का रूप नहीं देखा है। जलाओ चिराग और रूप देखो।' उसकी माता ने गिड़गिड़ाकर कहा, 'नहीं नहीं, हम सूरत नहीं देखना चाहते। भगवान के लिए मेरे ऊपर दया करो। पुनः कृत्रिम जिन ने कहा 'हमारे आने का कारण यह है कि वह हाफिज जो बड़े गाँव से आकर तुम्हारी

लड़की को क़ुरआन पढ़ाता था तो मैं सुना करता था किन्तु आज तीन दिन से तुम्हारे घर क़ुरआन नहीं पढ़ा जाता है।' औरतों ने कहा अपने और पराये की लाज बस अब हम हाफिज को अपने घर नहीं आने देते हैं। यदि आप क़ुरआन शरीफ सुनना चाहते हैं तो जब कहिए यह लड़की क़ुरआन पाक पढ़कर सुनाएगी। कृत्रिम जिन ने कहा 'हाफिज से मेरी कोई गरज़ नहीं है। हम तो क़ुरआन शरीफ सुनना चाहते हैं। हम रोज रात में क़ुरआन शरीफ सूनेंगे। हम दो भाई एक युग से यहाँ रहते हैं।'

मैं प्रतिदिन रात्रि में अगरबत्ती जलाता सुगन्ध बिखेरता और छत से आंगन में धड़ाम से कूद पड़ता था। यह सूचना तेजी से पूरी बस्ती में फैल गई। यहाँ तक कि लोगों ने पूज्य हाजी बाबा से भी कहा, आपने मुस्कुराते हुए कहा 'हाँ, हाँ ! पढ़ा जिन है।' मान्यवर हाजी बाबा के इन शब्दों को कौन समझता? मेरा आना जाना इसी भाँति चलता रहा। कभी-कभी जिन के भेष में यह कह देता कि मैं अमुक उर्स में जा रहा हूँ और मेहमान बनकर दिन में उनके घर आता था। इसी अतिथि काल में उस लड़की की माता ने हमारे प्रेम की पवित्रता जानने हेतु मुझे आदेश दिया कि पूज्य हाजी बाबा से प्रार्थना करो कि हमारे घर पधारने की कृपा करें। यदि मान्यवर पधारते तो हम लोग दर्शन पा लेते। इस बीच मैं पूज्य वारिस दाता से बहुत डरता था। यदि कभी रास्ते में दर्शन हो जाता तो सिर झुकाकर सलाम कर लेता था किन्तु उस लड़की की माताजी का आदेशानुसार मैं सरकार में गया और चलने का आग्रह किया। आपने अपने मुखारबिन्दु से कहा 'अच्छा, अच्छा! तीसरे पहर चलेंगे।' मैं आकर उन लोगों को सूचित किया। सभी महिलायें घर की सफाई में जुट गई और वारिस पिया के बैठने हेतु स्थान सजाया। तीसरे पहर आप पधारें और बिस्तरे पर विश्राम करने लगे। उनकी सभी लड़कियाँ हाजी बाबा का पाँव दबाने लगी। मैं एक कोने में दीवार का सहारा लेकर बैठ गया। पूज्य दाता वारिस ने कई बार कहा 'हाफिज कहाँ गया?' उस लड़की की माता ने मान्यवर से कहा कि वह बैठे हैं। उस लड़की ने कहा कि भाई तुम भी आकर हाजी बाबा के पाँव दबाओ। डरते-डरते मैं वारिस दाता के चरणों के निकट गया तथा पाँव दबाना आरम्भ किया। मेरी कुछ विचित्र दशा थी। अन्ततः वह लड़की और हम दोनों एक दूसरे का पाँव दबा रहे थे। और दाता गुरू वारिस लेटे-लेटे मुस्कुरा रहे थे। इसी बीच श्रीमान ने उस लड़की की माता को सम्बोधित कर कहा 'हमने बहुत सैर की है और अनेकों मुल्कों की यात्रा किया है। एक स्थान पर पहुँचे तो ज्ञात हुआ कि एक आदमी किसी लड़की पर मोहित था। किन्तु उसके सम्बन्धियों में था। लोगों ने उनकी दशा देखकर बदनामी

Scanned with CamScanner

का ख्याल किया और राय यह हुई कि यह किसी के कहने सूनने से नहीं मानेगा। हाँ, यदि लड़की स्वयं कर दे कि मेरे पास न आया करो तो मान जायेगा। जैसे ही प्रेमी आया उसने उससे न आने को कहा। उस प्रेमी ने तीन बार यही कहलवाया कि मेरे पास न आओ। अन्तिम बार ज्योंहि उसने न आओ कहा उसकी आत्मा ने शरीर त्याग दिया। प्रेमी की यह दशा देख प्रेमिका ने भी शरीर त्याग दिया।'

इसके पश्चात् पूज्य गुरू ने पुनः कहा 'सुनो, सुनो! पवित्र प्रेम में भगवान सहायता करता है। यदि हजारों एक ओर हों तो कुछ नहीं हो सकता।' चलते समय आपने हम दोनों की पीठ पर थपकी दिया और विदा हो गये। मुझे कुछ अवसर मिला उसकी माता को विश्वास हो गया कि अभी इनका प्रेम पवित्र है। मेरा जिन्नाती चालू ही था। इसी दशा में मैंने एक दिन लड़की से कहा 'मैं लखनऊ जिन्नाती सामग्री लेने जाने वाला हूँ। यदि तुम्हें कुछ मंगाना हो तो बताओ।' उस समय मेरी चाची जाग रही थी उनको विश्वास हो गया कि हाफिज है।

तीन चार मास बाद एक दिन मैं उनके घर गया सभी लड़कियाँ मेरे सामने आयीं किन्तु वह लड़की मेरे सामने नहीं आयी। बैठा-बैठा मैं घबरा गया। थोड़ी देर बाद वह आयी और मेरे निकट खड़ी हो गयी। उसकी बड़ी बहन ने उसको स्मरण कराया कि तुमको नहीं आना चाहिये जब माँ ने मनाकर दिया है। उसने कहा इस पर्दे में मेरी बदनामी है। हाफिज मेरे रिश्ते के भाई हैं। मुझे कुरआन शरीफ पढ़ाया है। आखिर इनके सामने न आने का क्या कारण है? मैं चला आया। जब पुनः देवा शरीफ से घूमकर लौटा तो देखा कि घर में सन्नाटा है। उसकी बहनों ने बताया कि आप के जाने के बाद माता जी ने उसकी बड़ी पिटायी किया है। यह सुनकर मुझे बहुत दुःख हुआ। पूर्ववत रातों को जिन्न बनकर आ धमका मेरी चाची ने कहा आप तो अजमेर जाने वाले थे। आखिर बात क्या हो गई? हमने कहा 'तुमने हाफिज के सम्मुख आने से अपनी लड़की को क्यों रोका? हमको तुम्हारे इस कार्य से घोर दुःख है। हाफिज की सेवा हम करने के लिए तैयार हैं।' यह सुनकर वह लोग बहुत घबराये और मैं दिखावटी रूप में उन लोगों से रूठ गया। मेरी चाची मेरे रूठने से अति घबरा गईं। मैं अपने दूसरे चचा के घर पर था। स्वयं आकर मुझे अपने घर ले गई। उस लड़की के निकट बिठा दिया। खाना मंगवाया किन्तु वह पागलों की तरह व्यवहार करने लगी। घर के अन्य लोगों को मारने कोसने लगी। अन्ततः वह कुएँ में गिरने हेतु दौड़ी। घर वालों ने उसे पकड़ लिया। यह घबराहट उनकी बढ़ती गई। उन लोगों ने जहाँगीराबाद भजने हेतु मुझसे एक पत्र लिखवा कर अपने सेवक

अजमत को दिया। किन्तु अजमत भी जिन्नों के भय से आतुर था। मैंने उसको बचने की एक उपाय बताया जिसके अनुसार वह पत्र लेकर चला किन्तु थोड़ी दूर पर गिर कर काँपने-चिल्लाने लगा। एक पड़ोसी उसके हो-हल्ला से जाग पड़ा। पहुँचकर अजमत से पूछा 'कैसा हाल है?' अजमत ने उठकर उसे एक थप्पड़ लगा दिया। परेशान होकर वह पड़ोसी भागा और आकर घर वालों को सूचित किया। उनके एक सम्बन्धी जो आये हुए थे वह भी वहाँ आ गये और मुझसे कहने लगे 'भीतर महिलायें हैरान हैं।' बाहर एक आदमी था उसकी यह दशा हो गयी। यह हाफिज जो चाहे करे। इसने घर भर को अकेले हैरान कर दिया है। मेरे निकट आकर कहने लगे। क्या तुम किसी का खून कराओगे? तभी अजमत ने आकर कहा 'यदि तुम लोगों ने हाफिज को कुछ कहा तो अच्छा न होगा।' मेरी चाची घबराकर बोली कि मैं कभी इनके खिलाफ न करूंगी। इधर यह सब हो ही रहा था। उनके मुख्य सम्बंधी मुझसे कहा कि मैं जहाँगीराबाद चल रहा हूँ तुम भी मेरे साथ चलो।

जहाँगीराबाद पहुँचकर लड़की के पिता से उन्होंने सब कुछ पूरी तरह ब्यान किया। उसके पिता को क्रोध आ गया। उन्होंने मुझसे कहा कि दो जिन तुमने अधिकार में कर लिया है और पूरे घर भर को रात्रि से व्याकुल कर रखा है हम चलते हैं, देखें कि जिन क्या करते हैं? हमने कहा जिन तो सदैव मेरे साथ रहते हैं। अभी तमाशा देख लीजिए। वह भी घबराये और कहा क्या यहाँ भी आबरू लेना चाहते हो? हमने कहा कि आप खुद तैयार हैं। मेरा क्या दोष है? उन्होंने कहा क्षमा करो तीन दिन पश्चात् मुझसे मिलना। उस समय मैं तुमसे कुछ बातें करूंगा। मैं वहाँ से चला गया फिर तीसरे दिन जहाँगीराबाद पुनः लौटा। उस दिन उनके यहाँ बहुत से लोग मेहमान थे। मुझसे किसी ने बात तक नहीं किया। मैं अपने गाँव के लिए चल दिया। उस लड़की के फूफा मेरे साथ आये। रास्ते में उन्होंने कहा तुम्हारी वजह से एक खून होगा। मैंने घबरा कर कहा। खून, कैसा ख़ून? उन्होंने कहा लड़की के चाचा और पिता को सब कुछ ज्ञात हो चुका है। तुम दोनों एक दूसरे को चाहते हो कुलीनों के लिए इस से बढ़कर अशोभनीय बात और क्या होगी? अपने सम्बन्धियों को एकत्र कर सबकी मत ली गई है। यह निश्चित हुआ है कि इस लड़की को मार डालना चाहिए। दो ही एक दिन में सब कुछ होने वाला है। मैं अति व्याकुल हो उठा और सोचने लगा। अब मुझे क्या करना चाहिए? मैंने सोचा मुझे भी जान दे देना चाहिए। मैंने निश्चित किया उन्हीं के मकान के कुएँ में गिरकर प्राण दे दूंगा। इस विचार से मैं देवा शरीफ पहुँचा। मैंने वहाँ जाकर देखा घर पर सन्नाटा छाया हुआ

Scanned with CamScanner

था। मुझे विश्वास हो गया कि मेरी प्रेमिका को उसके घर वालों ने अवश्य ही मार डाला है। उस मकान का कई फेरा लगाया। मेरा हृदय धड़कने लगा। मैं घबराया हुआ शाह फज़ले हुसैन साहब स्थानापन्न शाह मुनियम के यहाँ पहुँचा। उनसे कहा मुझे गर्मी अधिक जान पड़ रही है। उन्होंने अपने सेवक को ओदश दिया उसने मुझे स्नान कराया मेरे शरीर पर इत्र (सुगन्ध) लगाया फिर मैं सैय्यद मारूफ शाह से मिलता हुआ उसी घर पर आ पहुँचा। उस समय घर का द्वार खुला था। मकान के कुएँ में इल्लल्लाह कहकर कूद गया। मैं कुएँ में सीधा खड़ा था किन्तु मेरी भुजाओं में चोट अधिक आ गयी थी। मेरे हाथ की हड्डी टूट गई थी। कुएँ में गिरता हुआ उस लड़की की माँ ने देखा था। उसने हल्ला करना आरम्भ किया। घर वालों ने उस लड़की को एक कोठरी में बन्द कर दिया। फिर एक साथ ईंट पत्थर कुएँ में बरसने लगा। पूरे कस्बे के आदरणीय लोग उपस्थित हो गये। सब उस लड़की की माता को कोसने लगे। सैय्यद मारूफ शाह ने आवाज़ दिया हाफिज जीवित हो तो बोलो! घर में से मेरी प्रेमिका चिल्ला रही थी। उसका स्वर मेरे कानों को साफ सुनाई दे रहा था। मुझे विश्वास हो गया कि वह जीवित है। अत: मैंने चिल्लाकर कहा कि जल्दी निकालो। खटोले में रस्सी बांधकर कुएँ में डाला गया। निकलते ही मैंने नारा मारा 'मज़ा है प्यारी का।'

सैय्यद मारूफ शाह ने मुझे दूध पिलाया, रात किसी तरह कटी। प्रात: ज्ञात हुआ कि पूज्य दाता वारिस देवा पधार रहे हैं। मैं सोच रहा था यदि हाजी बाबा ने आदेश दे दिया कि मुझे देवा से निकाल दिया जाय तो लोग मुझे देवा शरीफ में रहने नहीं देंगे। प्रात: के आठ बजे थे। जब मारूफ शाह और दूसरे सम्मानित लोग मान्यवर हाजी बाबा के स्वागत हेतु गये। देवा में जब आप मान्यवर कुर्बान अली शाह के मज़ार से आगे हुए तो आपने लोगों से कहा 'क्यों? हाफिज कुएँ में कूद पड़ा। क्यों? ऐसा कहा जो कूद पड़ा। मारूफ शाह सुनो-सुनो मुहब्बत ऐसी तो हो जैसी हाफिज की है। सम्पूर्ण बीती बातें सैय्यद मारूफ शाह ने दाता वारिस पाक को सुनाया। तत्पश्चात मेरे स्वामी ने कहा 'पाक मुहब्बत है, पाक मुहब्बत है, किन्तु लोग मानेंगे नहीं। उनकी बदनामी होगी, हाफिज आशिक है, हाफिज आशिक है।' इतना सुनते ही लोग मेरे पक्ष में हो गये। जब मुझे ऐसा ज्ञात हुआ तो मेरे आनन्द की सीमा न रही। मैं मान्यवर दाता की सेवा में उपस्थित हुआ और चरण स्पर्श किया। आपने कहा 'हाफिज मस्तान, हाफिज मस्तान।' आपने आगे कहा 'हाफिज सहन नहीं कर सके, कुएँ में फांद पड़े। कौन सा हाथ टूटा, कौन सा हाथ टूटा?' यह

कहते हुए मेरे टूटे हाथ को झटक दिया, हड्डी पूर्णत: जुट गई। फिर आपने कहा हाफिज उनके घर न जाना। वह लोग तुम्हारे दुश्मन हो गये हैं। कई बार आपने आदेश दिया 'तुम न जाना वह लोग मार डालेंगे।' प्रेम का भूत चढ़ चुका था मुझे कुछ ज्ञात नहीं था। मैं वहाँ से उठा और सीधे उस मकान में घुस गया। मेरी मरम्मत खूब हुई। पिट-पिटाकर बाहर आया। इसके पश्चात् मैं फेरी लगाता और सदा देता रहता था 'वारिस तेरे दरबार में आया, मदद कर दीजियो शाहा।' यही हमारी सदा थी। हालत यहाँ तक हुई कि लोग मुझे जहाँ पाते वहीं मारते थे। लोग आकर कहते थे कि प्यारी ने कहा है मेरे नाम से सौ जूते मार देना। मैं सिर झुका देता और वह मुझे सौ जूते मारते थे। अत: दाता वारिस ने मुझे बुलवाकर कहा 'किसी की बात का विश्वास न करो, जब वह स्वयं आकर कहे तो विश्वास करो।'

उधर उस घर की महिलाओं ने वारिस दाता की सेवा में उपस्थित होकर प्रार्थना किया कि हाफिज हम लोगों को बदनाम करता है मेरी लड़की का नाम लेकर चिल्लाया करता है। आप ने कहा 'यदि ऐसा है तो हम उसे अभी देवा से निकलवा देंगे। नूर मुहम्मद साहब अभी पकड़ लाओ।' नूर मुहम्मद शाह ने आकर मुझसे जब कहा तो मैं एक चाकू लेकर मान्यवर के दरवाजे पर बैठ गया। इस दशा में देखकर गुरू दाता ने कुछ नहीं कहा। उस जमाने में पतंग उड़ाता और जान बूझकर उसी घर में पतंग गिरा देता था। पंतग के बहाने मैं उस घर में अवश्य जाता और कुछ मार खाकर चला आता। जब पूज्य बाबा को यह ज्ञात हुआ तो उन्होंने मुझे बुलाकर कहा, 'हाफिज, हाफिज तुम हमारे कोठे पर पतंग उड़ाया करो।' इसी दशा में तीन वर्ष व्यतीत हो गये। एक दिन फिर वारिस दाता ने मुझे बुलवाया और कहा 'हाफिज तुम हमारी सूरत देखा करो। अल्लाह तेरी गर्दन की नस से भी निकट है।' मैंने कहा कि इस संसार में उससे अधिक कोई सुन्दर नहीं है। फिर किसे देखूं? आप उससे अधिक सुन्दर हों तो देखूं। मान्यवर मुस्कुराने लगे और आशिक के सिवा किसी की जुरअत (हिम्मत) नहीं हो सकती।

एक दिन फतेहपुर में मुस्तकीम शाह महोदय के मकान पर पूज्य दाता गुरू वारिस विराजमान थे। मान्यवर ने मुझे बुलाकर कहा 'हाफिज, हाफिज आज देवा में माँ-बेटी में खूब जूती पजार हो रही है। वह लड़की पूरे घर को परेशान किये हुए है।' मैं यह सुनकर बाहर चला आया। पूनीत दाता वारिस ने महिलाओं से कहा, 'हाफिज को एक सदा (बोल) बतायें। यदि वह यह बोल बोलेगें तो अच्छा हो।' सबने आग्रह किया यदि आप चाहते हैं तो बता देवें। आपने कहा 'नहीं,नहीं हम

Scanned with CamScanner

नहीं कहेंगे। तुम बता दो वह बोल इस भांति है।'

यह मुकर्रर हदीश में आया। यानी हज़रत ने यह फरमाया।
बे मशक्कत बहिश्त को पाया। सिद्क दिल से जुबां पर जो लाया।
कल्मय लाईलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद मेरा रसूलल्लाह॥

एक महिला ने आकर मुझे बताया और वहीं द्वार पर खड़ा-खड़ा यह सदा बोल देने लगा। गुरूदेव सुनकर प्रसन्न हो उठे। मुझे भीतर बुला लिया और कहा 'हाफिज, हाफिज सीख ली। अच्छा सदा लगाओ।' मैं यही बोल देता हुआ मान्यवर की फिनिस के साथ देवा तक आया। यहाँ आने पर ज्ञात हुआ कि उस लड़की के अतिरिक्त घर के सभी व्यक्तियों को खून के दस्त आ रहें हैं। वह सभी लोग मान्यवर की सेवा में उपस्थित हुये। अपनी दशा का रोदन किया। महामना ने मुझको बुलाकर आदेश किया 'जब मज़ारों पर जाओ, तब यह बोल बोलो, देवा में यह सदा न लगाया करो। इन लोगों को कष्ट होता है।' मैंने यह बोल बन्द कर दिया। बहुत दिनों पश्चात् आपने मुझे आदेश दिया 'हाफिज, हाफिज यदि खुदा और रसूल तुम्हें मिल जायें, वह लड़की मिले या न मिले।' मैं व्याकुल हो उठा। महाराज! कुछ न मिले मात्र वह लड़की अवश्य मिले ईश्वर और उसके अवतार को भी उसी रूप में देखूंगा, तब मानूँगा। नहीं तो मुझे कुछ नहीं चाहिए केवल वह। यह सुनकर मान्यवर ने कहा 'आशिक के सिवा कोई ऐसा नहीं कह सकता।'

उस समय मैं यही सदा (बोल) दिया करता था 'मजा है प्यारी का।' एक दिन जब मुझे ज्ञात हुआ कि उस लड़की को लेकर उसकी माँ दाता गुरू वारिस के दरबार में आई हैं। उस समय मैं मकान के उस ओर जिधर महिलायें रहती थीं जाकर 'मज़ा है प्यारी का' सदा देने लगा। ठीक उसी समय वारिस पाक ने उन दोनों को विदा कर दिया। किन्तु जब उन दोनों ने मुझे मुख्य द्वार पर पड़ा देखा तो वह ठिठक कर रह गयीं। मिर्जा मुनियम बेग वारसी से उसकी माँ ने कहा कि हाफिज को यहाँ से हटा दो। मिर्जा साहब ने मेरे निकट आकर कहा, स्त्रियों के रास्ते पर क्यों खड़े हो? मर्दाना की तरफ जाकर सदा लगाओ। मैंने उनको उत्तर दिया कि मैं मर्दाना जनाना कुछ नहीं जानता। जहाँ जी में आयेगा वहीं सदा लगाऊंगा। वह मुझ पर क्रोधित हो गये और मुझको बहुत कुछ भला-बुरा कहा। यहाँ तक कह डाला कि मैं जाकर सरकार से कहता हूँ। मैंने फिर कहा कि तुम खुदा से कह दो। मैं नहीं हटता। वह मकान के अन्दर गये और वह लड़की यह कहती हुई बाहर निकल आयी हाफिज भाई किसी से कुछ कहते थोड़े ही हैं। उस लड़की के निकलते ही उसकी माता जी

भी बाहर आ गई और दोनों अपने घर चली गयीं।

मिर्जा मुनियम बेग को बड़ा दुःख था। वह सीधे बाबा रहीम शाह के पास चले गये। दोनों वारिस बाबा के पास जाकर मेरे बारे में कुछ कहने लगे। अतः मैं भी उनके पीछे जा लगा। पूज्य वारिस दाता ने मेरी ओर देखकर आदेश दिया 'नूर मुहम्मद अब्दुर्रऊफ के घर में कह दो 'अपनी लड़की को लेकर मेरे यहाँ न आया करें। हाफिज आशिक है किसी दिन पकड़ लिया तो कयामत तक छूटना मुश्किल है।' इस शिकायत का भी जवाब मिल गया और मैं उसी प्रेम का दीवाना बना रहा। मैं कैसे ब्यान करूँ कि प्रीत में मनुष्य की क्या दशा होती है? और प्रेम आसक्त क्या कुछ करने के लिए तैयार हो जाता है? नाईन मेरे पास आती और कहती यह प्यारी के नख है। धोबिन कपड़े लाती और मैं उनको खुले हाथों रूपये देता था। मैं उसके कपड़े की गन्ध सूंघता और विभोर हो जाता था। तात्पर्य यह है कि घर से रूपये लाता और खर्च करता रहता था। केवल इस उद्देश्य से दाता वारिस पाक की सेवा में मिठाईयां और सौगात प्रस्तुत करता कि सम्भव हो उस लड़की को भी अंश मात्र प्राप्त हो जाय। क्योंकि जब मैं कुछ भी आप को भेंट करता, आप पूर्णतः उसके घर भेजवा देते थे।

एक दिन की बात है कि एक महोदय ने मुझसे कहा कि हाफिज यदि तुम पाँच सौ रूपये दो तो हम उससे भेंट करा दें। मेरे पास कुछ था नहीं। मैं चुप रहा। फिर उन्होंने कहा यदि शरफुद्दीन साहब बैरिस्टर की सोने की घड़ी किसी भाँति ला दो तो फिर तुम्हारा कार्य सिद्ध हो जायेगा। शरफुद्दीन महोदय के भाई अब्दुल हमीद महोदय रईस नेउरा आये हुऐ थे। मैं उनके कमरे में पहुँचा और उनकी थैली से घड़ी निकालकर कोठे से कूद पड़ा। वह चिल्लाने लगे। नूर मुहम्मद शाह और अन्य कुछ लोगों ने दौड़कर मुझे पकड़ लिया। घड़ी के साथ मैं दाता वारिस के समक्ष प्रस्तुत किया गया। मान्यवर स्वामी ने आदेश दिया 'हाफिज को निकाल दो। यहाँ न आने पाये और नवरोज अली से कह दो अपने मकान पर न रहने दे। हमको बदनाम करते हैं। लोग कहेंगे कि यही चोरी कराते हैं। ईनक़ी भी शिरकत (साझा) होगी। मैं देवा में हर जगह से निकाल दिया गया ईधर उधर घूमकर रात्रि व्यतित किया। प्रातः ज्ञात हुआ कि पूज्य बाबा सहाली के लिए प्रस्थान किये हैं। मैं भी पहुँचा और सदा लगाई लोगों ने मुझे श्रीमान की सेवा में उपस्थित कर दिया। सरकार पुनीत वारिस ने आदेश दिया 'हाफिज तुम देवा में नहीं जा सकते हमारी बदनामी होती है।' मैंने अपने मन में कहा चाहे जो कुछ हो जाय परन्तु अवश्य जाऊँगा। पुनः देवा लौट आया इधर

Scanned with CamScanner

उधर घूम कर लड़की के मकान के पिछवाड़े दीवार से टेक लेकर रात भर पड़ा रहा, जब इस दशा में रहना दूभर हो गया तो मैं इलाहाबाद चला गया। संयोग से कचनी बाग में मिस्टर कालोन बैरिस्टर महोदय से भेंट हो गयी। उन्होंने बड़ी स्नेह से मुझसे बातें किया अपनी बग्घी पर चढ़ाकर अपनी कोठी पर ले गये। मैं दो चार दिन उनका अतिथि रहा। उन्होंने मेरा बहुत आदर सत्कार किया। उन्होंने मुझ से कहा कि यदि तुम किसी तरह एक छोटी सी बारात भी लेकर उस लड़की के द्वार पर चले जाओ तो मुकदमा जीत कर लड़की तुम्हें दे देना हमारा काम होगा।

दूसरे दिन पाँच सौ रूपये लेकर देवा शरीफ आया। यहाँ ज्ञात हुआ कि मान्यवर हाजी बाबा रूदौली में काजी मजहरूल हक़ के मकान पर विराजमान है और अब्दुर्रऊफ महोदय की पत्नी ने मिन्नत माना था कि हाफिज को निकाल दिया जाय तो वारिस दाता की दावतें करें और एहराम बदलवायें। मैंने सोचा यहाँ बाजा बजने से पहले हाजी बाबा की चरणों में उपस्थित हो जाऊं। हो सकता है मेरा भाग्य साथ दे दे। अत: मैंने रूदौली पहुँचकर सदा लगाया 'मज़ा है प्यारी का।' लोगों ने मेरी बात दाता वारिस तक पहुँचाया। आपने कहा 'देवा में क्या दावत करेंगे? वह चोरी में बदनाम हो गये और हमको भी बदनाम करते हैं।' उस समय तो लोग चले आये किन्तु रात में पुन: प्रयत्न करने का वचन दिया। दूसरी बार हुजूर ने कहा 'अच्छा बुलाओ।' जब मैं गया तो आप ने कुशलोपरान्त कहा 'यदि कोई कह दे कि इनकी (अपनी ओर संकेत करके) गर्दन मार दो तो हम उस लड़की को मिला देंगे।' हमने तुरन्त कहा कि पूज्य दाता हम ऐसा अवश्य करेंगे। आप हर्षित हुए और खड़े होकर मुझे गले से लगा लिया। पुन: कहा 'जाओ हम देवा में तुम्हारी दावत खायेंगे। फिर मैं वहाँ से चला आया।' चाँद की बाइसवीं तिथि को उन लोगों की दावत हुई। बड़े आदर सम्मान से एहराम का जुलूस (उत्सव यात्रा) महान अस्ताने पर पहुँचा। मैंने भी नाद घोष किया। 'मज़ा है प्यारी का' मिठाइयाँ बंटी। दाता वारिस ने मुझे भी तीन मुट्ठी मिठाई प्रदान किये। कुछ समय पश्चात् जब भोज्य पदार्थ आये तो आप ने मुझे भी खाने को दिया। मिट्टी के बर्तनों में फिरनी (खीर जैसा भोज्य पदार्थ) भी मुझे मिली। मैंने बर्तन भी चबा डाले। पुन: मैंने दाता वारिस को निमन्त्रण दिया दूसरे दिन एहराम (पीला वस्त्र) को उस लड़की के चारों ओर फिरा-घूमा कर सरकार में पेश किया। आप ने उसे धारण किया जो भोज्य पदार्थ मैं ने सरकार में पेश किया था उसमें से कुछ भोजन लड़की को भी सरकार ने भेजवा दिया। ऐसे कुछ दिवस बीते किन्तु पुन: मुझे देवा से निकाल दिया गया। कई महीनों

तक मैं इधर उधर मारा फिरा। एक दिन हलुआ लेकर उपस्थित हुआ। लोगों ने हुजूर को सूचित किया। मान्यवर ने अस्वीकृत कर दिया। एक पंजाबी जो नव-आगन्तुक थे उन्होंने मान्यवर से कहा एक आशिक आया है। दाता वारिस ने कहा आशिक को कौन रोक सकता है? आने दो। मैं उपस्थित हुआ। पूज्य वारिस दाता मुस्कुराये। मैंने हलुआ सामने रखा। आप ने उसे अब्दुर्रऊफ महोदय के मकान पर भेज दिया। उन्होंने मुझे अपने घर बुलाया मैं बड़ी खुशी से उनके घर पहुँचा। दोपहर का समय था। घर में लोहे का चिमटा (दस्तपनाह) गर्म हो रहा था। उन्होंने मुझे समझाया-बुझाया कि लड़की का नाम लेना छोड़ दो और देवा में न रहो। मैंने एक न मानी बस क्या था? वह मुझे दागने लगे। किसी प्रकार से दाता वारिस को सूचना मिली आपने कहा 'आशिक को मार डालना दिल्लगी नहीं है और दरवाजे पर पधारे फिर लौट गये। सेवक लोग मुझे ले आये। मारपीट का तो मुझे कोई दु:ख न था। किन्तु जो कुछ कष्ट था उस कुरते के फटने का था जिसको प्यारी ने अपने हाथों से सिलकर दिया था। पूज्य दाता वारिस ने मुझे देखकर इस प्रकार कहा 'इनको मारने से क्या फायदा? जुल्म का नतीजा अच्छा नहीं होता।

कुछ दिन इसी भांति बीत गये यह सब कुछ आया गया हो गया! जीवन जैसे बीतना चाहिए बीतता रहा। कुछ समय पश्चात् वर्षा ऋतु में पूज्य दाता ने मुझे आदेश दिया 'तुम बहराइच जाओ और कल आकर हमसे पैंतेपुर में मिलो।' उसी समय पद यात्रा करता हुआ फतेहपुर बिसवा से बहराइच पहुँचा। माननीय सैय्यद सालार की समाधि भवन पर उपस्थित हुआ और बैठ गया। क्रमश: कुछ निंद्रवस्था सी होने लगी। उसी दशा में अपने को बड़ा गाँव में देखता हूँ। मान्यवर हाजी बाबा मेरे घर विराजमान हैं और आदेश देते हैं। हाफिज तुम हमारी दावत करो तो प्यारी मिले। ग्यारह तिथि और इतवार का दिन होना चाहिऐ। अब हम देवा जाते हैं तुम हमारे साथ चलो।' मैं इसी विचार में देवा पहुँचा और मुनियम शाह की समाधि स्थल पर पहुँचकर देखा तो मज़ार के कब्र का चिन्ह नहीं है। वहाँ मुनियम शाह महोदय बैठे क़ुरआन शरीफ पढ़ रहे हैं। मैंने उनका पुनीत हाथ पकड़ कर प्रार्थी हुआ कि आप कृपया बतावें कि प्यारी कब मिलेगी। उन्होंने कहा 'चादर चढ़ाओगे तब मिलेगी।' फिर मुझे बिदा कर दिया। आँख जो खुली तो वही सैय्यद सालार का समाधि भवन है। वहाँ से उठाकर चला आगे मुझे एक व्यक्ति ने तीन सौ रूपये दिये। दूसरे दिन पैंतेपुर पहुँचा। ग्यारह तारीख निश्चित किया। देवा शरीफ पहुँचकर फज़ले हुसैन शाह वारसी से मुनियम शाह की हुलिया ब्यान किया जिसकी उन्होंने पुष्टि कर

Scanned with CamScanner

दिया। ग्यारहवीं तिथि को ८ बजे प्रातः तहबन्द बदलवाया और १० बजे पूज्य दाता के सम्मुख भोजन उपस्थित किया। इसके पश्चात् हुजूर के कहने पर शाह मुनियम की दरगाह पर हाज़िर होकर चादर चढ़ाया। बाहर आने पर मेरे मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि आज घर में घुस कर पकड़ लाओ जो होगा, होगा। तब तक रास्ते में पूज्य हाजी बाबा का चौखट दृष्टि गोचर हुआ। मैंने सोचा हाजी बाबा का चरण चूमता चलूं। देखा द्वार के कपाट खुले हुए थे, मैं भीतर चला गया वहाँ जो कुछ देखा देखकर चकित रह गया। इसी दशा में उस सौदर्न्य साम्राज्ञी (समस्त संसार में सबसे सुन्दर) ने मेरे ओर दृष्टि कर देखा तो मैंने सिजदे में सिर रख दिया अर्थात् माथा टेक दिया। क्या छवि थी? वही रंग-रूप वही प्यारी। कानों में बालियाँ गले में चन्द्र हार, गुलाबी दुपट्टा ओढ़े बैठी है। माथा जब उठाता हूँ तो वारिस पिया विराजमान हैं। प्यारी का पता ही नहीं। मैंने कहा कि यह क्या? तो आपने कहा 'यही सूरत है, इसी के साथ तुम्हारा हस्र है (अन्तिम परिणम) और जहाँ कहीं देखोगे इसी सूरत को देखोगे।' मेरी सम्पूर्ण भावनायें पलट गयीं जैसे इसके पूर्व कुछ था ही नहीं और यह बात पत्थर की लकीर हो गई कि जो कुछ है यहीं हैं, यही सूरत रूप है इसके सिवा कुछ नहीं।

अब कौन रहा है जिसको देखूं? एक तुम थे सो आ गये नज़र में॥

हाफिज साहब ने अन्तिम दृष्टि देखने के पश्चात् फिर कभी प्यारी के घर की ओर देखने का विचार तक नहीं किया और न कभी प्यारी की चर्चा ही किया। पर यह बोल सदैव उनके मुख से निकलता रहा 'मज़ा है प्यारी का और सब झोल है' जब तक हाफिज जीवित रहे वर्ष में दो बार चादर, पंखा, गिलाफ सरकार में प्रस्तुत करते रहे। कव्वाली में उनकी आँखों से आँसू और मुख से झाग निकलने लगते थे बेहोशी की दशा में लोग उनको वारिस पिया के सम्मुख ले जाते और इसी अवस्था में उठाकर बाहर ले जाते थे। घंटों बेहोश रहने के पश्चात् होश में लाये जाते थे। तात्पर्य यह है कि धर्मगुरू वारिस दाता के एक ध्यान से हाफिज की मनोधार पलट गई और भौतिक प्रेम सात्विक हो गया। इस घटना से इस समस्या का निराकरण हो जाता है कि एक दक्ष और कुशल गुरू किस प्रकार संसारिक और भौतिक प्रेम को सत्य और ईश्वरीय प्रेम में परिवर्तित कर देता है और कितनी कठिनाइयों के पश्चात् सफलता सूलभ होती है। विचारणीय है कि पूज्य दाता वारिस बल और शक्ति रखते हुए दोनों पक्षों में से किसी को बाध्य नहीं किया कि विवाह कर लें। दोनों पक्ष शिष्य थे और पूज्य दाता ने दोनों का साथ दिया। यद्यपि प्रीति की रीत टेढ़ी होती है।

प्रेमावेश में बुद्धि कार्य नहीं करती है किन्तु दोनों ओर से (दोनों पक्षों से) अचल निश्चय और दृढ़ प्रतिज्ञता का प्रमाण मिलता है। उनकी प्रेम का पवित्र भाव स्थिर रहा और पवित्र बने रहे। यह सब उनकी शिष्यत्व का यश था।

रूप परिवर्तन

हाफिज प्यारी महोदय का वृतान्त सौन्दर्य की एक कथा होते हुए भी उसका अंतिम चरण जिससे उनकी जीवन धारा परिवर्तनशील हो गयी। पूज्य वारिस दाता के चमत्कार (करामात) पर निर्भर है। एक प्रेमी को उसकी प्रेमिका का रूप दिखला कर सदैव उसी रूप में उसके सामने रहना एक अद्भुत कार्य है। प्रेमिका के भौतिक सौन्दर्य से दूर सात्विक सौन्दर्य का उपासक कर दिया।

ऐसे वृतान्तों का बाहुल्य है कि पूज्य वारिस दाता ने दूसरी आकृतियों में परिवर्तित होकर लोगों का पथ प्रदर्शन किया है। जैसा कि श्रीमान तहैय्युर वारसी ने पुस्तक ऐनुल यकीन में लिखा है कि कोई दर्शनाभिलाषी पूज्य बाबा की सेवा में उपस्थित होने चला। जब मैं एक नदी संवेग बह रही थी। किनारे पर कोई नाव न थी। न बेड़ा पथिक घबरा उठा। इस निराशाजनक अवसर पर किसी के पुकारने का स्वर सुनाई पड़ा। ध्वनि लक्ष्य कर चल पड़ा। एक बालक उसको चिल्लाया और कहने लगा एक रास्ता ऐसा है जो किसी को ज्ञात नहीं है। आओ मैं उस रास्ते तुमको नदी पार करा देता हूँ। पथिक को नदी पार करा वह बालक अदृश्य हो गया। वह दर्शनार्थी जब दाता वारिस की सेवा में उपस्थित हुआ तो आपने उससे कहा वह लड़का कितना चालाक था। उस व्यक्ति ने तुरन्त कहा मान्यवर आप ही थे। आप थोड़ा सा मुस्कुराये और चुप हो गये।

काज़ी रहमत अली अकबराबादी लिखते हैं कि मान्यवर हाजी बाबा कस्बा मलावली, जिला मैनपूरी में विद्यमान थे। मैं दर्शनार्थ सेवा में उपस्थित हुआ। लौटकर जब आगरा आया तो यहाँ से आठ आदमी रात को ही दाता गुरू वारिस की कदमबोशी हेतु चल दिये। रात्रि की यात्रा थी वह लोग राह भूल गये। सारी रात जंगल में भटकते फिर रहे थे। अंततः उन लोगों ने देखा कि एक देहाती कन्धे पर मोटा लट्ठा लिये उनके सामने प्रकट हुआ और पूछा क्या तुम सब दाता वारिस से मिलने जाते हो? उन सबने कहा हाँ। फिर ग्रामीण ने उनसे कहा कि तुम लोग रास्ता भूल गये हो हमारे साथ चलो। वे लोग उसके पीछे हो लिए। एक खेत पार करते ही वह संकेत कर कहने लगा वह देखो सामने कोठी दिखायी दे रही है। उसी में हाजी बाबा ठहरे हुए हैं। वहाँ चले जाओ वह लोग वहाँ पहुँच गये। प्रातः जब पूज्य दाता

Scanned with CamScanner

की सेवा में उपस्थित हुए और चरण स्पर्श कर बैठे आपने उनसे कहा तुम लोग रात्रि में रास्ता भूल गये थे। यह सब एक दूसरे का मुंह देखने लगे। सभी को विश्वास हो गया कि मान्यवर हाजी बाबा स्वयं ही पथ प्रदर्शक थे। आकृत परिवर्तन का दूसरा रूप निम्नांकित है जिसको श्रीमान सैय्यद शरफुद्दीन महोदय पटना ब्यान करते हैं। जो उनकी आंखों देखी है। मैं सौन्दर्य उपासक हूँ। मैंने दाता गुरू वारिस को बुढ़ापे में देखा था। मैं सोचा करता था क्या अच्छा होता मैं सरकार को युवावस्था में देखा होता? एक बार बहराइच में महामना के साथ था। उस समय श्रीमान आनन्द विभोर थे और मैं पुनः अपने उसी विचार में था। वृद्धावस्था में आपके रूप की शोभा ऐसी है तो अल्पावस्था में छटा कितनी मनोरम होगी। उस समय वारिस पिया बैठे हुए थे। उन्होंने पवित्र एहराम का छोर अपने पवित्र मुख पर डाल दिया और फिर हटाया तो मैंने आपको बिना दाढ़ी मूंछ का एक पन्द्रह वर्ष अवस्था का बालक देखा। मैंने अपना माथा भूमि पर टेक दिया। मैंने जो सुन्दर रूप उस समय देखा था उसे न भूला हूँ और न कभी भूलूंगा। दाता गुरू वारिस मुस्कुराये और मुझे विदा कर दिया।

तेरे जलवे की तो क्या बात है सुभानअल्लाह, देखना यह है कि देखने वाला कैसा

पूज्य हाजी दाता वारिस ने ऐसे ही कठिन अवसरों पर अपनी मर्यादा का सत्यापन किया है जैसा कि श्रीमान अवघट शाह वारसी पत्र लेखक दरबार वारसी कहते हैं। जिस वर्ष माननीय शाह फज़ले हुसैन महोदय वारसी गद्दीधारी शाह मुनियम रह० हज की यात्रा किये थे। उसी वर्ष मौलाना रशीद अहमद गंगोही भी मक्का हज के लिये गये थे। ज्ञातव्य है कि उक्त मौलाना, मान्यवर हाजी इमदादुल्लाह महोदय महाजिर मक्की के शिष्य थे। दोनों पूज्य हाजी इमदादुल्लाह शाह के यहाँ ठहरे थे। एक बार दोनों में इस समस्या पर बात चल गयी कि धर्मगुरू यदि सत्य हैं तो अपनी सूरत और स्वभाव बदल सकता है। किन्तु मौलाना इसके प्रतिवादी थे। पूज्य हाजी इमदादुल्लाह महोदय ने इस सम्वन्ध में कुछ अपना मत नहीं दिया। केवल सुन रहे थे। जब दोपहर की नमाज़ में सभी लोग हरम शरीफ (काबा) में गये तो आश्चर्यजनक दृश्य उपस्थित हो गया। मान्यवर फज़ले हुसैन साहब कहते हैं कि लोग मेरे निकट एकत्र होने लगे। मेरा हाथ चूमने लगे। यह समाचार सर्वत्र फैल गया। कि पूज्य हाजी वारिस बाबा इस वर्ष हज में पधारे हैं। आपके शिष्य और प्रमियों ने मुझे घेर लिया। लोग पूछते थे। मान्यवर कब आये हैं? इसी आश्चर्य और अचम्भे में मकान वापस आया तो मान्यवर हाजी इमदादुल्लाह महाजिर मक्की ने कहा लीजिए आज हाजी बाबा ने यह समस्या सिद्ध कर दिया कि गुरू का अपनी

सूरत बदलना तो एक ओर रहा चेले की भी सूरत बदल सकती है। पूज्य वारिस दाता से सम्बन्धित ऐसी बहुत सी घटनायें हैं जिनसे प्रकट होता है कि बहुत सी आश्चर्य जनक बातें जो पुस्तकों में दृष्टिगोचर होती हैं आपके यजस्वी व्यक्तित्व में उनका निरीक्षण होता था। यह बात मुख्य विशेषता में थी कि जैसा होता वैसा ही आप उत्तर देते थे और जो कुछ लेखनी और भाषण द्वारा नहीं समझाया जा सकता था उनका आप अवलोकन करा देते थे।

आन्तरिक अवस्था

ओजमयी श्री वारिस दाता के उत्तम गुणों में एक महत्वपूर्ण गुण आन्तरिक अवस्था का है। जिसके द्वारा पूर्ण विश्वास हो जाता है कि सत्य दर्शक दृष्टि से कोई बात छुपी नहीं रहती थी। प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष अथवा लौकिक-अलौकिक सभी बातों के ज्ञाता थे। यह आपके उच्च पात्रत्व की विशेषता थी कि कभी आप किसी की त्रुटि और अवगुण प्रकट नहीं करते थे। यद्यपि सभी बातों को देखते हुए कोई ऐसी बात आपके मुख से नहीं निकलती जिससे किसी को ज्ञात हो सके कि श्रीमान किसी रहस्य को जानते हैं। किसी की दशा को बता देना अथवा किसी के सम्बन्ध में भविष्यवाणी कर देना अध्यात्म वालों के निकट कशफ (प्रकटन) के नाम से प्रचारित है जो अध्यात्मवादियों में आरम्भ ही से उत्पन्न हो जाता है। इससे सूफी संत सामने आने वालों की दशा बता दिया अथवा आगे आने वाली बात बतला दिया करते हैं। किन्तु जो ज्ञान चक्षु अध्यात्म से प्राप्त होती है। वह भूत-वर्तमान सबको समान देखती है। उस ज्ञान चक्षु और इस प्रकटन शक्ति में अति अन्तर है। ज्ञान नेत्र के सामने कशफ एक कण के समान है। इस पाश्चात्य ज्ञान के युग ने तत्व सम्बन्धी बातों तक का ज्ञान सरल कर दिया है। एक्स-रेज़ द्वारा गुप्त वस्तुओं का देखना भी सरल कर दिया है किन्तु ईश्वर ने ऐसे लोगों को भी उत्पन्न किया जिनके नेत्रों में एक्स-रेज़ की शक्ति पायी जाती है। किन्तु यह एक्स-रेज़ शक्ति केवल सम्मुख आयी वस्तुओं को गुप्त अवस्था देखने हेतु होती है। परन्तु ईश्वर प्रदत्त शक्ति के सामने जो अपने भक्तों और प्रेमियों को भगवान प्रदान करता है, तुच्छ है। मान्यवर वारिस दाता की आन्तरिक शक्ति असीमित थी और बात-बात में प्रकट होती थी। आपका अन्तः ज्योतिर्मयी और स्वच्छ था जिसमें दर्पण के सरीखे सामने आने वालों की छाया पड़ती रहती थी। किसी सोच विचार की आवश्यकता नहीं होती थी। उदाहरणार्थ कुछ वृतान्त अंकित है:

मौलवी नादिर हुसैन साहब वारसी नग्रामी वकील बाराबंकी लिखते हैं कि मैं

Scanned with CamScanner

मिशकात-ए-हक़्क़ानिया

(जीवनी वारिस पाक)

लेखक
मौलवी फ़ज़्ल हुसैन साहब सिद्दीक़ी वारसी

जुबैरी बुक डिपो
आरताना रोड़, देवा शरीफ, बाराबंकी (यू.पी.)

सूरत बदलना तो एक ओर रहा चेले की भी सूरत बदल सकती है। पूज्य वारिस दाता से सम्बन्धित ऐसी बहुत सी घटनायें हैं जिनसे प्रकट होता है कि बहुत सी आश्चर्य जनक बातें जो पुस्तकों में दृष्टिगोचर होती हैं आपके यशस्वी व्यक्तित्व में उनका प्रदर्शन होता था। यह बात मुख्य विशेषता में थी कि जैसा होता वैसा ही आप उत्तर देते थे और जो कुछ लेखनी और भाषण द्वारा नहीं समझाया जा सकता था उनका स्वयं अवलोकन करा देते थे।

आन्तरिक अवस्था

ओजस्वी श्री वारिस दाता के उत्तम गुणों में एक महत्वपूर्ण गुण आन्तरिक अवस्था का है। जिसके द्वारा पूर्ण विश्वास हो जाता है कि सत्य दर्शक दृष्टि से कोई बात छुपी नहीं रहती थी। प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष अथवा लौकिक-अलौकिक सभी बातों के ज्ञाता थे। यह आपके उच्च पात्रत्व की विशेषता थी कि कभी आप किसी को त्रुटि और अवगुण प्रकट नहीं करते थे। यद्यपि सभी बातों को देखते हुए कोई ऐसी बात आपके मुख से नहीं निकलती जिससे किसी को ज्ञात हो सके कि श्रीमान किसी रहस्य को जानते हैं। किसी की दशा को बता देना अथवा किसी के सम्बन्ध में भविष्यवाणी कर देना अध्यात्म वालों के निकट कशफ (प्रकटन) के नाम से स्वीकृत है जो अध्यात्मवादियों में आरम्भ ही से उत्पन्न हो जाता है। इससे सूफी संत सामने आने वालों की दशा बता दिया अथवा आगे आने वाली बात बतला दिया करते हैं। किन्तु जो ज्ञान चक्षु अध्यात्म से प्राप्त होती है। वह भूत-वर्तमान सबको समान देखती है। उस ज्ञान चक्षु और इस प्रकटन शक्ति में अति अन्तर है। ज्ञान नेत्र के सामने कशफ एक कण के समान है। इस पाश्चात्य ज्ञान के युग ने तत्व सम्बन्धी कुछ तक का ज्ञान सरल कर दिया है। एक्स-रेज द्वारा गुप्त वस्तुओं का देखना भी सरल कर दिया है किन्तु ईश्वर ने ऐसे लोगों को भी उत्पन्न किया जिनके नेत्रों में एक्स-रेज की शक्ति पायी जाती है। किन्तु यह एक्स-रेज शक्ति केवल सम्मुख आयी वस्तुओं को गुप्त अवस्था देखने हेतु होती है। परन्तु ईश्वर प्रदत्त शक्ति के सामने जो अपने भक्तों और प्रेमियों को भगवान प्रदान करता है, तुच्छ है। मान्यवर वारिस दाता की आन्तरिक शक्ति असीमित थी और बात-बात में प्रकट होती थी। आपका अन्तः ज्योतिर्मयी और स्वच्छ था जिसमें दर्पण के सरीखे सामने आने वालों की छाया पड़ती रहती थी। किसी सोच विचार की आवश्यकता नहीं होती थी। उदाहरणार्थ कुछ वृतान्त अंकित है:

मौलवी नादिर हुसैन साहब वारसी नग्रामी वकील बाराबंकी लिखते हैं कि मैं

लखनऊ में अरबी पढ़ रहा था। उसी समय मुझको नौकरी करने की इच्छा हुई पर कहीं कार्य नहीं प्राप्त हुआ। मैं कानून याद करने लगा। उन्हीं दिनों सरकार वारिस पाक लखनऊ अमीनाबाद की सराय में शेख तफज्जुल हुसैन के निवास स्थान पर विद्यमान थे। जब मैं उनकी सेवा में उपस्थित हुआ तो एक महाशय सफेद कपड़े पहने वहाँ बैठे हुए थे। मान्यवर ने मुझे देखकर कहा 'एक आदमी आगरा में व्यापार जिज्ञासु था, प्रथम पाँच रूपया का नौकर हुआ फिर तो उसकी आय सैकड़ों रूपये की हो गई।' मैं समझा किसी व्यक्ति की चर्चा हो रही है। किन्तु उस बैठे हुए सज्जन ने कहा कि तुम्हारे लिये आदेश है, सलाम करो। मैंने कदम बोसी किया और चला आया। आठ दस दिन में मुझे पाँच रूपये की नौकरी मिल गयी। इस शर्त पर हुई कि दो तीन मास में यदि कागजात ठीक कर लोगे तो मुख्तार आम बना दिये जाओगे। मासिक वेतन में उचित वृद्धि भी कर दी जायेगी। उस समय मैं अपना कार्य भी करता था और वकालत की परीक्षा की तैयारी भी करता था। दूसरी बार जब मैं मान्यवर की सेवा में उपस्थित हुआ तो आपने मुझसे पूछा 'वकालत कहाँ करोगे? लखनऊ में या बाराबंकी में।' मैंने कहा अभी तो कानून याद करता हूँ। उसी वर्ष परीक्षा में पास होकर लखनऊ में रहा फिर सरकार दाता वारिस में उपस्थित होकर प्रार्थना किया कि बाराबंकी जाने का विचार है। आपने कहा बेहतर है 'वहाँ जल्दी-जल्दी भेंट हुआ करेगी।' फिर मैं एक बार वारिस बाबा नग्राम पधारे और मेरे मकान पर ठहरे। मुझसे कहा 'नादिर हुसैन, यदि तुम न रहो तो नुरूल हसन सब इन्तेजाम कर ले।' यह सुनकर मैंने सोचा कि हो सकता है अब मेरी मृत्यु निकट है। इस विचार के उत्पन्न होते ही आपने तत्काल इस प्रकार कहा 'नादिर हुसैन जैसे तुम नवाबगंज में हो और तुमको मुकदमों के कारण अवसर न मिले कि नग्राम आ सको और हम नग्राम आयें तो नुरूल हसन सब इन्तेजाम कर ले।' मैंने अर्ज किया कि जी हाँ। वास्तव में प्रकाश पुन्ज वारिस पिया के कथन का अर्थ यह था कि जिस भाँति नादिर हुसैन मान्यवर के यश से इस योग्य हुए उसी भाँति नुरूल हसन भी होंगे। इस कथन का फल यह हुआ कि नुरूल हसन महोदय भी इन्टरेन्स पास करके श्रीमान की सेवा में उपस्थित हुए। आपने इनको देखकर कहा 'फाटक तक पहुँच गये।' इन्होंने कहा श्रीमान हाँ। बाहर आकर पूछने पर पता चला कि इन्टरेन्स का अर्थ फाटक ही है। और इस प्रकार एग्रीकल्चर पास कर नायब तहसीलदारी में आ गये। ऐसी सैकड़ों घटनायें हैं कि दाता वारिस लोगों की इच्छाओं को बिना कहे जान लेते थे और सहायक भी होते थे।

मौलवी शेख मुशीर हसन महोदय किदवई बैरिस्टर एटला, निवासी इंग्लिस्तान हाल गदिया, जिला बाराबंकी लिखते हैं। एक बार की बात है रमज़ान शरीफ का महीना था। वारिस दाता गदिया में विराजमान थे। रात्रि की बेला थी। मान्यवर पुनीत दाता वारिस की सेवा में उपस्थित होने हेतु घर से निकला। मस्जिद से तरावीह की तिलावत ने मुझे आकर्षित कर लिया। देर तक खड़ा हुआ सुनता रहा फिर, जाने की बात स्मरण हुई। यह सोचकर कि विलम्ब के कारण ऐसा न हो कि दर्शन न प्राप्त हो सके। अतः तीव्र गति से चलकर सरकार में पहुँचा। आप देखते ही उठ बैठे और कहा 'आओ मुशीर! तुमको कुरआन सुना दूँ।' मैं चकित हो उठा। आपने भिन्न-भिन्न ढंग से कुरआन पढ़कर सुनाया। मुशीर हुसैन एक यह भी घटना अंकित करते हैं कि आगरा घूमने गया था तो मैं एक छोटा सन्दूकचा लाया। उस समय पूज्य दाता वारिस गदिया में विद्यमान थे। मैंने चाहा सन्दूकचा मान्यवर को भेंट कर दूँ फिर विचार हुआ कि लाभ क्या होगा? अन्ततः सरकार किसी को दे ही देंगे। अन्त में मैंने सन्दूकचा सरकार की सेवा में भेंट कर दिया। आप बहुत प्रसन्न हुए और कहा 'मुशीर अहमद, इसे तुम रखो तुम्हारी खुशी हो गयी।' हम ने ले लिया। विदित है कि यह आपकी आन्तरिक शक्ति की प्रभावशाली दशा थी जिसके कारण लोगों की हार्दिक कामनायें प्रकट हो जाती थीं।

मौलाना सैय्यद अब्दुल गनी साहब वारसी बिहारी लिखते हैं कि बाराबंकी में कार्यरत हो गया। पूज्य दाता वारिस का कथन सत्य हो गया। श्री सैय्यद रहीमुद्दीन महोदय सम्पादक 'पंच' बाकीपुर का वृतान्त है कि शिष्य होने की अभिलाषा में अपने घर से ९ मील बेलछी तक वारिस पिया की पालकी के पीछे दौड़ते हुए आये। किसी ने उनके घर वालों से कह दिया कि मौलवी साहब फकीर होने को गये हैं। उनके घर में कोहराम मच गया। लोगों में हाहाकार मच गयी। उनके ज्येष्ठ भ्राता ने उनके मित्रों को पत्र लिख डाला कि उनको शिष्य होने से रोकें। मुझसे भी मौखिक रूप से कहा कि रहीमुद्दीन को शिष्य होने से रोक दो। हाजी साहब का तरीका शरीयत के विरूद्ध है। जिस दिन उनकी सूचना मेरे पास सन्ध्या को पहुँची है उसी के प्रातः वारिस पिया ने रहीमुद्दीन महोदय को तलब किया। मैं भी उस सभा में उपस्थित था। मसनवी का पद पढ़कर सुनाया जिसका अर्थ होता था कि कौवा कांव-कांव करता है। आपने मौलवी रहीमुद्दीन को सम्बोधित कर कहा 'सुना रहीमुद्दीन, कौवे की लत कांव-कांव करने की है, उसकी ओर ध्यान नहीं देना चाहिए।' जब मान्यवर प्रकाश पुन्ज दाता वारिस बेलछी से विदा लेकर बिहार

शरीफ पधारे तभी मौलवी रहीम के दोस्तों में से एक व्यक्ति महामना की सेवा में उपस्थित हुए। आपने उन्हें देखकर मसनवी का पद पढ़ा:

चूं कलम दर दस्त गदारे बुवद, लाजुरम मन्सूर बर दारे बुवद।

जब कलम हो हाथ में गदार के, क्यों न हो मन्सूर ऊपर दार के॥

यह आदेश मौलवी रहीमुद्दीन के भ्राता के पत्रों के सम्बन्ध में है। सैय्यद अब्दुल गनी शाह लिखते हैं कि मैंने ऐसा समझा इसके पश्चात् मौलवी रहीमुद्दीन साहब ने बहुत प्रयत्न किया, प्रार्थना पत्र भी दिया, अन्य लोगों से भी कहा किन्तु आपने उन्हें शिष्य नहीं किया।

हाजी मुहम्मद शाकिर खाँ वारसी राय बरेली लिखते हैं कि मेरे पिता के मौसेरे भाई सरकार से शिष्य होने हेतु वारिस दाता की सेवा में उपस्थित हुए। रास्ते में उनके मन में आया कि आप शिष्य होते समय क्यों हाथ पकड़ा? पञ्जतन पाक को कहलवाते हैं। जिस समय यह शिष्य हुए पूज्य दाता वारिस ने उनसे उक्त वाक्य नहीं कहलवाया जिसका उनको आजीवन पश्चाताप रहा। पूज्य वारिस दाता की आन्तरिक शक्ति की दशा यह थी कि आवश्यकताओं को कहने की जरूरत नहीं होती थी। जो भी सामने जाता उसकी आवश्यकता का बोध देखते ही आपको हो जाता था। मुंशी अब्दुल गनी खाँ वारसी रईसपुरवा, गनी खान रायबरेली लिखते हैं कि एक बार वारिस दाता की सेवा में इसलिए उपस्थित हुए कि मान्यवर वारिस पाक को अपने घर ले जाऊँ। घर से चलते समय स्त्रियों ने अनेकों वस्तुएं लाने का आग्रह किया कि लखनऊ से आप लायेंगे। जब मैं देवा शरीफ पहुँचा तो ज्ञात हुआ कि सरकार वारिस पाक ग्राम चौरासी, जिला लखनऊ में विद्यमान हैं। अतः वहाँ पहुँचकर अपना उद्देश्य प्रकट किया। आपने बहुत निकट ही चलने को कहा। समय के अभाव में लखनऊ जाने का विचार त्याग कर शीघ्र घर जाने का विचार कर विदा होने हेतु सरकार वारिस पाक की सेवा में पहुँचा। आपने कहा 'नूर मुहम्मद शाह! वह कपड़े और रामपुर का सैखतार गनी खाँ को दे दो।' इसी भाँति प्रत्येक महिला की बात आपने कहा और यह भी आदेश दिया कि अमुक महिला को अमुक वस्तु दे देना। इस प्रकार के प्रत्येक व्यक्ति की माँग नाम-बनाम दाता वारिस ने अपनी ओर से मंगवा कर दिया। मांगों की सम्पूर्ण वस्तुएं पूज्य दाता वारिस से पाकर पूर्ण सन्तोष सहित घर आया। यह विशेष आन्तरिक अवस्था है। इस अवस्था और कशफ (प्रकटन) की अवस्था में कोई सम्बन्ध नहीं है। कशफ की दशा में त्रुटि और सत्यता का सन्देह रहता है। जैसा की सरकार वारिस पाक की एक घटना से प्रकट

का बोध होता है।

मौलवी हकीम महमूद अली महोदय फतेहपुरी अंकित करते हैं कि मेरे मामू साहब मेरी माता जी से सम्बन्धित एक घटना ब्यान करते हैं जो इस प्रकार है कि वह एक बार ज्वर से पीड़ित हुईं। उनका ज्वर दीर्घ कालिक हो गया और उनकी दशा दिनों दिन बिगड़ती गई। एक मजजूब दरवेश झाड़ू शाह जो फतेहपुर में रहते थे। उनकी सेवा में मेरी माता जी ले जाई गयीं। उन्होंने कहा सैय्यद बाबा जिस भाई के लिये आया है वह अभी जीवित रहेंगी। क्यों परेशान है? जा भाई अच्छी हो जायेंगी। संयोग से पूज्य दाता वारिस भी उसी दिन फतेहपुर पधारे। मेरे मामू बहुत प्रसन्न हुए उनकी अभिलाषा थी कि वारिस दाता मेरी बहन के सम्बंध में कुछ कहते जिससे मेरे मनको विश्वास हो जाता। मान्यवर ने हकीम साहब को सम्बोधित कर कहा रहमत अली-रहमत अली, सुना-सुना वली नबी सब मजबूर है। वह बेन्याज (निर्लोभी) हैं उसको कोई फिक्र नहीं है। मेरे मामू को विश्वास हो गया कि अब मेरी बहन न जायेगी। इसके दूसरे दिन मेरी माताजी की मृत्यु हो गयी। आपके पुनीत मुख से जो उद्धृत होता ईश्वर की वाणी होती थी। वही होता था जो आप कहते थे।

मिर्जा मुहम्मद नाजिम अली फजली लखनऊ लिखते हैं कि मौलाना हाफिज सेराजुल यकीन साहब जो मान्यवर शाह नेजायतुल्लाह सत्य प्रेमी महोदय के नाती थे। अपने पुत्र की स्थानापन्न समारोह अपने जीवन में ही किया। उसी समय उर्स शरीफ भी था। जिसमें पूज्य बाबा भी पधारे थे। पूज्य गुरू दाता वारिस ने सेराजुल यकीन साहब से मिलते ही कहा 'बुढ़उ! यह क्या पुवाल के पाँव खड़ा करत हउव।' उस सज्जादी से कुछ सुलभ नहीं हुआ और पिता के सामने ही पुत्र की मृत्यु हो गई। अतः विदित होता है कि आप सब कुछ जानते थे।

मिर्जा इब्राहीम बेग शैदा वारसी लिखते हैं कि एक बार कार्तिक का मेला था। जब दर्शनार्थियों की भीड़ हुई थी तो एक सेवक ने कपाट बन्द कर दिया। आपने जलाल (क्रोध) में आकर आदेश दिया 'दरवाजा खोल दो! हम एहसान फरामोश नहीं हैं।' पुनः भीड़ हुई थी किन्तु आपका जलाल अभी घटा नहीं था। बार-बार द्वार की ओर दृष्टि डालते थे जैसे किसी की प्रतीक्षा कर रहे हों। उसी समय एक अरबी आया जिसकी आयु लगभग तीस-पैंतीस वर्ष थी। फटे पुराने वस्त्र धारण किये था। मान्यवर उसे देखकर खड़े हो गये और भेंट किया। पुनः बड़ी उदारता से आपने प्रश्न किया 'अबू सईद तुम्हारे कौन थे?' उसने उत्तर दिया कि मेरे दादा थे। उनकी और मेरी दादी की मृत्यु हो गई। आपने आगे पूछा 'हसन तुम्हारे बाप जीवित हैं।' उसने

कहा कि उनकी मृत्यु हो गयी। उन्होंने मरते समय मुझसे कहा था प्रकाश पुत्र दाता वारिस की गुलामी में सम्मिलित हो जाना। अतः अरब से आने का यही कारण है। दाता ने उसे शिष्य कर लिया और तहबन्द प्रदान कर दिया। मिठाई इत्यादि देकर कहा 'जब हम मदीना गये थे तो इनके दादा ने हमारी बड़ी सेवा की थी।'

मौलवी नादिर हुसैन साहब वारसी लिखते हैं कि एक बार मान्यवर वारिस दाता जब मेरे घर नग्राम पधारे। बस्ती के निवासियों की बड़ी संख्या आपकी अगुवानी हेतु दो मील तक गई थी। मैं कहारों के साथ पालकी उठाये आ रहा था वह दिन जुमा का था। सरकार ने मेरे चाचा जान से पूछा 'क्या तुम्हारे घर के निकट मस्जिद है?' मेरे चाचा ने बताया कि नादिर हुसैन के घर के करीब मस्जिद है। फिर आपने पूछा 'छाया है?' बताया गया छाया है। पुनः यही पूछा 'छाया है?' तीसरी बार पूछने पर काँधा बदलकर मैं सामने आया और कहा मस्जिद अच्छी और छाया वाली है। आप यह सुनकर चुप हो गये। मेरे मन में शंका उत्पन्न हुई कि मान्यवर के पूछने का तात्पर्य क्या है? और बार-बार पूछना अवश्य ही कुछ अर्थ रखता है। जब सरकार वारिस पाक मेरे घर पधारे तो काजी अहमद हुसैन साहब से जो मस्जिद के इमाम थे उनको देखकर कहा 'काजी साहब तो जले भूने हैं।' पुनः यह भी कहा कि छोटा ख़ुतबा और छोटी सूरतें (कुरआन के मंत्र) पढ़ना। जब मान्यवर मस्जिद को आ रहे थे तो मैंने देखा कि आगन्तुक महिलाएँ गोदी में बच्चे लिए वृक्षों की छाँव में झुंड की झुंड खड़ी हैं। ग्रीष्मकालीन धूप तीव्र हो चुकी है। उस समय मेरे मन में यह विचार आया कि यही कारण था मान्यवर के बार-बार छाँव की बात करने का। जब पूज्य गुरू मसजिद आये तो चारों ओर से लोग कदम बोसी हेतु घेर लिए। भीड़ इतनी हुई कि मस्जिद में जाना कठिन हो गया। हम लोगों ने पूज्य दाता को घेरे में कर रहे थे कि भीड़ से आपको बचाये रहें किन्तु जब हमने आगे की ओर देखा तो आपको अगली पंक्ति में पाया हम लोग सन्न हो गये। जहाँ आप प्रथम पंक्ति में थे वहाँ तक मैं न पहुँच सका। मेरे मन में यह विचार आया कि यदि मैं वारिस पाक के साथ नमाज़ पढ़ता तो मेरा भाग्य सफल हो जाता। इस विचार के आते ही पूज्य दाता ने मेरी ओर दया की दृष्टि फेरी और एक अपने किनारे की ओर देखा। मेरी नज़र ने सरकार के किनारे खाली स्थान देखा मैं वहाँ पहुँचकर मान्यवर के निकट नमाज़ पूरी किया हमारा मनोरथ सफल हो गया।

मौलाना मुफ्ती अबूज़र सम्भली लिखते हैं कि एक बार कुछ आलिमों का यह आया कि ईदुल-अज़हा की नमाज़ २९ तारीख के चन्द्र दर्शन के अनुसार होगी।

किन्तु माननीय बाबा वारिस ने कहा 'नहीं! हम तो तीस के चाँद के अनुसार ही पढ़ेंगे। मैंने हकीम एकामतुल्लाह महोदय से कहा कि हुज़ूर वारिस पाक को समझाओ कि फतवे के सम्बन्ध में हठ करना ठीक नहीं है। हकीम महोदय ने उत्तर दिया कि मैं कुछ नहीं जानता जो कुछ उनका मत है वही ठीक है। मैंने दुखी मन से यह भी कहा कि यदि वह २७ ज़िलहिज्जा को ही ईद की नमाज़ पढ़ें तो मैं भी पढ़ूंगा किन्तु कुछ समय पूर्व ही धार्मिक पंडित महानुभावों के पत्र ने ३० के चाँद की पुष्टि किया और यह भी लिखा गया था कि सूचना असत्य थी। भोपाल से किसी ने लिख दिया था और मैंने मस्ती में झूमकर हाफिज शीराजी रह० का यह पद पढ़ा :

ब मैय सुज्जादा रंगी कुन गरत पीरे मुगाँ गोयद।
कि सालिक बे खबर-न बुवद जे राहे रस्मो मन्जिलहा॥

अर्थ -यदि गुरू पीर आदेश दे कि नमाज़ पढ़ने का बिछौना शराब में डूबा लो तो भी ठीक है क्योंकि उसका ज्ञान सत्य और अपार है।

श्रीमान हकीम मुहम्मद वसी अली अलवी कादरी कलन्दरी काकोरी बयान करते हैं कि मैं एक दिन पूज्य हाजी बाबा की सेवा में उपस्थित हुआ। आपने प्रेम से कहा 'शाह तुराब अली कलन्दरिया के खानदान में हो, अच्छा, अच्छा बिरादरी का वास्ता है।' और एक रूमाल प्रदान किया। हकीम साहब कहते हैं कि जब मेरे आदरणीय पिता मुहम्मद हबीब अली आलवी हुज़ूर वारिस पाक से मिले तो आपने मोआनका (भेंट करना या मिलना) और एक तहबन्द देकर कहा 'शाह काज़िम साहब कलन्दर रही० के खानदान से हो एक ही व्यवहार (मामिला) है।'

पूज्य दाता वारिस गुरू के साधारण गुणों में यह बात थी कि जो जिस विचार से आया उसे उसका फल मिला। हमारे तुम्हारे की बात न थी। आपकी दानशीलता सबके लिए समान थी। हज़ारों आदमी प्रतिदिन आपकी सेवा में उपस्थित होते और उन लोगों के बिना कहे आप उनके मन को शाँति प्रदान करते थे। प्रत्येक आने वाला सन्तुष्ट होकर वापस होता था। आपके आत्म-ज्ञान और आपकी आत्म-शक्ति को मुसलमान हिन्दू सभी मानते थे। जैसा कि चौबे विनायक राव महोदय समथर जो जनपद इटावा के सम्मानित लोगों में से हैं। अपनी घटना अति प्रेम और श्रद्धा सहित लेखक मूल पुस्तक को लिखकर भेजते हैं। चौबे जी की जवानी का समय मदिरा पान और व्यभिचार में बीता है जिसको आज वह स्वयं आवारगी का समय कहते हैं।

चौबे विनायक राव का ब्यान है कि मैं दाता वारिस के गुणों का बखान अधिक सुनता रहता था। समथर के लाल मुहम्मद माननीय वारिस पिया के शिष्य थे। चूंकि

अध्यात्म की ओर मेरी कुछ भी रूचि नहीं थी इसलिए कभी मान्यवर की सेवा में उपस्थिति का ध्यान नहीं हुआ। मेरे परिवार के लोग इस प्रकार रोग ग्रस्त हुए कि मेरा दवाओं का व्यय खाता वार्षिक छब्बीस हज़ार तक पहुँच चुका था। मेरी रियासत पर भी ऋण का भार बढ़ने लगा था। इन विपदाओं के समाप्त होने का रूप नहीं दिखाई देता था। इसी दुःख व विपदा की दशा में लाल मुहम्मद की बातों पर मेरा ध्यान गया। एक दिन मैंने सुना कि मान्यवर इटावा में पधारे हैं। अतः मैं रेलवे स्टेशन गया। उस समय भीड़ के मारे मैं मिल न सका। सन्धया समय में आपके विश्राम स्थल पर उपस्थित हुआ। मैं रास्ते में सोच रहा था कि बाबा मुसलमान हैं और मैं हिन्दू हूँ। यदि मेरा निरादर हुआ तो मेरे लिए लज्जा की बात होगी। जैसे ही मैं पहुँचा और नमस्कार किया। किसी ने कहा श्रीमान यह पण्डित जी हैं। आप उठकर बैठ गये। उस समय मैं रामायण अधिक पढ़ता था। पूज्य दाता ने मुझे पदमावत के कुछ पद सुनाया। मैं आनन्द विभोर हो गया। उस समय की अपनी दशा का वर्णन अकथनीय है।

उस समय भेंट करने का मेरा उद्देश्य था कि मैं जिसका शिष्य हूँ बस उसी का हो जाऊं। उसके अतिरिक्त मुझे कुछ दिखाई न पड़े। दूसरी बात यह थी कि मेरी हैरानी और इस प्रकार का व्यय भार कब तक चलेगा तीसरी यह कि मेरे परिवार में रोग का प्रकोप कब तक रहेगा। किन्तु मैं कुछ कह न सका। पदमावत के पद सुनने के पश्चात आपने मुझसे कहा 'पंडित जी! हमारे यहाँ भी आना।' मैंने पूछा, श्रीमान कब आऊं? आदेश हुआ 'एक मास बाद।' ठीक एक मास पश्चात् देवा शरीफ में हाजिर हुआ। जब बाराबंकी स्टेशन पर पहुँचा तो किसी प्रकार की सवारी वहाँ मौजूद नहीं थी। मैं अपने मन में विचारने लगा मैं बुलाया गया हूँ। शायद सरकार को पैदल ही चलाना मंजूर है। इसी विचार में था कि एक व्यक्ति ने आकर कहा आप कहाँ जायेंगे? मैंने कहा देवा शरीफ उसने कहा आप चुपचाप मेरे साथ चले आवें। उसके पीछे चलकर वृक्षों की ओट में एक तांगा तक पहुँचा और सवार होकर आराम से देवा शरीफ पहुँचा। वहाँ ज्ञात हुआ कि लंगरखाना से भोजन मिलता है हमने सोचा कि गरीबों हेतु होगा। अतः बाजार से भोजन मंगवा कर खा लिया। जब मैं वारिस दाता से मिला तो वह बड़े प्रेम से मिले और मुझे गले लगा लिया और कहने लगे हम तुमसे बहुत खुश हुए। उस मकान के कोठे पर निवास करो।' मैं जाकर अपने कमरे में आराम करने लगा। रात्रि में मुझे दस्त आने लगा और अपच हो गया। इसी दशा में मुझे ख्याल हुआ कि हो सकता है कि लंगर से जिन्स न लेने

की सजा है। अतः मैंने सैय्यद मारूफ शाह वारसी से इसकी चर्चा किया। उन्होंने कहा आपका विचार सत्य है। इसी वजह से यह हुआ है। अब आप अनुभव कीजिए और लंगर से जिन्स मंगाकर भोजन तैयार कर खाईये। दूसरे समय लंगर से जिन्स लाकर एक आदमी ने भोजन तैयार कर मुझे खिलाया पुनः मेरी बदहजमी ठीक हो गई और दस्त बन्द हो गया। दो दिनों तक लगातार मैं दोनों समय पूज्य दाता की सेवा में उपस्थित हुआ करता था। अधिक भीड़ के कारण मैं आपनी बात नहीं कह सका। तीसरे दिन मैं विदा होने हेतु पहुँचा तो आपने आदेशित किया 'पंडित जी जाना चाहते हो' मैंने कहा कि जब आदेश हो। आपने पुनः कहा 'ढोंग में कुछ नहीं रखा है। अच्छे नसीब (भाग्य) होते हैं तो आपसे आप हो जाता है और पंडित जी वर्ष दो वर्ष की तो कोई बात नहीं है।' यह कहकर आपने सेवक नूर मुहम्मद शाह को आदेश दिया 'पंडित जी को फल भी दो और मेवा भी।' अतः दोनों प्रकार से फल मुझे प्रदान हुआ। चरणस्पर्श कर विदा हुआ। उस समय मेरा मन अति शान्ति और सुख का अनुभव कर रहा था। मुझे ऐसा लग रहा था कि मेरे सभी कार्य हो गये हैं। आपके कथनानुसार मात्र दो वर्षों में मेरा कष्ट दूर हो गया और मुझे एक गुरू महाराज का दर्शन हुआ और मैं उनका शिष्य हो गया। पूज्यदाता वारिस का एक चित्र मुझे प्राप्त हुआ जो आज भी मेरे मन्दिर में मौजूद है। ऐसी घटनायें आपकी दिनचर्या में सम्मिलित थी और आपके दानशील दरबार से कोई खाली हाथ नहीं लौटता था।

फैजू शाह साहब वारसी सेवक वारसी दरबार नकल करते हैं। मैं एक बार नाशपाती लेने के लिये नेपाल गया। लौटते समय एक थारू की दुकान पर कुछ जिन्स लेने गया उसने मुझसे पूछा कि कहाँ रहते हो? मैंने उसको बताया लखनऊ के अतराफ में। वह अतराफ शब्द को समझ न सका और पुनः पूछा अतराफ क्या? मैंने उससे कहा भाई सामान दे दो किन्तु वह नहीं मानता था। उसने अतराफ (जवार, ईलाका) को गाली समझ लिया और झगड़ने लगा। मैंने भी उसका प्रति उत्तर देने में कोई कोर कसर उठा नहीं रखा। लोगों ने कहा कि चुप हो जाओ यह थारू बड़ा जादूगर है, नाश कर देगा किन्तु मैं भी बड़े सरकार का सेवक था मैंने एक की चार सुनाया।

जब मान्यवर की सेवा में उपस्थित हुआ तो आपने मुझे देखते ही कहा 'तुम को सैर करने को भेजा था कि लड़ने को।' इस घटना से विदित है कि आप अप्रत्यक्ष के भाँति ही देखते थे।

पूज्य दाता वारिस पाक के कुछ ऐसे वृतान्त भी हैं जिससे ज्ञात होता है कि

आप अपने अनदेखे प्रेमियों के यहाँ बिना किसी सूचना के स्वयं पहुँच गये। जैसा कि याकूब खाँ साकिन रनजीतपुरा का कथन है। मान्यवर वारिसदाता जब बनारस में विराजमान थे तो मैं और अन्य दर्शनार्थी, सेवक इत्यादि भी उपस्थित थे। पूज्यमान दाता घूमने हेतु जा रहे थे। एक गली में एक बहुत ऊँचा मकान दिखाई दिया। आप सबको बाहर रूकने का आदेश देकर स्वयं घर में प्रवेश किया। वह घर एक डिप्टी कलक्टर महोदय का था। संयोग से उस समय वह हिन्दू धर्मावलम्बी डिप्टी कलक्टर महोदय अवकाश पर घर आये। हम लोगों को द्वार पर खड़े देखकर पूछने लगे। तुम कौन हो और क्यों खड़े हो? हमने उनको बताया कि पूज्य हाजी बाबा अन्दर पधारे हैं और आपका श्रेष्ट नाम भी बताया। वह सुनते ही क्रोधित हो उठे और आवेश में अन्दर गये। थोड़ी देर बाद डिप्टी महोदय बाहर आये और हम लोगों को आदर पूर्वक बैठाया। उस समय उनकी आखें अश्रुमयी थीं। हम लोगों के सामने ही उनका सम्पूर्ण परिवार आपका अनुचर हो गया। उपस्थित सेवकगण ने अधिकांशतः देखा है कि जब कोई शिष्य किसी स्थान पर दुखी हो आपका स्मरण करता तो आप भी व्याकुल हो जाते थे। किन्तु मुख से कुछ कहते नहीं थे। बस, उनको देखने मात्र से यह ज्ञात होता था कि कोई न कोई शिष्य कष्ट में अवश्य है।

मुंशी अब्दुल गनी महोदय वारसी रईस पुरवा, गनी खान रायबरेली लिखते हैं कि सदैव उपस्थित रहने वाले सेवक अब्दुर्रहीम शाह और नूर मोहम्मद शाह ने मुझ से ब्यान किया है कि पूज्य दाता वारिस एक बार लखनऊ अमीनाबाद की सराय में ठहरे हुए थे। अर्द्ध रात्रि के समय जब आप बिछौना पर विश्राम अवस्था में थे। अचानक व्याकुलता में उठकर बैठ गये। प्रातः तक यही दशा रही। प्रातः आपने कहा कि हम जेल (बन्दी गृह) की सैर करेंगे। हम लोग साथ हो गये। जब आपके आगमन की खबर जेल कर्मचारियों को हुई तो सभी दर्शनार्थ बाहर आ गये। आप सीधे उस कोठरी पर पहुँचे जहाँ फाँसी के दो मुजरिम कैद थे। जिनमें एक हिन्दू और दूसरा मुसलमान था। आपका ध्यान हिन्दू कैदी की ओर था। उस हिन्दू कैदी ने जैसा कि बताया था। उसने फैजाबाद में सरकार वारिस का दर्शन किया था। एक जनसमूह को चरण चूमते देखा था। उसने मन में आपके प्रति आदर-सम्मान का बाहुल्य था। जब वह जेल में बन्दी था और जब उसे अपनी मुक्ति के प्रति निराशा उत्पन्न हुई तो लाचार हो आपका ध्यान किया और पूर्णरूपेण आप ही पर आश्रित हो उठा। उसकी दृढ़ और अचल स्मरण ने मान्यवर वारिस दाता को व्याकुल कर दिया और प्रातः जेल में आ खड़े हुए। जब उसने मान्यवर वारिस दाता को अपने सम्मुख

खड़ा देखा तो अपने धर्माचरण के अनुसार दंडवत प्रणाम किया। आपका यशगान करने लगा। सैय्यद मारूफ शाह कहते हैं उस समय भी मैं वहाँ श्रीमान के साथ खड़ा था। पूज्यदाता वारिस ने कहा 'मारूफ शाह खुदा को अख्तियार है। चाहे इस लोक में दण्डित करे अथवा परलोक में, वह सर्व शक्तिमान है चाहे क्षमा कर दे।' मैंने स्वीकार कर कहा कि उचित है। इतना कह दाता वारिस लौट गये। उसी दिन उसके मुकदमे की अंतिम पेशी थी। मुकदमा खुलते ही वह छूट गया और छूटते ही आपकी यशमान सेवा में उपस्थित हुआ। वह आनन्द विभोर था। बार-बार चरण चूमता और कहता था कि प्रभु! तुम मेरे लिये परमेश्वर स्वरूप हो। जब तक वह ब्राह्मण जीवित रहे प्रत्येक वर्ष देवा शरीफ आते रहे। मान्यवर दाता वारिस अपने शिष्यों पर माता-पिता से भी अधिक स्नेह और ममता रखते थे। जब उनका कोई शिष्य अथवा प्रेमी कष्ट और पीड़ा में होता था तो आप विह्वल हो जाते थे। किन्तु ईश्वर इच्छा के भक्त और पुजारी थे। अतः आप अपने मुख से कष्ट सूचक शब्द नहीं निकलते थे। किन्तु आपका उदार भाव और आतुर दशा देखकर आपके प्रेम और सहानुभूति का आभास प्रत्येक देखने वालों को अवश्य ही हो जाता था। धन्य है वह प्रकाशमयी हृदय जो संसार के सम्पूर्ण बखेड़ों से अलग हो, जिसको संसार की कोई फिक्र, किसी चिन्ता से लगाव न हो। वह अपने नाम लेने वालों के लिये बेचैन और व्याकुल रहे।

पूज्य गुरू दाता वारिस की दानशीलता अद्वितीय थी। आपने शिष्यों और नाम लेने वालों के प्रत्येक दुःख और सुख में सम्मिलित होते थे। और उनका भार अपने सिर लेने को तैयार रहते थे। चाहे उनके शिष्य उनका नाम लें अथवा न लें। आपको भले ही भूल जायें किन्तु आप उन्हें कभी नहीं भूले। साथ ही समयानुसार उनके सहायक भी रहे। यद्यपि आप दृष्टि से ओझल हों फिर भी अपनी सहानुभूति स्वरूप उसके समक्ष होते हैं। आपकी अन्ततः शक्ति शिष्य की विपदा में साथ होती थी। प्रत्येक दशा में दाता वारिस अपने शिष्यों की दशा से अवगत रहते थे जैसा कि सैय्यद शरफुद्दीन महोदय से कथित है। पूज्य दाता वारिस जब बस्ती पधारे तो मैं उनके साथ था। मुझे आदेश हुआ कि तुम वापस जाओ। मैंने प्रार्थना किया स्वामी! अभी तो रेल के आने में दो तीन घण्टे की देर है। पुनः आदेश दिया 'देखो! ऐसा न हो कि रेलगाड़ी छूट जाये।' मान्यवर की चेतावनी से मैं स्टेशन पहुँचा। रेल गाड़ी बहुत लेट आई। हकीम याकूब बेग एक डिब्बे में सवार हो गये। हकीम महोदय ने मुझसे कहा कि यहाँ बड़ा अत्याचार यह होता है कि कुछ छात्र परीक्षा देने हेतु जा रहे

थे जो शीघ्रता के कारण प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठ गये थे। वह बेचारे पकड़ लिये गये हैं। यही चर्चा हो रही थी कि एक महोदय प्लेट फार्म पर नंगे पाँव दौड़ रहे थे। हकीम साहब ने कहा यही उन लड़को के साथ हैं। मैंने उनसे पूछा कि आप क्यों इतना व्याकुल हैं? उन्होंने कहा कि हम सफदर हुसेन साहब वारसी रईस व जज गोरखपुर को क्या मुँह दिखायेंगे? उनके लड़के महमूद को यहाँ पकड़ लिया है। यह सुन कर मैं उनके साथ गया और महमूद का हाथ पकड़ कर अपने साथ लाया और गाड़ी में सवार करके गोरखपुर पहुँचा दिया। उस समय पूज्यदाता के बार-बार आदेश करने का अर्थ समझ में आया कि इस कारणवश मुझे बार-बार चेतावनी दी गयी थी। 'इतना पूर्व जाओ कि गाड़ी न छूट जाय।' आपकी दृष्टि इस भाँति उपस्थित-अनुपस्थित पर रहती थी अत: उनकी दृष्टि में कोई अप्रत्यक्ष नहीं था।

मिर्जा मुहम्मद इब्राहीम बेग शैदा वारसी ब्यान करते हैं कि एक व्यक्ति ने लगभग दो सेर मूंगफली मान्यवर दाता वारिस की सेवा में उपस्थित किया। उस समय मूंगफली इस देहात में नहीं मिलती थी। भेंट करते समय उसने यह भी कहा कि यह कलकत्ता और बम्बई में मिलती है। मान्यवर दाता वारिस ने अपनी आदत के अनुसार मूंगफली लोगों को बाँट दिया और मुझको आदेश दिया 'इसी समय बम्बई चले आओ और एक मन खरीद लाओ।' मैं तुरन्त तैयार हो गया। चलते समय आप ने एक लंगोट और एहराम देकर मुझसे कहा 'साथ लेते जाओ। बम्बई में इसकी जरूरत आयेगी तो देना।' बम्बई पहुँच कर अपने एक मित्र जियाउद्दीन साहब के मकान पर नारियल बाड़ी में ठहरा था। मौलवी साहब ने मुझे बताया कि आपके एक पीर भाई फकीर यहाँ हैं जो इस समय बहुत बीमार हैं और मरने के करीब हैं। मैं उसी समय उनके साथ शाह साहब के निकट गया। देखा कि एक व्योवृद्ध फकीर तहबन्ध बाँधे हुए अचेत हैं और कुछ लोग उनकी सेवा सुश्रुषा में लगे हुए हैं। इसके पूर्व मैंने उन्हें कभी देखा नहीं था किन्तु वेश भूषा से वारसी फकीर ज्ञात हो रहे थे। थोड़ी देर में वह होश मे आये तो मुझे देखकर कहा। भाई तुम आ गये। फिर हाथ मिलाया और चुप हो गये। हम लोग वापस मौलवी साहब के घर चले आये। दो घंटा पश्चात् उनके सेवक ने आकर हमको सूचित किया कि शाह साहब की मृत्यु हो गई। उन्होंने मरते समय यह कहा है कि आपके मतानुसार उनका अंतिम संस्कार किया जाय और कफ़न भी आप ही देंगे। वही लंगोट और तहबंद जो मेरे स्वामी ने मुझे प्रदान किया था लेकर गया और यही उनका कफ़न हुआ। दूसरे दिन एक मन मूगंफली लेकर बम्बई से देवा आया और मान्यवर से पूरी

घटना कह सुनाया। आप ने कुछ कहा जिसका अर्थ था 'मूंगफली के बहाने से शाह जी को कफ़न तो पहुँच गया।' माननीय दाता वारिस की आन्तरिक शक्ति की यह दशा थी कि शिष्य चाहे जहाँ कहीं हो आप उसकी खबर रखते थे और सहायक होते थे। आपके अन्त:करण की दिव्यता और आत्म शक्ति की यह दशा थी अनुभव केवल शिष्यों को ही नहीं वरन् अन्य सम्प्रदाय के लोगों को भी था। जैसा कि दूसरे मार्ग के लोग भी साक्षी हैं।

मौलवी सैय्यद फरज़न्द हुसैन वकील जिला इटावा जो शाह सरफराज अली मसऊदी शकरगंजी के शिष्य हैं। ब्यान करते हैं कि मैं कभी मान्यवर हाजी बाबा की सेवा में नहीं गया था और न कभी आपको देखा ही था। किन्तु २५ जिलहिज्जा १२८० हिजरी लगभग १८६० ई० में पूज्य दाता इटावा में एक स्थान पर खड़े थे और मैं रास्ते से जा रहा था। आपने स्वयं मुझे बुलाया और कहा तुम खैरूद्दीन के भांजे हो, उनका कल मक्का मोअज्जमा में इन्तेकाल हो गया है और बहुत अच्छे रहे।' मैंने उसी समय तिथि अंकित कर लिया जब मेरे चचा हाजी खादिम हुसेन साहब हज से लौटकर घर वापस आये तो उन्होंने शेख खैरूद्दीन की मृत्यु तिथि वही बताया जो दाता वारिस ने मुझे एक दिन पश्चात् कल कह कर बताया था। मान्यवर दाता की ज्योतिमयी अन्त: की यह दशा थी कि यहाँ होते हुए मक्का एक दूर देश अरब की घटना को देख रहे थे। आये दिन की घटनाओं का उल्लेख कहाँ तक हो सकता है संभव नहीं है।

गुप्त अधिकार

इस अवसर पर कुछ ऐसी घटनायें अथवा वृतान्त अंकित किये जाते हैं जो पूर्णत: गुप्त अधिकार और अदृश्य सहायताओं से सम्बन्धित हैं। गुप्त अधिकार सम्बन्धी कुछ वृतान्त आदर्श स्वरूप लिखे जा रहे हैं जिनसे माननीय वारिस पाक की गुप्त सहायताओं का पुनीत रूप प्रकट होता है।

मुंशी अब्दुल गनी खाँ वारसी रईसपुरवा, गनी खान जिला-रायबरेली लिखते हैं। मेरे अनुज अली मुहम्मद खाँ वारसी रिसालदार मेजर का ब्यान है कि उनका रिसाला छावनी मेरठ से स्थानान्तरित होकर जालन्धर को जा रहा था। रास्ते में ठहरने के स्थान पर घोड़ों के पानी पिलाने हेतु एक सिपाही महफूज खाँ ने असावधानीवश, रूकने पर उसने ट्रिप नं० १ के स्थान पर ट्रिप नं० २ के साथ अपने घोड़े को पानी पिलाने लगा। अंतत: बुरा भला कहने पर उतारू हो गया। सैनिक अनुशासन के अनुसार उसे कोतल गार्ड में बन्दी कर दिया गया। इसी दशा में संयोगवश उसके

हाथ एक बन्दूक लग गई। महफूज अली के हाथ में बन्दूक देखकर एक सिपाही ने घोड़ों के बीच टहलते हुए मेजर महमूद अली को आवाज दिया कि वहीं रुक जाओ। इतने ही में महफूज अली कैदी ने एक फायर कर दिया। गोली मेजर की भुजा में लगी जिससे वह आहत हो गये। मेजर महोदय का कहना है कि मैं घबराया नहीं। मैंने चाहा कि उस तक पहुँच कर बन्दूक छीन लूँ किन्तु घोड़ों के बाधक होने के कारण उसने दूसरे फायर की तैयारी कर लिया। उस समय दाता गुरू वारिस के सिवा मुझे कोई सहारा नहीं सूझा और मैं पूज्य गुरूदेव का स्मरण करने लगा। मेरे ध्यान का केंद्रित होना था कि महफूज अली सवार अंधा हो गया। इधर-उधर फिरने लगा। बाद में महफूज अली ने स्वयं ब्यान किया था कि पहली गोली दागने के समय तो मुझे कुछ दिखाई दे रहा था किंतु दूसरी गोली छोड़ते समय मैं पूर्णरूपेण अंधा हो चुका था। इससे विदित है कि आपकी गुप्त अधिकार शक्ति कितनी विलक्षण और विशाल है।

मुंशी अब्दुल गनी खाँ महोदय वारसी लिखते हैं कि मुझसे मान्यवर रहीम शाह, तोराब शाह और नूर मुहम्मद शाह ने मुझसे अपनी आँखों देखी घटना इस प्रकार ब्यान किये हैं कि एक बार पंजाब की यात्रा में हम लोग वारिस पिया के साथ थे। एक पंजाबी अपनी पत्नी के साथ सरकार वारिस पाक की सेवा में उपस्थित हुआ और बड़े आदर तथा प्रेम से कदमबोस हुआ। जब हम लोगों के साथ बैठा तो बात-चीत के मध्य उसने अपनी घटना का वर्णन किया जिसका सारांश इस प्रकार है। बहुत दिन हुए जब मैं दाता वारिस का शिष्य हुआ था। किन्तु अपनी पत्नी से मैं अधिक प्रेम रखता था। कुछ समय पश्चात् वह रोग ग्रस्त हो गई थी। दिन प्रतिदिन रोग बढ़ता ही गया। फिर वह समय भी आया कि वह मर गई। मुझे इस घटना की असह्य पीड़ा हुई। वियोग का घोर दुःख मैं सह नहीं सका। आत्महत्या करने को तैयार हो गया, फिर विचार हुआ कि मरने से पूर्व गुरूदेव दाता वारिस से अवश्य मिलना चाहिये। मेरा मस्तिष्क बेकार हो गया था। मैंने घर के सभी लोगों को बता दिया था कि जब तक मैं न लौट आऊं कोई भी कफन-दफन का प्रयत्न नहीं करेगा। यही कहता हुआ घर से चल दिया। स्टेशन मेरे घर से दूर पड़ता था। रात्रि हो जाने के कारण एक गाँव में बिना खाये पिये पड़ा रहा। प्रातः उठ कर चला। दूर से मैंने कुछ लोगों को आते हुए देखा। निकट पहुँच कर देखा कि दाता वारिस हैं। उस समय मैं कुछ कह नहीं सका। बार-बार पूज्यदाता के कमलवत पद चूमता था। मेरा रोना तीव्र होता गया। तभी गुरूदेव दाता वारिस ने मुझे आदेश किया 'तुम्हारी बीबी

को सकता (मुर्च्छा रोग) हो गया है तुम वापस जाओ।' जब मैं आदेश पाकर अपने घर पहुँचा तो अपनी पत्नी को भली-चंगी देखकर चकित रह गया। वह बैठी आराम से बातें कर रही थी। मैंने लोगों को पूछा कि यह कब अच्छी हुई तो लोगों ने सवेरे का यही समय बताया जब दाता वारिस ने मुझे आदेश दिया था 'तुम वापस जाओ।' मैंने बहुत पता किया पर मान्यवर के इधर आने की कोई सूचना न मिली मुझे विश्वास हो गया कि इस समय सरकार वारिस पाक देवा शरीफ में हैं। यह आपकी गुप्त सहायता थी कि जो शिष्य जहाँ, जिस समय स्मरण करता आप उसी समय वहाँ उसके सहायक होते थे।

मुंशी अब्दुल गनी खान साहब वारसी इसी प्रकार की और घटना लिखते हैं कि पूज्य हाजी बाबा सतरख, जिला-बाराबंकी के चौधरी अब्दुल्लाह महोदय के बाग में विद्यमान थे। मैं और सरकार के वस्त्रधारी फकीर करीम शाह आपके साथ थे। हम लोग बाहर बैठे बातें कर रहे थे और माननीय हाजी बाबा कमरे में विराजमान थे। अंधेरी रात थी। आकाश मेघाच्छादित था। कभी-कभी बिजली चमक रही थी। सरकार ने करीम शाह को अन्दर आने का आदेश दिया और कहा 'बाग की पगडंडी पर दीवार के किनारे-किनारे चले जाओ।' एक वृद्धा बैठी हुई मिलेगी उसको अपने साथ ले आओ।' आदेशानुसार करीम शाह चल दिये। कुछ दूर जाकर देखा कि एक बुढ़िया बैठी हुई कह रही है। मियाँ ! मुझको कुएँ से निकाल कर कहाँ चले गये। इस अंधेरी रात में मुझको रास्ता नहीं मिलता, किधर जाऊं। करीम शाह ने कहा। माताजी क्या कह रही हो? उसने कहा अंधेरी रात में राह भूलकर इस ओर चली आई थी। दुर्भाग्य से कुएँ में गिर पड़ी। अभी डूब नहीं पाई थी कि मियाँ ने हमको ऊपर ही ऊपर उठा लिया। बिजली की चमक में मैंने पहचाना है कि सरकार ही थे किन्तु मुझे ऊपर लाकर स्वयं अंतर्ध्यान हो गये। उनके सिवा कौन हमारी खोज-खबर लेने वाला है? यह कहकर रोने लगी। करीम शाह ने कहा कि मियाँ ने तुझे ले जाने के लिए मुझे भेजा है। अतः तुम मेरे साथ चलो। वह उनके साथ चली आई। दाता वारिस के चरणों में सिर रख कर रोने लगी और बार-बार कहती थी मियाँ अब मुझको यकीन हो गया है कि जिस प्रकार आपने यहाँ मेरी मदद किया है उसी तरह कब्र में और हश्र में मेरी मदद करेंगे। जब उसका रोना कम हुआ तो आपने उसे रोका कि जबान से कुछ न कहो, जो हुआ वह हुआ। उस समय जब बुढ़िया हाजिर हुई थी उपस्थितजनों की संख्या लगभग पचास थी।

मुंशी अमानतुल्लाह खाँ वारसी मिर्जापुरी लिखते हैं कि एक बार ठाकुर पंचम

सिंह रईस मलावली, जिला-मैनपुरी को चक्कर आ गया और जान पड़ा कि मल-मूत्र में गिर पड़ेंगे। ठाकुर साहब स्वयं कहते हैं कि दाता वारिस का हाथ प्रकट हुआ और गिरने से मुझे बचाकर दूसरी ओर कर दिया। न मैं गिरा और न मुझे कोई चोट आई।

मौलवी सैय्यद शरफुद्दीन साहब मेम्बर एजूकेटिव कौन्सिल बिहार ब्यान करते हैं कि हमारे प्रान्त बिहार में शेखपुरा एक कस्बा है। जहाँ बहुत से डाक्टर और हकीम हैं। मिर्जा हुसेन साहब रईस शेखपुरा और उनका घर भर पूज्य दाता वारिस के शिष्य थे। एक समय मीर अबरार हुसेन की श्रीमती को फालिज का दौरा हो गया। हकीमों ने भोजन एकदम बन्द कर दिया था। केवल मधु का रस दिया जाता था। भूख-प्यास से रोगी की दशा बिगड़ती जा रही थी। मीर अबरार व्याकुल हो उठे थे। एक कदम घर में और एक कदम बाहर रहता था। इसी व्यग्रता में जब मकान में गये तो देखा कि उनकी पत्नी पलंग से उतर कर नीचे बैठी हुई हैं और हंस रही हैं। उनके दोनों हाथों में दूध और बालाई लगी हुई थी। उन्होंने अपने पति महोदय से कहा। तुम न मुझे पानी देते थे और न खाना देते थे दाता वारिस ने आकर मुझे सब कुछ दिया। उस समय से वह पूर्ण स्वस्थ रहने लगीं।

सैय्यद अब्दुल आद शाह तहैय्युर वारसी पुस्तक ऐनुल यकीन में लिखते हैं। **मौजा बाँध** के दो व्यक्तियों के बीच यह निश्चित् हुआ था कि हम दोनों एक ही गुरु **से शिष्य** होंगे। उनमें का एक किसी दूसरे नगर में चला गया था। पूज्य वारिस पाक **बाँध** में विराजमान हुए तो दूसरा आपकी सेवा में उपस्थित हुआ और शिष्य होने की इच्छा उसके मन में उत्पन्न हुई परन्तु अपने मित्र से वचनबद्ध होने की बात भी स्मरण हो आई। इन्हीं विचारों में वह उलझा हुआ था। अतः आपने उसे बाहर बैठने का आदेश दे दिया। थोड़ी देर में उसको अन्दर बुला कर कहा तुम्हारा मित्र शिष्य हो गया। यह सुनते ही वह दूसरा आदमी भी शिष्य हो गया। एक दो घंटे में उसके मित्र का तार उसको प्राप्त हुआ कि पूज्य हाजी वारिस बाबा का शिष्य हो गया हूँ। यदि माननीय बाँध पधारें तो तुम भी शिष्य हो जाओ आपने उससे कहा 'यदि प्रेम है तो सब कुछ है लाख कोस भी हो तो निकट है।'

मौलाना तहैय्युर रह० ऐनुल यकीन में यह घटना भी लिखते हैं। कि एक बार दो अरब निवासी दाता वारिस की सेवा में उपस्थित हुए। एक ने कहा आप इस वर्ष हज मे पधारे थे तो दर्शन हुआ था और यह भी इसी वर्ष शिष्य हुआ था। उपस्थित लोगों ने कहा कि आप तो कई वर्षों से हज करने नहीं गये हैं। अरबी महोदय ने कहा 'वल्लाह' (ईश्वर की कसम) इस वर्ष हमने आपको काबा में देखा है। आपने

धीरे से कहा 'कोई होगा।' इस प्रकार अनेकों बार लोगों ने एक ही समय आपको कई जगहों पर देखने का साक्ष्य दिया है।

अन्य सम्प्रदाय के सन्तों, बुजुर्गों ने भी आपकी गुप्त अधिकार शक्ति का निरीक्षण किया है। जैसा कि शेख निहालुद्दीन निवासी कुरसी, जिला बाराबंकी का ब्यान है कि मौलाना हाजी सादिकुल यकीन साहब की घटना है जो महान पंडित और नेक बुजुर्ग थे। जिनके पिता सेराजुल यकीन साहब ने अपने समय में उनको मान्यवर निजामतुल्लाह शाह कादरी की गद्दी दिया था। वह अपनी विद्यता के गर्व में दाता वारिस के प्रति अच्छा विचार नहीं रखते थे। अन्य लोगों को भी मान्यवर वारिस दाता से बचने की राय देते थे। संयोग से मौलाना सादिकुल यकीन ने शिक्षा प्राप्त करने हेतु विदेश यात्रा किया। बहुत दिनों तक बगदाद में शिक्षा ग्रहण करते रहे। पुनः मक्का-मदीना में सात वर्षों तक निवासित थे। फिर भारत आने का विचार किया। अपनी जन्मभूमि में आने के पूर्व देवा शरीफ आये और वारिस दाता की सेवा में उपस्थित हुए। उनके प्रेम और आदरयुक्त भाव को देखकर लोगों ने आश्चर्य सहित पूछा तो मौलाना सादिकुल यकीन ने कहा कि मैं मान्यवर के उच्च पद से अनभिज्ञ था। मैंने सात वर्षों तक काबा में नमाज पढ़ी और प्रत्येक नमाज में वारिस दाता को अपने दाहिने नमाज पढ़ते पाया। यह मेरी आँखों का देखा हुआ है। अतः मैंने अपनी उस पूर्व भावना का परित्याग कर दिया। निहालुद्दीन शेख का कहना है कि मौलाना ने गोंडा में भी इसे ब्यान किया जहाँ मेरे साथ शेख खलीलुद्दीन, इम्तेयाज अली, मुंशी मुहम्मद इस्माईल साहब भी थे।

प्राण निकलते समय सहायता

एक ही समय में कई जगहों पर प्रकट होना, वारिस दाता को बहुत से लोगों ने देखा है। मिश्कात हक्कानिया के लेखक का कहना है कि ऐसे वृतान्त मुझे बहुत से ज्ञात हैं जिनसे प्रकट होता है कि पूज्यदाता वारिस अपने शिष्यों के पास मरते समय पहुँचते थे और लोगों ने अपने सम्बन्धियों के निकट सरकार वारिस पाक को देखा भी है किन्तु संतोषजनक प्रमाण न मिलने के कारण छोड़ दिये गये हैं। शेख मुहम्मद शफी वारिसी जिनका पहले का नाम बुद्धू लाल था और जो अब पक्के मुसलमान हैं लिखते हैं कि १९०२ ई० में बदरूनिसा सुपुत्री अब्दुल करीम साहब मिरजापुर में हाजी बाबा की चर्चा सुनकर सरकार वारिस पाक की सेवा में दर्शनार्थ उपस्थिति हेतु एक प्रार्थना-पत्र प्रेषित किया। मान्यवर बाबा की ओर से उत्तर मिला। हाजिरी का कष्ट सहन करना अनिवार्य नहीं है। वह हमारी शिष्या हैं।

दर्शनाभिलाषी को आपका दर्शन स्वप्न में हुआ और स्वप्न ही में आप शिष्य हुई। इसके एक वर्ष पश्चात् उस देवी को क्षय रोग हो गया। कुछ दिनों मिरजापुर में दवा-दारू हुआ किन्तु रोग में कोई अन्तर नहीं हुआ। पुनः चिकित्सा हेतु उनको बनारस लाया गया। वहाँ भी स्वस्थ्य होने की कोई सूरत दिखाई नहीं पड़ी। एक दिन दो बजे रात को उस महिला ने अपने पति मुहम्मद अहसन से कहा। इस कक्ष में जूते इत्यादि निकाल दिये जायें तथा सभी लोग कमरे से बाहर हो जायें। वारिस पिया पधारते हैं। उस कमरे की बेकार वस्तुऐं बाहर कर दी गई। लगभग प्रातः के चार बजे होंगे कि सरकार का रूप-अनूप देखते-देखते देवलोक की वासी हो गई।

माननीय सैय्यद अब्दुल गनी महोदय वारसी बिहारी लिखते हैं कि सैय्यद रहीमुद्दीन साहब नक्शबन्दी अपनी आँखों देखी एक घटना ब्यान करते थे कि मौलवी सैय्यद शरफुद्दीन साहब वारसी के छोटे मामू श्री दावर हुसैन साहब के रोगावस्था में मैं भी उनके पास था। जिस रात को उनकी मृत्यु हुई है। उस रात मैंने अपनी आँखों से तीन बार दाता वारिस को उनके सिरहाने खड़े देखा। इस प्रकार की उक्तियाँ जो लोगों को कण्ठाग्र हैं केवल वारसियों की कही हुई नहीं है वरन् दूसरे सम्प्रदाय के संतों साधुओं की आँखों देखी भी है। जैसा कि सैय्यद करीम रजा साहब चिश्ती, नजामी अशरफी का एक पत्र अंकित है। पूज्य हाजी बाबा के अनगिनत चमत्कार शिष्यों तथा अन्य लोगों से मैंने सुना है। वह सब तो मुझे स्मरण नहीं किन्तु एक घटना विश्वासपात्र व्यक्ति द्वारा सुना है जो अंकित किया जा रहा है। मेरे एक मित्र जो श्रीमान सैय्यद बहादुर अली शाह जब्बलपुरी रह० के शिष्य हैं। जिनका नाम हाजी हसन साहब है। ब्यान करते हैं कि १९०२ ई० में हज करने गया था। अरफा के दिन अरफात के मैदान में यकायक हाजी वारिस बाबा को मैंने देखा फिर थोड़ी देर में अर्न्तध्यान हो गये। बाद में ज्ञात हुआ कि आपके किसी शिष्य की मृत्यु हो गई है। आप उसकी सहायता हेतु पधारे थे।

लौकिक अधिकार शक्ति

पूज्य हाजी बाबा दाता वारिस का आश्रय लेने वालों से सम्बन्धित कुछ घटनायें ऐसी हैं जो आपकी अधिकार शक्ति का उदाहरण हैं। मौलवी बशीरुज्जमा खाँ सन्डीला, जिला हरदोई लिखते हैं कि हमारे चचा श्री इम्तेयाजुज्जमा महोदय एक महाजन द्वारा कर्ज के अभियोग में बन्दी बनाकर जेल में भेज दिये गये थे। जेल का दारोगा शिया मत का था और वारिस पिया के प्रति कुविचारी था। वह जानता था कि

यह कैदी दाता वारिस पिया का प्रेमी है। किन्तु एक बार उसने सरकार की चर्चा छेड़ा और कुछ अनुचित भाषा का प्रयोग किया। बात यहाँ तक बढ़ गई कि जेल इंसपेक्टर ने कहा कि यदि वास्तविकता ऐसी है कि तुम्हारे धर्म गुरू अधिकार शक्तिधारी हैं तो तुम्हें जेल से छुटकारा क्यों नहीं करा देते हैं? कैदी ने कहा कि यह तो करनी का फल है किन्तु वह चाहें तो एक पल की देर नहीं हैं। दारोगा ने कहा कि छः मास की खुराकी महाजन ने जमा करा दी है अतः असम्भव है छः मास से पूर्व छुट्टी पा जाओ। शेख इम्तेयाज जमा साहब वारिस पिया के आशिक थे। उन्हें क्रोध आ गया। उन्होंने कहा इस समय को स्मरण रखना उन्हीं के सहारे पर कहता हूँ कि तीन दिन से अधिक यहाँ नहीं रहूँगा। दारोगा ने उत्तर दिया कि यह तुम्हारा भ्रम है। यदि तीन दिन में छूट जाओगे तो मैं अपना धर्म छोड़कर गुरू का शिष्य हो जाऊँगा। शेख साहब ने अति व्याकुल हो वारिस दाता का स्मरण किया और रो-रो कर प्रार्थना किया। दूसरे दिन रात्रि में स्वप्न देखा कि एक विशाल दरबार लगा हुआ है। द्वारपाल और सेवक सभी अपने-अपने यथा स्थान खड़े कार्यरत हैं। मुझे वहीं रोक दिया गया। थोड़ी देर में किसी ने मेरा नाम पुकारा मैंने भीतर प्रवेश किया। वहाँ हजारों लोग एकत्र थे। वह दरबार सरकार दो जहान (लोक-परलोक के हाकिम) अवतारों के गर्व सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का था। वहाँ सभी उपस्थितगण अदब से खड़े थे। वहाँ का शिष्टाचार देखने योग्य था। सभी नतमस्तक और चुप खड़े थे। सिंहासन के नीचे किनारे-किनारे कुर्सियाँ लगी हुई थीं। थोड़ी देर बाद मान्यवर दाता वारिस पधारे। आपने मुझे खड़े रहने का संकेत किया। कुछ समय पश्चात् एक सज्जन जो मुखपट दिये हुए थे द्वारपट के निकट जा प्रार्थना किया कि क्या आदेश है? भीतर से आदेश हुआ। जब साहबजादा का आग्रह है तो इसे रिहा कर दिया जाय। यह सुनकर दाता वारिस ने मेरे निकट आकर कहा कि कल छूट जाओगे। प्रातः मैंने जेल के दारोगा को यह आनन्ददायक, शुभ सूचना दिया। उसने कहा देखिये कल आदेश हो जाये तब न। ठीक दस बजे कचहरी खुलते ही जेल से छूट जाने का आदेश हो गया और मैं बन्दी गृह से निकल कर सीधे महामना वारिस पाक की सेवा में पहुँचकर कदम बोसी किया।

दाता वारिस का आश्रय महान आश्रय है। जो इस युग में अद्वितीय और बेजोड़ है। वारिस दाता ने अपने आश्रितों को असफल नहीं रहने दिया। जब आपका नाम लेने वाला किसी और साधन का आश्रय लेता है तो उसकी सफलता कठिन हो जाती है। वारसी मर्यादा की इच्छा यह है कि वारिस का हाथ पकड़ने वाला किसी और के

सामने हाथ न फैलाये। मुंशी नवाब हुसैन साहब मारहरवी का कथन है कि मैं बाराबंकी में नगर कोतवाल था। मैंने रेलवे स्टेशन पर कुछ लोगों को देखा जो अपने इलाके के निवासी नहीं थे। पूछने पर ज्ञात हुआ कि वह लोग सूरत (गुजरात) के निवासी हैं। उनके यहाँ आने का कारण यह ज्ञात हुआ कि वह महामना वारिस पाक के शिष्य थे। उन्होंने बताया कि हम लोग कुछ मुकद्दिमात में फंसे हुए थे। हम लोग अपनी कठिनाइयों में बुजुर्गों की ओर आकृष्ट होते हैं। अतः दर-दर मारे फिरे बहुत से संतों-बुजुर्गों की ओर आकृष्ट हुए किन्तु हमारी विपदा में कोई कमी नहीं हुई। एक बुजुर्ग ने हमसे पूछा कि तुम लोग किसके शिष्य हो। हमारे सरकार वारिस पिया का नाम सुनकर उन्होंने कहा कि तुम लोग उनके पास जाओ और उनका दर्शन करो। उन्हीं का स्मरण करो। अतः जब हम लोगों ने दाता गुरू वारिस का स्मरण किया और उनकी ओर आकृष्ट हुए तो अभियोग से मुक्त हो गये। अब हम धन्यवाद देने हेतु देवा शरीफ जा रहे हैं क्योंकि हम लोगों को अब यह पूर्ण ज्ञान है कि दाता गुरू वारिस को छोड़कर दूसरों से सहारा खोजते थे। यही कारण था कि हम लोग सफल नहीं हो रहे थे। वास्तविकता है कि आप अपने किसी आश्रित को दूसरे का सहारा स्वीकार नहीं करते थे तथा अपने शिष्यों की दशा से भिज्ञ थे ऐसी दशा में यदि शिष्य आपका स्मरण न करे तो शिष्यों का दोष है।

मौलवी रौनक अली साहब वारसी रज्जाकी पैंतेपुर अंकित करते हैं कि डाक्टर इलाही बख्श महोदय निवासी आगरा दाता वारिस के शिष्य थे। उन्होंने बयान किया है कि मैंने अपनी आँखों से देखा है एक बार पूज्य दाता वारिस लखनऊ के जेलर के यहाँ निमंत्रित थे। उस समय जेल देखने गये। एक कोठरी की ओर जब आप पधारे तो सीखचों (छड़ों) में बन्द एक कैदी ने सरकार वारिस पाक का पाँव पकड़कर रोने लगा और आग्रह करने लगा कि मैं आपका शिष्य हूँ और निर्दोष हूँ। दाता वारिस ने उसके अपील के सम्बन्ध में जेलर से पूछा। जेलर ने बताया अपील तो अवश्य हुई किन्तु उसमें कुछ दम नहीं था; केवल इतनी सी बात लिखी गई है कि इस आदमी का अपने धर्मगुरू से मिलने की यह घटना है। अदालत ने इसी एक बात पर उसको अभियोग से वंचित कर दिया।

मौलवी रौनक अली साहब ने हाफिज मुहम्मद बशीर की घटना इस प्रकार लिखा है। हाफिज मुहम्मद शब्बीर महाजिर मदीना (अपना देश छोड़कर मदीना में निवास करने वाले) वारिस पाक के प्रेमी थे। संयोगवश एक क़त्ल के अभियोग में आ गये। उनके मुक्त होने का कोई रूप नहीं दिख पड़ता था। अतः लोगों ने दाता

वारिस से इसकी चर्चा की। आपने कहा 'वह मर्द है झूठ नहीं बोला। इकबाल किया, साँच को आँच क्या, ऐसा आदमी पकड़ा नहीं जाता।' कुछ दिनों पश्चात् मुकदमा की दशा ऐसी पलटी कि वह मुक्त हो गये। जेल से निकल कर दाता वारिस का चरण स्पर्श किया और फिर हैदराबाद दक्खिन में मुलाजमत कर लिया। सेवा मुक्त होकर पुनीत नगरी मदीना में निवास कर लिया। मदीना में उन्होंने एक कुआँ बनवाया। भारतवर्ष से जो वारसी वहाँ जाते थे उनका आदर सत्कार करते थे। मौलवी मुफ्ती अबूजर महोदय संभल निवासी द्वारा कथित है कि श्री नजाबत अली महोदय ने एक भेंट में मुझे बताया कि मेरा भतीजा (जालसाजी) धोखा देने के अभियोग में था। अदालत ने सात वर्ष कारावास की सजा कर दिया था। फैसले की नकल अपील करने हेतु ली गई। वकील ने कहा इसके देखने से अपील से कोई लाभ नहीं दिखाई पड़ रहा है। हो सकता है, कहीं सजा और न बढ़ा दी जाय। निराश होकर हम लोग दाता वारिस की सेवा में उपस्थित हुए। दाता ने आदेश दिया। 'जेल में जाकर उस लड़के से मिलो और दृढ़तापूर्वक तोबा (प्रायश्चित) कराओ। तोबा से पाप क्षमा हो जाता है।' इसके पश्चात् अपील लिखाकर दी गई और लड़का छूट गया। आपके वाक्य बड़े विचित्र होते थे और संकेत द्वारा ही सत्यता इंगित करते थे।

शेख अजमतुल्लाह जमींदार सैदनपुर, जिला बाराबंकी आपके शिष्य थे। एक बार क़त्ल का मुकदमा उन पर हो गया। खून का अभियोगी होने के कारण परिवार के सभी लोग घबरा गये। अजमतुल्लाह साहब की पत्नी सैय्यद अली हसन साहब किछौछा शरीफ की शिष्या थीं। जैसा कि इस घटना को मान्यवर सैय्यद अली हसन साहब लिखते हैं कि जब मेरी शिष्या अर्थात् अजमत अली खाँ की पत्नी पूज्यदाता वारिस की सेवा में देवा शरीफ उपस्थित हुई तो आपने देखा कि उनके हाथों में चूड़ियाँ नहीं हैं। उसे आदेश किया कि 'इनको चूड़ियाँ पहना दो।' यह कहते ही उनको चूड़ियाँ पहनाई गईं और उधर अदालत ने उनके पतिदेव को मुक्त करने का आदेश सुना दिया। मौलाना कहते हैं कि यह घटना मुझसे मेरी शिष्या श्रीमती अजमतुल्लाह साहब वारसी ने कहा था और इस घटना के समय अहमद हसन वारसी और शेख मजहर अली किदवई भी उपस्थित थे। यह भी हमारे सरकार की कीर्ति और यश है कि न उनके यहाँ गण्डा था, न तंत्र-मंत्र, न कोई यंत्र, न उपाय और न दुआ न दवा जो कुछ था आपका आदेश और आपके मुख से कहना था। जनता की सहायता करने का आपका ढंग ही निराला था।

शेख हुसैन अली नवाब साहब सावा मऊ की घटना है। शव्वाल का महीना

था। उनका एक पुत्र मर गया। उसके अंतिम संस्कार के पश्चात् वह दाता वारिस की सेवा में उपस्थित हुए। और रहीम शाह साहब के द्वारा हज में जाने की आज्ञा चाही। आपने कहा 'मतलब से मतलब है यदि तुम जाओगे तो तुम्हारी बीबी पुत्र के शोक में रोयेगी और कहेंगी कि मियाँ चले गये न मालूम कहाँ होंगे। तो सुनो-सुनो, दिल को दिल से राह होती है। तुम्हारे मन में यह विचार उत्पन्न होगा कि लड़का मर गया, बीबी को छोड़ आया हूँ रोती-धोती होंगी। न खुदा ही मिला न विसाले सनम। न इधर के हुए न उधर के हुए। की सी दशा और होगी। मन घर पर होगा हज क्या होगा? हुसैन अली मौका नहीं है, खुदा मालिक है।' हुसैन अली साहब कहते हैं कि आठवें दिन जुमा की रात थी। मुझे स्वप्न में मदीना शरीफ का दर्शन हुआ। जब मैंने दाता वारिस से अपना स्वप्न ब्यान किया। आप झुमकर कहने लगे 'माशूक के दर पर तुम पहुँच गये। इसके पश्चात् रहीम शाह साहब को आदेश हुआ कि मुस्तकीम शाह के पास काबा का गिलाफ और कदम रसूल है लाओ। जब यह वस्तुऐं आई तो आपने मुझको आदेश दिया कि इनको चूमो और पुनः कहा 'मतलब से मतलब है।' मैं जब वापस घर आया तो जुमा की रात में सरकार लोक-परलोक हजरत नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के दीदार से सम्मानित हुआ। दाता वारिस पाक सदैव विशेष अवस्था में होते हुए भी अपने शिष्यों की सांसारिक और सामाजिक दशाओं का विशेष ध्यान रखते हुए सहायता करते थे।

मुंशी अब्दुल गनी साहब वारसी रईस पुरवा, गनी खाँ रायबरेली लिखते हैं कि एक दिन वारिस पिया मेरे यहाँ विराजमान थे। कुछ महिलायें बैठी हुई बातें कर रही थीं। उनमें से किसी ने कहा कि मान्यवर! अब तक गनी खान को कोई सन्तान नहीं हुई और सरकार गनी खाँ को बहुत चाहते भी हैं। इसी विचार में वह महिलायें दाता वारिस की सेवा में पहुँची। उनको देखते ही आपने उनको आदेश दिया 'सोहर गाना किसी को आता है।' महिलायें चुप थीं। पुनः सरकार ने एक मीरासिन को बुलवाया। और कुछ शब्द सोहर के अपने मुख से सुनाकर कहा कि इसको सब मिलकर गाना और सबको विदा कर दिया। मैं भी सरकार को विदा कर वापस लौटा। मेरा एक पुत्र जन्म लिया। औरतों ने वही सोहर गाया। महिलाओं में चर्चा का यह विषय बन गया कि तावीज न दुआ। कहाँ सोहर गाना और कहाँ पुत्र का जन्म लेना।

शेख निहालुद्दीन महोदय निवासी कुर्सी जिला बाराबंकी लिखते हैं कि एक दिन मनकापुर जाते हुए पूज्य दाता वारिस गोण्डा में रूके। मिस्टर जान्सन उस समय गोण्डा में पुलिस सुपरिटेन्डेन्ट थे। वह उस समय तक निःसन्तान थे। वहाँ के

इंसपेक्टर पुलिस ईनाम मुहम्मद खान ने उनको बताया था कि जब सरकार गोण्डा पधारें तो आप उनका दर्शन करें। अतः एस०पी० महोदय ने सरकार वारिस पाक के आगमन पर उनकी सेवा में उपस्थित हुए। आपने उनको एक रूमाल प्रदान किया और आदेश दिया 'जब पुत्र उत्पन्न हो तो उसके गले में यह रूमाल बाँध देना।' उस रूमाल को इन लोगों ने सम्मानपूर्वक सुरक्षित रखा। बच्चा पैदा होने पर रूमाल उसके गले में बाँध दिया गया। वह लोग जीवन भर दाता वारिस का गुणगान करते रहे।

शेख हुसैन अली साहब वारसी जमींदार सादा मऊ द्वारा कथित है कि एक बार बहुत से लोग नमाज ईदुल-अजहा में मौजूद थे। यह घटना सामने आयी। संयोग से जब सैय्यद मुहम्मद इब्राहीम शाह ख़ुतबा पढ़ने हेतु मेम्बर पर खड़े हुए। पुस्तक पुरानी और फटी हुई थी। कहीं-कहीं दीमक लग गई थी। सैय्यद मुहम्मद इब्राहीम शाह स्वयं ब्यान करते हैं कि मेरी हालत खराब थी। मेरे पास चश्मा भी नहीं था। मेरे मन में यह विचार आया कि यदि ख़ुतबा न पढ़ा गया तो बड़ी अपमानजनक बात होगी। इस जीवन से तो मृत्यु ही उत्तम है। यह सोचते हुए मैंने देखा कि सरकार दाता वारिस ने अपनी अंगुली को जबान पर लगा कर दोनों आँखों पर लगाया और मेरी ओर देखा। फिर मैंने जो पुस्तक की ओर दृष्टि डाला तो वही अक्षर बड़े और साफ दिखाई दे रहे थे और मैं पढ़ता चला गया। नमाज समाप्त होने दाता वारिस ने कहा जब मैं उनकी कदम्बोसी हेतु उपस्थित हुआ। 'इब्राहिम नमाज तो पढ़ाये किन्तु ख़ुतबा खूब पढ़ा।' सैय्यद साहब ने सविनय कहा कि दाता के अधिकार शक्ति का यश था और चरणों पर गिर पड़े। मान्यवर दाता ने प्रेम से उठा लिया।

सैय्यद अली हामिद शाह चिश्ती कादरी गद्दीनशीन सौंडी, जिला-हरदोई लिखते हैं कि मुंशी अजमत अली साहब ब्यान करते थे कि एक बार वारिस पिया कन्नौज पधारे। मैं भी साथ था। कन्नौज से लौटते समय वारिस पिया रामपुर की बाग में ठहर गये। मैं पानी लेने हेतु कुएँ पर गया था। उस दिन होली का त्यौहार था। गाँव की स्त्रियाँ रंग खेल रही थीं। मुझे देखकर मेरी ओर भी रंग लेकर दौड़ीं। मैं हैरान हो गया। वारिस पिया का ध्यान किया तो देखता हूँ कि आप बैठे हुए देख रहे हैं जैसे ही महिलायें मेरे निकट रंग लेकर दौड़ीं तो सभी अधोमुखी हो गई। शान्ति पूर्वक पानी लेकर चला आया। जब वारिस दाता की सेवा में उपस्थित हुआ तो आपने मुस्कुराते हुए कहा 'औरतें क्या गिर पड़ीं?' मैंने हाथ जोड़कर कहा कि सब कुछ दाता के सामर्थ्य का यश है। मौलवी तफज्जुल हुसैन साहब वकील जिला उन्नाव की घटना है जिसको उन्होंने ठाकुर पंचम सिंह जमींदार मलावली से ब्यान

किया था। मैंने बड़ी मेहनत से वकालत की परीक्षा दिया था किन्तु असफल हो गया। एक दिन वारिस पिया की सेवा में उपस्थित था। मेरे मन में अपनी असफलता का विचार आते ही मेरी आँखें अश्रुपूर्ण हो गईं। दाता ने मुझे देखकर प्रेम से कहा क्या है ?' तो मैंने अपनी असफलता की बात कहा। दाता वारिस ने पूछा 'क्या बिना परीक्षा वकालत नहीं हो सकती ?' मैंने कहा कि सरकार! नहीं हो सकती। पुनः मेरे दाता वारिस पिया ने कहा 'तुम पास हो जाओगे।' आपकी वाणी का यश यह हुआ कि कुछ दिनों पश्चात् मेरे पास वकालत की सनद हो गई। गुफ्तए ऊ गुफ्तए अल्लाह बूद अर्थात् आपकी वाणी ईश्वर वाणी हो गई।

खानजी मुहम्मद इबारत खान नक्शबन्दी मरसान जिला अलीगढ़ लिखते हैं कि एक बार सरकार वारिस पाक ग्राम कामान रियासत भरतपुर में कमरूद्दीन शाह के यहाँ विराजमान थे। प्रातः घबराया हुआ एक शिष्य सरकार की सेवा में पहुँचा और कहा दाता आज रात में मेरे घर चोरी हो गई है। आपने कहा 'चोर तो अधिकतर पकड़ भी जाते हैं।' कुछ ही समय पश्चात् वह चोर उद्विग्न और आतुर हो दाता वारिस की सेवा में उपस्थित हुआ। लज्जित होकर मिन्नत किया कि दाता हम लोगों का पाप क्षमा कर दें। उपस्थितगण चकित रह गये। जब चोरों ने बताया कि चुराया हुआ माल लेकर हम लोग जिधर जाते उधर ही हमारे सम्मुख लहू की नदी बहती दिखाई देती थी। जब भागने-पराने का कोई रूप दृष्टिगोचर नहीं हुआ तो हम लोगों ने वह सम्पूर्ण माल छोड़ दिया। तब कहीं हम लोगों को रास्ता मिला।

सैय्यद मारूफ शाह साहब वारसी ब्यान करते हैं कि १८५७ की घटना है। गदर का ज़माना था। जब गदर समाप्त हो चुका तो देवा शरीफ के धनी लोग मौलवी रहीमुद्दीन साहब मुन्सफ और मुहम्मद बक्श साहब तहसीलदार अवकाश लेकर जब अपने घर आये। चूंकि यह लोग प्रदेश के दूर स्थानों पर रहते थे। अतः आते समय अधिक सामानों के साथ आये थे। इनके आने का समाचार जैसे ही प्रसारित हुआ। लुटेरों के एक बड़े गिरोह ने आकर उनके घरों को घेर लिया। सभी पुरूषों को बाँधकर बन्दी बना दिया तथा महिलाओं और बच्चों को एक घर में बन्द कर दिया। धन-सम्पत्ति और सामग्रियों को ढोना आरम्भ कर दिया। उस समय दाता वारिस देवा शरीफ में ही विराजमान थे। सैय्यद मारूफ शाह कहते हैं कि मैंने सरकार की सेवा में जाकर कहा। मुहल्ला लालापुर में माननीय दाता के गुलामों के घर लुट रहे हैं। आप शान्त भाव में बैठे रहे। थोड़ी देर में उठे और शाह फजले हुसैन साहब के बाग में जाकर बैठ गये। वहाँ कुछ विद्रोही आ पहुँचे। उन्होंने एक सुन्दर

रूपधारी फकीर को वृक्ष के साये में बैठा देख आपके निकट पहुँचे। वह सब आपस में कहने लगे कि देखने में यह व्यक्ति धनी जान पड़ता है। हो न हो अपनी प्राण बचाने हेतु फकीरी वेश धारण कर लिया है। बागियों ने दाता से कहा। चलिये आपको ठाकुर साहब ने बुलाया है। यही कहते कहते दुराग्रह करने लगे। आप उनके साथ अमुक स्थान पर पहुँचे और कहा 'हमको जिसने बुलाया है उसको बुलाओ। वह सब अन्दर गये वहाँ एक मूल्यवान शाल हेतु आपस में लड़ गये। तलवारें निकल गईं। इस युद्ध में खून खराबा होने लगा। फलतः लुटेरे सभी सामग्री वहीं की तहीं छोड़ भागने पराने लगे। उन लुटेरों का सरदार ठाकुर जब बाहर आया तो सरकार वारिस पाक को देख चरणों में गिर पड़ा और कहने लगा जिसने आपको लाया उसने बहुत बुरा किया कहता हुआ क्षमा याचना करने लगा। अन्ततः माल सब वहीं पड़ा रहा लुटेरे कुछ मारे गये घायल हुए और कुछ जान लेकर भाग गये। सरकार दाता वारिस ने आकर मारूफ शाह को आदेश दिया जाकर घरों की कुन्डियां खोल दो। महिलायें और बच्चे बन्द हैं। सैय्यद मारूफ शाह का कथन है कि जिस समय उस मकान में प्रवेश किया तो देखा कि लाशों की ढेर लगी हुई है पूरा घर लहू-लुहान हो रहा है। यह था दाता वारिस का सामर्थ्य जिसके कारण दुष्ट बलवाईयों का गिरोह आपस में लड़-कटकर नाश हो गया।

जल-थल सम्बन्धित सामर्थ्य

मुंशी अब्दुलगनी खाँ महोदय रईस पुरवा गनी खान, जिला-रायबरेली लिखते हैं कि वजीर अली घोड़सवार ने अपनी घटना इस प्रकार मुझसे ब्यान किया। मैं ठाकुर कल्यान सिंह महोदय तअल्लुकेदार जरगाँव के यहाँ मुलाजिम था। विशेष रूप से अपनी सवारी हेतु एक मूल्यवान घोड़ा ठाकुर साहब ने रखा था। वजीर अली उसको फेरते थे। एक बार ठाकुर कल्यान सिंह के यहाँ से बारात जिला गोंडा को गई थी। रास्ते में घाघरा नदी पड़ती थी। वापसी में प्रयत्न के पश्चात् भी घोड़ा नाव पर नहीं चढ़ा। वर्षा के कारण नदी बाढ़ पर थी। विवश हो घोड़े को नाव में बाँध कर नदी में पौराया गया। वजीर अली उसका एयाल (गर्दन का बाल) पकड़े हुए थे। नदी के मझधार तक तो घोड़ा तैरता रहा किन्तु आगे उसके पाँव ढीले हो गये घोड़ा उलटा हो गया। वजीर अली के हाथ से घोड़ा छूट गया। उस समय वजीर अली को दाता वारिस की याद आई। वजीर अली का कहना है कि मैंने आतुर होकर माननीय वारिस पुकारा। उक्त शब्द निकलते ही नाव धरती से लग गई और स्वयं खड़ी हो गई। घोड़ा भी भूमि पाकर पुनः सीधा खड़ा हो गया। नाविक और नाव पर चढ़े हुए

लोग अचंभित हो गये। कि जहाँ पानी अथाह था वहाँ इतना कम पानी कैसे हो गया। जब घोड़ा अच्छी तरह सम्भल गया तब पुनः उसको नाव में बाँधा गया और नाव अपने आप चलने लगी। जल का वही वेग और बहाव का उग्र रूप पूर्ववत बना हुआ था। इस घटना से सभी चकित थे और एक दूसरे का मुँह ताक रहे थे। उसी समय वजीर अली ने दाता से सहायता माँगने की अपनी बात लोगों को सुनाया। अतः नाव पर से उतर कर सभी नवकारोही सरकार वारिस पाक का दर्शन करने हेतु उपस्थित हुए। और इस घटना की चर्चा चारों ओर फैल गयी। जब वजीर अली ने पाँव चूमा उसी समय दाता वारिस पाक ने वजीर अली की पीठ पर एक घूंसा लगाते हुए कहा 'जाओ-जाओ खुशी से रहो।'

मुंशी अब्दुल गनी खाँ महोदय ने ऐसी ही एक घटना चाबुक सवार वजीर अली की और लिखी है। वजीर अली का कहना है कि एक बार ठाकुर कल्याण सिंह के साथ मेला जा रहा था। रास्ते में घोड़े को पानी पिलाने के लिए तालाब पर ले गया। किनारे पहुँचते ही घोड़ा फिसल कर पोखरे में गिर पड़ा। घोड़े को पकड़ने हेतु मैं भी पोखरे में कूद पड़ा। पानी अधिक था कभी घोड़ा पानी में डूबता कभी ऊपर आकर उछलता था। मैं अति भयभीत होकर दाता वारिस पाक की गुहार लगाई। गुरुदेव! लाज तुम्हारे हाथ है। अचानक ऐसा जान पड़ा कि विशाल शक्ति ने घोड़े को उछाल कर किनारे फेंक दिया है। उस समय पोखरे पर बहुत से आदमी घोड़े का और हमारा तमाशा देख रहे थे। प्रत्येक व्यक्ति यही पूछता था कि वजीर अली यह क्या हुआ? मैंने वास्तविकता ब्यान कर दिया। देखने वाले इस घटना से बहुत ही प्रभावित हुए। उसमें से अधिकांश जाकर वारिस पिया के शिष्य हो गये। स्वयं ठाकुर कल्याण सिंह भी प्रभावित थे। स्वामी वारिस दाता की सेवा में उपस्थित हुए और आजीवन आते जाते रहे।

हाजी अब्बास हुसैन तअल्लुकेदार बाबूपुर जिला-सीतापुर जो वारिस पिया के प्रेमी थे। ब्यान करते हैं कि हज करने गया था। वापसी में सकोतरा की खाड़ी में भयंकर तूफान था। जहाज वाले बहुत व्याकुल हो उठे थे। यात्री भी तूफान से आतंकित हो रहे थे। मैं भी एक बेंच पर लेटा हुआ दाता वारिस का स्मरण करने लगा। मैंने देखा कि मेरे सरकार जहाज के किनारे खड़े हैं। थोड़ी ही देर में तूफान समाप्त हो गया और पुनः जहाज अपनी वास्तविक चाल में चलने लगा। मैंने लौटकर दाता वारिस का दर्शन किया और जहाज की बात भी कह सुनाया। आप मुस्कुराने लगे।

मौलवी सैय्यद शाह अली नकी साहब नक्शबन्दी मोजदी और सैय्यद मारूफ

शाह साहब बारसी लिखते हैं कि एक बार वर्षा ऋतु में पूज्य दाता वारिस, शेख इमसाम अली तअल्लुकेदार गंडारा के घर पधार रहे थे। रास्ते में घाघरा नदी पड़ती थी। जब पूज्य दाता बहराम घाट पर पहुँचे तो घाट दारोगा कहीं चला गया था। मल्लाहों ने नाव खोलने से इन्कार कर दिया और कहा मान्यवर थोड़ी देर आप विश्राम करें फिर पार उतार दिये जायेंगे। पार उतारने का वाक्य सुन आप मुस्कुराये और अपने साथियों को आदेश दिया 'बिस्मिल्लाह' कहते हुए हमारे साथ चले आओ' और नदी में उतर गये। सभी सेवक अथवा साथी मान्यवर के पीछे नदी पार कर गये। पानी मात्र घुटनों तक रहा। इसी भाँति देवा शरीफ में एक कुआँ खारे पानी का था। लोगों ने दाता वारिस के समक्ष इस बात को रखा। दाता ने अपना जूठा पानी देकर उस कुएँ में डालने का आदेश दिया। आदेश का पालन हुआ तत्पश्चात कुएँ का पानी मीठा हो गया और आज भी है। वह कुआँ दाता वारिस के आस्ताने के पूरब की ओर पोखता बना हुआ है।

मुंशी मुहम्मद अकबर खाँ बारसी निवासी शिकोहाबाद, जिला मैनपुरी का कथन है कि जब मैं कानपुर में कोर्ट आफ वार्ड में मैनेजर था। नगर में समाचार फैला हुआ था कि मान्यवर दाता वारिस अलीगढ़ जा रहे हैं। अतः हिन्दू-मुसलमान सभी वारिस पिया के दर्शनार्थ स्टेशन पर एकत्र थे। गर्मी का महीना होने के कारण वहाँ के निवासियों ने स्टेशन पर बर्फ के पानी का प्रबन्ध कर रखा था। कुछ लोगों ने वारिस पाक को भी दिया किन्तु आपने अपनी सुराही से पानी माँगा। क्योंकि हमारे सरकार दाता वारिस कभी भी बर्फ का पानी प्रयोग नहीं करते थे। उस जल में से कुछ लोगों ने माँगकर पिया हमने भी पानी पिया था। उस सुराही का बर्फ के पानी से अधिक शीतल था। दो-तीन घूंट पानी पीना भी कठिन हो गया, दाँत काँपने लगे।

सैय्यद हामिद अली शाह कादरी, चिश्ती सज्जादा नशीन (गद्दीधारी) साँडी जिला-हरदोई लिखते हैं कि मुंशी अजमत अली साहब निवासी मलावाँ जो एक सत्य भाषी और धार्मिक मनुष्य हैं अपनी देखी ब्यान करते हैं कि एक समय की बात है जब दाता वारिस कस्बा मलाँवा में विराजमान थे। वर्षा की झड़ी लगी हुई थी। आकाश मेघाच्छादित था। वर्षा थोड़ी देर के लिये भी नहीं थमती थी। इसलिये कोई भी उनको विदा करने हेतु तैयार नहीं था। एक दिन आपने आदेश दिया कि अब हम जायेंगे। लोगों ने प्रार्थना किया कि दाता! बादल घिरे हुए हैं। पानी भी बरस रहा है फिर इस वर्षा में आपको जाने देना उचित नहीं है। आपने कहा 'नहीं-नहीं अब तो पानी बरस चुका।' यह कहते हुए आप बाहर निकल आये। लोगों ने देखा आकाश

साफ है। वर्षा भी समाप्त है। ऐसा जान पड़ने लगा कि इसके पूर्व वर्षा हुई नहीं है। उक्त घटनायें हमारे दाता वारिस पाक के सामर्थ्य की हैं जो जब से सम्बन्धित है और ऐसी घटनायें हैं जो समय-समय पर घटित होती रही है और होंगी जिनका हम लोगों को ज्ञान नहीं हो सकी है। ऐसी अनेकों घटनायें हैं जो स्थल से सम्बन्धित हैं जो अंकित हैं।

सैय्यद मारूफ शाह का कहना है कि एक बार जब उनका मकान गिर गया तो आपने आदेश दिया 'जब तक खुदा तुमको अपने खजान-ए-गैब से न दे, मकान न बनवाया।' वस्तुतः ऐसा ही हुआ। जो बागीचा मकान के घेरे में था वह खोदा गया। उसमें अशर्फियों से भरा एक पात्र मिला जिसमें मुहम्मद शाही सिक्के थे। फिर उन्होंने शान्तिपूर्वक अपना गृह निर्माण करा लिया।

मौलाना सैय्यद अब्दुल आद शाह तहैय्युर वारसी लिखते हैं कि एक बार दाता वारिस की सेवा में एक सवाली उपस्थित हुआ और उसने प्रार्थना किया कि किसी भाँति बैतुल्लाह शरीफ पहुँचा दीजिये तो दाता का आदेश हुआ 'तुम रोज़ाना किसी दरख्त (वृक्ष) के नीचे खोद लिया करो। एक दिन के भोजन भर का पैसा मिल जायेगा। किसी से सवाल न करना।' उस सायल (सवाली, प्रश्नकर्ता) ने पदयात्रा आरम्भ कर दिया। प्रतिदिन किसी वृक्ष के नीचे खोदता और अपने भोजन का मूल्य प्राप्त कर लेता था। जब भारत वापस आया तो लोगों ने उससे पूछा कि तुम इस दरिद्रता की दशा में कैसे गये तो उसने अपनी कुल वृतान्त सुना दिया।

माननीय सैय्यद मारूफ शाह वारसी लिखते हैं कि एक बार मुहम्मद अहसन साहब रईस पटना, मान्यवर दाता वारिस की सेवा में कुछ कलमी आम लेकर उपस्थित हुए। पूज्य दाता ने उसमें से कुछ आम मुझको भी प्रदान किया। आम अति उत्तम थे। दूसरे दिन जब मान्यवर दाता की सेवा में चरणस्पर्श हेतु उपस्थित हुआ तो दाता वारिस ने पूछा 'मारूफ शाह आम कैसे थे? मैंने कहा कि मान्यवर, बहुत अच्छे थे। उसी समय फैजू शाह ने उसमें के कुछ आम दाता की सेवा में उपस्थित किया। उसमें से एक आम काटा गया और फाँके निकाली गई। एक फाँक मान्यवर ने लिया और शेष सभी बाँट दी गई। एक दो फाँके और एक आम दाता वारिस ने मुझको दिया और आदेश किया 'मारूफ शाह आम अच्छा है। तुम अपने बागीचे में लगा दो।' मैंने सविनय कहा कि श्रीमान् इसमें बीज नहीं है, यह कलमी आम है। पूज्य दाता ने पुनः कहा तुम्हारे हाथ से वृक्ष लग जाता है।' वारिस दाता के इस कथन पर मैं चुप हो रहा और उस समय आम की गुठली को अपनी वाटिका में बो

दिया। प्रतिदिन उसको देखा करता था ठीक दसवें दिन पौधा निकल आया और बहुत तेजी से बढ़ने लगा। तीसरे वर्ष उसमें बौर आ गया और पाँच आम तैयार होने लगे। जब वह आम पक गये तो मैंने उन्हें सरकार में प्रस्तुत किया। आपने आनन्दित होकर कहा 'यह आम उन आमों से भी अच्छे हैं और दुर्लभ हैं।' आगे आपने कहा 'मारूफ शाह ऐसी चीज रहती नहीं है।' इसके पश्चात् वृक्ष उखड़ गया। मौलाना तहैय्युर शाह ऐनुल यकीन में लिखते हैं। एक बालक की आँख खराब हो गई थी। उसकी माता ने पूज्य वारिस दाता के चरणों में डाल दिया। आपने यह आदेश दिया 'यह तो अच्छा है इसे ले जाओ।' चलते समय उसकी माँ ने सरकार के चरणों की धूल लिये गई उसी को रोज बालक की आँखों में लगाती रही। उस बालक की आँखें अच्छी हो गई।

मौलवी नादिर हुसैन वारसी नग्रामी वकील बाराबंकी ब्यान करते हैं कि मुहम्मद हुसैन लोधी निवासी देवा शरीफ ने मुझसे कहा था कि एक आदमी देवा शरीफ में रोगी हो गया जो श्रीयुत् दाता वारिस का विरोधी था किन्तु वारिस दाता अब्दुर्रहीम शाह को साथ लेकर उसकी तीमारदारी में पधारे। उस रोगी ने मुँह छिपा लिया। फिर पूछने पर कि कैसे हो? उसने कोई जवाब नहीं दिया और न अपना मुख खोला। उसकी बहिन भी अपने भाई जैसी ही थी। उसने दाता से कहा कि तख्त (चौकी) पर बैठ जाओ क्या कोई देखता है? आपने कहा हमने किसी को दिखाने हेतु तख्त इत्यादि पर बैठना नहीं छोड़ा है।' यह कहकर आप लौट आये। ठीक उसी समय उस आदमी की मृत्यु हो गई। लोगों ने बताया कि उसका मुख काला हो गया था। कुछ लोग पूज्य दाता की सेवा में क्षमा याचना करने आये किन्तु उस समय आपका द्वार बन्द था जो लोगों के प्रयत्न करने पर भी न खुला। सैय्यद मारूफ शाह की माताजी को आप बहुत मानते थे। उनसे कहा गया। उनके आग्रह पर द्वार खुला और दाता ने कहा कभी-कभी मरते वक्त मुँह सियाह (काला) हो जाता है। नहलाते समय कालिमा धुल जाती है। गुस्ल (स्नान) करा दो। जब स्नान कराया गया तो कालिमा दूर हो गई। इस घटना से उसकी बहिन और चिढ़ गई जिसका फल यह हुआ कि जब वह मरी तो उसको कब्र में लिटाकर जब तख्ता (पटरा) बिछाया जाता तो उसकी लाश पटरे के ऊपर हो जाती थी। इस प्रकार तीन बार उसको पृथ्वी ने ऊपर फेंक दिया जिसके कारण उसको लोगों ने पटरों पर लेटाकर मिट्टी डाल दिया। यह उस दुर्व्यवहार का फल था कि तख्ते पर बैठ जाओ कोई देखता नहीं है।

जिन्नात की घटनायें

बहुधा लोगों से सुना गया है कि पूज्य दाता वारिस की सेवा में जिन्नात भी उपस्थित होते थे। ऐसे वृतान्त जो विश्वासनीय है अथवा जो विश्वासपात्र लोगों से सुनी गई है, अंकित है। मौलवी हकीम महमूद अली फतेहपुरी लिखते हैं कि मेरे मौसा (खाल्) चौधरी मुहम्मद अब्दुल्लाह रईस सतरख जिनकी आयु इस समय लगभग १०० वर्ष होगी ब्यान करते हैं। एक बार वारिस सतरख में विद्यमान थे। मान्यवर का युवा काल था। एक दिन ४ बजे आपने मुझसे कहा 'अब्दुल्लाह चलो मनोरंजन हेतु घूम-फिर आवें।' कुछ और सेवक आपके साथ थे। एक बाग के निकट एक विशाल मैदान में पहुँचकर कम्बल बिछाने का आदेश दिया। कम्बल बिछाने के पश्चात् आप उस पर बैठ गये। अन्य लोग भी एक तरफ किनारे बैठ गये। थोड़ी देर पश्चात् एक काला कुत्ता वहाँ प्रकट हुआ और कुछ दूर किनारे हट कर बैठ गया। क्रमशः चार कुत्ते एक ही रूप रंग के उपस्थित हो एक दूसरे के निकट बैठ गये। थोड़ी देर पश्चात् आपने कहा 'अब्दुल्लाह घर चलो' यह सुनते ही वह कुत्ते भी चले गये। हम सभी लोग एक दूसरे को देखते रहे। हम लोगों को चकित देखकर वारिस पाक ने कहा 'यह कुत्ते नहीं थे जिन्नात थे, हमारे शिष्य हैं।' चौधरी अब्दुल्लाह साहब का कथन है कि उसी रात यह घटित हुआ कि सरकार वारिस पाक ने सन्ध्या के समय आदेश दिया 'कमरे को खाली कर दिया जाय और कोई आदमी उसमें न रहे।' दाता वारिस ने अपने हाथों उसकी कुंडी बन्द कर दिया। उपस्थितजन को ऐसा ज्ञात हो रहा था कि कोठरी में सैकड़ों आदमी बाहर से आकर एकत्र हो रहे हैं। जिनकी पद-चाप भी सुनाई दे रही है किन्तु कोई दिखाई नहीं दे रहा है। लगभग एक घंटा तक ऐसा ही वातावरण बना रहा फिर शान्ति हो गई और दाता ने कमरे की सीकड़ उतार कर कमरा खोल दिया। पुनः ऐसा कहा गया। जिन्नात जो हमारे शिष्य थे, वह आये थे।

मुंशी अब्दुल ग़नी खाँ वारसी रईस पुरवा, गनी खाँन जिला-रायबरेली लिखते हैं कि दाता वारिस जब प्रथम बार हज करके आये तो सैय्यद मारूफ शाह के कोठे पर विराजमान हुए हैं। मारूफ शाह की माताजी सरकार को भाई कहती थी और आप उनका बहुत आदर करते थे। एक दिन उन्होंने वारिस पिया से आग्रह किया कि मैं सुनती हूँ कि जिन्नात भी आपके शिष्य हैं। हमें जिन दिखा दीजिये। आपने आदेश दिया १० बजे दिन में छत पर आना। अतः चार महिलायें १० बजे दिन को दाता वारिस पिया की सेवा में उपस्थित हुई जिनमें मारूफ शाह की माताजी, बहनजी,

उनकी श्रीमती आदि थीं। दाता ने इन सबको किनारे की कोठरी में बैठने का आदेश दिया और सामने पर्दा कर दिया। उनको समझा दिया कि चुप रहें। उन महिलाओं ने सीढ़ी से तीन सुन्दर आदमियों को प्रकट होते देखा वह शिष्टाचार से आये और पाँव दबाने लगे। फिर विदा होकर सीढ़ी तक गये और अन्तर्ध्यान हो गये। दाता वारिस ने उन महिलाओं से कहा 'देखा यह जिन थे।' उन लोगों ने कहा कि यह तो इन्सान थे। आपने उन्हें समझाया 'तुम्हारे मकान में अन्य लोग दिन के समय कैसे आ सकते हैं।' इनकी असली सूरत भयानक है। तुम देखोगी तो डर जाओगी। इस कारण आदमी के रूप में बुलाये गये थे जिससे तुमको भय न लगे।'

मौलाना तहैय्युर वारसी ऐनुल यकीन में लिखते हैं। एक वैद्य की राय से वारिस पिया रात में दूध और सुहागा का प्रयोग करते थे। एक रात की बात है जब मारूफ शाह दूध लेकर आये तो मुख्य द्वार पर उन्होंने एक कुत्ते का पिल्ला देखा। और देखते-देखते बड़ा होता गया और आगे के दोनों पाँव चौखट के ऊपर रखकर खड़ा हो गया। यह दशा देख मारूफ शाह घबरा गये। भीतर से सरकार वारिस पाक ने आवाज दिया 'चलो आओ, डरो नहीं।' फिर वह निर्भय हो मान्यवर की सेवा में उपस्थित हुए। सैय्यद मारूफ शाह का कहना है कि दाता वारिस ने बताया 'यह यहाँ का रक्षक है।'

उक्त घटनाओं से प्रकट होता है कि जिन्नात जो आत्मा-संसार की एक योनि है वह भी दाता वारिस के यशवान सामर्थ्य से लाभान्वित होते थे। इसी भाँति दाता वारिस के पुनीत चरणों के यश से भूत-प्रेत तथा दैवीय आपत्तियाँ भी नष्ट हो जाती थीं। जैसा श्रीमान मिर्जा मुहम्मद इब्राहिम बेग शैदा लिखते हैं। शेखपुरा जिला मुंगेरा में मीर अबरार हुसैन ने मान्यवर वारिस पाक को निमंत्रित किया और अपने घर के दूसरी मंजिल पर रहने का प्रबन्ध किया। रात को मुझे ज्ञात हुआ कि उस कमरे में कोई ख़बीस या प्रेत रहता है। जो व्यक्ति उसमें रहता है उसे वह कष्ट देता है। मीर अबरार हुसैन ने इसी कारण से सरकार के रहने का प्रबन्ध उस कमरा में किया था कि आपकी बरकत से वह नष्ट हो जायेगा अथवा घर छोड़कर भाग जायेगा। इस सूचना से मैं व्याकुल हो उठा और सरकार से प्रार्थना किया कि मान्यवर आप इस कमरे में न रहें। दाता वारिस ने हँसते हुए कहा 'खुदा जिसका रक्षक होता है उसको कोई हानि नहीं पहुँचा सकता।' रात भर हम लोग सोचते रहे। प्रातः जब मैं वारिस पाक की सेवा में उपस्थित हुआ तो मैंने आपके बिछौने के निकट दो बड़े-बड़े बिच्छू मरे पड़े हैं देखा। सरकार ने मीर साहब को बुलाकर कहा 'इनको फेंक दो

तुम्हारा कमरा साफ हो गया।'

मुंशी अब्दुल गनी खाँ रईस पुरवा, गनी खान जिला रायबरेली का कथन है कि मौलवी नूर करीम शाह किदवई जो मान्यवर दाता के एक फकीर थे उनकी घटना है। जब वह फकीरी वस्त्र नहीं प्राप्त कर पाये थे जिला बाराबंकी के तहसीलदार के यहाँ शिक्षक थे। तहसीलदार महोदय कश्मीरी ब्राह्मण थे। एक दिन तहसीलदार महोदय से मिलने हेतु किदवई महोदय गये थे। उनके बाहरी कमरे में नूर करीम साहब ठहरे थे। मकान उसी समय किराये पर लिया गया था। आधी रात की बेला थी। महिलाओं के कमरे से हल्ला आरम्भ हो गया। दो तीन आदमी हल्ला सुनकर छत पर गये तो उनको भी किसी प्रबल शक्ति ने नीचे उठाकर फेंक दिया। अत: लोग किनारे खड़े होकर देखने लगे। सभी पलंग उलटे हुए थे और सोने वाले पलंग के नीचे से चिल्ला रहे थे। नूर करीम साहब भी वहाँ गये। उनके पहुँचते ही सब शान्त हो गया। और पलंग अपने आप सीधे हो गये। तहसीलदार महोदय की धर्म पत्नी ने कहा कि मौलवी साहब! यदि आप दाता वारिस पाक के फकीर न होते तो मैं आपकी भी खबर लेती। अत: उनका आदर करना अनिवार्य है। नूर करीम साहब ने कहा कि मेरी यह इच्छा है कि आप इन लोगों को न सतायें। उन्होंने उत्तर में कहा कि आप इन लोगों को समझा दें कि यह लोग हमको भी न कष्ट पहुँचावें। यदि यह भी आप नहीं मानेंगे तो हम स्वयं कष्ट सह लेंगे। मौलवी साहब ने कहा तहसीलदार साहब तुम्हारी जगह न लेंगे जहाँ तक कहो तुम्हारे लिये छोड़ दें। अन्तत: तहसीलदार साहब ने वह मकान छोड़ दिया।

मुंशी अब्दुल गनी साहब वारसी लिखते हैं कि पूज्य दाता वारिस विश्राम कर रहे थे और कुछ लोग बैठे हुए हाथ पाँव दबा रहे थे। एक आदमी उपस्थित हुआ जिसकी वेश-भूषा अध्यापक जैसी थी, बगल में एक चादर दबी हुई थी। बड़े ही विश्वास सहित दाता वारिस का कदम चूमा और हम लोगों के भाँति ही बैठ गया। वह आदमी थोड़ी देर बाद झूमने लगा और नाक द्वारा ज़ोर-ज़ोर से साँस लेने लगा। जब उसकी दशा अधिक परिवर्तित होने लगी तो सरकार ने सिर उठाया और प्यार से उसकी पीठ पर एक घूंसा लगाया। वह उस घूंसे के साथ सिर भूमि पर रख दिया। उसके स्वाँस का जोर समाप्त हो गया। थोड़ी देर वह बेहोश रहा। दाता ने भी अपनी चादर पुनीत शरीर पर डाल दिया। कुछ समय पश्चात् सरकार ने उसको आदेश दिया 'अच्छा जाओ फिर भेंट होगी।' हम लोग देख रहे थे कि द्वार के कपाट बन्द हैं किन्तु वह दो-तीन पग चलकर अन्तर्ध्यान हो गया। हम लोगों को चकित देखकर

दाता ने इस भाँति कहा 'आश्चर्य क्या है?' यह आदमी नहीं था, जिन था। सारांश यह है कि मनुष्य की भाँति जिन भी आपके शिष्य थे। कुछ ऐसी भी घटनायें हैं कि विचार होता है कि उनके पात्र जिन ही हों परन्तु सरकार ने अपने मुख से उनके सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा है जैसा कि पत्र लेखक वारसी दरबार हाजी अवघट शाह लिखते हैं कि एक रात की घटना है। बारह बज चुके थे। सरकार की ड्योढ़ी का मुख्य द्वार बन्द कर दिया गया था। मैं रहीम शाह साहब के पास मकान के बाहरी भाग में बैठा हुआ था। अंधेरी रात थी, दूर से मुझे दो चाँद दिखाई पड़ने लगे जिनमें से एक अधिक प्रकाशमान था। शनै: शनै: दोनों मेरे निकट आते गये जिस समय दोनों चबूतरे पर आ गये तो ज्ञात हुआ कि वह आदमी थे। किन्तु उनके चेहरे चाँद के समान चमक रहे थे। दोनों सीधे दरवाजे पर पहुँचे। भीतर से फैजू शह ने भीतरी द्वार खोलकर कहा कि मुख्य द्वारा खोलकर उन लोगों को भीतर लाओ। मैंने उनको बुलाया किन्तु वह चौखट पर सिर रखे पड़े हुए थे। उठते ही न थे। फैजू शाह स्वयं आये और उनका हाथ पकड़कर उठा ले गये। मैंने देखा दोनों चाँद के टुकड़े करवद्ध हो पूज्य दाता की सेवा में उपस्थित हुए। मान्यवर ने उनसे कुछ कहा अथवा उन्हें कुछ आदेश दिया जिसे सुनकर वह दोनों उलटे पाँव वापस हुए और चले गये और यह रहस्य ही बना रहा कि वह कौन थे? क्यों आये थे? और कहाँ गये? सरकार वारिस पाक की कुछ घटनायें ऐसी होती थीं कि जिन्होंने अपनी आँखों से देखा है वह चकित रह गये हैं।

पशु-पक्षियों पर दाता वारिस के अधिकार

जिस प्रकार मानव, जिन, भूत-प्रेत दाता वारिस के प्रेम में वंशीभूत थे उसी प्रकार पशु-पक्षी तथा जल प्राणी भी सरकार वारिस पाक के वंशीभूत थे और आपके प्रेम में सने थे। सैय्यद मारूफ शाह वारसी का कथन है कि मैंने स्वयं देखा है कि हिंसक पशु और पक्षी भी दाता वारिस से भयभीत नहीं होते थे। मेरा अपना निरीक्षण है कि बहुधा जब आप जंगल की ओर जाते तो वन पक्षी, कबूतर, पंडुक इत्यादि सरकार वारिस पाक के निकट आते और आपके पवित्र शरीर से लिपट जाते थे। नहर या पोखरे, तालाब के किनारे जब आप खड़े होते तो मछलियाँ पानी के किनारे एकत्र हो जाती थीं।

मौलवी तहैय्युर वारसी लिखते हैं कि एक बार दाता वारिस रूदौली शरीफ में विद्यमान थे। देखा गया कि शामा पक्षीयों का एक विशाल दल उड़ता हुआ आया और वारिस पिया के पुनीत शरीर पर कोलाहल करने लगा। उपस्थित लोगों ने

सविनय पूछा। दाता यह क्या बात है ? आप मुस्कुराये और वह सब उड़ गईं।

सैय्यद मारूफ शाह को लाल नामक पक्षी पालने का बड़ा शौक था। उन्होंने कई पिंजड़ों में लाल पाल रखा था। एक बार दाता वारिस उनके मकान पर पधारे थे। दाता ने पिंजड़े खोल दिये और सभी लाल मुनियाँ उड़ गईं। यह देख सैय्यद मारूफ शाह को बहुत दुःख हुआ। मारूफ शाह ने कहा कि मेरा सम्पूर्ण श्रम नष्ट हो गया। मैंने बड़ी कठिनाई में खोज-खोज कर इनको एकत्रित किया था। वारिस दाता ने कहा 'अभी तो दूर नहीं गये हैं बुला लो।' उन्होंने पुनः कहा कि उड़ने वाली पक्षियाँ हैं। कहीं की कहीं पहुँची होंगी। दाता ने पुनः कहा 'यह क्या कहा?' इतना कहना था कि वह सब लाल मुनिया दाता वारिस के पुनीत शरीर पर बैठ गईं और दाता वारिस बार-बार कहते 'पकड़ लो।' सैय्यद साहब ने नतमस्तक हो विनय किया जब दाता ने इन्हें स्वतन्त्र कर दिया तो फिर मैं बन्द करने वाला कौन हूँ? जाने दीजिये। उस दिन से सैय्यद मारूफ शाह ने कभी पक्षियों को पिंजड़े में बन्द नहीं किया।

मौलाना तहैय्युर वारसी ऐनुल यकीन में लिखते हैं कि एक दिन दाता वारिस फतेहपुर में विराजमान थे। मैं भी दर्शनार्थ उपस्थित हुआ। एक महोदय ने कहा कि हमने जंगल की ओर जंगली चकोर का एक जोड़ा देखा है। आपने पूछा 'तुममें से कोई पालेगा।' एक साहब ने पालने की इच्छा व्यक्त किया तो आपने आदेश दिया 'पकड़ लाओ।' उन्होंने जाकर चकोरों को इस प्रकार उठा लिया जैसे कोई वस्तु रखी हो। चकोरों ने अपने को पकड़वाना स्वीकार किया। देखने वालों ने स्वीकार किया कि पक्षी आपका आदेश पालन मन से करते हैं। ऐनुल यकीन में लिखा है कि एक बार पूज्य दाता रूदौली शरीफ में विद्यमान थे। मकान के भीतर विश्राम कर रहे थे। अचानक चींटियाँ आने लगीं और इतनी अधिक हो गईं कि ऊपर से नीचे तक चीटिंया दिखाई देने लगीं। घर की महिलायें घबरा उठीं सरकार से सभी ने कहा चींटियों ने परेशान कर दिया है, चींटियां बहुत है। आपने मुस्कुराते हुए कहा 'कहाँ हैं?' यह कहना था कि सभी चींटियाँ गायब हो गईं। सैय्यद मारूफ शाह बयान करते हैं कि हमने देखा है कि जब चींटियाँ दाता वारिस के बिछौने पर चढ़ आती थीं तो आप आदेश देते थे। मकान के कोनों में चीनी डाल दो चींटियाँ भूखी हैं। जब चीनी डाल दी जाती तो चींटियां गायब हो जाती थीं।

रहीम बख्श निवासी गदिया लिखते हैं कि दाता वारिस पाक एक बार भ्रमण करते हुए पधारे थे। एक रात गदिया में मेरे मकान पर विराजमान रहे। हमारे द्वार पर

नीम तले साये में विश्राम कर रहे थे। मैं और मेरे भाई तथा कुछ अन्य लोग सरकार की सेवा में उपस्थित थे। जब हम लोगों ने समझा कि सरकार सोने लगे तो हम लोग भी थोड़ी दूर किनारे सो रहे। आधी रात के समय मेरे भाई मनसब अली उठे और सरकार के बिछौने पर भेड़िया को देखकर घबरा उठे जोर-जोर से चिल्लाने लगे और सभी लोग सजग हो गये। भेड़िया जंगल की ओर चला गया। इसके पश्चात् ज्ञात हुआ कि भेड़िया सरकार के आदेश से उपस्थित हुआ था। वह केवल सरकार का दर्शन करना चाहता था।

मौलवी अहमद हुसैन साहब वारसी निवासी रहरौंवा जिला बाराबंकी ब्यान करते हैं कि मेरी एक पालतू कुतिया थी। मैं उस पर बड़ी स्नेह रखता था। जब दाता वारिस मेरे घर विराजमान हुए और उनके सामने भोजन परोसा गया तो आपने प्रत्येक वस्तु से थोड़ा-थोड़ा निकाल कर उसको प्रदान किया और कहा 'यह कुतिया बुड्ढी हो गई है उसको मूंग की खिचड़ी देना चाहिये। हड्डी दाँतों से नहीं चबा सकती।' जब रात को दाता वारिस को भोजन परोसा गया तो कुतिया वहाँ नहीं थी। भोजन करने के पश्चात् फिर वह कहीं से आई। हमने उसको भोजन दिया। किन्तु उसने खाया नहीं। मैंने दाता से कहा कि वह कुतिया रात में कुछ नहीं खायी है। आपने पुनः कहा 'बुड्ढी हो गई है।' दूसरे दिन दाता वारिस अन्यत्र चले गये। जब मैं उनको पहुँचा कर वापस आया तो ज्ञात हुआ कि कुछ खाती नहीं है। मेरे भांजे ने कहा कि सरकार वारिस पिया के कथनानुसार इसको मूंग की खिचड़ी दी जाये। जब उसको मूंग की खिचड़ी दी गई तो उसमें से थोड़ी सी खाया और अपने अगले दोनों पंजों से उठाकर दाता वारिस के विश्राम स्थल पर लेट गई और अपने अगले पंजों पर सिर रखकर मर गई। उस कुतिया के भाव-भंगियाओं का एक विचित्र प्रेम प्रदर्शन दिखाई पड़ता था।

मुंशी नवाब हुसैन मारहरवी का कथन है कि एक बार दादा मियाँ सैय्यद कुर्बान अली शाह रह० का उर्स था। मैं भी देवा शरीफ में उपस्थित था। भीड़ बहुत अधिक थी। एक आदमी ने एक दुकान से एक बेंत उचक लिया और चलता बना। सामने एक काला कुत्ता बैठा हुआ था। वह उठा और उचक्के की टाँग पकड़ लिया बहुत छुड़ाने से भी नहीं छोड़ता था। उस उचक्के ने अपने मन में कुछ सोचा और पीछे फिरा यहाँ तक कि दुकान पर पहुँच कर उसने बेंत का मूल्य चुका दिया। कुत्ता तो चला गया और कुछ लोगों के साथ मैं भी देखता रहा।

शेख हुसैन अली साहब वारसी जमींदार सादा मऊ का कथन है कि एक बार

कार्तिक के उर्स में चौबे जी का एक घोड़ा चोरी चला गया। लोग खोजते-खोजते थक गये। इसी विचार में अधिक व्याकुल थे। इसी दशा में मैं भी उन लोगों से मिला मैंने उन लोगों से कहा कि आप लोग दाता वारिस से प्रार्थना करें। जब वह लोग दाता की सेवा में उपस्थित हुए और घोड़े के मिलने की प्रार्थना किया। आपने यह कहा 'सैर करके आ जायेगा।' सभी लोग दिन भर मेला में खोज कर हार गये किन्तु कहीं घोड़ा दिखाई नहीं पड़ा। निराश होकर चौबेजी और उनके साथी बैठ गये। सन्ध्या को देखते हैं कि उनका घोड़ा अपने स्थान पर आकर खड़ा है।

प्रत्येक वस्तुओं में आपका सामर्थ्य और यश प्रकट था। हिंसक, अहिंसक पशुओं तथा पक्षियों पर आपके आन्तरिक शासन का प्रभाव था। ऐसे हिंसक पशुओं और प्राणियों के आक्रमण से आप सुरक्षित थे जो बिना कष्ट दिये न मानने वाले होते हैं। यदि कभी भूल से किसी कष्टदायक जन्तु ने कष्ट भी पहुँचाया तो स्वयं उसका नाश हो गया। सैय्यद मारूफ शाह वारसी लिखते हैं। सरकार वारिस पाक के आस्ताने के समीप मुनव्वर अली सिपाही का घर था। एक बार दाता वारिस सिपाही के घर विश्राम कर रहे थे। संयोग से एक काला नाग छत से सरकार वारिस पाक के ऊपर गिर पड़ा। आपने उसको हाथ से उठाकर फेंक दिया। फेंकते समय उस सर्प ने दाता के अंगूठे में काट लिया। यह घटना देखकर घर की महिलायें भयभीत हो उठीं। उसी समय सरकार ने पानी मंगाया और स्नान करने लगे। उधर सर्प की दशा हुई कि वह सम्मुख पड़ा सिर पटकता था और अंततः बिना किसी के मारे सिर पटक-पटक कर प्राण दे दिया। जब यह समाचार फैला तो मैं भी वहाँ पहुँचा बहुत से लोग आ चुके थे। कुछ लोगों ने कहा कि कुछ दवा-दारू का शीघ्र प्रबन्ध करना चाहिये। आपने हंसते हुए कहा 'मात्र नहा लेना पर्याप्त है।' पुनः आपने इस प्रकार कहा 'आशिक का गोश्त दरिन्दों पर हराम है। न साँप का जहर असर कर सकता है न शेर खा सकता है।'

निमंत्रण की विभूतियाँ

यह तो विदित है कि पूज्य हाजी बाबा दाता वारिस, नख से सिर तक प्रेम स्वरूप थे। प्रत्येक छोटा-बड़ा और अमीर-गरीब आप पर न्यौछावर होते रहते थे। जनसमूह आप पर उसी भाँति टूट-टूट कर गिरता था जिस प्रकार पतिंगे दीपक पर गिरते हैं। जो भी आपको देखता उसके मन में यह उमंग और भावना उत्पन्न होती थी कि अपना तन, मन और धन सब भेंट चढ़ा दे। कौन सी ऐसी दुर्लभ वस्तु मिल जाती जो श्रीमान दाता वारिस को भेंट कर दी जाती। प्रत्येक जन ऐसी ही अभिलाषा

रखता था और आपके प्रति लोगों के ऐसे मनोद्गार थे। वारसी सम्प्रदाय और मत में अथवा दाता वारिस के अनुचर सभी श्रेणी के लोग थे। राजा हो या रंक, धनी हो या कंगाल सभी वर्गों के लोग थे। प्रत्येक की प्रबल इच्छा होती कि अपना सर्वस्व आपको भेंट कर देता। जहाँ राजा-महाराजा सम्मान में हजारों रूपये व्यय करते थे वहाँ निर्धन और दीन आपके पथ में अपनी आँखें बिछा देते थे। किन्तु दाता वारिस की प्रेम दृष्टि में सभी समान थे। वास्तव में गरीबों का बड़ा सम्मान और आदर करते थे। पदयात्रा कर उनके घरों में जाते थे। उनकी कथरी, गुदरी पर आनन्द से बैठते थे। उन पर प्रेम और सहानुभूति दर्शाते थे। वारिस पिया के अतिथ्य सत्कार का सुअवसर अधिकांशतः ऐसे लोगों को ही प्राप्त होता था जो रात की रोटी के लिये तरसते थे। जिनके यहाँ राम नाम के सिवा कुछ न होता था। आपके प्रेमियों में अधिक संख्या गरीबों और निर्धन लोगों की है जो सम्मानित हुए हैं। निर्धन लोगों में यह बात प्रसिद्ध है कि आप साग पड़ी दाल बहुत पसन्द करते थे। अरहर के दाल की खिचड़ी और पुदीने की चटनी बहुत चाव से ग्रहण करते थे। बथुए और खोर्फा (चौराई) के साग से आपको बड़ी रूचि थी। धनी वर्ग लोगों में चर्चा होती कि शीर विरजं (खीर), शामी कबाब अथवा फिरनी आपको पसन्द थी। वास्तव में न किसी वस्तु की इच्छा थी और न किसी से रूचि थी न किसी वस्तु से घृणा ही करते थे। हाँ! यह बात अवश्य थी सत्कारी लोगों का मन रखने हेतु आप भोज्य पदार्थों की बड़ाई कर दिया करते थे। वास्तव में निर्धन वर्ग का सम्मान और उनकी सत्कारिता आदरणीय है। कुछ ऐसी मुख्य घटनायें निर्धन वर्ग की जो दाता वारिस के सत्कार में हैं जो स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य हैं जिन्होंने प्राण को दांव पर रखकर सरकार का अतिथ्य सत्कार किया है।

सैय्यद अली हामिद शाह गद्दीधारी सौंडी जिला हरदोई मुंशी सादिक अली द्वारा अंकित करते हैं कि पूज्य दाता वारिस के एक शिष्य को आपके पधारने की सूचना मिली। सरकार जब उस बस्ती में आते थे तो उसी के घर पर निवास करते थे। अतः यह समाचार पाकर वह व्याकुल हो उठी क्योंकि उस समय उसके पास तीस मीटर गाढ़े के अतिरिक्त और कुछ ना था। दाता वारिस की अतिथि परिचर्या कोई सरल बात नहीं थी। एक भीड़ उनके साथ होती थी और सैकड़ों आदमी सदैव उनके संग होते थे। वह इसी दशा में उनका एक सम्बन्धी उनके घर आया और कुछ रूपये तथा आभूषण कुछ मास के लिये रखकर चला गया और कहा कि कुछ दिनों पश्चात् जब लौटूंगा अपनी धरोहर ले जाऊंगा। अतः उस दिन से यह सोचा कि यह

ईश्वरीय सहायता है कुछ दिनों में इतने रूपये प्रयत्न करके मैं एकत्र कर लूंगा। उस गरीब ने दाता वारिस के विराजमान होने पर ऐसा ही किया। जब सरकार विदा होने लगे तो आपने उसको यह आदेश दिया 'पराये माल से अतिथ्य सत्कार करते हो।' उसने प्रार्थना किया कि मान्यवर ने दिया है मैं सब चुका दूंगा। दाता ने पुनः उसे इस प्रकार कहा 'हाँ, हाँ निश्चय अनुसार सब दे देना।' अतः मान्यवर दाता के कथनानुसार शीघ्र ही उसके पास रूपये हो गये और अपने सम्बन्धी के आने पर उसने उसको वस्तुऐं उसको सौंप दिया। अर्थहीनजनों की यह दशा थी कि वह अपनी सामग्रियों को बेच डालते थे और सरकार पर न्यौछावर करते रहते थे। वास्तविकता यह भी आप इसको अच्छा नहीं जानते थे और नहीं चाहते थे कि कोई व्यक्ति अपनी सामर्थ्य से अधिक व्यय कर, व्यय भार से दलित रहे। पर मध्य वर्ग के लोग कर्ज लेते और आप पर खर्च करते थे।

शेख हुसैन अली नवाब सादा मऊ का कथन है कि पूज्य दाता वारिस मुझको बार-बार समझाते थे कि तुम कर्ज न लिया करो। जो घर में हो बस वही खर्च करो। किन्तु अपनी-अपनी उमंग थी और अपना-अपना आवेश। प्रेम में कोई किसी से पीछे नहीं रहना चाहता था। सबका यही विचार था कि हम कहाँ से लाकर सरकार की स्वागत में व्यय कर दें। जो लोग दाता को निमंत्रण देते वह यह विचार रखते थे कि उनके कार्यों में वृद्धि अवश्य होगी और जो व्यय होगा भगवान उससे अधिक प्रदान करेगा। मान्यवर वारिस पाक के साथ सौ, दो सौ तथा चार सौ तक दर्शनार्थी साथ हो जाते थे। रास्ता चलना कठिन हो जाता था। पर बात ऐसी थी कि वारिस पिया जिनके यहाँ भोजन करते उसके भोजन में वृद्धि हो जाती थी और भोज्य सामग्री सभी के लिये पर्याप्त हो जाती थी। यह एक साधारण सी बात थी। प्रत्येक स्थान पर देखा गया है कि तैयार भोजन से खाने वालों की संख्या अधिक होते हुए भी सभी लोग खा-पीकर सन्तुष्ट हो जाते थे।

मौलवी अली अहमद खाँ साहब वकील लिखते हैं कि १३ अप्रैल १८९६ ई० को वारिस पिया ऐसे समय आगरा में विराजमान हुए कि सुर्यास्त हो चुका था और कुछ रात भी बीत चुकी थी। आने के पूर्व कोई सूचना भी नहीं थी। पूज्य दाता हेतु भोजन तो तैयार हो गया किन्तु दर्शनार्थियों की अधिकता थी। अनुमानतः उस समय संख्या दो ढ़ाई सौ की होगी। सोचा गया कि जितना भोजन मुसलमान रसोइयों के यहाँ प्राप्त हो सके मंगा लिया जाय। समय बीत चुका था जो कुछ प्राप्त हुआ वह उपस्थित सज्जनों हेतु अल्प ही था। विवश होकर वहीं भोजन परोसा गया। सभी

लोग उसी में भोजन कर सन्तुष्ट हो गये। इस घटना से अधिक आश्चर्यजनक बात तो यह घटना है जिसे मेरी बहन ने ब्यान किया जब कभी सरकार दाता वारिस मेरे घर फिरोजाबाद पधारे हैं तब दस या बीस सेर से अधिक से अधिक जिन्स खाद्य सामग्री खर्च नहीं हुई है। यद्यपि उपस्थितगण की संख्या अधिक से अधिक रही है। सभी लोगों को भोजन कराया गया है और सभी की तृप्ति हुई है।

मुंशी अब्दुल गनी खाँ का कथन है कि जब पूज्य वारिस दाता मेरी प्रार्थना से मेरे पुरवा में पधारते थे तो मैं दाता वारिस और उनके दर्शनार्थियों के खाने की व्यवस्था करता था। एक बार की बात है मेरे एक निकट सम्बन्धी जो धनी आदमी थे उन्होंने मुझसे आग्रह किया था कि जब सरकार वारिस पाक तुम्हारे यहाँ पधारें तो रास्ते में मेरा घर है, यहाँ एक दिन अवश्य निवास करें। मैं सब कुछ प्रबन्ध करूंगा। उन्होंने इतना आग्रह किया मैं बाध्य हो गया। अतः जब दाता मेरे पुरवा में जाने लगे तो मैंने उन्हें सूचना भेजवा दिया और स्वयं निश्चित हो गया किन्तु सतर्कता हेतु चार सेर आटा, चार सेर चावल और इसी के अनुसार दाल इत्यादि अपने संग रख लिया। जब मान्यवर वारिस पाक रायबरेली से यहाँ आने लगे तो आपके साथ लगभग तीन सौ आदमी हो गये। जब उनके ग्राम के निकट हम लोग आये तो इब्राहिम हुसैन वकील को पूज्यदाता ने आदेश दिया 'जाकर देखो तुम लोगों के ठहरने का भी कहीं प्रबन्ध है।' मुंशी अब्दुलगनी खाँ वारसी का कहना है कि मुझे तो पूर्ण विश्वास था कि वहाँ प्रबन्ध ठीक होगा किन्तु सरकार वारिस पाक के आदेश-पालन हेतु गया। वहाँ की दशा देखकर मुझे बड़ा खेद हुआ कोठी में ताला पड़ा हुआ है। नौकर-चाकर और स्वयं तअल्लुकेदार महोदय कोई भी वहाँ उपस्थित नहीं था। मैं बहुत लज्जित हुआ मन में विचार करने लगा अब इन लोगों के रहने की कहाँ व्यवस्था की जाये। साथियों के विश्राम हेतु किस भाँति डेरे तम्बू आदि की व्यवस्था हो। किसी को कष्ट न हो। क्योंकि अपने साथ वालों का सरकार बहुत ध्यान रखते थे। जब कोई ठिकाना नहीं दिखाई पड़ा तो मैं कोर्ट आफ वर्ड के आफिस गया और कुछ कमरे खाली कराया। सरकार दाता वारिस स्वयं पहुँचे और विश्राम करने लगे। मैंने अपने संग लाई हुई जिन्स अपने सेवकों को दिया और उनको भोजन तैयार करने का आदेश दिया। मैं यह चाहता था कि दाता वारिस को समय से भोजन दिया जाय।

जैसे ही भोजन तैयार हुआ मैंने सरकार के सम्मुख प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् मैंने बीस-बीस लोगों को एक साथ भोजन कराना आरम्भ किया। उनके भोजन करने के पश्चात् भंडारे में कोई अन्तर न देखकर, मैंने पुनः दो बार बीस-बीस लोगों

को और खिलाया। अब मेरी समझ में आया कि इस समय सरकार स्वयं भोज दे रहे हैं। मैंने एक ही बार दो सौ लोगों को बिठा दिया और बीस पात्रों में सालन और दाल निकलवा कर रख दिया तो भी भण्डारे की भोज्य सामग्री नहीं कम हुई। इस प्रकार तीन सौ आदमी सरकार के साथ आये हुए और सवा सौ उस गाँव के लोग जो वहाँ उपस्थित थे। इन सबके भोजन करने के पश्चात् भी खाने की मात्रा पूर्ववत बनी हुई थी। शेष भोजन सामग्री रात को बाँट दी गई। सभी लोग चकित हो रहे थे किन्तु कुछ कहा नहीं जाता था।

शेख हुसैन अली नवाब सादा मऊ लिखते हैं कि मान्यवर दाता वारिस जब मेरे यहाँ पधारे तो मैंने सौ आदमियों का भोजन तैयार कराया था पर आपके साथ लगभग चार सौ आदमी थे। आपने मुझसे कहा 'हुसैन अली जनसमूह अधिक है।' मैंने प्रार्थना किया कि सरकार की दया है। कुछ समय पश्चात् दाता वारिस ने एक गुरू-चेले की कथा सुनाया 'शिष्य बहुत घबराया हुआ था। उसके यहाँ आदमी अधिक आ गये थे। शिष्य ने गुरू के चरणों में माथा टेक दिया कि अब मान-सम्मान आपके हाथ है।' गुरू ने कहा 'तुम हमारी चादर रोटियों पर डाल दो और बिस्मिल्लाह कहकर देते रहो।' उसने यही किया और सबने खा लिया। मैंने दाता का आदेश सुना और समझा। पुन: आपके पुनीत वस्त्र को रोटियों तथा अन्य भोजन सामग्रियों पर डाल दिया और आगन्तुकों को भोजन कराने लगा। अन्तत: सभी लोगों ने आसानी से पेट भर भोजन किया। मैंने अनुभव किया है कि जब भी दाता वारिस मेरे घर अभ्यागत हुए भोजन में महा वृद्धि हुई।

चौधरी खुदा बख्श महोदय वारसी निवासी आगरा का कथन है कि मेरी लड़की का विवाह था। वर पक्ष वाले बहुत धनीमानी लोग थे। मुझे भय था कि बारात में अधिक लोग आवेंगे। शादी-विवाह की बात है। ऐसा न हो जाय कि बदनामी (अपयश) का कारण बन जाय। अत: मैं पूज्य दाता वारिस की सेवा में उपस्थित हो प्रार्थी हुआ कि मेरी बेटी का विवाह है। बड़ी जगह से बारात आने वाली है। आपने स्नेहपूर्वक कहा 'कोई बात नहीं।' मैं चला आया और अपने अनुमान से खाने पीने का प्रबन्ध किया। बारात अनुमान से बहुत अधिक थी। मैंने वारिस दाता का पुनीत वस्त्र भोजन पर डाल दिया। लोगों को भोजन कराना आरम्भ हुआ। आश्चर्य की बात यह थी कि फीरनी के पात्र जो गिनती में प्रत्येक के लिये एक ही था। उनमें इतनी बढ़ोत्री हुई कि एक-एक ने चार-चार पियालियाँ ग्रहण किया किन्तु फिर भी कम न हुई और बहुत सी बच गई। अन्त में सभी किस्म के

भोजन शेष रहे जो गाँव केलोगों में बाँटी गई। बाराती आश्चर्य में थे कितना अधिक प्रबन्ध किया गया था और मैं मन ही मन दाता वारिस को धन्यवाद देता था कि धन्य है आपके आदेश का यश।

रोग निवारण

जिस भाँति पूज्य दाता वारिस आत्म-रोगों के वैद्य थे उसी भाँति आप शारीरिक रोगों को भी एक दृष्टि अथवा संकेत से नष्ट कर देते थे। यह विचित्र बात थी कि आप न कोई दवा बताते और न कोई मंत्र पढ़ते और न रोग निवारण की क्रिया करते। क्योंकि आपके मत तथा पंथ के अनुसार तंत्र-मंत्र, दुआ-तावीज और गंडा-बढ़ी सब कुछ वर्जित है। परन्तु संकेत मात्र से रोगी स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर लेता था। तात्पर्य यह है कि वारिस दाता की वाणी मात्र का प्रभाव था जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में प्रकट होता था। यहीं तक नहीं यदि रोगी आपके सामने उपस्थित हो जाता तो वह रोग मुक्त हो जाता था। दूर-निकट जो भी आपसे सम्बन्धित होता आप उसके रोग-कष्टों में उसके सहायक होते और निवारणकर्ता होते थे।

जैसा कि मौलाना तहैय्युर वारसी पुस्तक ऐनुल यकीन में लिखते हैं। मौलवी कासिम अली फतेहपुरी को यह शंका हो गयी थी कि वारिस दाता नमाज नहीं पढ़ते हैं। एक बार बलरामपुर में मौलवी कासिम अली रोगग्रस्त हुए। रोगावस्था में जब अचेतनावस्था में पड़े तो उन्होंने देखा कि पुनीत वारिस दाता सम्मुख खड़े हैं और कहते हैं 'मौलवी! मौलवी अब क्यों सैर-तमाशा नहीं करते? रोग तो कुछ भी नहीं है।' यह वाणी सुनकर मौलवी साहब चौक पड़े। उन्हें ज्ञात हुआ कि वह रोग मुक्त हैं बड़े प्रेम और श्रद्धा से सरकार की सेवा में उपस्थित होकर शिष्य हो गये। इसी प्रकार की एक अन्य घटना भी ऐनुल यकीन में अंकित है। एक आदमी रावलपिण्डी में रोगग्रस्त हुआ। उसकी दवा-दारू करते-करते हकीम और वैद्य विवश हो गये। एक रात रोते-रोते वह सो गया। उसने स्वप्न में एक पीत वस्त्रधारी महात्मा को देखा जो कह रहे हैं 'क्यों घबराता है? तू अच्छा हो गया हाथ ला तुझे शिष्य कर लिया जाय।' तुरन्त उसकी निंद्रा भंग हो गई। उसने अपने को ठीक और स्वस्थ पाया। केवल दुर्बलता थी वह भी शीघ्र दूर हो गई। वह व्यक्ति खोजते-खोजते रावलपिण्डी से देवा शरीफ आया। सरकार वारिस पाक का दर्शन करते ही कहने लगा बहुत दिनों से मैं आपका दर्शनाभिलाषी था। दाता ने उसके लिए आदेश किया 'हम तुम्हारे साथ हैं, मुहब्बत है तो कुछ दूर नहीं, जाओ और कुछ गम न करो।'

ऐनुल यकीन में अंकित है। मान्यवर दाता वारिस चन्द्रगढ़ में विद्यमान थे

एक खाकरोब (झाड़ू देने वाला) उपस्थित हुआ जो कुष्ठ रोगी था। प्रेम और श्रद्धा लिये हुए दूर बैठा चिल्ला-चिल्ला कर रोता और कहता था। मियाँ अब मेरा हाथ कौन पकड़ेगा? सबके मौला तो आप ठहरे। इसी भाँति दो दिन तक उपस्थित होता और यही कहता था। दाता वारिस ने उसकी प्रबल अभिलाषा देखकर कहा 'मैं तुझको आँखों से शिष्य करता हूँ। मुझे अच्छी तरह देख ले।' उसका देखना था कि उसी समय उसका शरीर सुन्दर हो उठा और अपने रोग से मुक्त हो गया। आनन्द विभोर हो उठा मानो उसे आठों सिद्धि और नवों निद्धि प्राप्त हो गई।

चौधरी राहत हुसैन साहब जमींदार रामदाना, जिला-सीतापुर की घटना है। एक बार खाँसी और ज्वर में फंस गये। इस रोग ने इतना जड़ पकड़ा कि चिकित्सकों ने क्षय रोग बता दिया। दुर्बलता बढ़ती गई और चारपाई पकड़ लिया। चलना फिरना दूभर हो गया। भोजन करने की इच्छा नहीं होती थी। चिन्ता इतनी अधिक हो गई कि रात में नींद नहीं आती थी। संयोग से उसी समय दाता वारिस रामदाना पधारे और चौधरी राहत हुसैन की कोठी में ठहरे। राहत हुसैन साहब का कथन है कि रोग की अधिकता और अपनी असमर्थता के कारण वारिस दाता की सेवा में उपस्थित न हो सका। जब सरकार विदा होने को हुए तो नूर मुहम्मद शाह को भेजकर मुझे बुलाया। बड़ी कठिनाई से किसी प्रकार सरकार तक पहुँचा सलाम बन्दगी करके एक किनारे बैठ गया। आपने मेरी ओर देखकर नूर मुहम्मद शाह से कहा 'राहत हुसैन बहुत दुबले हो गये हैं।' उन्होंने निवेदन किया बहुत दिनों से बीमार हैं। यह सुनकर आपने कहा 'तुमको क्या मालूम? यह तो बहुत अच्छे हैं केवल दुबले हो गये हैं।' अनेकों बार कहा 'बहुत अच्छे हैं निर्बलता भी जाती रहेगी।' यह कहते ही सरकार उठ खड़े हुए और पुनः कहा 'राहत हुसैन हम तुम मिल तो लें।' राहत हुसैन का कथन है कि दाता वारिस का आदेश सुनकर मुझे जान पड़ा कि अब मेरा अन्तिम समय है। अतः मैं चरणों पर झुकने लगा। पुनः आपने यही कहा 'आओ मिल लो।' इतना कहकर मुझे अंगों में भर लिया। पुनः बैठकर नूर मुहम्मद शाह से कहा 'राहत हुसैन नवाब अब पूर्णतः अच्छे हैं।' इनको कोई रोग नहीं है। उन्होंने कहा सच है। इसी तरह तीन बार भेंटा और विदा कर दिया। मैंने अपनी ओर ध्यान से देखा। मैं पूर्ण स्वस्थ था। मैंने निवेदन किया। मैं स्टेशन तक आपको विदा करने हेतु चलूंगा। सरकार वारिस ने अस्वीकार कर कहा 'तुम अभी निर्बल हो अभी रोगमुक्त हुए हो।' मैंने अनुरोध किया मैं आपकी दया से निरोग हूँ। आपने पुनः कहा बेहतर है। मैं घोड़े पर सवार होकर वारिस पाक को गाड़ी पर बैठाने हेतु स्टेशन तक गया। मुझे थकान

का नाम तक नहीं था। मन हर्षित हो रहा था।

मुंशी अबदुल गनी खाँ साहब रईस पुरवा, गनी खान जिला रायबरेली लिखते हैं कि मैं प्रत्येक वर्ष कार्तिक के उर्स में जाया करता था किन्तु एक वर्ष ऐसा हुआ कि बीमार होने के कारण मैं देवा शरीफ पहुँचने में असमर्थ हो गया और एक पत्र सरकार की पुनीत सेवा में अपने अस्वस्थ्य होने की सूचना प्रेषित किया। मेरे अनुचर को दाता ने एक कटोरे में एक सफेद तस्बीह (माला) रखकर प्रदान किया और यह आदेश दिया कि इस माला को पानी में डाल दें और पानी पी लें। आदेश का पालन कर मैं स्वस्थ्य हो गया। वह माला वर्षों तक मेरे पास थी। ज्वर इत्यादि में मैं रोगी को पिला देता था और वह निरोग हो जाता था। लखनऊ में किसी ने उस माला को उचक लिया जिसका मुझे घोर दुःख रहा। ठाकुर पंचम सिंह मलावली की घटना है कि उनका खून दूषित हो गया था और यही प्रार्थना करने हेतु वह देवा शरीफ सरकार की सेवा में उपस्थित हुए। दाता वारिस ने एक व्यक्ति को सम्बोधित कर कहा 'जिसकी आयु पचास वर्ष से अधिक हो जाती है। उसको यह रोग नहीं होता।' ठाकुर साहब का कथन है कि दूसरे ही दिन से मुझे आराम मिलने लगा और मैं पूर्णतः स्वस्थ्य हो गया।

काजी रहमत अली महोदय अकबराबादी लिखते हैं कि मेरे भ्राता मुहम्मद बख्श बहुत ही चिड़चिड़े स्वभाव के थे। अतः उनको किसी ने पारा खिला दिया। पारे ने उनका शरीर छलनी कर दिया तथा अंगुलियाँ सड़कर गिरने लगीं। पूरे शरीर से दुर्गन्ध आने लगी। उनके निकट रहना भी कठिन हो रहा था। संयोग से दाता वारिस पधारे। लोगों ने दालान में मेरे भाई को पूज्य वारिस दाता के सामने उपस्थित किया। आपने उनकी पीठ पर अपने हाथ से थपकी दिया और मात्र इतना कहा 'यकीन रखना।' यह कहकर विदा हो गये। तत्काल रोग जाता रहा और वह अपनी वास्तविक रूप में आ गये। सरकार वारिस पाक ने उनका रोग इतना शीघ्र ठीक कर दिया कि देखने वाले आश्चर्य में पड़ जाते थे। काजी रहमत अली अकबराबादी भी एक घटना लिखते हैं कि एक लड़का आगरा में भयंकर रोगी हो गया था। उसकी चेतना डाँवाडोल थी। घोर कष्ट से व्याकुल हो गया था। उसका मूत्र बन्द हो गया था और पत्थरी पड़ गई थी। उस लड़के का पूरा परिवार दुखी हो गया था। लड़के के सम्बन्धियों ने उसको दाता वारिस की सेवा में उपस्थित किया। रो-रो कर सारी बातें सुनाई। दाता ने उनसे कहा 'कल इसकी पथरी अपने आप निकल जायेगी।' दूसरे दिन ऐसा ही हुआ जैसा कि दाता ने कहा था। प्रातः वह लड़का खुशी से उछलता

हुआ दाता वारिस की सेवा में उपस्थित हुआ और चरण स्पर्श कर अपने घर गया।

मौलवी अहमद हुसैन साहब निवासी रहरा मऊ जिला बाराबंकी लिखते हैं कि अब्दुल हई साहब बारसी जगौरी का सम्पूर्ण शरीर पक गया था। हाथ, पाँव, नाक, मुँह, पेट और पीठ प्रत्येक जगह सूजन आ गयी थी और फोड़े जैसा हो गया था। इसी दशा में दाता वारिस की सेवा में हाजिर हुए। आप उनको देखते ही नूर मुहम्मद शाह को आदेश दिया 'इनको नाश्ता दे दो।' अतः नूर मुहम्मद शाह ने उनको पी की छनी पूरियाँ और अरवी का भरता लाकर अब्दुल हई साहब को दिया किन्तु अपने रोग को देखते हुए उन्होंने क्षमा याचना किया। दाता ने आदेश दिया 'बीमारी कौरह तो चली ही जाती है, खा लो।' इस आदेश को सुनते ही मौलाना ने पेट भर खाया। यही खाना उसके लिये रोग की अचूक दवा हो गई। कभी-कभी ऐसा हुआ करता था कि जब रोगी अपने घर से अथवा जिस स्थान से रोगमुक्ति के उद्देश्य से सरकार की सेवा में चलता था वहीं से उसके रोग में कमी आने लगती थी। सरकार में पहुँचने से पूर्व ही वह पूर्ण स्वस्थ्य हो जाता था। जैसा कि ठाकुर पंचम सिंह निवासी मलावली जिला मैनपुरी का कहना है कि एक बार मैं देवा शरीफ जा रहा था जिस श्रेणी के डिब्बे में हम सवार थे उसी डिब्बे में नवाब इसरार हसन खान नसीर अल महाम भोपाल, मुंशी बाल मुकुन्द महोदय, डिप्टी कलक्टर आगरा भी सवार थे। उनकी लड़की आसेब से प्रभावित थी। इस समस्या से वह बहुत दुःखी थे। नवाब साहब ने उनसे यह कह दिया कि मुझसे उनका कार्य हो सकता है। अतः डिप्टी साहब ने मुझसे कहा और आग्रह किया। मैंने उनसे कहा आप उस लड़की को देवा शरीफ वारिस पिया की सेवा में लायें। यदि ईश्वर ने चाहा तो आपका कार्य हो जायेगा। कुछ दिनों पश्चात् वह बालिका दाता वारिस की सेवा में देवा शरीफ पहुँची। प्रथम जब वह लोग मेरे घर पहुँचे तभी एक आदमी दौड़ा हुआ आया और मुझसे कहा जल्दी चलो सरकार ने स्मरण किया है। मैं जब चला तभी वह लोग भी सरकार वारिस पाक की सेवा में आये। दाता वारिस ने उस बालिका की ओर देखा और मेरी ओर देखकर हंसने लगे। उस लड़की की संगी-साथियों ने बताया अब तो यह अच्छी है और लखनऊ से चलते ही एक दम ठीक हो गई। दाता ने भी अपने मुख से यही कहा 'यह तो अच्छी है।' वह लोग चरण स्पर्श कर बिदा हुए तथा धन्यवाद देते चले गये।

मौलवी सैय्यद शरफुद्दीन साहब लिखते हैं कि एक बार वारिस पिया के साथ गोरखपुर जाने का संयोग हुआ। मैं पटना से दाता वारिस की संगत में रहा मैंने

सरकार से प्रार्थना किया कि सीवान तक बंगाल गवर्नमेन्ट है। यहाँ का भार तो मेरे ऊपर था किन्तु इसके आगे यू०पी० प्रान्त है। जहाँ न मेरे कोई मित्र हैं और न कोई परिचय है। यदि दाता को कोई कष्ट हो तो मेरा क्या उत्तरदायित्व होगा। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है। आपने मुझसे कहा 'यहाँ से तुम मेरे मेहमान हो।' रेलगाड़ी प्रातः गोरखपुर पहुँची। स्टेशन पर लोगों की अच्छी खासी भीड़ उपस्थित थी। दाता के साथ आये लोगों को ले जाने हेतु सवारियाँ और हाथी घोड़े सभी उपस्थित थे। मुझे ज्ञात था कि मौलवी सफदर हुसैन साहब एक उदार हृदय और महान, दानी आदमी थे साथ उनके भ्राता हाजी हैदर हुसैन शुष्क स्वभाव व्यक्ति थे। मुझको सफदर हुसैन महोदय से मिलने की बड़ी अभिलाषा थी। सरकार वारिस दाता का मैं अतिथि हो चुका था। मुझे सबसे अच्छी गाड़ी में बैठने का अनुदेश हुआ। उसमें कुछ और लोग भी बैठे हुए थे। मेरे विचार में आया कि गाड़ी में बैठे लोगों में सफदर हुसैन साहब अवश्य होंगे। मेरे पूछने पर ज्ञात हुआ कि वह रोगग्रस्त हैं बिस्तर से उठ नहीं सकते। उनको नुकरस रोग हो गया है। यह सुनकर हमने मन में विचार किया यह सफदर हुसैन के भाई साहब हैं। चूंकि मैं जोड़ी पर था अतः हम लोग प्रथम पधारे। थोड़ी देर पश्चात् दाता वारिस की पालकी भी पहुँची। पुनः मौलवी सफदर हुसैन साहब एक बारादरी में बैठकर आये। लोगों ने हाथों हाथ उनको ऊपर दाता वारिस के निकट पहुँचाया। उस समय उनकी दशा यह थी कि शरीर में पूर्ण सूजन थी, हाथ पाँव सभी फूले हुए थे। वह जूते तक पहनने में असमर्थ थे। मेरा हाथ थामकर रोने लगे और कहने लगे। मुझसे बड़ी भूल हुई कि मैं स्टेशन नहीं जा सका। इससे तो भला था कि मैं मर गया होता। बला से मियाँ पर न्यौछावर हो जाता। मियाँ बहुत ही कोमल स्वभाव है। यहाँ तक कि दस वर्ष पश्चात् आये हैं। ऐसा न हो कि मियाँ अप्रसन्न हो उठें। अन्ततः ऐसे ही थामे हुए उनको दाता वारिस पाक के समीप तक लाया गया। मैंने प्रार्थना किया कि मान्यवर दाता यह रोगग्रस्त होने के कारण स्टेशन तक न जा सके। इनका दोष क्षमा किया जाय। दाता ने सफदर हुसैन साहब के ठेहुनों पर हाथ फेरा और कहा 'सफदर हुसेन तुम अच्छे हो।' तत्पश्चात् लोग उनको उठाकर ले गये और मैं अपनी जगह आ गया। प्रातः की नेहारी में मौलवी सफदर साहब उछलते कूदते आये। मोजा और बूट पहने हुए थे। मेरे गले से लिपट कर रोने लगे। पूज्य दाता वारिस ने कहा 'सफदर हुसैन तुम और शरफुद्दीन भाई हो।'

सैय्यद मारूफ शाह वारसी नकल करते हैं कि मेरे भाँजे सैय्यद मुहम्मद

इस्माईल के दाढ़ में प्रबल दर्द उत्पन्न होने लगा। डाक्टरों की मत के अनुसार सभी चहुवे उखाड़ डाले गये। दाढ़ निकालने से पूरा मुँह पक गया। गले में छेद हो गये थे। जब उनको दवा पिलाई जाती तो गर्दन के इन छेदों से दवा टपकने लगती थी। एक बार जब वारिस पिया उनके घर में पधारे तो घर की महिलाओं ने दाता वारिस को घेर लिया। उनके स्वास्थ्य हेतु प्रार्थी हुईं। सरकार ने मुस्कुराते हुए कहा 'यदि बीस मन का पत्थर भी इनके ऊपर दे मारो तो भी वह नहीं मरेंगे।' इस आदेश से सबको सन्तोष हो गया। किन्तु उनकी दशा बिगड़ती गई यहाँ तक कि एक दिन सबको विश्वास हो गया कि अब यह मर गया। इस दशा में सैय्यद साहब के पिता को घोर दुःख हुआ। भूमि पर लोट-लोट कर रोने लगे किन्तु इस्माईल साहब की माता जी दृढ़ थीं और कहती थीं कि दाता वारिस कभी झूठ नहीं बोलते। कदापि नहीं मरा है। जब अन्य महिलाओं ने लड़के की मृत्यु का विश्वास दिलाया तो उनकी माता जी डोली में बैठकर दाता वारिस की सेवा में उपस्थित हुईं और सूचित किया कि सरकार इस्माईल की मृत्यु हो गई है। दाता ने तुरन्त कहा 'गलत है।' इतना सुनते ही उलटे पाँव लौटीं और घर आकर देखा कि स्त्रियों ने मृतक के कान नाक में रूई भी लगा दी है। शनैः शनैः रोगी ने स्वयं अपने नाक-कान की रुई निकाल कर बाहर कर दिया और अपनी धीमी बोली में अपनी माता को पुकारा और पानी माँगा। माता ने उस बालक को पानी पिलाया। सभी लोग प्रसन्न हो उठे। सैय्यद मारूफ शाह वारसी सरकार की सेवा में उपस्थित हुए तो आपने कहा 'इस्माईल का हाल अच्छा है।' मारूफ शाह ने कहा कि जी हाँ! गले में नासूर हो गया है इसलिये दवा-पानी इत्यादि बाहर निकल आता है। आपने आदेश दिया 'खरगोश की चर्बी लगा दो अच्छे हो जायेंगे।' आदेश का पालन हुआ सभी घाव भर गये शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ कर भोपाल जाकर अपनी मुलाजमत में संलग्न हो गये।

अनुप्रमाणित करना

पूज्य दाता वारिस के पुनीत जीवन के अधिकांश लोगों ने जनाब ईसा मसीह के जीवन से समन्वय किया है। उनका कथन है कि ईश्वर ने दाता वारिस को मसीही प्रतिष्ठा और श्रेष्ठता से सुशोभित किया है। जैसा कि श्रीमान् मुशीर हसन महोदय किदवई बैरिस्टर एटला निवासी गदिया जिला बाराबंकी द्वारा लिखित है कि मैं आपके जीवन को श्रीमान् ईसा मसीह के पग-पग पाता हूँ और ऐसा समझता हूँ कि आप वह व्यक्ति हैं जो सच्चे मुसलमान और ईसा मसीह के रंग पर पैदा किये

गये हैं। लोगों ने आप द्वारा भी एक मृतक के जीवन प्रदान करने की घटना मेरी ही जन्मभूमि से सम्बन्धित किया है। सम्भव है इसी घटना को मौलाना तहेय्युर वारसी ने **ऐनुल यकीन** में अंकित किया है जो इस प्रकार है :

गदिया, जिला-बाराबंकी के एक आदमी का लड़का मर गया था। संयोग से ठीक उसी समय सरकार वारिस पाक उसके घर की ओर जा रहे थे। उस आदमी ने अपने मृतक पुत्र को हाजी दाता वारिस के चरणों में डाल दिया। आपने कहा 'यह जीवित है।' इतने में वह बालक रोने लगा और उसके माता-पिता हुजूर वारिस पाक पर अपनी जान न्यौछावर करने लगे।

सैय्यद अली हामिद शाह गद्दीधारी सौंटी, जिला हरदोई ने लेखक मिश्कात हक्कानिया मुंशी फजले हुसैन साहब को लिखा कि हम दाता वारिस पाक की जीवनी में अंकित करने योग्य घटना की खोज कर रहे हैं कि इस इलाका में दाता वारिस के ध्यान से एक लड़का जीवित हो गया था। मुंशी फजले हुसैन साहब ने उनके पत्र के उत्तर में लिखा कि आप इस तरह की घटना की खोज में अपना समय व्यर्थ न बितावें। दाता वारिस का अध्यात्म पद विशेष श्रेणी का है जिसको समझना बुद्धि और ज्ञान के ऊपर है। सरकार वारिस दाता के लिए असम्भव को सम्भव कर दिखाना साधारण सी बात थी। ऐसी घटनायें बहुधा घटित होती रहती थीं किन्तु वारिस दाता ने कभी भी अपने मुख से मृतक को जीवित करना नहीं सिद्ध होने दिया है। दाता वारिस पिया ईश्वरीय सौन्दर्य और गुणों के दर्पण थे। प्रत्येक व्यक्ति आपको देखकर ही आप पर विश्वास करता था।

मौलवी महमूद अली खाँ साहब जो एक श्रेष्ठ बुजुर्ग हैं। उनके सुपुत्र अब्दुर्रहमान खाँ जो इस समय रियासत डोंगरपुर में सरकारी वैद्य थे और मुस्तकीम शाह साहब वारसिया के भतीजे थे। एक घटना लिखते हैं कि अब्दुर्रहमान केवल अभी पाँच वर्ष के थे उनको चेचक निकल आयी। तीन-चार दिन में उनकी दशा बिगड़ गई। चौथे दिन प्रातः आठ बजे अब्दुर्रहमान की मृत्यु हो गई। चूंकि मुस्तकीम शाह वारसिया ने उनका पालन पोषण किया था। अतः इन पर इस घटना का अधिक प्रभाव पड़ा। मुहल्ले में यह चर्चा फैल गई। अन्तिम संस्कार का प्रबन्ध होने लगा। हकीम याकूब बेग ने कफन आदि का प्रबन्ध कर डाला और कब्र भी तैयार होने लगी। मुर्दे को स्नान कराने हेतु पटरे पर रखा गया। उसी समय मुस्तकीम शाह भी वहाँ आ गईं। ज्ञातव्य है कि मुस्तकीम शाह वारिस पिया की प्रेमी थीं। प्रेम मार्ग में सम्पूर्ण सांसारिक सुखों का आपने परित्याग कर दिया था। दाता वारिस ने उनको फकीर

बनाया था अर्थात् वह सरकार की फकीर थीं। उन्होंने अब्दुर्रहमान की लाश की ओर देखा तीन बार यह शब्द उद्धृत किये। तेरी अमानत थी तूने ले लिया किन्तु मेरा भाई परदेश में है। यह कहते-कहते शाह साहिबा के नेत्र आंसुपूरित हो गये और मृतक के दोनों कन्धों को पकड़ कर उठा लिया और लटकाये हुए दालान में पहुँचीं। मृतक को पलंग पर बिठाना चाहा। याकूब बेग कहते हैं। हम लोग चकित थे आखिर यह क्या कर रही हैं ? लाश लकड़ी के समान कड़ी हो गई थी और शाह साहिबा कहती जाती थीं। बैठ, बैठ। पूर्णत: स्वस्थ थे। उस समय बाहर से भीतर तक का सभी दृश्य परिवर्तित हो गया। चारों ओर समाचार फैल गया कि अब्दुर्रहमान जीवित हो गये। जो जहाँ सुना वहीं से अब्दुर्रहमान को देखने दौड़ पड़ा। देखा तो अब्दुर्रहमान जीवित हैं। मुस्तकीम शाह साहिबा द्वारा यह चमत्कार व्याकुल अवस्था में प्रकट हो गया जिससे उनकी मान मर्यादा की धाक जम गई।

हकीम महमूद अली फतेहपुरी लिखते हैं कि यह घटना फतेहपुर में घटित हुई हैं और ऐसे लोग साक्षी हैं जिनका एक जनसमूह का विश्वास है। अत: विदित है ईश्वर भक्तों और प्रेमियों को ईश्वरीय अधिकार और सामर्थ्य प्राप्त होते हैं। चूंकि मुस्तकीम शाह महोदया ने सरकार वारिस पाक में अपने को विलीन कर दिया है अहं और स्वयं को समाप्त कर दिया है जिसका यह फल था।

अन्य प्रकार की घटनायें

पूज्य दाता वारिस पाक की घटनायें तथा दशायें जो बाल्यावस्था से ही आरम्भ हुई हैं विचित्रता और चमत्कारों से परिपूर्ण हैं। दाता वारिस का युग एक नया युग था। जिससे सम्पूर्ण संसार प्रभावित हो गया। प्रत्येक वर्ग, जाति और सम्प्रदाय में आपके ऋषि पद का पताका फहरा उठा। ऐसा नहीं हैं कि वारिस पाक के शिष्य और उनसे प्रेम रखने वाले ही आपकी बड़ाई और यशगान करते हैं या करते थे वरन् अन्य सम्प्रदायों के संत भी दाता के कीर्ति का बखान करते हैं। शिक्षित, फिलासफी और ज्ञान-विज्ञान ज्ञाता भी स्वीकार करते हैं अथवा उन्होंने अपनी आँखों से देखा है। अन्य धर्मावलम्बियों ने देखा और माना है। सरकार वारिस को ईश गति प्राप्त किये अभी अधिक समय नहीं बीता है। उनको देखने वाले अभी हजारों लोग मौजूद हैं। सरकार वारिस के चमत्कारों का समय पालने से आरम्भ होकर संसार को प्रभावित करते हैं। ईश्वर की ओर से आपका अस्तित्व प्रमुख गुणों और विभूतियों से सुसज्जित है।

मान्यवर दाता वारिस का अध्यात्म की उत्तमता ने विश्व में एक विचित्र प्रभाव

का संचार किया। सांसारिक प्राणियों तथा ज्ञानियों को अद्भुत निरीक्षण कराये हैं। जैसा कि प्रोफेसर डाक्टर मुहम्मद एकबाल बैरिस्टर एटला लाहौर के ऊपर दाता वारिस की एक घटना बीती है जिसको उन्होंने **मिश्काते हक्कानिया** के लेखक को पुस्तक में अंकित न करने के कई-कई कारण लिखे हैं। उनमें से एक कारण यह भी है कि 'वह घटना अति आश्चर्यजनक है और संसार में कोई भी उसको सत्य नहीं स्वीकार करेगा। इससे विदित है कि आपके यश और कीर्ति से शिक्षित लोग भी प्रभावित हैं। डाक्टर एकबाल महोदय की भाँति अन्य लोगों ने भी लिखा है और बहुतों ने तो अपनी बीती छिपा लिया है। अत: यह कहना उचित होगा कि मूल्य पुस्तक केवल साधारण वृतान्तों का संग्रह है वह भी अल्प मात्रा में ही प्राप्त हो पाये हैं। दाता वारिस के अध्यात्म जीवन के मुख्य वृतान्त प्राप्त नहीं हो सके हैं। हजरत अबू मुहम्मद मौलाना शाह अली हसन साहब किछौछवी ने दाता वारिस से सम्बन्धित कुछ घटनायें और दशायें अवश्य लिखा है और अन्त में लिखते हैं आपके आग्रह के अनुसार सरकार वारिस पाक के वृतान्तों में से अंश मात्र लिखता हूँ। उनकी घटनाओं और वृतान्तों से एक संसार भरा पड़ा है। एक अन्य पत्र में अंकित करते हैं कि आप ऋषि पद के सूर्य थे। उनकी महिमा न थोड़ी है और न उनको वर्णन करने की आवश्यकता है। अत: दाता वारिस की यश, कीर्ति और विभूतियों का वर्णन मानव वश की बात नहीं है। कुछ घटनायें जो अलग-अलग प्रकट हुई या भिन्न भिन्न ढंग से प्रकट हैं लिखी जाती हैं।

मुंशी अब्दुल गनी खाँ वारसी रईस पुरवा, गनी खाँ रायबरेली लिखते हैं कि सैय्यद इल्ताफ हुसैन निवासी सतरख जिला बाराबंकी जो एक प्रतिष्ठित बुजुर्ग और सत्यभावी व्यक्ति थे एक बार जब हम लोग एकान्त में बैठे हुए थे ब्यान किया उस समय वहाँ मैं और राजा दोस्त मुहम्मद खाँ तअल्लुकेदार महुअना बैठे हुए थे। जब दाता वारिस की पालकी ग्राम खेवली को जा रही थी। मैं भी पीछे-पीछे था। मेरे मन में यह शंका उत्पन्न हुई कि मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पुनीत शरीर की छाया नहीं होती थी। इसी असमंजस में था कि मेरी दृष्टि दाता वारिस की पालकी की ओर पड़ी। मैंने देखा कि पालकी की छाया न थी। उस समय मैं आश्चर्य से सूर्य की ओर देखता फिर धरती पर दृष्टि डालता। आकाश सूर्य तमतमा रहा था। बादल का कहीं चिन्ह तक दिखाई नहीं देता था। किन्तु पालकी छाया विहीन हो चुकी थी। भली-भांति देखा भाला, मुझे विश्वास हो गया कि पालकी की छाया नहीं है। मुझे सरकार की आत्म शक्ति का सामर्थ्य ज्ञात हो गया और नबी-ए-

करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का मोजाजा का भी साक्षात्कार हो गया।

मौलाना तहैय्युर वारसी ने ऐनुल यकीन में लिखा है कि एक अरबी विद्यार्थी वारिस पाक की सेवा में उपस्थित हुआ और आग्रही हुआ कि दाता मुझे सत्यपथ का दर्शन करा देने की कृपा करें। वारिस पिया ने कुछ कह सुनकर टाल देना चाहा। किन्तु उसने पुनः अनुरोध किया। आपने कल आने का आदेश प्रदान किया। जब वह अरब निवासी छात्र उपस्थित हुआ तो दाता वारिस ने एक तहबन्द (आधा वस्त्र) प्रदान किया। तहबन्द ग्रहण करते समय जब उसकी दृष्टि वारिस दाता के मुख पर पड़ी। देखते ही वह अचेत हो गया। जब वह सचेत हुआ अपना वस्त्र उतार कर एहराम पीला वस्त्र धारण किया और फकीर हो गया। कुछ दिन जीवन यापन कर वह स्वर्गवासी हो गया।

पूज्य दाता वारिस पाक का अस्तित्व एक ऐसा दर्पण था कि उसमें लोग अपनी कामनाओं का फल और इच्छाओं की सफलता और असफलता स्वयं देखा करते और पाते थे। कभी-कभी ऐसा होता था कि शिष्य अपने प्रश्नों से प्रभावित हो लज्जित हो उठता था जैसा मौलाना तहैय्युर वारसी ऐनुल यकीन में अंकित करते हैं: वारिस पिया का एक शिष्य दूर से चरण स्पर्श हेतु उपस्थित हुआ और प्रेम विभोर हो प्रार्थी हुआ कि मान्यवर! अब मैं न जाऊंगा। हाँ! एक शर्त पर जा सकता हूँ कि सरकार सदैव मेरे साथ रहें। आपने मुस्कुराते हुए कहा 'अच्छा जाओ।' थोड़ी ही समयोपरान्त वह परेशान हो गया। न बैठ पाता था न आराम विश्राम कर पाता था। खाना पीना अनिवार्य कार्य तक बन्द हो गया सदैव वारिस दाता को सम्मुख देखकर उद्विग्न हो उठा। उसकी आतुर दशा देखकर लोगों ने सरकार वारिस पाक से प्रार्थना किया। आपने उसको लाने को कहा। जब वह दाता वारिस के सम्मुख हुआ उसकी दशा ठीक होने लगी और अपने आप उसकी चेतना ठीक हो गई।

सरकार वारिस पाक किसी की आशा खंडित नहीं होने देते वरन् निराशा को आशा में रूपान्तरित कर देते थे। याचक अपने उद्देश्यानुसार सफलीभूत होता था। मौलवी रौनक अली वारसी रज्जाकी पैंतेपुरी लिखते हैं। फतेहपुर में एक मेहतर रहता था जो वारिस पिया का भक्त और प्रेमी था। किन्तु अपने धंधे के कारण लज्जित रहा करता था। शिष्य होने की प्रबल इच्छा रखते हुए भी सरकार में उपस्थित होकर अपनी इच्छा व्यक्त करने का साहस नहीं कर पाता था। एक बार जब दाता पैंतेपुर में विराजमान थे। वह मेहतर उसी घर का आँगन साफ कर रहा था जिसमें दाता वारिस विश्राम कर रहे थे। उपस्थित सज्जनों को सम्बोधित कर कहा 'देखलो,

लखनऊ इत्यादि में झाड़ू कश पवित्र होकर नमाज में सम्मिलित हो जाते हैं।' यह सुनकर मेहतर ने साष्टांग दंडवत किया। नहा धोकर वारिस दाता की सेवा में उपस्थित हुआ और शिष्य हो गया। शिष्य होते ही उसका मन संसार से विरक्त हो गया। न वह अपने घर गया और न कार्य पर गया। बाजार के नाके पर टीला है उसी पर बैठा और एकान्तवासी हो गया और उसने एक विचित्र जीवन व्यतीत किया।

हाजी ऐस गुलाम वारसी द्वारा लिखित है कि रायबरेली में मान्यवर दाता मेरे घर विराजमान थे। रात में आतिशबाजी (मसाले उड़ाने) की भी व्यवस्था की गई थी। वारिस पिया शामियाने में पधारे और आतिशबाजी देखने लगे। अचानक दो तीन आतिशबाजी की टोकरियों में आग लग गई और सब धू-धू करने लगी किन्तु सभी मिस्ल लकड़ियों के जल रहीं थीं। न उनमें रंग -बिरंगी रोशनी, न चमक और न उछाल ही था। दाता वारिस यह कहते हुए उठ खड़े हुए 'हाँ, हाँ सर्दी अधिक है।'

सैय्यद मारूफ शाह का कथन है कि मैं सूर्यास्त के पश्चात् सरकार वारिस पाक के विश्राम स्थल पर दीपक जलाया करता था। दाता वारिस पाक हमको बैठने का आदेश देते थे। एक दिन जैसे ही मैंने दीपक जलाया आपने तुरन्त आदेश दिया 'जाओ।' मैं आदेश का पालन करते हुए बाहर आया किन्तु द्वार पर किनारे खड़े होकर सोचने लगा कि रोज की भाँति कुछ समय रूक कर ही जाऊंगा। मैंने देखा कि दाता ने अपनी तर्जनी अंगुली को तेल में डुबोया और दीपक की लौ पर रखा जब वह अंगुली भली-भाँति जल गई तो पुनः उसको तेल में डूबो कर फिर जलाया। इस घटना को देखकर मैं घबरा उठा किन्तु सरकार के भय से कुछ कह नहीं पा रहा था। जब तीसरी बार मैंने ऐसा ही देखा तो अतिशीघ्र दौड़कर मैंने अंगुली पकड़ लिया और प्रार्थना किया कि मान्यवर यह क्या कर रहें हैं? आप मुस्कुराते हुए मेरी पीठ पर एक घूंसा मारते हैं और कहते हैं 'तुम बड़े चोर हो तुम कहाँ थे?' मैंने सविनय कहा कि आज मेरे चले आने का आदेश नवीन था। इस कारण अटक गया था। मान्यवर दाता ने जो कुछ कहा वह यह है कि आशिक का शरीर सुन्न हो जाता है, उस पर अग्नि इत्यादि का कोई प्रभाव नहीं होता, देखो अंगुली कहाँ जली है? मैंने देखा तो उस अंगुली पर लपट का प्रभाव नहीं था।

मौलवी मुहम्मद इसहाक साहब वारसी अपनी आँखों देखा वृतान्त इस भाँति वर्णित करते हैं कि एक बार पूज्य दाता वारिस की सेवा में था। संध्या का समय था। हुजूर दाता वारिस के बिछौने पर कई इंग्लैण्ड की बनी फूलझड़ियाँ रखी थी जो बिछौने पर ही छोड़ी जाती थीं। सरकार दाता वारिस ने मुझे दिखाने के लिए एक

फुलझड़ी अपने हाथों से उठाया और उसको जलाने हेतु दियासलाई लगाई किन्तु वह जली नहीं। एक-एक करके कई तीलियाँ जलाया फिर भी वह न जली। पुनः दाता वारिस ने दाँत से उसके तारों को सीधा किया किन्तु वह नहीं जली। उपस्थितजनों में से एक ने निवेदन किया कि दाता वारिस के स्पर्श और मुंह की राल लगने से वह फुलझड़ी आग से अर्थात जलने से सुरक्षित हो गई है। दाता ने मुस्कुराते हुए फुलझड़ी भूमि पर रख दिया। उसी समय सेवक ने दूसरी उठाकर जलाया तो जलने और झड़ने लगी।

दाता वारिस की दानशीलता भी आपके अन्य गुणों की भाँति अद्वितीय थी। यद्यपि आप अपने पास कुछ भी नहीं रखते थे। सदैव हाथ खाली रहता था तथापि आप दीनों, गरीबों और जरूरत वालों का मनोरथ पूरा करते थे। मौलाना तहैय्युर शाह वारसी लिखते हैं कि एक बार एक मंगता ने दाता वारिस से प्रार्थना किया कि मेरे पास मार्ग व्यय नहीं है किसी भाँति मक्का शरीफ पहुँचा दीजिए। दाता वारिस ने उससे हाथ मिलाकर उसको विदा कर दिया। सरकार का हाथ छोड़ते ही उस मंगता ने अपने हाथों में चालीस स्वर्ण मुद्रायें देख आनन्द विभोर हो उठा और आनन्दपूर्वक चला गया। पथ में जो भी मिलता प्रत्येक से इस घटना का ब्यान करता और दाता वारिस का यश ज्ञान करता रहता था।

सैय्यद अली हामिद शाह चिश्ती कादिरी गद्दीनशीन साँडी जिला हरदोई मुंशी अजमत अली मलौंवा द्वारा वर्णित इस प्रकार लिखते हैं कि एक बार स्टेशन किछौना पर दाता वारिस के साथ था। बदनाम शाह सेवक ने निवेदन किया कि मान्यवर टिकट क्रय करने हेतु बाक्स में रूपया नहीं है। आपने कहा देखो होगा। उन्होंने भरे मजमे में बाक्स खोलकर दिखाया किन्तु उसमें रूपया नहीं था। दाता वारिस ने उस बक्से को उठाकर झटक दिया तो उसमें से १५ रू० लाटशाही निकल पड़ा। ऐसा ज्ञात होता था कि अभी टकसाल से आ रहे हैं। उपस्थित लोगों ने उन रूपयों को अपने हेतु बदल लिया।

मौलवी मुहम्मद यहिया जो दाता वारिस के प्रेमी थे। आप पर अपना तन-मन-धन निछावर करते थे। सरकार वारिस पाक के लिये अति अधिक व्यय करते थे। इब्राहीम बेग शैदा वारसी का कथन है कि एक दिन दाता वारिस ने उनके लिये कहा 'मौलवी साहब मरते समय रूपया तुम्हारे पाँव के तले रहेगा।'

इस कथन का विचित्र फल प्रकट हुआ। माननीय यहिया महोदय की मृत्यु के समय जो लोग उपस्थित थे उनका कहना है कि एक दिन मौलवी साहब भोजन कर

के वहीं बैठ गये। उसी समय किसी रईस का मुख्तार किसी अदालत के कार्य हेतु आया और मुबलिग सात सौ रूपये की थैली मौलवी साहब के रूबरू रखा और मौलवी महोदय ने उससे १००० रू० मेहनताना चाहा। मुख्तार रूपये की वह थैली वहीं बिछौने पर छोड़कर चला गया। जब मौलवी साहब लेटने लगे तो उनके पाँव उस थैली पर पड़े। उस समय मौलवी साहब ने कहा। हमारे सम्बन्ध में सरकार का कथन जिसका हमको पूरा विश्वास भी है, यदि इस समय मेरा दम निकल जाता तो सभी लोगों को भी विश्वास हो जाता। पाँच मिनट के भीतर ही मौलवी साहब की मृत्यु हो गई और रूपयों की थैली उनके पाँव में पड़ी रही।

हकीम सैय्यद शाह मुहम्मद हमीद साहब फिरदौसी अबूल अलाई बिहारी से अंकित है कि मुझसे मुहम्मद शफी निवासी चन्दहा जिला-दरभंगा कहते थे कि एक महोदय शाह दायम अली नामक निवासी मुजफ्फरपुर के थे उनको कीमिया (सेना बनाने की विधि) का बड़ा चाव था। दिन रात इसी धुन में रहते थे। इसी उधेड़बुन में जीवन व्यर्थ ही व्यतीत करते थे। एक बार दाता वारिस जब मुजफ्फरपुर में विराजमान थे। हम और दायम अली शाह दोनों सरकार की सेवा में उपस्थित हुए। कदम बोसी करके बैठ गये। दायम अली की इच्छा थी कि एकान्त होने पर दाता वारिस से कोई उपाय कीमिया बनाने की पूछें। यदि सरकार की कृपा हो जाय तो भाग्य सफल हो जाय। किन्तु लोगों की भीड़ थी दायम अली चुप-चाप बैठे रहे। दाता ने दायम अली को सम्बोधित कर कहा 'तुमको कीमिया का शौक है, लाहौल वलाकूवत, हाँ! मुझे कीमिया मालूम है।' और बिछौने के नीचे से एक सफूफ (पिसी हुई या बुकी हुई वस्तु) निकाल कर कहा 'देख लो तैयार भी है। किन्तु हम न देंगे और न बतायेंगे।' यह कहते हुए सफूफ को हवा में उड़ा दिया और निर्देश किया कि इस विचार का परित्याग कर दो और इस कार्य को छोड़ दो। आपके आदेश का प्रभाव था कि उनका वह विचार मूलतः समाप्त हो गया।

मौलवी बशीरूज्जमा महोदय निवासी सन्डीला जिला हरदोई लिखते हैं कि मैंने स्वयं सरकार के मुख से सुना है और अन्य बुजुर्गों को भी कहते सुना है कि युवावस्था में जब सरकार वारिस पाक भ्रमण कर रहे थे कि एक दिन दोपहर के समय पहाड़ी से गुजर रहे थे। एक चट्टान पर बैठकर विश्राम करने लगे। नीचे बहते हुए पर्वतीय झरने के ठन्डे जल से हाथ मुँह धोकर कुछ जल ग्रहण किया। वहाँ पड़े हुए मनोहर और चमकीले शिला कण दिखाई पड़ें। उनमें से एक आपने उठा लिया और कुछ समय तक उसको उलट-पुलट कर देखते रहे। पुनः उस पत्थर के टुकड़े

को आप अपने साथ लेते आये। रात्रि के समय एक गाँव में पहुँचे तथा एक स्थान पर विश्राम किया। उस स्थान पर एक गाड़ी खड़ी थी। आपने वह शिलाकण उसी गाड़ी पर खोल कर कहीं ,किनारे रख दिया। प्रातः विदा होते समय आपने वह कंकर उठा लिया। गाड़ी में जड़े हुए लोहे पर जहाँ वह पत्थर का टुकड़ा पड़ा था। वहाँ का लोहा सोना हो गया था। उस समय आपको स्मरण हुआ कि यह गुण पारस पत्थर का होता है। अवश्य ही यह टुकड़ा पारस पत्थर का है। आप उसको लिये हुए चलते रहे पारस पत्थर अपने पास होने का आपको गर्व भी हो रहा था। किन्तु आपने तुरन्त इस भावना का त्याग कर दिया कि जब हम ईश्वर के सिवा अन्य किसी वस्तु से लगाव नहीं रखते फिर यह पत्थर का टुकड़ा कहाँ-कहाँ ढोते फिरेंगे। अतः आपने उस टुकड़े को जंगल में फेंक दिया।

मौलवी बशीरूज्जमा साहब लिखते हैं। पारस पत्थर जो लोहे को सोना बना दे यह एक कहावत है और इसका अस्तित्व भी नहीं है किन्तु दाता वारिस के यश, कीर्ति और सामर्थ्य को देखते हुए यह स्वीकार करना पड़ता है कि वारिस दाता के पुनीत कर कमलों और सत्यदर्शी दृष्टि के प्रभाव से उस शिलांश में यह गुण प्रकट हो गया अथवा ईश्वर की ओर से यह परीक्षा ली गई हो जैसा कि ईश्वर के सत्य भक्तों पर बीता है किन्तु हमारे सरकार पुनीत वारिस दाता ने अल्प आनन्द जो पारस पत्थर का था आते ही उस पत्थर का परित्याग कर दिया।

इस प्रकार की घटना पारस पत्थर की और भी है जिसको पूज्य दाता वारिस ने स्वयं अपने मुख से वर्णन किया है। हाजी अवघट शाह ब्यान करते हैं। एक बार दाता वारिस ने हम लोगों को इस प्रकार से सुनाया है कि हम एक पर्वत पर गये थे। वहाँ एक फकीर रहते थे। हम उनके अतिथि हुए। प्रत्येक दिन एक व्यक्ति दो रोटियाँ लाता था। एक हम खाते और एक वह खाते थे। एक दिन फकीर साहब टोकरा लेकर चलने लगे तो मैं भी उनके पीछे लगा। मैं छुप कर देखता रहा। वह फकीर पत्थर के टुकड़े टोकरे में भरते और ले जाकर पहाड़ की एक गुफा में डालते थे। यहाँ तक कि उनके ऊपर से पत्थर के ढोके और अन्य पत्थर भी डाल दिया। हम उनके पूर्व ही अपने स्थान पर आकर बैठ गये। दूसरे दिन प्रातः हमने उनसे कहा 'अब हम जाते हैं मगर यह तो बताओ कि यह क्या किस्सा है?' शाह साहब ने कहा हम ईश्वर की ओर से इस कार्य हेतु नियुक्त हैं कि जब पारस पत्थर का कोई टुकड़ा चटख कर अलग हो तो उसे उठाकर गुफा में छुपा दें कि किसी को प्राप्त न हो सके। मैं कल यही कर रहा था। उसमें से एक टुकड़ा तुम्हारे हेतु भी लेता आया हूँ। हमने

पूछा 'इसका क्या होगा?' फकीर ने कहा कि यदि इसको लोहे में छुला दोगे तो सोना हो जायेगा। उसे विक्रय कर व्यय करते रहना। हमने पुनः पूछा 'यदि खो जाये तो क्या होगा?' शाह साहब बोले फिर अल्लाह मालिक है। हमने कहा 'फिर अल्लाह का भरोसा पहले ही से क्यों छोड़ दें।' यह दोनों घटनायें विश्वसनीय लोगों की कथित हैं।

पूज्य दाता वारिस की अलौकिक शक्ति तो अनेकों रूप से प्रकट हैं क्योंकि मान्यवर उपस्थित और अनुपस्थित दोनों दशाओं में सहायता करते थे। सम्पूर्ण घटनायें और सभी दशायें आपके लिये दर्पण दर्शित थीं या यों कहा जाय कि (लौह महफूज) भाग्य रेखांकित सभी बातें आपके सम्मुख थीं। अन्तिम समय में आपकी सभा का विचित्र रंग था। बहुधा लोगों को आप कपड़े का एक थान दे देते थे। अन्य सौगात तो दिये ही जाते किन्तु जिसको एक थान कपड़े का प्रदान होता उसके मृत्यु का सूचक होता था। दाता वारिस उसको एक प्रकार की सूचना देते थे कि अपनी तैयारी कर लो। यह बात लोगों में ख्याति पा चुकी थी कि जिसको दाता वारिस कपड़े का थान दें उसे समझ लेना चाहिये कि उसकी मृत्यु समीप है।

हाफिज प्यारे साहब का कथन है कि रहमान खाँ नामक एक आदमी दाता वारिस की सेवा में उपस्थित हुआ। उस समय सरकार ने थान देने का आदेश दिया। उसने निवेदन किया कि दाता! मैं थान न लूंगा। मैं तहबन्द लूंगा। आपने उससे कहा 'हमेशा तहबन्द लिया, अब थान ले लो।' वह प्रार्थी हुआ कि अभी दुनिया से जी नहीं भरा है। इसपर सरकार प्रसन्न होकर तहबन्द दे दिये और जाने का आदेश किया। रहमान खाँ ने इस बात की चर्चा कई आदमियों से किया है। मिर्जा मुनियम बेग वारसी लिखते हैं कि जब-जब मेरी भेंट रहमान खाँ से हुई है उन्होंने कहा है कि मैं तो मर ही चुका था किन्तु दाता ने मेरी मृत्यु को अधर में लटका कर रख दिया।

ठाकुर पंचम सिंह ने अपने मलावली स्थित वारिस बाग में एक महल वारिस मंजिल के नाम से निर्मित कराया है। जब वह बन रहा था उस समय ठाकुर साहब उसके निर्माण कार्य देखने हेतु गये तो उनके मौमू ठाकुर गुलाब सिंह ने उनसे कहा कि दो मजदूर कार्य करते हुए ऊँचाई से धरती पर गिर पड़े किन्तु उनको चोट नहीं आई और वह पुनः कार्यरत हो गये। गिरने वाले श्रमिकों ने भी अपने गिरने की बात कही किन्तु ठाकुर पंचम सिंह को विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने कहा यह निरा गप है भला इतनी ऊँचाई से गिरने वाला कहीं कार्य करने लायक रह सकता है। तब तक उससे भी अधिक दूरी से एक बाल मजदूर फिसल गया और धड़ाम से भूमि पर आ

गिरा। सभी देख ही रहे थे। पुनः उठा और सीढ़ी से ऊपर चढ़ने लगा। ठाकुर साहब और अन्य सभी चकित रह गये। यह सब सरकार वारिस पाक का अलौकिक अधिकार और सामर्थ्य है। अतः जिसका सम्बन्ध सरकार वारिस पाक से हो गया अलौकिक रूप से आप उसके सहायक रहे और उसकी सहायता करते हैं।

सैय्यद मारूफ शाह वारसी से वर्णित है कि मीर नजफ अली नामी सरकार के एक शिष्य थे जिनके दुर्रे नजफ था। (एक नगीना है जो नजफ में मिलता है) उन्होंने सुन लिया था कि असली दुर्रे नजफ की पहचान यह है कि जब वह सैय्यद के हाथ में दे दिया जाय तो धरती हिलने और दीवार काँपने लगे। परीक्षा हेतु वह दुर्रे नजफ लेकर सरकार वारिस पाक की सेवा में हाजिर हुए। जब उन्होंने दाता वारिस की ओर बढ़ाया तो आपने सहर्ष उसे ले लिया। उस समय मैं भी उपस्थित था। मैंने भी देखा और ज्ञात किया। सभी उपस्थितजन का शरीर काँपने लगा। धरती हिलने लगी और दीवारे थरथरा रही थी। मान्यवर ने शीघ्र ही उस नगीना को भूमि पर रखकर कहा 'अच्छा-अच्छा इसको तुम्हीं रखो'।

शेख हुसैन अली साहब नवाब सादा मऊ का कथन है कि एक बार मैं कार्तिक के मेले में था। संयोग से मेरे जूते कहीं खो गये या चोरी हो गये। मैंने उसके खो जाने पर एक कविता किया और सरकार को भी सुनाया। आपने मुस्कुरा कर कहा 'दिल्लगी हुई है वह गया नहीं।' मैंने तो पुराने जूते का प्रयोग कर लिया और पहने हुए नवाबगंज जा रहा था। एक अपरिचित आये और कहने लगे कि क्या यह आपके जूते हैं ? हमने कहा हाँ। कहने लगे लीजिये धोका हो गया।

विरोधाभाषियों का फल

जो लोग ईश्वर में विलीन हो जाते हैं और स्वत्व अथवा अहं का परित्याग करके ईश्वर में उसके साथ बने रहते हैं वह कभी भी ईश्वरीय गुणों से खाली नहीं रहते हैं। ईश्वर के आदेशानुसार 'सबकत रहमती अला गज्बी' मेरी रहमत (दया) मेरे क्रोध से आगे रहती है। इस प्रकार के उदाहरण दाता वारिस के आचरण और व्यवहार में परिपूर्ण हैं। मानों आपका स्वभाव हो चुका था कि अपने अशुभ चिन्तकों के हृदय में भी आप घर कर लेते थे। आगे चलकर आपका विरोधी या अशुभेच्छुक आपका प्रेमी और भक्त हो जाता था। पर कुछ घटनायें ऐसी भी हैं कि जिनसे सम्बन्धित दुष्टात्माओं पर 'वल्लाहो अजीजुन्तेकाम' (ईश्वर बदला लेने पर शक्ति

रखता है) का प्रभाव शीघ्र हुआ है और कोई उपाय लाभदायक नहीं हुई है। ईर्ष्यालु और विरोधी स्वभाव वालों का भाग्य लिखा पूरा होने हेतु आपके प्रति धृष्टता और अशिष्टता और कारण बन गई है। जैसा कि एक वृतान्त मौलवी बाकर साहब डिप्टी कलक्टर द्वारा लिखित है। सरकार वारिस पाक एक बार बहराइच के लिये प्रस्थान कर रहे थे। प्राग स्टेशन पर दर्शनार्थियों की बहुत बड़ी भीड़ एकत्र हो चुकी थी। भीड़ देखकर रेल गार्ड हैरान था। जनसमूह को हटाने में उसने बेंत का प्रयोग कर दिया था। एक आध बेंत लोगों को लगे भी थे। सरकार वारिस पाक ने एक नजर उसकी ओर देखा किन्तु मुख से कुछ नहीं कहा। जब ट्रेन बहराइच स्टेशन पर पहुँची तो वहाँ भी स्वागत समारोह का चहल-पहल था जैसा कि किसी लाट के लिये भी नहीं हो सकता था। उस गार्ड को अपनी अशिष्टता का फल एक मास के भीतर ही मिला। वह निलम्बित हो गया और फौजदारी के मुकदमें में मुलजिम हुआ।

मौलवी शाह अब्दुल बसीर साहब खलीफा मियाँ मुहम्मद शेर शाह पीलीभीत लिखते हैं कि एक ताजिर (व्यापारी) की घटना है जिसका व्यापार लाखों रूपये का था। जाने माने लोगों में उनकी गणना होती थी। उक्त व्यापारी सरकार वारिस पाक के शिष्य हो गये किन्तु लोगों के बहकाने से सेठ के विश्वास में अन्तर आ गया सरकार का एक मुरीद (चेला) उनसे मिलने आया। व्यापारी ने आवेश में सरकार को भला बुरा कहा और अपने पास रखा हुआ वस्त्र जो दाता की ओर से प्राप्त था उठाकर उस आये हुए शिष्य के मुँह पर फेंक दिया। तब वह आगन्तुक शिष्य क्रोधित हो उठा और कहने लगा तुमने सरकार की शान, मर्यादा में धृष्टता किया है। इसका फल तुम्हें भोगना पड़ेगा। उसी दिन से व्यापारी का व्यापार गिरने लगा। व्यापारी दरिद्र होने लगा। उसका धन नष्ट होने लगा। यहाँ तक कि सब कुछ नष्ट हो गया। वह व्यक्ति दरिद्र होकर द्वार-द्वार घूमने लगा। अन्ततः भीख माँगता हुआ मर गया।

काजी रहमत अली अकबराबादी लिखते हैं कि सरकार दाता वारिस एक समय मलावली जिला मैनपुरी में विद्यमान थे। उसी इलाके का एक हिन्दू साधु दाता वारिस की सेवा में उपस्थित हुआ। द्वार पर खड़ा होकर अनुचित शब्दों की भरमार लगा दिया। यहाँ तक कह गया कि तूने लोगों का धर्म बिगाड़ दिया। यह कह दिया, वह कर दिया। दाता ने उसको अपने सामने बुलाया और कुछ इनाम बख्शीश भी दिया किन्तु उसने एक भी न लिया। सरकार ने उसको निकाल देने का आदेश दिया जैसे ही कहा 'निकाल दो।' उसे बाहर निकाल दिया गया। किन्तु बाहर आकर वह रोने लगा और दीवार पर सिर पटकने लगा। रोता था और कहता था कि मैं लुट गया,

नाश हो गया, किसी कार्य का नहीं रहा।

खान जी मुहम्मद इरादत खाँ निवासी मनसान, जिला अलीगढ़ जो खानदान नक्शबन्द में हजरत शाह रनमस्त खाँ रहमतुल्लाह अलैह के शिष्य थे लिखते हैं कि हमने अपनी आँखों देखा है। एक बार दाता वारिस चाँदपुर में मिर्जा एवज अली के यहाँ विराजमान थे। लोग उनकी सेवा में उपस्थित हो यश प्राप्त करते थे। मैं भी वहाँ बैठा हुआ था। दो आदमी सभा में उपस्थित हुए। दोनों अपने को श्रेष्ठ और गुणवान फकीर मानते थे। जिस समय यह दोनों व्यक्ति उपस्थित हुए तो अति धृष्टता सहित बात करने लगे। यहाँ तक कहा कि फकीरी तो दूर है आपके मन की कालिमा तक अभी नहीं गई है। वारिस पिया ने यह सुनकर उनपर दृष्टि डाली मात्र इतना ही कहा 'तुम स्वयं सियाह हो।' यह कहना था कि दोनों की मुखाकृत काली हो गई। लोग देखते रहे उनका सम्पूर्ण काला हो गया। इसी दशा में तीन दिन के भीतर दोनों की मृत्यु हो गई। धृष्टता का तत्कालिक फल प्रकट हो गया। अत: भगवान ऐसे विचारों से रक्षा करें।

ऐसी घटना भी उपस्थित हुई है कि बहुधा विरोधी उपस्थित हुए। उनको प्रवेश की स्वीकृति भी प्राप्त हुई किन्तु उपस्थित होकर चुप ही रहे और ऐसे भयभीत हुए कि मुख से कुछ कह नहीं पाये। जैसा कि एस० गुलाम हाजी साहब निवासी रायबरेली लिखते हैं। मेरे मकान पर वारिस दाता विद्यमान थे। एक मौलवी साहब आये और कहने लगे। मुझे पूछना है कि आप नमाज क्यों नहीं पढ़ते? जब दाता को सूचना दी गई तो आपने उनके सामने आने का आदेश दिया। द्वार के समीप पहुँचते पहुँचते मौलवी साहब का सम्पूर्ण शरीर काँपने लगा। डग भरना कठिन हो गया। बाध्य होकर आपकी सत्यता स्वीकार करते हुए पलटे। आग्रह करने पर भी मौलवी साहब आगे नहीं गये और किसी की एक न सुना।

आक्षेप और आपत्तियों की वास्तविकता

सरकार वारिस पाक के वृतान्तों और दशाओं को बाह्य दृष्टि से देखने वालों को आपसे सम्बन्धित कुछ आपत्तियाँ अवश्य हैं किन्तु उसके तथ्य तक न पहुँचने वाले कुछ आपत्ति खड़ा करते हैं। देखा गया है कि नबी रसूल, अवतारों इत्यादि तक को लोगों ने आक्षेपों से वंचित नहीं रखा है फिर दाता वारिस पर किये गये आक्षेप यदि हैं तो कोई चिन्ता की बात नहीं है। अधिकांश दाता वारिस पर विरोधियों के दो आक्षेप बहुधा होते हैं जो निम्न हैं :

१. आप नमाज नहीं पढ़ते।

२. आप वेश्याओं को खुल्लम-खुल्ला शिष्य करते थे।

उक्त दोनों आपत्ति अत्यन्त प्रसिद्ध है जो विरोधियों और आपके नकारने वालों के मुख से बहुधा सुने जाते हैं। प्रथम आपत्ति घटनाओं से असत्य सिद्ध होती है। क्योंकि अधिकांश आपके व्यवहार और आचरण सम्बन्धी चर्चा में ऐसा देखा गया है कि आप नमाज पढ़ते और नमाज पढ़ने का निर्देश भी देते थे। हाँ! ब्रह्मलीनता और विभोरता के कारण कुछ समय की नमाजें छूट जाती थीं। यह एक तल्लीनता की अवस्था है जैसा कि वारिस बाबा ने चार आलिमों से उनके उत्तर में कहा कि 'हज और जकात (दान) उस पर कब फर्ज है जब वह कुछ नहीं रखता, यदि तुम कृत्रिम मदिरा के मद और नशे को स्वीकारते हो जिसे अरबी भाषा में 'सुकर' कहते हैं तो बिना किसी कठिनाई के वास्तविक मदिरा के नशे का कई गुना अधिक होना स्वीकार करना पड़ेगा। फिर नशे या सुकर में नमाज और रोजा कैसे उचित हुआ। इसी विषय पर मौलाना रूम का पद इस प्रकार है :-

मस्तीए कायद जबूए शाह फर्द। सद खुमे मैं दर सरो मगजाँ न कर्द॥
पस बरू तकलीफ चूयाशद खग। अस्प साकित गश्त वशुद बे दस्त पा॥

ईश-प्रेम की गंध मात्र से ऐसी मादकता उत्पन्न होती है जो सैकड़ों मटके शराब से भी नहीं उत्पन्न हो सकती है। फिर ईश्वर की मुहब्बत रूपी मदिरा से मस्तजनों पर कष्ट किस भाँति उचित है? इनका मन रूपी अश्व बिना हाथ पैर का होकर शान्त हो जाता है।

मौलवी रौनक अली वारसी रज्जाकी पैंतेपुरी लिखते हैं कि सरकार वारिस पाक की सेवा में एक निरस विरक्त पुरुष उपस्थित हुए जो अपने संयम अथवा निस्पृहता पर गर्वित थे। द्वार पर पहुँचते ही कहना आरम्भ किया कि आज नमाज पर विवाद होगा और यह निश्चित होकर रहेगा। जब दाता वारिस की सेवा में पहुँचे तो प्रथम नमाज के महत्व का वर्णन किया। दाता वारिस पुष्टि करते रहे। पुन: नमाज त्यागने के सम्बन्ध में आदेश और पाप-दोष कहते रहे। वारिस दाता उनका भाषण ध्यान से सुनते रहे। जब खूब बोल चुके तो आप मुस्कुराते हुए स्नेह का एक घूंसा उनकी पीठ पर लगाये और कहा 'मौलाना यह सब सत्य है किन्तु जब कोई किसी के निकट बैठा हो तो उसका नाम लेकर कैसे पुकारे। वह तो हिल भी नहीं सकता। मौलाना शिष्टाचार के स्वाद और जप के स्वाद में अति अन्तर है।' उस समय मान्यवर दाता की कथन शैली विनम्र और मार्मिक थी। जो ईश्वर की महिमा में आप बोल रहे थे। नेत्र अश्रुपूरित थे। भगवान ही जानता है आपके उन शब्दों में क्या

प्रभाव था कि मौलाना सम्पूर्ण दलीलें और तर्क-वितर्क सभी भूल से गये थे। उनके हृदय को शान्ति प्राप्त हो गई। आँसू बहाते हुए बाहर आये।

पूज्य दाता वारिस का यह भी कथन है 'कि बाह्य ज्ञानी पंडितों (उलमा) का विचित्र धर्म जो देखकर सिजदा करे अर्थात् जो देखकर पूजे उसको तो काफिर कहते हैं (ईश्वर विमुख मानते हैं) और जो बेदेखे सिजदा करे मोमिन (ईमान वाला) कहलाये। इसी को अन्धापन कहते हैं। वास्तव में जो देखकर सिजदा करे वही मोमिन, ईमान वाला है।'

हजरत मौलाना शाह हिदायत अली मोहद्दिस (हदीस ज्ञाता) लखनवी रहमतुल्लाह उक्त पद्य की व्याख्या **कशफुल ओलूम** में इस प्रकार करते हैं -हरकि मेहराबे नमाजश से वाद अर्जाँ किदीदरू तक निम्नलिखित है:-जिस आदमी को नमाज की मेहराब ऐन अल्लाह हो गई अर्थात् उसकी आँखों द्वारा अल्लाह का अवलोकन हो रहा है। उसके लिये ईमान की ओर जाना एक प्रकार का दोष है और अवगुण भी क्योंकि जिस पर ईमान लाया है वह स्वयं उसके सामने मौजूद है। अतः इस समय दूसरी ओर ध्यान देना पूर्णदोष है। फिर ईमान लाये तो किस पर लाये। जिसका ज्ञान नेत्र अथवा हृदय-चक्षु खुल गया और पूर्णरूपेण ईश्वर का साक्षात हो गया तो उसको जाहिरी नमाज और अन्य प्रकार के तप-जप एक तरह से व्यर्थ जान पड़ती है। जो प्रत्यक्ष ईमान प्राप्त कर चुका है उसको अप्रत्यक्ष ईमान से सानवन नहीं प्राप्त हो सकती है। बात साफ है आँखों से दर्शन करने वाला बड़ाई और सौन्दर्य वर्णन में रूचि नहीं रख पायेगा। बाह्य नियन्त्रण केवल बाह्य दर्शी हेतु ही हो सकता है। प्रत्यक्षदर्शी को ऐसी एबादत से सन्तोष नहीं होता है। देखने में थोड़ा सा सरकने मदीना के तरीके की अवहेलना अवश्य होती है किन्तु इस कथन में जुबान रुक जाती है और ज्ञानी के लिये यह उदाहरण पर्याप्त है। जैसे सूर्यास्त का समय है एक व्यक्ति पहाड़ के शिखर से सूर्य अस्त को देख रहा है और कह रहा है कि सूर्यास्त हो गया है और दूसरा पहाड़ी के नीचे बैठा घड़ी हाथ में लिये है और कहता है कि अभी सूर्यास्त नहीं हुआ है। उसके डूबने में दस मिनट लेट है। इस समय एक तो चोटी पर बैठा अपने निरीक्षण से दावा करता है दूसरा पहाड़ के नीचे बैठा घड़ी देखकर दावा करता है। ऐसी दशा में प्रत्येक मनुष्य के निकट चोटी से देखने वाले का दावा ही विश्वासनीय होगा। इसी भाँति ईश्वर दर्शी अथवा अवलोकन करने वाला, शरीयत वालों अथवा पुस्तकीय ज्ञान वालों से अति अधिक विश्वसनीय है। (मौलाना हिदायत अली मोहद्दिस लखनवी रह० की कशफल ओलूम से)। मौलाना

रूम रहमतुल्लाह अलैह ने भी अपनी मसनवी मानवी में कई स्थानों पर आरिफान बिल्लाह के फलसफ-ए-इबादत पर प्रकाश डाला है। शरीयत के आदेशानुसार नमाज, रोजा इत्यादि जाहिरी कारण है। जब प्रेम का नशा मनुष्य पर चढ़ जाता है तो उसको प्रीतम (ईश्वर) के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं पड़ता है फिर ऐसा कुफ्र भी ईमान से बढ़कर है और ऐसी खता भी सवाब से अधिक है।

आतशे अज ईश्क दर जाँ बर फरोज।
सर बसर फिक्रो एबादत रा बसोज॥

प्रेम की अग्नि जब प्राण में प्रज्वलित होती है तो सम्पूर्ण चिन्ताओं और तपस्या की फिक्रों को जला देती है।

मोसिया आदाबे दाना दीगर अन्द।
सोख्ता जाँ दर्द दानाँ दीगर अन्द॥

ऐ मूसा! ज्ञानियों के शिष्टाचार, अदब दूसरे हैं और दर्द के मारे हुए दिल जलों की दवा और है।

आशिका रा हर नफस सोजीदनेस्त।
बर दहे वीराँ खेराज व अशर नेस्त॥

आशिकों की प्रत्येक स्वाँस ज्वलशील है। बंजर और जटियल उजाड़ भूमि का कर और टेक्स कुछ नहीं होता।

दर दरूने काबा रस्मे किब्ला नेस्त।
चे गम अर-गव्वास रा पाचेला नेस्त॥

काबा के भीतर किब्ला नहीं होता जिधर चाहें मुँह करके नमाज पढ़ें फिर तैरने वाले के पास यदि पाचेला (तैरते समय पाँव में बाँधने की वस्तु) नहीं है तो भी उसका कार्य नहीं रूकता है।

अज सरे मस्ताँ कलावरजी मजो।
जामा चाकाँ राचे फरमाई रफो॥

मस्तों से गुण की खोज न करो। जो अपने वस्त्र फाड़ दिये है उनसे सीने की आशा न करो।

मिल्लते इश्क अज हमा दीं हा जुदास्त।
आशिकारा मजहबो मिल्लते खुदास्त॥

इश्क की मिल्लत अर्थात् प्रेम धर्म सभी धर्मों से अलग है। आशिकों का धर्म केवल खुदा है।

मौलाना एक अन्य अवसर पर नमाज़ और रोज़ा के मूल तत्व पर बहस करते हुए लिखते हैं। रोज़ा, नमाज़, ज़िक्र, अज़कार (जप-तप) यह सभी प्रेम के उपकरण हैं। जिस भाँति प्रेमी आरम्भ में प्रीतम को भेंट उपहार इत्यादि प्रेम-पुष्टि हेतु भेजते हैं जिनके द्वारा प्रेम व्यवहार और सम्बन्ध स्थापित होते हैं इसी तरह सौम (रोज़ा), सलात, प्रेम-प्रकरण होते हैं किन्तु जब प्रेम परिपक्व हो जाता है प्रेमी और प्रेमिका दोनों पक्ष आकर्षित होने लगते हैं। वास्तविकता जब चरमता को पहुँचती है तब दोनों एक हो जाते हैं। मैं और तू का विवाद समाप्त हो जाता है तथा अद्वैत्य साम्राज्य स्थापित हो जाता है। लौकिकता समाप्त हो जाती है। मौलाना रूम की मसनवी में एक स्थान पर इस तरह लिखा है कि शरीयत के आदेश जीवितों (जिन्दों) के लिये हैं मुर्दों, मृतकों पर वह लागू नहीं हो सकता। खुदा के वह नेक बन्दे जो खुदा की मुहब्बत में मर मिटे हैं उनकी दशा मुर्दों से भी बढ़कर है।

विदित है कि प्रेम और इश्क वालों का कोई कार्य प्रेम के विरुद्ध नहीं होता और प्रेम की चरमता में ईश्वर के साथ तल्लीनता और निमग्नता अनिवार्य है। ऐसी दशा में जब बाह्य मन की धारा पलटती है तो शरीयत की अनिवार्यता न देखी जाय तो आश्चर्य का कोई अवसर नहीं है। पूज्य दाता वारिस पर इस युग में जो विरोधियों के आक्षेप हैं वह उनकी अज्ञानता पर निर्भर है। क्योंकि पूर्वकाल में भी शरीयत वालों ने ऐसे महान लोगों को देखा है और उनकी महानता और बुज़ुर्गी को स्वीकार किया है।

जैसा कि मौलाना जामी रहमतुल्लाह द्वारा नफखातुल उन्स में लिखा है। जिसके फारसी लेख का अनुवाद इस प्रकार है :

शेख अब्दुल्लाह याफई का कथन है कि एक आलिम (ज्ञानी) ने मुझसे कहा कि एक फकीर है जिसको हमने कभी नमाज़ पढ़ते नहीं देखा है और न किसी ने देखा है। आग्रह करने पर भी वह नमाज़ पढ़ने से भागता है। एक दिन वह बैठा था नमाज़ पढ़ने के लिये उसको कहा गया। सबके साथ खड़ा होकर वह नमाज़ पढ़ने लगा। किन्तु प्रत्येक रकात (खड़े होने की दशा) में देखा गया कि कोई अन्य आदमी मौजूद है। सलाम फेरने के पश्चात देखा गया कि वही फकीर अपनी जगह पर बैठा हुआ है। उन तीन व्यक्तियों में से कोई न था जो नमाज़ में देखे गये थे। फकीह (धर्मशास्त्री) ने उसकी ओर देखा तो वह फकीर मुस्कुराया और कहा इन चारों में से किसने तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़ी? आलिम साहब का कथन सुनकर शेख अब्दुल्लाह याफई रह० ने कहा कि एक ऐसी ही घटना मुझे भी स्मरण है। मोमिन के एक शरा पालक (शरीयत के पाबन्द) महोदय कजीबुल ब्यान रह० से इन्कार

था। एक दिन संयोगवश नगर की एक गली में दोनों की भेंट हो गई। इन दोनों के मन में यह विचार हुआ कि इनको पकड़ कर समकालीन शासक के पास ले जाना चाहिये। जब यह एक दूसरे के समीप हुए तो देखा कि श्रीमान कजीबुल ब्यान रह० एक विशालकाय पहलवान के रूप में हैं। जब और निकट हुए तो मुफ्ती महोदय ने देखा कि एराबी (अरबी) की सूरत में है जब और निकट हुए तो एक इस्लाम धर्म-पथ पालक की सूरत में पाया। जब दोनों की आँखें चार हुई तो कजीबुल ब्यान रह० ने कहा 'किस कजीबुल ब्यान को हाकिम के पास ले जाओगे और किसे दण्ड दिलवाओगे।' काजी ने अपना भ्रम त्याग दिया और शिष्य हो गये। किसी ने बड़े पीर शेख अब्दुल कादिर जीलानी रजीअल्लाह अनहो से कहा कि कजीबुल ब्यान नमाज़ नहीं पढ़ते तो आपने कहा 'कुछ न कहो उनका सिर खान-ए-काबा में सिजदे में है।' नफखातुल उन्स का जो अनुवाद उपर्युक्त है, उससे विदित है कि महामना गौसुलआज़म के समय में भी एक फकीर थे जिनपर नमाज़ न पढ़ने का आरोप था किन्तु गौसुस्सकलैन ने उनके सम्बन्ध में फरमाया 'हेच मगोयेद कि सरे वे दर खानये काबा दर सजूदस्त' अर्थात् उनके सम्बन्ध में कुछ न कहो वह खान-ए-काबा में सिजदा करते हैं। वास्तव में वह नमाज़ त्यागी न थे वहाँ प्रत्यक्ष दर्शियों की दृष्टि का दोष था। (चयनित नफखातुल उन्स)

इसी सम्बंध में एक अंश शाह तोराब अली कलन्दर की पुस्तक फतहुल कनूज से लिया जाता है जिसके परसियन लेख का अनुवाद इस प्रकार है : ज्ञात होना चाहिये कि कुछ खुदा के बन्दे (सेवक) हैं जो वक्त की नमाज़ नहीं पढ़ते किन्तु कुछ मक्का और कुछ मदीना में और बैतुल मोकद्दस में कुछ सद्दे सिकन्दरी (सिकन्दर द्वारा निर्मित दीवार) और कुछ जबले मुअज्जम पर हैं और पढ़ते हैं। बहुधा लोग इनको देखते हैं और पाप के भागी होते हैं। इस पद पर पहुँचने वालों को ज्ञात है कि तारकुस्सलात किस कारण से होते हैं चाहे थकान या सुस्ती या अन्य कारण जो भी हो। अब्दुल कादिर विश्वती का कथन है कि अधिकांश नगर निवासी कहते हैं कि अब्दुल कादिर नमाज़ का परित्यागी है। अल्लाह की कसम है कि हम कदाचित नमाज़ नहीं छोड़ते। हमारे लिये स्थान निश्चित है हम वहाँ नमाज़ पढ़ते हैं।

उक्त कलन्दर महोदय का कहना है कि मुझको शेख मुहम्मद से भी ज्ञात हुआ कि इब्राहीम मकबूली को देखा गया है कि मिस्र में कदापि ज़ोहर की नमाज़ नहीं पढ़ते थे। हो सकता है वह ज़ोहर की नमाज़ जाम-ए-अब्यज में पढ़ते थे। शेख बदरुद्दीन जो सैय्यद अली खवास के शिष्य थे अपने गुरू से कहते थे। ऐ शेख

जोहर की नमाज आप पर फर्ज है। शेख यह सुनकर चुप रह जाते थे। शेख करबी ने हमको सूचित किया है कि उन्होंने जोहर की नमाज सैय्यद इब्राहीम के साथ जामा-ए-अजहर में कई बार पढ़ी है। मैंने देखा कि इमाम उस मसजिद का बिना दाढ़ी का जवान पीत रंग केसर के समान था।

एक बार अब्दुल कादिर विश्वती के यहाँ हाजिर हुआ उस समय जोहर के नमाज की अज़ान हो रही थी। बस वह भूमि पर लेटने लगे और मुझसे कहा कि मुझे चादर से छिपाओ। मैंने चादर से ढ़ाक दिया। मैंने देखा कि वह चादर में नहीं थे। फिर पन्द्रह मिनट के पश्चात् वह आ गये और अली खास भी जोहर के बाद अपना कपाट बन्द कर लेते थे फिर एक घण्टा के बाद खोलते थे। एक दिन दरवाजा बन्द होने के पश्चात् उनको देखा तो वह नहीं थे। तात्पर्य यह है कि हाल वालों को उनके कार्यों पर छोड़ देना चाहिए। औलिया अल्लाह कों जो अग्रगण्य या दीक्षा गुरू हैं उनको जाहिर की सुरक्षा जरूरी है। इसलिये अल्लाह ने किसी औलिया पर हराम को उचित नहीं किया है और हमारे नबी अन्तिम रसूल हैं आप की शरीयत को कोई निरस्त करने वाला नहीं है। शेख ने फरमाया है कि वली को किसी अवज्ञा पर जो ईश्वर की इच्छा हेतु उसके लिये सम्भव हो शीघ्रता नहीं करनी चाहिये। (फतहुल कनूज)।

बरासवीं रहमतुल्लाह अलैह इक्तबासुल अनवार में लिखते हैं कि लतायफ कुदसी में लिखा है कि हमने कलन्दरों को देखा है कि फरायज (मुख्य कर्तव्य) को बेधड़क छोड़ देते हैं जैसे शाह शरफुद्दीन बू अली शाह कलन्दर पानीपत या ख्वाजा कर्क कलन्दर और ऐसे ही औरों को भी हमने देखा है। शेख हुसैन सहर वर्दी कलन्दर जवनपुरी फरायज का भी त्याग कर देते थे। यहाँ तक कि वह बड़े उच्च श्रेणी के आलिम थे। हजरत कुतुबुल आलम का कहना है कि हमने शेख मुहम्मद फखरूद्दीन जवनपुरी से मैंने कहा कि शेख हुसैन नमाज नहीं पढ़ते। तो शेख मुहम्मद फखरूद्दीन ने कहा कि हम नहीं कह सकते कि शेख हुसैन नमाज नहीं पढ़ते। शेख हुसैन तुर्किस्तानी हैं खुदा के रास्ते में हैं किन्तु वह कलन्दरिया मार्ग रखते हैं और हम उसव्वुफ (अध्यात्म) के रास्ते में हैं। यही शेख रूकनुद्दीन लतायफ कुदसी में लिखते हैं। तात्पर्य यह है कि कलन्दरिया सम्प्रदाय के लोग जाहिरी में फरायज छोड़े हुये हैं या यह कारण है कि ईश्वर ने उनको आत्मज्ञान प्रदान किया है और उनको ऐसी शक्ति दिया है कि वह एक ही समय में कई स्थान पर और भिन्न-भिन्न आत्मा के साथ रह सकते हैं। अतः किसी स्थान पर उनकी नमाज छूट जाती है तो किसी स्थान पर पढ़ लेते हैं या यह कारण हो सकता है कि

रूहानियत के जोर में इनकी बुद्धि व्यर्थ हो जाती है जिस कारण यह लोग मजनू जैसे हो जाते हैं और मजनू पर शरीयत लागू नहीं होती है। यद्यपि आंशिक रूप में कभी-कभी इनमें बुद्धिमानी पाई जाती है फिर भी बुद्धि प्रभाव नहीं माना जाता है।

उक्त कथन जो प्रस्तुत किया गया है वह अति महान और प्रमाणित ऊलमा और अल्लाह वालों की देखी हुई घटनाओं पर निर्भर है। मात्र इसलिए अंकित की गई है कि विरोधियों और आपत्ति करने वालों को ज्ञात हो कि भूतकाल में भी अधिकांश ऐसे फकीर हुए हैं कि जो देखने में शरीयत का पालन नहीं करते देखे गये हैं तथा लोगों को उनके प्रति बुरी धारणा बनी किन्तु वह पवित्र और महान बुजुर्गों में थे। उस समय के धर्मनिष्ठ औलिया अल्लाह ने उनके पद को जाना है और उनपर किसी प्रकार का आरोप नहीं लगाया है।

यह भी विदित है कि उनमें आत्मिक (रूहानी) गुण थे। क्योंकि एक ही समय पर वह अलग-अलग लोगों के साथ भिन्न स्थानों पर पाये और देखे गये हैं। इस अवसर पर हम अपनी ओर से कुछ नहीं कहना चाहते हैं वरन् पूज्य दाता वारिस के कुछ वृतान्त और घटनायें आपके सामने प्रस्तुत करते हैं जो वारिस पाक की जाहिरी और वास्तविक दशाओं का स्वयं साक्षी है।

दूसरा आरोप जो वेश्याओं के शिष्य करने का है। संक्षिप्त रूप से उस पर प्रकाश डाला जाता है। दाता वारिस निःसंकोच तवायफों को मुरीद करते थे किन्तु शिष्य करते समय उनसे तोबा कराते प्रणबद्ध करा लेते थे और बहुधा निकाह (विवाह) कर लेने का और धन्धे का परित्याग करने हेतु आदेश होता था। इस सम्बन्ध में सरकार पर कोई धार्मिक आरोप नहीं लगा सकता है। कुछ सम्मानित और विश्वासनिय धार्मिक शिष्य यह जानते हैं कि जितनी तवायफें दाता वारिस की शिष्या हुई हैं उन सबने अपना पेशा त्याग दिया है।

मौलवी रौनक अली वारसी, रज्जाकी पैंतेपुरी लिखते हैं कि बहुत सी तवायफें सरकार वारिस पाक की मुरीद हुई उन सबने नृत्य तथा संगीत से अपने को अलग कर लिया और वैश्यावृत्त का परित्याग कर दिया। कस्बा महमूदाबाद की एक प्रसिद्ध वेश्या इमामिन जो बहुत धनी थी। दाता वारिस की शिष्या होते ही अपने धन्धे से अलग हो गई और सम्पूर्ण धन सम्पत्ति दान कर फकीर हो गई। अपना शेष जीवन सरकार के प्रेम में व्यतीत कर दिया।

मौलाना तहैय्युर वारसी ऐनुल यकीन में लिखते हैं ग्राम मंगलसी जिला फैजाबाद की घटना है। एक बार आप जब वहाँ विराजमान हुए तो अबादी नामक

वेश्या ने उपस्थित होकर सरकार को गाने सुनाया फिर शिष्टाचार सहित प्रार्थना किया कि हमें भी शिष्य कर लें। आपने उसको आदेश दिया 'वेश्यावृत्त को त्यागने के पश्चात् शिष्य हो सकती हो।' उस तवायफ ने उसी समय तौबा किया और शिष्य होकर एक दीनदार मुसलमान से निकाह (विवाह) कर लिया। ऐसे और भी वृतान्त हैं जो दाता वारिस के धार्मिक विचारों के प्रकरण में लिखित हैं। ऐसी दशा वारिस पाक विवाह करने का निर्देश अवश्य करते थे। यदि विशेष परिस्थितियों में तत्काल आदेश नहीं करते तो फिर बाद में चेतावनी देते थे। कुछ छानबीन करने वालों ने आलोचनात्मक दृष्टि से भी दाता वारिस की दशाओं की छानबीन किया है। जैसा कि ख्वाजा हसन निजामी ने दिनांक २७ जनवरी सन् १९०९ ई० के दैनिक समाचार पत्र 'वकील' में सरकार के हालात (वृतान्त) पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं :

उनके सामने जो भी आया और सहायता हेतु इच्छुक हुआ आपने उसकी बाँह गहा। शिष्य भी कर लिया। शिक्षा-दीक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया। हाँ यह अवश्य था कि दाता वारिस अपनी ईश्वर प्रदत्त प्रभाव शक्ति से किसी को निराश नहीं होने देते थे। भाग्य के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को कुछ मिल ही जाता था। कुछ तवायफों के बारे में सुना गया है कि वह हाजी वारिस बाबा की शिष्या होने के पश्चात् अपने पेशे का परित्याग कर पवित्र जीवन बिताने लगी हैं और कुछ में धार्मिक लज्जा आ गयी है। धर्म के महान पुरूषों का अधिक सम्मान करने लगी हैं।

उपर्युक्त से विदित है कि दाता वारिस की दानशीलता और अनुदेश द्वारा अधिकांश वेश्याओं ने वेश्यावृत्त का त्याग किया है। सुन्दर तवायफ बदायूं की जो बाद में लखनऊ में रहने लगी थी। प्रसिद्ध गायिका और नृतकी थीं। उसका जीवन भोग विलास का जीवन था। किन्तु जब वह सरकार के इश्क और प्रेम में आ गई तो उसने अपने पेशे को त्याग दिया। वैभव और विलासित जीवन को नष्ट कर एक फकीरी वस्त्र पर निर्भर हो गई। हाजी अवघट शाह लिखते हैं कि कलकत्ता निवासी रफका नाम की एक यहूदिन थी जो बड़ी अच्छी अंग्रेजी जानती थी और सरकार की शिष्य भी थी। शिष्यता के पश्चात् मुसलमान हो गई और अपना जीवन कढ़ाई-बुनाई करके व्यतीत करने लगी। इस भाँति के बहुधा वृतान्त मौजूद हैं जिसे देखते हुए वेश्याओं के शिष्य करने का आरोप अनुचित और असत्य है। मान भी लिया जाय कि कुछ कसबियाँ शिष्य होकर उसी पेशे में संलग्न नहीं तो यह उनका कार्य हुआ जिसकी पकड़ उनके साथ है और वह स्वयं उसकी जिम्मेदार हैं। सरकार वारिस पर उनकी अवज्ञा से कोई आरोप नहीं लगता। वह अपने कार्य की स्वयं

भागी हैं और उनकी भाग्य की बात है। धर्म गुरू का कार्य आदेश और निर्देश करना है। मानना न मानना व्यक्ति पर निर्भर है। इस तथ्य को मान्यवर मजा कलन्दर लाहरपुरी ने पूर्णतः साफ कर दिया है जो निम्न है:

मजा कलन्दर लाहरपुरी का चतुर्थ पत्र शेख अब्दुर्रसूल किछन्दवी के नाम

माननीय मजा कलन्दरपुरी ने अपने प्रतिनिधि श्री शेख अब्दुर्रसूल किछन्दवी को जो पत्र उक्त विषय के सम्बन्ध में लिखा है, उसका सारांश अंकित है- शुभ आशीर्वाद के पश्चात् ऐ मेरे भ्राता मुझे ज्ञात होना चाहिये कि जो भी प्रत्याशी अथवा चाहने वाला तुम्हारे सामने आये तुम उसकी शिक्षा दीक्षा में कोई कमी न करो उसकी अच्छाई, बुराई तेरे वश की बात नहीं है। ईश्वर ने यह बात उनके भाग्य में नहीं बदा है जब पैगम्बर लोग ईश्वर द्वारा अस्वीकृत व्यक्तियों को पथ पर न ला सके तो हम लोगों से कैसे हो सकता है कि सभी जनों को अथवा दुष्ट आत्माओं को शुद्ध कर सकें? नबी-ए-करीम अलैहिस्सलात वत्तस्लीम ने अबू जेहल या दूसरे मरदूदों को उनकी दशा पर ही छोड़ दिया। अतः यह निश्चित नहीं है कि सभी शिष्य ही उत्तम और पवित्र हों और हम उन्हें सत्य ज्ञान दे सकें। केवल इतना ही प्रयास है कि जब ईश्वर का कोई भक्त हमारे द्वारा ईश्वर तक पहुँच जाता है तो हम प्रसन्न होते हैं और नेक नामी मिल जाती है। ऐ मेरे भ्राता संगति का प्रभाव होता है जो एकान्त में नहीं है। ऋषि-मुनियों की संगति का एक क्षण सत्तर वर्ष की तपस्या से अधिक फलदायक है या यह कहा जा सकता है कि एक पल फकीर की संगति सत्तर वर्ष की एकान्त तप से उत्तम है। जो भी ईश्वर की संगति चाहे उसे फकीरों (सूफियों) के साथ बैठना चाहिये कि उसके प्राण पर भगवान की कृपा हो।

उक्त पत्र से पाठक गण को ज्ञात हो सकता है कि सौभाग्य तथा दुर्भाग्य सृष्टि काल ही से होती है और भाग्य लिखा अवश्य होता है पर दाता वारिस जो प्रेम और इश्क का स्वरूप थे, विलीनता तथा लीनता में मस्त थे, भगवान के अतिरिक्त आपका अन्य किसी से कोई लगाव नहीं दिख पड़ता था। यदि आप कुकर्मियों को शिक्षा नहीं देते अथवा शिष्य नहीं करते तो आप पर यह आरोप नहीं होता तो भी समय अवसर को ध्यान देना अनिवार्य है। आपकी पवित्र आत्म शक्ति का प्रभाव जाना पहचाना है। अधिकतर तवायफें जिन्होंने आपके हाथ पर बैय्यत किया है।

परोपकारी है और सरकार ने बल देकर उनको निर्दोषित किया है। जिन्होंने अवज्ञा किया उन पर आप क्रोधित हुए हैं। आपका इश्क जहाँ प्रेम के सिवा कोई दूसरा रंग नहीं है धार्मिक बातों में इतनी विभोरता, संलग्नता फिर भी शरीयत की पाबन्दी का ध्यान इस बात का प्रमाण है कि आपके व्यक्तित्व से जहाँ उच्च कोटि का अध्यात्म प्रस्तुत करता है वहाँ धार्मिक पाबन्दियों पर भी कड़ी नजर रखता है। अल्लाह वाले पर आरोप करना व्यर्थ सी बात ही नहीं अपितु धृष्टता भी है। विरोधियों के आरोप घटनाओं से अलग हैं। किसी घटना के कारणों और अवसरों की वास्तविकता जानने हेतु एक अच्छे मन और मस्तिष्क की आवश्यकता है। अपनी दशाओं का अनुमान कर औलिया के हालात को विचार करना उचित नहीं दुष्टता और धृष्टता है। औलिया के कार्यों को कभी-भी अपने कार्यकलापों से तुलना नहीं करनी चाहिये।

लोगों ने सरकार वारिस पाक को नमाज पढ़ते देखा है। ऐसी बात नहीं थी कि कभी-कभी ऐसा होता था कि दाता वारिस को नमाज पढ़ते देखना आश्चर्यजनक लगता था। बहुधा बुजुर्गों को वारिस पाक के साथ जमायत की नमाज पढ़ने का अधिकांश अवसर प्राप्त हुआ है जैसा मौलाना हाजी आबिद हुसैन साहब फतेहपुर जिला बाराबंकी का कथन है जो अपनी बाल्यावस्था से सरकार की सेवा में आते रहे और अपने धर्म गुरु मौलाना शाह नजीर अली साहब के साथ भी सेवा में सरकार के उपस्थित रहे अपनी आँखों देखा है। मेरे निकट दाता वारिस नमाज के पाबन्द थे। यद्यपि जमात कभी-कभी या बहुधा छोड़ देते थे। वह कभी जमात के महत्व को अस्वीकार नहीं करते थे। बहुधा हमने उनको जमात से नमाज पढ़ते देखा है और सुना भी है।

सरकार वारिस पाक पर किये गये आरोपों को तथ्य लिखने के पश्चात् अब हम उस समय के उलमा-ए-कराम और वरिष्ट बुजुर्गों के मत और उनके एतकाद (आस्था) को देखना चाहते हैं कि आपके सम्बन्ध में उनका भी कोई आरोप सरकार के प्रति है अथवा नहीं। उन लोगों ने सरकार वारिस पाक के प्रति जो भी मत स्थापित किया होगा वह मूलतः पक्षपात से रहित होगा। अतः उनका मत एक नवीन शीर्षक से अंकित किया जाता है कि सरकार से सम्बन्धित उनका मत ज्ञात हो सके और यह भी ज्ञात हो सके कि दाता वारिस के अध्यात्मवाद को कहाँ तक स्वीकार किया है। यह अनेकानेक कथन प्रत्यक्ष अंगों को प्रकाशित करते हैं जो इस समय आत्मज्ञानी और अध्यात्मिक सन्तों के कथन पर आधारित है।

पूज्य सैय्यद वारिस पाक से सम्बन्धित समकालीन उलमा और मशायख के मत

ओलमा-ए-कराम फिरंगी महल :

माननीय हाजी सैय्यद शाह वारिस अली रहमतुल्लाह अलैह कादिरया-रज्जाकिया सम्प्रदाय के मशहूर व्यक्ति थे जिनके द्वारा इस सिलसिले से बड़ी संख्या में लोग शिष्य हुए। फिरंगी महल के आलिमों का सिलसिला भी वही है। इसी हेतु फिरंगी महल के आलिमों का निकटतम सम्बन्ध था। गदर के पूर्व माननीय हाजी वारिस बाबा फिरंगी महल अधिक आते थे। श्रीमान मौलाना अबूल हसन से आपकी मित्रता थी। फिरंगी महल के लोग आपको कामिलीन में जानते थे। शरीअत की पाबन्दी अथवा निरोध से आपको मुक्त और अन्य सभी को निरोधित मानते थे। मौलाना क्यामुद्दीन अब्दुल बारी साहब लिखते हैं कि मेरे दादा मौलाना अब्दुर्रज्जाक कुद्ससिर्रहू १३०६ हिजरी मुताबिक १८८६ ई० में अंतिम बार भेंट करने हेतु आये थे। उसी वर्ष मेरे दादा महोदय की मृत्यु हुई। मैं भी उनकी बीमारी में आया था। हमने अपने दादा और अपने पिता इत्यादि से दाता हाजी वारिस पाक की बड़ाई सुना था। मौलवी करामतुल्लाह साहब जो मुहम्मद रजा शारेह मुसलिम के नाती थे और अब्दुर्रज्जाक बाँसवी रह० के उत्तराधिकारी तथा मौलवी वहीदुल्लाह साहब फिरंगी महली सरकार वारिस पाक के शिष्य थे।

मौलाना अब्दुल वहाब कुद्स सिर्रहू के सुपुत्र मौलाना क्यामुद्दीन अब्दुल बारी साहब कहते हैं कि मेरा विद्यार्थी जीवन था फिर भी मेरे आदरणीय पिता ने कई बार हाजी वारिस पाक के सम्बन्ध में उनकी बाह्य बातों की स्वतंत्रता का वर्णन किया था। मेरे सामने एक दो बार भेंट भी किया था। प्रथम बार बाँसा शरीफ से लौटते समय ग्राम रहरा मऊ में जबकि शेख मुबारक अली महोदय के यहाँ हाजी वारिस बाबा ठहरे हुए थे। भेंट किया। चलते समय मुझसे बताया कि मैं भली-भाँति भेंट नहीं कर पाया हूँ। क्योंकि महिलाओं की भीड़ अधिक थी। सरकार वारिस पाक के लिये तो यह भी बात हानिकारक नहीं थी क्योंकि वह अपने कार्य में व्यस्त थे किन्तु हमारे जैसे सचेत लोगों के लिये उचित नहीं था। इसी उलझन में अच्छी तरह भेंट नहीं हो सकी है। दूसरी बार हाजी बाबा और मेरे पिता रुदौली शरीफ से लौटते समय एक ही डिब्बे में सवार थे। बाराबंकी स्टेशन पर मेरे पिता ने मेरा परिचय सरकार को देते हुए कहा कि यह मेरा छोटा लड़का है। हाजी साहब ने जल्दी में

मिशकात-ए-हक़्क़ानिया

(जीवनी वारिस पाक)

लेखक
मौलवी फ़ज़ल हुसैन साहब सिद्दीक़ी वारसी

जुबैरी बुक डिपो
आस्ताना रोड, देवा शरीफ, बाराबंकी (यु.पी.)

पूज्य सैय्यद वारिस पाक से सम्बन्धित समकालीन उल्मा और मशायख के मत

ओलमा-ए-कराम फिरंगी महल :

माननीय हाजी सैय्यद शाह वारिस अली रहमतुल्लाह अलैह कादिरया-रज्जाकिया सम्प्रदाय के मशहूर व्यक्ति थे जिनके द्वारा इस सिलसिले से बड़ी संख्या में लोग शिष्य हुए। फिरंगी महल के आलिमों का सिलसिला भी वही है। इसी हेतु फिरंगी महल के आलिमों का निकटतम सम्बन्ध था। गदर के पूर्व माननीय हाजी वारिस बाबा फिरंगी महल अधिक आते थे। श्रीमान मौलाना अबूल हसन से आपकी मित्रता थी। फिरंगी महल के लोग आपको कामिलीन में जानते थे। शरीअत की पाबन्दी अथवा निरोध से आपको मुक्त और अन्य सभी को निरोधित मानते थे। मौलाना क्यामुद्दीन अब्दुल बारी साहब लिखते हैं कि मेरे दादा मौलाना अब्दुर्रज्जाक कुद्ससिर्रहू १३०६ हिजरी मुताबिक १८८६ ई० में अंतिम बार भेंट करने हेतु आये थे। उसी वर्ष मेरे दादा महोदय की मृत्यु हुई। मैं भी उनकी बीमारी में आया था। हमने अपने दादा और अपने पिता इत्यादि से दाता हाजी वारिस पाक की बड़ाई सुना था। मौलवी करामतुल्लाह साहब जो मुहम्मद रजा शारेह मुसलिम के नाती थे और अब्दुर्रज्जाक बाँसवी रह० के उत्तराधिकारी तथा मौलवी वहीदुल्लाह साहब फिरंगी महली सरकार वारिस पाक के शिष्य थे।

मौलाना अब्दुल वहाब कुद्स सिर्रहू के सुपुत्र मौलाना क्यामुद्दीन अब्दुल बारी साहब कहते हैं कि मेरा विद्यार्थी जीवन था फिर भी मेरे आदरणीय पिता ने कई बार हाजी वारिस पाक के सम्बन्ध में उनकी बाह्य बातों की स्वतंत्रता का वर्णन किया था। मेरे सामने एक दो बार भेंट भी किया था। प्रथम बार बाँसा शरीफ से लौटते समय ग्राम रहरा मऊ में जबकि शेख मुबारक अली महोदय के यहाँ हाजी वारिस बाबा ठहरे हुए थे। भेंट किया। चलते समय मुझसे बताया कि मैं भली-भाँति भेंट नहीं कर पाया हूँ। क्योंकि महिलाओं की भीड़ अधिक थी। सरकार वारिस पाक के लिये तो यह भी बात हानिकारक नहीं थी क्योंकि वह अपने कार्य में व्यस्त थे किन्तु हमारे जैसे सचेत लोगों के लिये उचित नहीं था। इसी उलझन में अच्छी तरह भेंट नहीं हो सकी है। दूसरी बार हाजी बाबा और मेरे पिता रुदौली शरीफ से लौटते समय एक ही डिब्बे में सवार थे। बाराबंकी स्टेशन पर मेरे पिता ने मेरा परिचय सरकार को देते हुए कहा कि यह मेरा छोटा लड़का है। हाजी साहब ने जल्दी में

कुछ कहा और मेरी पीठ पर दो तीन हाथ माथ मारे। मेरे पिता ने कहा तुम्हारे लिये हाजी बाबा ने मिठाई प्रदान किया है। उसी समय एक सेवक ने एक झाबा मिठाई और एक हाड़ी दही बड़ा मुझको दिया। मेरे आदमी ने संभाल कर रख लिया। उसी समय रामनगर के राजा भी आये। हाजी बाबा ने उनकी भी पीठ थपथपाई। मैंने पिताजी से कहा यह कौन फकीर हैं जो लोगों को मारा करते हैं। उन्होंने कहा कि यह हाजी साहब हैं जिस पर प्रसन्न होते हैं उसकी पीठ थपथपाते हैं। मेरे पिताजी ने मेरे हेतु आशीर्वाद की इच्छा प्रकट की।

मौलाना अब्दुल गफ्फार कुद्स सिर्रहू :

मौलाना अब्दुल बारी साहब लिखते हैं कि मैं पाठ्य पुस्तकों से छुट्टी पाकर अब्दुल गफ्फार साहब से मसनवी मौलाना रूम की पढ़ता था। मेरे साथ मौलाना अब्दुर्रऊफ, मौलाना अब्दुल बाकी मदनी भी पाठ्य में शिरकत करते थे। पाठ्य के बीच एक बार औलिया-ए-कराम के चमत्कारों का प्रसंग उठा तो मेरे पिताजी ने मौलाना से कहा कि आप इनकी शंका को अच्छी तरह समझाइये। यह भी कहा कि हाजी साहब से सम्बन्धित कुछ कार्य ऐसे हैं जो उनसे प्रकट नहीं हो सकते। जैसे ईसा मसीह, मूसा इत्यादि की अवहेलना। यह हाजी साहब की मर्यादा के लिये उचित नहीं है। उनके ऊपर यह मिथ्यारोप है। रहा फरायज, मुख्य कर्त्तव्यों का पालन तो इसमें वह अपनी दशा से मजबूर हैं। और उनकी विवशता बाधक है। खाने-पीने अथवा शारीरिक सुखों की ओर आकर्षित होते तो उनके ऊपर कर्त्तव्य पालन की अवहेलना का आरोप सटिक होता। मुझे ज्ञात होता है कि हार्दिक व्यस्तता और आत्मिक संलग्नता के कारण वस्तुओं के स्वाद का भी उनको ज्ञान नहीं रहता। फिर मौलाना अब्दुल गफ्फार साहब ने कहा कि मुझ पर एक घटना बीती है जिसके द्वारा हाजी साहब की आन्तरिक शक्ति का बोध होता है।

बात इस प्रकार है हाजी बाबा लखनऊ विराजमान थे और मैं उस समय सन्त दर्शन का अभिलाषी था। हाजी बाबा की सेवा में उपस्थित हुआ। दाता लोगों की ओर से मुँह फेर कर लेटे हुए थे। मैं जाकर पीछे बैठ गया और एक जिक्र (जप) करने लगा। जिक्र खफी था अर्थात् स्वररहित था। थोड़ी देर में हाजी साहब ने आदेश दिया 'यह कौन आया है। इसको निकालो।' यह सुनकर मैं रूष्ट हो गया और हम जाते हैं कहता हुआ चला आया। हम तो बुजुर्ग जानकर आये थे। यदि मुहम्मदी सद् व्यवहार नहीं है तो हमको विश्वास भी नहीं है। सरकार दाता मुस्कुराते रहे, कुछ कहा नहीं मैं चला आया।

संयोग से दूसरे तीसरे दिन हाजी बाबा हमारे घर पधारे और मेरे बड़े भाई साहब मौलाना अबूल हसन साहब को मुझसे पूछा मैंने कठोर स्वर में कहा कि जाईये, जाईये वह मकान पर नहीं हैं। आप जा रहे थे कि मौलाना अबूल हसन साहब आ गये और देर तक बातें करते रहे। जब हाजी बाबा चले गये तब मैंने मौलाना अबूल हसन से पूछा यह शाह साहब अच्छे नहीं हैं मैं इनसे मिलने गया तो उन्होंने निकलवा दिया। भाई साहब ने कहा ऐसा तो नहीं है वह बड़े व्यवहार कुशल हैं। शायद तुमने कोई ऐसा कार्य किया हो कि उन्हें क्रोध आ गया हो। मैंने कहा कि मैं जिक्र में लगा था। उन्होंने पूछा कौन सा जिक्र था तो बताया। भाई साहब ने हंस के कहा कि अच्छा रहा किसी को क्रोधित करो और कहो कि वह व्यवहार कुशल नहीं है। यह तुम्हारी भूल है। उस समय हाजी बाबा विशेषावस्था में थे और तुम अवस्था निवारण का जप कर रहे थे जो उनको बुरा लगा।

मौलाना अब्दुर्रऊफ फिरंगी महली :

मौलाना अब्दुल बारी साहब लिखते हैं कि मेरे आदरणीय भ्राता अब्दुर्रऊफ साहब ने मुझसे कहा मैंने हाजी साहब के प्रति मिथ्या संदेह कर लिया था। एक विश्वासपात्र बुजुर्ग ने एक व्यक्ति की कहानी उसी की जबानी सुनाया जिसके कारण मेरा संदेह समाप्त हो गया। घटना यह थी कि वह आदमी मदीना शरीफ उपस्थित हुआ और फिर कामिल का प्रार्थी हुआ। स्वप्न में निर्देश हुआ। लखनऊ फिरंगी महल में अब्दुर्रज्जाक के शिष्य हो जाओ। किन्तु लखनऊ पहुँचते ही उसको पता चला कि शाह का स्वर्गवास हो गया। फिर मदीना पहुँचकर प्रार्थी हुआ और पुनः आदेश हुआ कि मौलाना फजलुर्रहमान या हाजी वारिस अली शाह के मुरीद हो जाओ। वह आकर मौलाना का शिष्य हो गया। पर हाजी बाबा के दर्शन का इच्छुक बना रहा। जब हाजी बाबा की सेवा में उपस्थित हुआ तो आपने उसको देखते ही कहा 'हम तो या में थे। हम तो या में थे।' इससे हाजी वारिस बाबा की प्रकटन शक्ति की दक्षता (कूवते कशफ) सिद्ध होती है। मेरे भाई मौलाना मुझसे अपनी सोच विचार का कारण यह बताया कि अपने दाता साहब की बातें सुनकर मेरी ऐसी धारणा हो गई थी कि पूज्य हाजी बाबा इल्म वालों की संगति पसन्द नहीं करते हैं। जब मौलाना अब्दुल गफ्फार साहब और मौलाना फजलुर्रहमान साहब के शिष्य की घटना मुझे ज्ञात हुआ तो मेरा ख्याल साफ हो गया।

हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबंद की कथा सुनकर कि जीवन काल में शेख अकबर कुद्स सिर्रहू के लोगों को रोकते थे कि शेख अकबर के निकट न जाओ

और जब शेख की मृत्यु हुई तो लोगों को जनाजा में शामिल होने के लिये कहते थे। लोगों ने निवेदन किया जीवन में हम लोगों को संगति में जाने से रोक दिया अब मरने के पश्चात् ऐसा आदेश करते हैं। तब आपने कहा कि वह तो ऐसे ही थे जैसा अब कहता हूँ किन्तु तुम्हारी बुद्धिमता उनकी बातों को समझ नहीं पाती और तुम लोग पथ भ्रष्ट हो जाते। इसीलिये मैंने सबको रोका था। मेरे भाई जी ने कहा आश्चर्य की बात नहीं है। यदि वह हाजी बाबा के बाद होते तो वह भी ऐसा ही आदेश देते।

शाह अहमद हुसैन साहब बाँसवी :

मियाँ अहमद हुसैन बाँसवी रह० ने कहा है कि मैं हाजी साहब को अपने बचपन ही से जानता हूँ। जीवन के आरम्भ में वह बड़े नमाजी और शरीयत पर चलने वाले थे। किसी समय की नमायत नहीं छूटती थी। बहुत दिनों तक भ्रमण में जीवन व्यतीत किया है। अन्त में जप-तप के कारण ऐसी दशा हो गयी है जो तुम लोग देखते हो। मौलाना अब्दुल बारी लिखते हैं कि मैं मान्यवर हाजी बाबा को एक साधारण फकीर समझता था। पर इन घटनाओं के कारण और मृत्यु के समय एक कार्य प्रस्तुत होने से मुझको उनके प्रति सत्य विचार और सद्भाव उत्पन्न हुआ। शरीयत का त्याग करना तो मैं अच्छा नहीं समझता किन्तु हाजी बाबा की विवशता और अवस्था को स्वीकार करता हूँ।

मौलाना मुहम्मद नईम साहब फिरंगी महली :

मौलवी मुहम्मद नाज़िम अली साहब फजली सिक्रेटरी मदरसा आलिया फुरकानिया लखनऊ लिखते हैं कि जब हाफिज सेराजुल यकीन साहब कादरी ने अपने सुपुत्र के उत्तराधिकारी होने का उत्सव किया और वह समय नजातुल्लाह शाह रह० के उर्स के समय होने के कारण पूज्य हाजी बाबा और मौलाना नईम साहब फिरंगी महली जो बड़े पाये के आलिम थे दोनों सम्मलित थे। सरकार वारिस पाक और मौलाना दोनों ने एक दूसरे को भेंटा और गले मिले।

हज़रत शाह मौलाना फजलुर्रहमान साहब नक्शबन्दी:

उक्त घटना से विदित है कि सरकार वारिस पाक अपने समकालीन बुजुर्गों और विद्यावानों से अच्छा सम्बन्ध रखते थे। हज़रत मौलाना शाह फजलुर्रहमान साहब रजी० गंज मुरादाबादी से आपकी कुछ भेंटवार्तायें प्रसिद्ध हैं जिनसे सरकार की मौलाना से मेल-जोल का पता चलता है। मौलवी रौनक अली साहब वारसी रज्जाकी पैंतेपुरी लिखते हैं कि मुझसे मुंशी अब्दुर्रहीम महोदय ने ब्यान किया है जो

मौलाना के वरिष्ठ शिष्य हैं। मैं अपने धर्म गुरू हज़रत मौलाना की सेवा में उपस्थित हुआ तो उन्होंने आदेश दिया कि तुम्हारे देहात में देवा शरीफ है। तुम मान्यवर हाजी बाबा से मिलते रहो। अपना एक नियम बना लो। एक और घटना भी मुंशी अब्दुर्रहीम फज़ली ने ब्यान किया है कि शेख हादी हसन साहब पीरज़ादा बन्दगी नगर हज़रत मौलाना की सेवा में शिष्य होने हेतु उपस्थित हुए तो मौलाना ने उनसे कहा कि तुमको हाजी बाबा के प्रति श्रद्धा नहीं है। अतः तुमको शिष्य नहीं करूंगा। मौलवी नाज़िम अली फ़जली सिक्रेटरी मदरसा आलिया फुरकानिया लखनऊ लिखते हैं कि हमारे मदरसे में आबिद हुसैन शहसवानी हैं जो चिश्तिया सम्प्रदाय के एक बुजुर्ग के शिष्य हैं और शेख आली जाह नक्शबन्दी से भी लाभान्वित हैं। उन्होंने हमारे मौलाना गंज मुरादाबादी से एक बार सुना है कि हाजी साहब मुकाम हैरत में हैं। हज़रत मौलाना अहमद मियाँ साहब उत्तराधिकारी पूज्य मौलाना शाह फज़ले रहमान साहब ने एक स्नेह पत्र में जो मौलवी हिसामुद्दीन साहब फजुली को लिखा है। उसमें एक अन्य भेंट का समाचार इस प्रकार लिखा है :

दूसरी बार जब पूज्य दाता वारिस पधारे थे दिन के पौने बारह बजे थे। मौलाना से मिले और आदेशित किया कि अपने छोटे लड़के को बुलवाइये। अतः मुझको हज़रत ने बुलवाया। हाजी साहब मुझसे भी गले मिले और बहुत सी बातें मेरे सम्बन्ध में फरमाया। हम दोनों बाप बेटे मस्जिद के द्वार तक सरकार वारिस पाक को पहुँचा कर पुनः लौट गये। हाजी बाबा वहाँ से बाँगर मऊ को चले गये। तीसरी बार जब पधारे तो किसी के यहाँ निमंत्रित थे। जब भोजन आया तो हाजी साहब ने आदेश दिया भोजन मौलाना साहब को पहुँचाओ और हाजी साहब लगभग चार बजे रात में बाँगर मऊ के लिये प्रस्थान कर दिये।

हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहब मोहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैह :

श्रीमान सैय्यद गफूर शाह महोदय हाशमी-अलवारसी ने एक पुस्तक अंग्रेजी भाषा में हाजी वारिस पाक के सम्बन्ध में लिखा है। उसमें अंकित है एक घटना मौलवी अहमद हुसैन अहमद के भाई की। जब वह हज करने गये थे तो जाने के पूर्व सरकार वारिस पाक से मिले। उन्होंने हज की आज्ञा चाही। आपने उनसे कहा कि हाजी इमदादुल्लाह साहब से मेरा सलाम कहना। वह एक समय मेरे साथ थे। अब वह मक्का शरीफ में रहते हैं। उनका कथन है कि जब मैंने उनसे सरकार का सलाम कहा तो हाजी इमदादुल्लाह साहब पर एक विशेष प्रभाव हुआ और उनके आँसू निकल आये। उत्तर में उन्होंने इस भाँति कहा कि हिन्दुस्तान के सूर्य से प्रार्थना करना कि कल्याण की दुआ करें क्योंकि अब मेरा समय आ गया है। जब मैंने यह

सूचना सरकार को दिया तो आपने कहा 'हाजी इम्दादुल्लाह साहब स्वयं वली (ऋषि) हैं उनको दुआ की क्या जरूरत है।' हजरत मौलाना शाह सुलेमान साहब कादरी चिश्ती फुलवारी शरीफ ने लेखक मिश्कात हक्कानिया को एक पत्र में लिखकर प्रेषित किया था। हाजी इमदादुल्लाह साहब मोहाजिर मक्की ने मुझसे कहा था कि 'हाजी वारिस अली शाह जैसा मोहिद (अद्वैतवादी) फिर देखने में नहीं आया।'

हजरत मियाँ मुहम्मद शेर शाह रहमतुल्लाह पीलीभीत:

मौलवी वारिस अली साहब निवासी कस्बा उतरौली जिला अलीगढ़ जो मियाँ मुहम्मद शेरशाह के मुख्य शिष्य हैं ब्यान करते हैं कि पूज्य मियाँ मुहम्मद शेर शाह के सम्मुख दाता वारिस पाक की चर्चा हुई तो आपने इस प्रकार कहा 'वह बहुत बड़े आदमी अर्थात् महान है। जो मनुष्य उनके विरुद्ध होता है उसकी सूरत देखने को मेरा जी नहीं चाहता।' मौलाना मुफ्ती अबूजर साहब संभली का कथन है कि मैं हजरत मियाँ शेर शाह के प्रति मुझे अविश्वास था। जब मैं सरकार वारिस पाक की सेवा में उपस्थित हुआ और शिष्य हो गया। इसके पश्चात् मुझे स्वयं उनके प्रति श्रद्धा हो गई। मैं देवा शरीफ से पीलीभीत गया और मियाँ की सेवा में उपस्थित हुआ। मुझे देखकर मियाँ शेरशाह ने कहा कि तू अपने मन से नहीं आया है। किसी का भेजा हुआ आया है। पुन: कहने लगे 'कुछ को बाप दादा की सम्पत्ति हाथ लग जाती है तो वह उसको नि:संकोच लुटाते हैं मेरी तो अपनी कमाई है।' मुझे यह कथन सुनकर माननीय मियाँ साहब के इस कथन की पुष्टि हो गई जो मैंने कुछ महान् लोगों से सुना था। फिर माननीय मियाँ साहब ने कहा कि हाजी साहब को बाप दादा की दौलत मिली है वह जिस भाँति चाहे मुक्तहस्त होकर लुटायें। मेरी तो अपनी कमाई है, मुझे तो पीड़ा है।

हाफिज मुहम्मद यहिया मेरठी जो माननीय मियाँ मुहम्मद शेर शाह के महान् उत्तराधिकारियों में हैं उनका कहना है कि मेरी उपस्थिति में मियाँ साहब के समक्ष जब हाजी बबा की चर्चा हुई तो आपने कहा कि हाजी साहब एक वरिष्ठ सन्त, महान बुजुर्ग और पवित्र हैं। एक बार पीलीभीत पधारे थे तो भेंट हुई थी।

मौलाना मुश्ताक अली साहब कलन्दर कुद्स सिर्रहू :

मौलाना हकीम मुश्ताक अली साहब रहमतुल्लाह अलैह मौलाना शाह तोराब अली कलन्दर काकोरी के वरिष्ठ उत्तराधिकारी थे। उनकी दशा इस प्रकार थी कि एक बार उन्होंने अपने अध्यात्म-गुरू को लिखा कि जितने जप-तप मुझे बताये गये थे। वह

सब मैं करता हूँ। मुझे और कुछ प्रदान किया जाय। तो उत्तर मिला कि आप जो कुछ करते हैं वह अति अधिक और पर्याप्त हैं। फकीर से इतना भी नहीं हो सकता। मौलाना ने इस पत्र को अपने शिज़रे के साथ कब्र में रखने का निर्देश किया। एक बार मैनपुरी में शेख अकरम हुसैन साहब के यहाँ भण्डारा था उसमें अब्दुल्लाह शाह कम्बल पोश के साथ, शाह मुहम्मद आरिफ, हकीम मुश्ताक अली, हुसैन बख्श साहब कलन्दर और अन्य बुजुर्गों की भी दावत (निमंत्रण) थी। शाह साहब कम्बल पोश ने हकीम मुश्ताक अली को ध्यानपूर्वक देखकर इनके लतायफ सित्ता (सातों प्रकार की पवित्र शक्तियाँ) जप-तप में लीन हैं। तात्पर्य यह है कि महान विद्यवान जपी थे। एक बार लोगों से सुनने पर उक्त मौलाना ने सोचा कि जब हाजी बाबा नमाज़ नहीं पढ़ते तो किसी अवसर पर भेंट करके अवश्य उनसे पूछना चाहिये। हकीम साहब का यह नियम था कि जुमा पढ़ने के पश्चात् शाह मुहम्मद आरिफ अबूल ओलाई से मिलने जाया करते थे। जब उनके वहाँ पहुँचे तो देखा कि वहाँ पूज्य हाजी बाबा बैठे हुए थे। हकीम मुश्ताक अहमद का कहना है कि देखते ही मेरे मन में यह बात आई कि अवसर अच्छा है अवश्य पूछना चाहिये। किन्तु जैसे ही मैं पहुँचा हाजी साहब जाने हेतु उठ खड़े हुए और चले गये। मैंने हाजी साहब के उठने पर जब ध्यान किया तो मुझे ज्ञात हुआ कि हाजी बाबा का रोम-रोम जप-तप में लीन है।

मौलाना हाजी जैदुल्लाह साहब पेशावरी :

हाजी नसीरुद्दीन साहब जो शाह अब्दुस्समद सहसवानी रह० के शिष्य हैं उनका ब्यान है कि फतेहपुर में एक भ्रमणकर्ता फकीर मौलाना हाजी जैदुल्लाह साहब पेशावरी पधारे जो नक्शबन्दियाँ सम्प्रदाय के शेख (बुजुर्ग) थे। दारोगा हुसैन अली साहब की मस्जिद में ठहरे थे देखने में शरीयत के अनुगामी थे। उनकी संगति में बहुधा लोग बैठे रहते थे। पूज्य हाजी वारिस पाक की चर्चा संयोग से छिड़ गई। लोग आपका यशगान करने लगे किन्तु किसी विरोधी ने यह दोषारोपण किया कि आप नमाज़ नहीं पढ़ते थे। यह बातें हो ही रही थी कि लोगों ने देखा हाजी बाबा पधार रहे हैं और अपने नियमानुसार प्रथम ही सलाम किया। जैदुल्लाह साहब ने सलाम के जवाब के पश्चात् इस प्रकार कहना आरंभ किया कि सुना है आप नमाज़ नहीं पढ़ते। मैं सलाम के जवाब नहीं देता। आपने इतना सुनते ही कहा 'ऐसा तो नहीं है।' आपके इन शब्दों में खुदा जाने किस जादू का प्रभाव था कि मौलाना मौन हो गये। अस्र की नमाज़ का समय था। आप भी नमाज़ में खड़े हुए। नमाज़ के पश्चात् हाजी बाबा मस्जिद में बैठ गये। थोड़ी देर तक मौलाना जैदी साहब के सामने बैठक

रही थी कि उन्होंने कहा 'बस' हाजी बाबा उठकर चले गये। हम लोग वहीं मौजूद थे। हुजूर के जाने के पश्चात् मौलाना ने एक ठंडी सांस लिया और कहा कि ध्यान लोगों का गलत निकला। उपस्थित लोगों ने चाहा कि इस बात का तथ्य ज्ञात करें किन्तु मौलाना ने कहा हम इस सम्बन्ध में बात तक करना नहीं चाहते।

मौलाना शाह अब्दुल कादिर बदायूनी रहमतुल्लाह अलैह :

हाफिज सेराजुद्दीन मुहम्मद ज़ाकिर निवासी बदायूँ शरीफ स्थानापन्न शाह अबूल हसन मारहरवी नूरी मियाँ कुद्स सिर्रहू लिखते हैं कि एक बार किसी आदमी ने मौलाना शाह अब्दुल कादिर मजीदी रहमतुल्लाह से पूछा कि क्या हजरत हाजी साहब नमाज नहीं पढ़ते? आपको इस सम्बन्ध में कोई जानकारी है। आपने उत्तर दिया कि मुझको हाजी बाबा के दरबार में दो बार उपस्थित होने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। परन्तु वह समय नमाज़ के नहीं थे। नमाज़ का सामान रखा पाया। मुझे विश्वास है कि नमाज़ जरूर पढ़ते हैं क्योंकि बिना नबी के रास्ते का अनुसरण किये फकीरी कठिन है।

मौलाना शाह अब्दुस्समद साहब सहसवानी रहमतुल्लाह अलैह :

मौलवी रौनक अली महोदय वारसी अली रज्जाकी पैंतेपुरी लिखते हैं कि हजरत मौलाना शाह अब्दुस्समद साहब सहसवानी जो बहुत दिनों से कस्बा फुफुन्द में रहते थे जिनके यश और कीर्ति जनता में फैली हुई थी। उनकी एक भेंटवार्ता मौलवी हाजी नसीरूद्दीन महोदय ने मुझको लिखा था जो निम्न है :

हमारे मौलाना का निवास एक बार फुफुन्द में हुआ। मौखिक नमस्कार बन्दगी एक दूसरे को भेजते रहे। पर भेंट का संयोग नहीं हुआ था। जब कभी हाजी बाबा फुफुन्द आते मौलाना को तार दिया जाता किन्तु भेंट का अवसर नहीं प्राप्त होता था। यहाँ तक कि हाजी बाबा ने यात्रा करना छोड़ दिया और स्थाई रूप से देवा में निवास कर लिया। हमारे मौलाना की दर्शन-अभिलाषा बढ़ती गई। वह स्वयं देवा शरीफ पधारे। हाजी बाबा ने खड़े होकर उनको सम्मानित किया। हजरत मौलाना को विवाद से रूचि थी। हाजी बाबा ने मौलाना की मीठी बड़ाई की जिसमें वाद-विवाद से बचने का निर्देश था फिर मौलाना मौन हो गये। कुछ बातें संकेत द्वारा हुई जिसको अन्य लोग न समझ सके। उस समय पूरे वातावरण पर निमग्नता का साम्राज्य था पुनः एकान्त हो गया और सभी लोग बाहर चले आये। हजरत मौलाना कुछ समय पश्चात् बाहर आये तो मस्ती में झूम रहे थे। हाजी बाबा ने उनसे रहने को कहा तो उन्होंने निवेदन किया। भेंट सार्थक हो गई। बहुत कुछ सुलभ हुआ अल्लाह का

शुक्र है।

मौलाना शाह नज़ीर अली फतहपूरी रहमतुल्लाह :

मौलाना हाजी आबिद हुसैन साहब रईस फतेहपुर जिला बाराबंकी जो उस जमाना में पवित्र माने जाते थे। अपने पीर मुर्शीद मौलाना नज़ीर अली शाह और पूज्य हाजी बाबा की परस्पर मित्रता को अंकित करते हैं। उनके प्रेम पत्रों का सारांश निम्न है:

हजरत मौलाना पूज्य शाह नज़ीर अली साहब के साथ मैं भी था। जब जाने का संयोग होता तो मैं देखता था कि हाजी बाबा खड़े होकर हाथ पकड़कर बिठाते थे। मैं भी मुसाफा (हाथ मिलाकर) एक किनारे बैठ जाता था। पाँच सात मिनट बैठकर चला आता था। दो चार बार कुछ समय अधिक व्यतीत होता था जब कोई विशेष चर्चा छिड़ जाती थी। मान्यवर हाजी बाबा और मौलाना को एक दूसरे से अधिक सुख पाते थे। हाजी बाबा को मौलाना बहुत अधिक मानते थे।

हजरत हाजी मनसब अली शाह चिश्ती सलोनी और मियाँ सैय्यद अली शाह :

मौलवी रौनक अली शाह वारसी रज्जाकी लिखते हैं कि इस क्षेत्र में दो महान बुजुर्ग हुए हैं एक तो हाजी मंसब अली सलोनी उत्तराधिकारी शाह नियामतुल्लाह और दूसरे मियाँ सैय्यद अली शाह चिश्ती स्थानापन्न मजा शाह कलन्दरी लाहरपुरी। इन दोनों से लोगों ने अधिक लाभ उठाये हैं। जबसे दाता वारिस ने शिष्य करना आरम्भ किया तबसे इन दोनों बुजुर्गों ने लोगों को पूज्य हाजी बाबा से शिष्य होने का आदेश दिया। सरकार वारिस पाक जब प्रथम बार पैंतेपुर आये और हाजी मन्सब अली की चर्चा हुई तो आपने कहा वह हमारे भाई हैं और हज यात्रा के साथी हैं। हम उनसे मिलना चाहते हैं। यह कहकर आप चल पड़े। पैंतेपुर में बहुत से सम्मानित लोग आपके साथ थे। मन्सब अली शाह मस्जिद से बाहर आकर सरकार वारिस पाक से मिले। जैसे ही सरकार की ओर आँख उठाकर देखा कि हाजी मन्सब अली एक चीख मारकर अचेत हो गये। सरकार मुस्कुराते हुए चले आये और उनके सेवक आत्रितजन उनको उठाकर ले गये। उस समय उनके मुँह से झाग बह रहा था। कई दिनों तक इसी दशा में रहे।

हजरत मियाँ सैय्यद मकसूद अली शाह स्थानापन्न मजा शाह कलन्दरी जो मानापुर में रहा करते थे। वह अपनी सभा में बहुधा सरकार का गुणवान किया करते थे। आपके दर्शन करने हेतु देवा शरीफ भी आया करते थे। सैय्यद मकसूद अली शाह के ईश मिलन (विसाल) के पश्चात् देखा गया है कि जब सरकार उधर से

गुजरते थे आप उनके मज़ार पर ठहरते और उनके फकीरी पंथ की बड़ाई करते थे।

साईं तवक्कल शाह नक्शबन्दी मोजद्ददी :

अम्बाला में साईं तवक्कल शाह रहमतुल्लाह नक्शबन्दी सम्प्रदाय के एक महान बुजुर्ग हुए हैं। सरकार के आदेश से एक बार हाजी अवघट शाह वारसी उनकी सेवा में उपस्थित हुए तो उन्होंने देखा कि शाह साहब आँख बन्द करके विश्राम कर रहे हैं। अवघट शाह का कथन है कि मैं थोड़ी देर तक खड़ा रहा। जब शाह साहब ने आँख खोला तो ध्यानपूर्वक मुझको नख-शिख तक देखा और एक ठंडी साँस लेकर कहा (उनकी भाषा पंजाबी थी) कि रसूल करीम दा और हाजी साहब दा सौंडेनाल फैज आविन्दा है। कहकर लंगर खाने में भोजन करने का आदेश दिया। अगले दिन सरहिन्द के लिये विदा कर दिया।

हज़रत शाह अबूल हसन साहब किबला नूरी मियां मारहरवी रहमतुल्लाह अलैह। हाफ़िज सेराजुद्दीन साहब बदायूनी जो हज़रत नूरी मियाँ रहमतुल्लाह के शिष्य और उत्तराधिकारी थे। लिखते हैं कि केवल एक बार मुझे हाजी बाबा का दर्शन हुआ है। सुब्हानल्लाह क्या कहना है ? उनके गुणों पर कलम उठाना मेरे वश की बात नहीं है और न ज़बान को हिला सकता हूँ। क्योंकि छोटा मुँह बड़ी बात है।

मैंने अपने शेख से सुना है जो अपने समय के एक बुजुर्ग हैं और आप ही अपना जवाब थे। उनका कथन है कि 'हाजी वारिस अली अपने युग के अद्वितीय हैं और महान संत हैं, रज़ाकिया सम्प्रदाय के सूर्य हैं। जो उनको बुरा कहे स्वयं बुरा है। वह फकीर है जिन्होंने इन्द्रिय दमन पर अधिकार कर लिया है। कलाम मजीद के बहुत अच्छे हाफ़िज (कण्ठाग्रही)हैं। कई हज पदयात्रा द्वारा किया है। जब कभी दरवेशों का प्रसंग आता तो आप यही कहते। हाजी बाबा ने कठोर तप किये हैं। उनकी ओर से अपने विचार में गलत भावना नहीं रखना चाहिये। निवेदन किया गया कि मान्यवर! सुना गया है कि हाजी साहब नमाज़ नहीं पढ़ते। पुनः आपने कहा कि हाँ नहीं पढ़ते। प्रथम तो यह है कि उन लोगों की नमाज़ दिखाने हेतु नहीं होती और इसके सिवा जो दरवेश ईश्वर प्राप्ति में सीमा पार कर जाते हैं उनका खिंचाव हो जाता है। उन पर शरीयत की सीमा लागू नहीं होती है। परन्तु मैंने सुना है कि वह नमाज़ पढ़ते हैं। और धर्म विधान मार्गी हैं। बिना रसूल के अनुकरण के कोई फकीर नहीं हो सकता है। जैसा कि शेख शादी ने कहा है पैयाम्बर के खिलाफ जो भी गया मंजिल पर

नहीं पहुँचेगा।

एक बार मारहरा शरीफ में उपस्थित था। संयोग से एक सभा में पहुँचा जहाँ बहुत से संत विद्यमान थे। उन सभी में जहूरी मियाँ कुछ चर्चा कर रहे थे। सभा में किसी अन्य ने पूछा कि हाजी वारिस अली शाह से सम्बन्धित आप सज्जनों की मत क्या है ? इस पर प्रकाश डालें। एक महानुभाव ने उत्तर दिया कि मियाँ यह क्या प्रश्न है ? ख़ामाने ख़ुदा - ख़ुदा न बाशद। लेकिन ज ख़ुदा जुदा न बाशद॥ अर्थात् ईश्वर के चहीते प्रियजन ईश्वर तो नहीं होंगे किन्तु ईश्वर से पृथक भी नहीं होते हैं। हमसे इस सम्बन्ध में न पूछो। इसलिये कि हम सम्प्रदायक रूप में एक हैं। यह प्रश्न किसी अन्य से होना चाहिये जबतक जहूरी मियाँ भ्राता पूज्य नूरी मियाँ ने कहा कि पूज्य हाजी बाबा समय के शेख, बुजुर्ग और महान तथा श्रेष्ठ हैं। उनके प्रति किसी का क्या विचार हो सकता है ? उनके प्रति गलत विचार रखने में दोनों भी चौपट, दुनिया भी चौपट दोनों से हाथ धो बैठना होगा। ऐसे महापुरूष क़यामत तक जन्म लेने वाले नहीं। उनकी कीर्ति वर्णन हमने अपने भाई नूरी मियाँ महोदय से भली-भाँति सुना है। उनका कथन है कि हाजी साहब महान संत और बहुत बड़े फकीर हैं। मेरे विचार में ऐसा होना कठिन है। मुझको आदेश हुआ है कि तुम अपना विचार उनके प्रति कस्सित (गलत विचार) करके अग्नि का कुन्दा न बनाना। खुदा ऐसे कुविचारों से बचायें।

हज़रत मौलाना शाह सैय्यद अबू मुहम्मद अली हसन साहब अशरफी अलजीलानी रह०:

हज़रत शाह सैय्यद अबू मुहम्मद अली हसन साहब लिखते हैं कि मान्यवर हाजी वारिस अली शाह एक बड़े महान पद के ऋषि या वली कामिल थे। ईश्वर के प्रति उनकी इतनी प्रबल तल्लीनता थी कि एक दिन सैदनपुरा में आपने कहा 'अभी हमको वज़ू करने की विधि स्मरण है। वाह रे ब्रह्मलीनता कि प्रत्यक्ष में बात भी करते थे पर एक पल ईश्वर से पृथक भी नहीं होते थे। मैं उनको आरिफ बिल्लाह मुकामात औलिया अर्थात अध्यात्म का महान पद प्राप्तकर्ता मानता हूँ। यद्यपि लोग उनको हर वक्त की नमाज़ पढ़ते हुए नहीं देखते थे। परन्तु कोई नमाज़ उनकी कभी छूटती नहीं थी। मूर्खों के ज्ञान में यह भेद नहीं समा सकता।

हज़रत हाजी मौलाना सैय्यद अबू मुहम्मद अशरफ हुसैन अशरफी अलजीलानी:

हज़रत मौलाना सैय्यद अबू मुहम्मद अली हसन साहब अशरफी अलजीलानी गद्दी नशीन किछौछा शरीफ अपने धर्म गुरू हाजिउलहरमैन मौलाना सैय्यद अबू मुहम्मद अशरफ हुसैन साहब के साथ हाजी बाबा से रूदौली शरीफ में मिले जैसा

कि वह लिखते हैं। एक धनी आदमी के मकान पर पूज्य दाता वारिस विराजमान थे। वहाँ हम जाकर मिलें और मुसाफा और मुआनका किया। आपने कहा 'तुम पीराने पीर दस्तगीर के फरजन्द (सुपुत्र) हो हमारे गुरूपुत्र हो।' पुनः कुछ पद पढ़कर कहा 'साहबजादे औलिया अल्लाह को मौत नहीं, सदैव जीवित रहते हैं। कुरआन शरीफ में 'कुल्लो नफसिन जायेकतुल मौत' आया है। कुल्लो रूहिन जायेकतुल मौत नहीं आया। अतः नफ्स को मौत है आत्मा को नहीं।' हजरत हाजी साहब की मुलाकात के पश्चात् मुझसे मेरे गुरू ने कहा। मान्यवर हाजी बाबा उत्तम श्रेणी के फकीर हैं। अवस्था ब्रह्मलीनता की है। ईश्वर के अतिरिक्त किसी की खबर नहीं। जमाने में इस पद का कोई दरवेश हजारों में एक होता है।'

हजरत बहादुर शाह साहब नक्शबन्दी :

मौलवी मुहम्मद नाजिम अली फल्ली का कथन है कि जिला गोंडा में एक व्यक्ति के घर पर एक बुजुर्ग बहादुर शाह साहब नक्शबन्दी जो अपनी आँखों के अन्धे थे जमाना मकान में थे। संयोग से मुझे ज्ञात हुआ तो उनकी सेवा में उपस्थित हुआ। बातों-बातों में हाजी बाबा की बात आ गयी तो आवेश में आकर उन्होंने कहा 'हाजी बाबा शमशीर ब-रहना अर्थात नंगी तलवार थे।'

हाजी सैय्यद अली आबिद शाह साहब रहमतुल्लाह अलैह० :

सैय्यद अली हामिद शाह चिश्ती कादरी गद्दीधारी सांडी जिला हरदोई लिखते हैं कि मैं प्रत्यक्ष बातों को देखता हुआ हाजी वारिस, वारिस बाबा के प्रति श्रद्धा युक्त विचार नहीं रखता था। एक बार मेरे धर्म गुरू हाजी सैय्यद अली आबिद शाह ने मेरे विचारों के प्रति उन्होंने आदेशित किया। ऐ प्यारे! पूज्य हाजी बाबा के प्रति विचार ठीक रखना चाहिये। जिस स्थान पर वह पहुँचे हुए हैं ईश प्राप्ति के निकट वह रूहानी मेराज है। अर्थात अध्यात्म का उच्च पद है। उनके महान् पद से विमुख होना ऐसा ही है जैसा चमकते हुए दिवस का इंकार करना। उनकी नमाज कहाँ और कैसे होती है? इसको प्रत्येक मनुष्य नहीं समझ सकता। उनके ईश्वर विलीनता की श्रेष्ठता को देखते हुए यह आरोप उचित नहीं है। इस अशान्तिपूर्ण युग को देखते हुए उनको द्वितीय जुनेद कहना चाहिये। ऐसा अवश्य है कि कुछ मुरीदों ने हाजी साहब के ज़ाहिरी हाल का अनुकरण किया। अच्छा होता वह अग्र-नहीं का पालन करते और ज़ाहिरी बातें देखने वालों को आरोप का अवसर न देते। उपस्थित लोगों में से किसी ने प्रश्न किया कि हाजी साहब तवायफों को शिष्य करते थे और कोई निर्देश भी नहीं देते थे। मान्यवर ने बताया कि वह ऐसे पद (मुकाम) पर हैं जहाँ पाप-पुण्य का

विचार नहीं रहता है।

मौलाना सैय्यद मुहम्मद करीम रज़ा साहब बिहारी :

मौलाना सैय्यद मुहम्मद करीम साहब चिश्ती निज़ामी अशरफी जो अपने ज़माने में प्रसिद्ध आलिम थे और अध्यात्म के भी अनुगामी थे लिखते हैं 'यद्यपि मैं पूज्य हाजी बाबा का शिष्य नहीं हूँ न फकीर तथापि सत्य को प्रकट कर देना न्याय है। हाजी बाबा के अस्तित्व में सभी औलिया-ए-कामिल के गुण, चमत्कारों का बाहुल्य, ईश्वर भक्ति, संसार का त्याग आदि जो भी गुण संतो, ऋषि मुनियों के हैं मौजूद थे। मौलवी गनी हैदर ने हाजी बाबा की सेवा में मुझे उपस्थित कर कदमबोसी का अवसर दिलवाया।'

मौलाना शाह मुहम्मद सुलेमान साहब कादरी चिश्ती फुलवारी शरीफः

मौलाना शाह मुहम्मद सुलेमान साहब चिश्ती कादरी फुलवारी शरीफ ने सैय्यद गफूर शाह वारसी की पुत्री के मृत्यु पर एक शोक पत्र लिखा है जिसका चुना हुआ अंश इस भाँति है :

आपकी पुत्री की मृत्यु से आपको कष्ट पहुँचा किन्तु विचार यह होता है कि आप दरवेश हैं। दरवेश की आँखों के सामने जीवन-मृत्यु कोई वस्तु नहीं है और न कोई आश्चर्यजनक घटना है। मुख्यतः आप पूज्य हाजी बाबा के फकीर हैं जिनके यहाँ जीने मरने की खुशी और गम का पाठ पढ़ाया ही नहीं जाता। वहाँ मान, अपमान, धनी निर्धन सबका जनक एक ही माना जाता है। जन्मदायक ही महबूब (प्रीतम) है। अतः महबूब की प्रत्येक अदा (हाव-भाव) महबूब ही है। सरकार वारिस पाक का मार्ग ईश्वरीच्छा को स्वीकार करना है। यह भी कह देता हूँ कि सरकार वारिस पाक मूल रंग यह था कि वहदत एकत्व में डूबे हुए थे। अन्य का होना उनके सामने मात्र नहीं था। मैंने मक्का-शरीफ में हजरत हाजी इमदादुल्लाह रह० के मुख से सुना है कि हाजी वारिस पाक जैसा एकेश्वरवादी देखने में नहीं आया। सुब्हानल्लाह एक महान बुजुर्ग जिसको अद्वैत्यवाद रूपी नदी का तैरने वाला समझे वह किस पद और मर्यादा का आदमी है। मौलाना सुलेमान शाह कादिरी मिश्कात हक्कानिया के लेखक को एक पत्र में लिखते हैं। अब मैं अपना विचार अंकित करता हूँ। जब तक कोई व्यक्ति ब्रह्मचर्य और विरक्ति का अभ्यस्त न हो मान्यवर पूज्य हाजी बाबा का फकीर नहीं हो सकता है। वारसी फकीरी और सांसारिकता तथा स्वाभिमानी होना एक साथ एकत्र नहीं हो सकते। पूज्य हाजी बाबा निम्नांकित पद्य को चिरतार्थ करते थे :

मा मोकीमाने कूये दिलदारेम।
रूख व दुनिया व दीं नमे आरेम॥

अर्थ- हम माशूक की गली में मुकीम है।
हमारा ध्यान संसार और धर्म पर नहीं है॥

मौलवी सैय्यद मुहम्मद रज़ा साहब सनदीलवी रहमतुल्लाह अलैह :

हाफिज तेराजुद्दीन साहब बदायूँनी स्थानापन्न नूरी मियाँ साहब मारहरवी लिखते हैं कि १८१० ईसवी में अपने गुरू मौलाना सैय्यद मुहम्मद रज़ा साहब संदीलवी की सेवा में उपस्थित हुआ। प्रत्येक संध्या तथा प्रातः ईश्वर भक्तों की चर्चा होती थी। एक दिन अस्र के समय (चार बजे दिन) मुंशी बशीरूज्जमाँ संडीला के सम्मानित व्यक्ति पधारे। धर्म के कुछ बुजुर्गों के सम्बन्ध में बातें करने लगे। उस सभा में लखनऊ का एक कव्वाल भी था। यकायक आवेश में कहने लगा। हमारे हाजी बाबा का भी दम गनीमत था। मुंशी बशीरूज्जमा साहब ने कहा कि निःसन्देह यह सत्य है। जनाब सैय्यद मुहम्मद रज़ा साहब विशेष रूप से मेरी ओर देखकर कहा। कुछ सुना किसकी चर्चा है। यह समय के शेख थे वस्तु युग और काल के बुजुर्ग थे । यह उत्तम हैं इनका नाम शिष्टाचार और प्रेम से लेना चाहिये। वह लोग जिक्र और फिक्र से पाक हैं।

हज़रत हाजी मौलाना शाह शाहज़ादा सैय्यद महबूबे आलम साहब किब्ला कादरी :

आप आस्ताना ख्वाजा गरीब नवाज़ पर अधिक दिनों तक रहे। आपका कथन है कि मैंने बगदाद, मैंने अपने पितामहः पूज्य मौलाना शाह मुहम्मद अकमल साहब रजी अल्लाह अन्हो से पूछा पूज्य हाजी बाबा के सम्बन्ध में आपका क्या विचार है? आपने कहा इस काल में कोई उनके समान नहीं है। उनका ब्रह्मज्ञान इतना उच्च है जिसका अंत नहीं है। मैंने बहुधा फकीरों और ऋषियों को देखा है। खोज भी किया है। किन्तु इनकी श्रेष्ठता की सीमा नहीं मिली है। मैंने भ्रमण भी बहुत किया है। परंतु इनके जैसा कोई महान बुजुर्ग देखने में नहीं मिला है।

'अपने धर्मगुरू महोदय के मुख से हाजी बाबा की बड़ाई सुनकर मुझे उनके दर्शन की अभिलाषा हुई। और मैं देवा शरीफ आया। यह विचार कर उपस्थित हुआ कि मुझे भी देखना चाहिये कि हज़रत कैसे हैं? मुझे देखते ही दाता वारिस ने कहा 'सुनो, सुनो हम तुम्हें खूब जानतें हैं जिस घर के तुम हो वहाँ के हम हैं। तुम शाह मुहम्मद अकमल के पोते हो, बगदाद के रहने वाले हो, अजमेर शरीफ में रहते हो।

धीराने कलिमर होते हुए आये हो। सम्भल कर बैठ जाओ। फकीर का इम्तहान लेने की कोई जरूरत नहीं है।' इसके पश्चात् प्रेम भाव से मेरी पीठ पर एक थपकी दिया। उस समय मेरे हृदय की जो दशा हुई वह अकथनीय है। हज़रत मौलाना का कहना है कि मुझे यह ख्याल हुआ कि कहीं हज़रत मुझे यहीं रोक न लें। अतः किसी भाँति जाने के लिए आज्ञा लेनी चाही तो मैंने अंगूरों में नमक मिलाकर सामने रखा फिर आपने कहा 'सुना, सुना! तुम चले जाओ, हम तुम्हें नहीं रोक सकते।'

जब पूज्य हाजी वारिस बाबा मदीना शरीफ से शाम होते हुए बगदाद की ओर चले तो उसी बीच सैय्यद गौस पाक ने हज़रत शाह मुहम्मद अकमल और सैय्यद मुहम्मद मुस्तफा साहब को स्वप्न में आदेश दिया हिन्दुस्तान के रहने वाले एक सुपुत्र अरब से आ रहे हैं। उन्होंने सम्पूर्ण जीवन में कोई वस्त्र नहीं पहना है केवल एहराम बाँधा है। उनके लिये दो तीन एहराम तैयार रखो। जिस समय सरकार वारिस पाक बगदाद पहुँचे तो वहाँ के स्थानापन्न महोदय अकमल साहब ने आपको विदा करते समय यह भेंट किया और अन्य वस्तुऐं भी आपको उपहार स्वरूप प्रस्तुत किया । कुछ लोगों ने वहाँ यह कहा कि यहाँ से सबको पगड़ी और गुदड़ी मिलने का रिवाज है यह नई बात कैसी है कि इनको एहराम दिया गया? उन दोनों बुजुर्गों ने कहा कि अन्य लोगों को हम खिरका और पगड़ी अपनी ओर से देते हैं पर इनके लिये गौस पाक का यही आदेश है जिसका पालन करना हमारा परम् कर्तव्य है। मेरे पूज्य दाता जी ने पूछा आपके यहाँ आपका उत्तराधिकारी कौन होगा? आपने कहा 'सुना, सुना वारिस का कोई वारिस नहीं होता।'

(बाकलम खुद शाह महबूब आलम अफी अन्हो २० सितम्बर १९१८ ई०)

उपरोक्त बातों से प्रत्येक आदमी यह ज्ञात कर सकता है कि जिसके सम्बन्ध में अन्य सम्प्रदायों तथा पंथों के वरिष्ठ बुजुर्गों की ऐसी धारणायें और मत हों वास्तव में वह किन-किन गुणों से सुसज्जित होगा। उस युग और काल के संत और महात्मा ने अपनी संतान को सरकार वारिस पाक का शिष्य होने की आज्ञा दिया। मरते समय वचन दिया और मृत्यु प्रयन्त स्वप्न में दर्शन देकर शिष्य होने का आदेश दिया। सरकार वारिस पाक के गुणों , विशेषताओं तथा यश और कीर्तियों का पता करना अत्यन्त कठिन है।

वेसाल अथवा ब्रह्मीभूत होना

दीदार मी नुमाई व परहेज मी कुनी।
बाजार खेश व आतिशे मा तेज मी कुनी ॥

अनुवाद : लोगों अथवा हमारी दृष्टि से बच रहे हो या छुप रहे हो फिर दर्शन भी दे रहे हो, मानो अपनी बाजार गर्म और हमारी विरह-अग्नि को ज्वलित कर रहे हो। सारांश यह है कि औलिया अल्लाह की मृत्यु नहीं है किन्तु वह लौकिक रूप में प्रत्यक्ष दृष्टि से शरीर त्याग देते हैं किन्तु भक्तों और प्रेमीजनों को उसी रूप अथवा शरीर में प्रत्यक्ष दर्शन भी देते हैं। हमारे पूज्य दाता वारिस पाक को भी शरीर त्याग करना हुआ। जिस भौतिकता की दशा का वर्णन इस प्रकार है। यह वियोगदर्शी व श्रोतागणों हेतु यह घटना प्राण विदारक रही और है। १४ मोहर्रम १३२४ हिजरी मुताबिक १९०३ ई० को साधारण रूप में आपको जुकाम हुआ। शनैः शनैः २० मोहर्रम तक आपकी तबीयत बहुत खराब हो गई। ज्वर प्रकोप तीव्र हो गया। साधारणतः लोगों की व्याकुलता बढ़ गयी। वैद्य और हकीम बुलाये जाने लगे किन्तु सरकार के मुख से कोई शिकायत नहीं सुनी गई। न आपकी दशा से कष्ट इत्यादि का कोई लक्षण ही प्रकट हुआ। उस समय भी आप द्वारा यश दान पूर्वत हो रहा था। प्रत्येक सवाली अपनी झोली भर रहा था। मौलवी हकीम मुहम्मद हमीद साहब फिरदौसी अबूल अलाई बिहारी लिखते हैं कि १२ मोहर्रम को एक शाह साहब देवा शरीफ से हकीम मुहम्मद अब्दुल हफीज साहब माननीय जो मेरे गुरू हैं को बुलाने हेतु पहुँचे। जाकर कहा कि मुझे नवाब अब्दुशकूर साहब ने आपको बुलाने हेतु भेजा है। सरकार वारिस पाक की तबीयत अच्छी नहीं है। आप देवा शरीफ चलें। मैं उस समय हकीम साहब की सेवा में उपस्थित था। मैंने पूछा आप कहाँ जायेंगे? उन्होंने मुझसे कहा यहाँ के कुतबुल आफताब (ध्रुव पद प्राप्त करने वालों के केन्द्र) पीर-मुर्शिद, विश्वगुरू हाजी सैय्यद शाह वारिस अली शाह साहब पूज्य का मिजाज कुछ ठीक नहीं है, उनको देखने और पुनः उनसे जो हकीम साहब को लेने गये थे बात करने लगे और कहा कि १२ बजे दिन के पश्चात् देवा जाने को तैयार हूँ। मैंने पूज्य हकीम जी से कहा कि यदि हमको भी साथ ले चलें तो एक महान ईश्वर भक्त का दर्शन कर लूं। पूज्य हकीम जी ने हमारी प्रार्थना स्वीकार कर लिया। दवाओं के एकत्र करने में संध्या हो गई। हकीम साहब ने मुझको उन देवा से आने वाले महोदय के साथ देवा शरीफ भेज दिया और स्वयं दूसरे दिन आने का वचन दिया और मुझे सलाम अर्ज करने का आदेश दिया। यह भी कहा कि सरकार की सेवा

करना। सवारी का प्रबन्ध रखना मुझे तार देना या लखनऊ आकर सूचित करना।

शाह साहब के साथ ९ बजे रात की गाड़ी से बाराबंकी के लिये चला और टमटम द्वारा बारह बजे देवा शरीफ पहुँच गया। नवाब अब्दुशकूर साहब के यहाँ खाना खाकर सो रहा। फिर मैंने एक विचित्र स्वप्न देखा। लाखों लोगों की भीड़ एकत्र है कहीं ओर-छोर दिखाई नहीं दे रहा है। सभी लोग हाजी बाबा की डेयोढ़ी की ओर चले जा रहे हैं। उसी भीड़ में मैं भी चला जा रहा हूँ और मेरे साथ चालीस छात्र भी हैं। मैंने देखा कि एक छोटा दरवाजा है और झुण्ड के झुण्ड उसी द्वार में प्रवेश कर रहे हैं। मैं भी झुककर भीतर चला गया। वहाँ एक हश्र का मैदान सा दृष्टिगोचर हो रहा है। र.म्पूर्ण जनसमूह चकित हो रहा है। लोगों पर एक भय सा छाया हुआ है सभी सिर झुकाये खड़े हैं। उस समय हाजी बाबा जलाल में दिख पड़ रहे हैं। आप दोनों हाथों में बाँस की कमचियाँ लिये हुए एक दूसरे पर मार रहे हैं। उस समय सरकार कोठे पर थे और समग्र जन-समुदाय नीचे आँगन में खड़ा था। अकस्मात् हाजी बाबा की दृष्टि मुझ पर पड़ी। आपने मुझे स्नेह से देखा मेरे निकट एक महिला खड़ी थी वह भी भयभीत थी। उसी समय एक और स्त्री आकर उस महिला के समीप आकर खड़ी हो गई। उसके खड़े होते ही हाजी बाबा कोठे से नीचे कूद पड़े और उसके निकट पधारे। आपने उन कमचियों को उसके मुँह पर फेर दिया। उसकी सूरत सुअर की हो गई और सूअरों जैसा क्रियाकलाप करने लगी। पुनः दूसरी बार जब आपने उसके मुँह पर उन कमचियों को फेरा तो वह औरत के रूप में आ गई। अब वह पहले से भी अति सुन्दर थी और उसके निकट वाली महिला उसको भेंटने लगी। सरकार ने मुझको सम्बोधित कर कहा 'तुम इस औरत को पहचानते हो।' मैंने कहा नहीं। आपने स्वयं कहा 'यह याचिका थी और जो भी याचना करता है। उसकी शक्ल-सूरत सूअर की हो जाती है। फिर आप मेरी ओर मुड़े तथा तुरन्त कोठे पर टहलते हुए दिखाई पड़े। मैं पहले से भयभीत था किन्तु अब मेरे मन की दशा बदल गयी थी। इतने में कुछ लोग आये और कहा कि हाजी बाबा ने आपको खाने के लिये बुलाया है। मुझे भूख नहीं थी। अतः मैंने उन लोगों से कहा मुझे भोजन करने की इच्छा नहीं है। मैंने अपने साथियों को खिलाने का निवेदन किया। वहाँ सभी खा रहे थे, मेरे साथी भी, इसलिये मैंने भी कुछ निकाल कर खाया और बाहर की ओर टहलने लगा।

कुछ दूर चला था कि काबा अल्लाह के घर में दाखिल हुआ। अपने पीर मुर्शीद अपने आदरणीय पिता सैय्यद शाह अमीनुद्दीन अहमद फिरदौसी को देखा कि अस्र

का वजीफा पढ़ रहे हैं। मैंने उन्हें सलाम किया बाद वजीफा उन्होंने मुझे गले से लगा लिया और कहा डरने की कोई बात नहीं है। देर तक मुझसे कुछ कहते रहे। इतने में भोर हो गयी और मेरी आँखे खुल गई। सुबह की नमाज पढ़ने के बाद हाजी बाबा ने मुझे बुलवाया। मैं जब सरकार की सेवा में उपस्थित हुआ तो मैंने देखा कि दरवाजा भी वही है जो स्वप्न में हमने देखा था और मकान भी वही था। उस समय हाजी बाबा एक गद्दे पर बैठे हुऐ थे। मैंने सलाम किया और हाथों को चूमा । मिजाज पूछा उस समय आपने मुझको सप्रेम देखा और कुछ समय तक देखते रहे। उस समय मुझे हार्दिक आनन्द प्राप्त हो रहा था। आपने अपना दाहिना हाथ मेरी ओर बढ़ा दिया और मैं नाड़ी देखने लगा। मुहम्मद इब्राहीम शाह साहब जो वहाँ उपस्थित थे। मुझसे हालत पूछा जैसा मेरी समझ में आया था मैंने बताया। हुजूर सुनकर प्रसन्न हुए तथा आदेश दिया कि तुम नुस्खा लिख दो। किन्तु मैंने दवाओं के प्रति नहीं तैयार किया और कहाकि सरकार के लिये हमारा नुस्खा लिखना उचित नहीं है। इस सेवा हेतु मेरे गुरूजी आ रहे है और आज अवश्य वह आ जायेंगे।

तीसरे दिन हकीम अब्दुल अजीज साहब रहमतुल्लाह पधारे और उस समय से उनकी दवा चलने लगी। मैंने इतनी अधिक उम्र में किसी की भी इतनी बलिष्ट नाड़ी नहीं देखी। इन बुजुर्गों की हृदय शक्ति ऐसी होती है कि साधारण वैद्य नाड़ी पहचान नहीं कर पाते हैं। पूज्य दाता वारिस पाक में पूरी भाँति से संसार त्याग देखा था और वह प्रबल शक्ति के स्वामी थे जिसका निरीक्षण मेरे सम्मुख उपस्थित था। हकीम मुहम्मद अहमद साहब निवासी कुरसी जिला बाराबंकी ब्यान करते हैं कि हकीम अब्दुल अजीज साहब लखनवी ने मुझसे बताया कि वेसाल के समय भी सरकार की नाड़ी गति शुद्ध थी उसमें कोई अंतर नहीं था। हमने अपने जीवन में इतनी मजबूत नाड़ी नहीं देखी है।

सरकार वारिस पाक के विसाल के समय की भी घटनायें आश्चर्यजनक और विचित्र हैं। भाँति-भाँति की बातें लोगों ने देखी हैं। हाजी अवघट साहब वारसी लिखते हैं कि वेसाल के समय बहुधा देखा गया है कि आप अपनी तर्जनी अंगुली से एक वर्ग की आकृत बनाते और उसपर अंगुली रखकर कहते थे 'यही काबा है।' फिर उसके चारों ओर मुसल्ला (नमाज का बिछौना) बनाकर आपने कहा 'यह चारों मुसल्ले हैं। इधर भी नमाज होती है, उधर भी नमाज होती है।' आगे कहा गया चाहे जिस ओर आदमी हो किन्तु नमाज काबा के ओर होगी। फिर पूरा हाथ मारकर कहते यही काबा है।

सरकार वारिस पाक के वेसाल का समय भी लौकिक-अलौकिक विभूतियों के अनुसार अति विशेष है। उस समय भी हजारों मनुष्य शिष्य होने हेतु आते थे। अधिकांश जनसमूह सरकार का पुनीत वस्त्र द्वारा शिष्य होता था। एक नानक शाही हिन्दू और एक स्वात नबीरा के मौलवी साहब शिष्य होने के उद्देश्य से आये और सरकार ने अपने पुनीत हाथों पर दोनों को शिष्य किया, फकीर बनाया तहबन्द प्रदान किया। मौलवी साहब को फकीर शाह की पदवी और नानक शाही हिन्दू को रसूल शाह की उपाधि प्रदान की गई। हजरत फजीहत शाह लिखते है कि मैं २६ मोहर्रम को २ बजे दिन में देवा शरीफ उपस्थित हुआ। सरकार की कदमबोसी किया उस समय ज्वर का तापमान लगभग ९९ डिग्री तक था। निर्बलता अति अधिक हो चुकी थी। पर इन सबके होते हुए भी कोई शिकायत अथवा किसी प्रकार का रोग प्रभाव आपके मुख से प्रकट नहीं होता था। महान वैद्य-हकीम अब्दुल अजीज लखनऊ, हकीम अब्दुर्रशीद, अब्दुलहई महुवना, हकीम अब्दुल बाकी फतेहपुरी, हकीम मुहम्मद याकूब खैराबादी, सुल्तान महमूद इटावी इत्यादि अमीर-गरीब, धनी-कंगाल सभी वर्गों के लोग आपकी सेवा हेतु आपके निकट एकत्र थे। धनवानों ने जी खोलकर धन और रूपया खर्च किया। दान दक्षिणा बहुतायत से बाँटा जाता था खैरात जकात में कोई कमी नहीं होती थी। आप का रोग बढ़ता ही रहा। बलगम शुष्क हो गया था। उसके निकलने में कष्ट होता था। बुखार जोरो पर था। प्रस्राव (पेशाब) बन्द था परन्तु आपके मुख से किसी प्रकार के कष्ट सूचक शब्द नहीं निकलते थे। उठने बैठने में कोई अन्तर नहीं था। वही बैठक और वही सीधी करवट लेट कर विश्राम करना पूर्ववत था। मौलवी नादिर हुसैन वारसी नग्रामी लिखते हैं कि हकीम अब्दुल अजीज महोदय लखनवी ने सरकार की नब्ज (नाड़ी) देख कर कहा 'हुजूर के छाती में कष्ट है।' इसके उत्तर में दाता वारिस ने कहा 'तुम तो बड़े हकीम हो, तुम तो बड़े हकीम हो।' जब दवा तैयार होकर दाता के सामने आई तो आपने उसमें से थोड़ी ग्रहण किया और शेष एक व्यक्ति को जो समीप ही बैठे हुऐ थे देकर आदेश दिया 'तुम पी लो।' हाजी फैजू शाह ने निवेदन किया सरकार इनके लिए नहीं है। पुनः आप ने कहा यह भी तो ज्वर से पीड़ित हैं। वह आदमी उसी समय सब दवा पी गया। तात्पर्य यह है कि रोगावस्था में भी आपको अन्य लोगों का विशेष ध्यान रहता था।

उसी बीमारी के समय में एक दिन दाता वारिस की तबीयत ठीक नहीं थी रोग का प्रभाव अधिक जान पड़ता था। जब मैं उपस्थित हुआ तो हकीम अब्दुल बाकी

खाँ ने कहा अन्दर न जाओ। पूज्य दाता की तबीयत अधिक खराब है। मैंने कहा अच्छा सामने जाकर कदमबोसी कर लूँ। अतः दालान में जाकर थोड़ी दूर से ही कदमबोसी किया। दाता वारिस उस समय चादर से मुँह ढ़क कर विश्राम कर रहे थे। आपने मुख से चादर हटाकर 'पूछा कौन।' मियाँ जहूर अशरफ ने अर्ज किया मुंशी नादिर हुसैन हैं। आप ने कहा 'आओ।' और अपना हाथ बढ़ाया मैंने पहुँचकर दस्त बोसी किया इसके पश्चात् मुझे चाय पीने का आदेश हुआ। सब को आश्चर्य हुआ कि आप क्या कह रहे हैं? जब कुछ समय के बाद बाहर आया तो मक्की शाह ने कहा कि मुंशी! चाय तैयार है पी लीजिये। मैंने पूछा कि कैसी चाय? तो मक्की शाह ने कहा वही चाय जो सरकार ने कहा है। दवा बनाने वाला दवा का डिब्बा लाया था वह डिब्बा चाय का था। इसलिये चाय तैयार हो गयी है पी लीजिए, मैंने पी लिया। कहने का तात्पर्य यह है कि सरकार की स्नेह और प्रेम असीम थी। दया तथा कृपा के आप सागर थे।

मौलवी गनी हैदर साहब वारसी का कथन है कि सरकार के बीमारी के दिनों में तीन दिनों तक मैं देवा शरीफ में दाता के समीप था। मैंने देखा रोग के कारण शरीर जीर्ण-शीर्ण हो रहा था उसी समय एक वृद्धा उपस्थित हुई। विह्वल हो बड़ी दीन और आतुर भाव से कहने लगी कि मियाँ अब तो अच्छे हो जाओ। आप उस बुढ़िया की बात सुनकर उससे कई गुना अधिक व्याकुल हो गये और वृद्धा को सम्बोधित कर कहा 'हम तो बिल्कुल अच्छे हैं, हम तो बिल्कुल अच्छे हैं। लोग कहते हैं कि बीमार हैं।' उस बुढ़िया को सान्त्वना देने की दशा को शब्दों द्वारा प्रकट नहीं किया जा सकता है।

मौलवी नाजिम साहब फ़जली उप-सिक्रेटरी मदरसा आलिया फुरकानिया लखनऊ लिखते हैं कि विसाल के निकट मैं सरकार को देखने गया तो आप अपने नियमानुसार दायें करवट में लेटे हुए थे। किसी ने आप का हाल पूछा तो आप ने कहा 'अलहम्दोलिल्लाह, मैं अच्छा हूँ।' लोगों की ओर संकेत करके कहा 'यह लोग बीमार कहते हैं।' सरकार वारिस पाक के मुख से अंतिम समय तक कोई शब्द तसलीम-रजा के विरुद्ध नहीं निकला। कष्ट और पीड़ा की तो बात ही छोड़ दीजिए रोग का नाम तक नहीं लिया। हकीमों के पूछने पर भी आपने यह नहीं कहा कि अमुक अंग में दर्द है या अमुक कष्ट है। सच तो यह है कि आप ने अपने को रोगी होना तक स्वीकार नहीं किया है। कमजोरी बढ़ती ही गयी। होठ सूख जाते थे प्यास तीव्र हो जाती थी। पानी जब दिया जाता था। आप मात्र दो घूंट से अधिक नहीं पीते थे।

सैय्यद मारूफ शाह वारसी का कथन है कि इसी रोगावस्था में एक दिन उपस्थित वारसी जनों को संबोधित कर कहा यह संसार स्वप्न मात्र है। एक न एक दिन अवश्य ही सभी को नजरों से गायब होना पड़ता है। जिस जगह या जिस स्थान पर हम सो जायें वहीं हमको भूमि में उतार देना चाहिए। आशिक जिस वस्त्र में होता है उसी में दफन कर देना अनिवार्य है। सैय्यद मारूफ शाह कहते हैं कि एक बार पूर्व बीमार होने के भी आपने यह कहा था। यह आपकी अंतिम वियोग वाणी थी। जिनसे प्रमियों की चेतना शुन्य हो गई। सभी अश्रुपूरित नेत्रों से एक दूसरे को देखने लगे। श्रीमान यास टौंकी का एक पद है :

कियामत था यह कहकर उनका पहलू से निकल जाना।
ख़ुदा हाफ़िज है, अब मेरे तसव्वर से बहल जाना॥

हजरत फ़जीहत शाह का कथन है कि ३० मोहर्रम १३२३ हिजरी सन् १९०३ ईसवी के दिन सरकार वारिस पाक ने शहादत की अंगुली उठाई और कहा 'अल्लाह एक है।' फिर कुछ रात गई थी कि हकीम मुहम्मद याकूब से पूछा 'क्या वक्त है?' हकीम साहब ने कहा दस बजे हैं। आपने कहा कि हम चार बजे अपने परम् मित्र के पास जायेंगे।

हाजी फ़ैजू शाह साहब ठंडे पानी में मधु मिलाकर बार-बार देते थे। उस समय आपका जिक्र इलाही चल रहा था। बलगम की शुष्कता के कारण जप स्वर सुनाई पड़ रहा था। इसी दशा में प्रातः ४ बजकर १३ मिनट पर ब्रह्म बेला में ईश्वरीय गति को प्राप्त हुए। प्रथम सफ़र सन् १३२३ हिजरी सन् १९०३ को आप शरीर त्याग कर हमारी लौकिक दृष्टि से अन्तर्ध्यान हो गये। वह दिन जुमा का पुनीत दिन शक्रवार था जब आप श्रेष्ठता के आवरण में समा गये और इस संसार की भौतिक बन्धनों को तोड़कर परमात्मा में विलीन हो गये अर्थात आत्मा परमात्मा में समा गई।

सरकार वारिस पाक के वेसाल के दिनों में लोगों ने अद्भुत और विचित्र सामर्थ्य का अवलोकन किया है। शेख मुहम्मद शफी साहब वारसी मिर्जापुरी (जिनका नाम पहले लाला बुद्धूलाल था) लिखते हैं कि वेसाल से कुछ समय पूर्व मैं दाता वारिस की सेवा में उपस्थित था। मैंने ऐसा देखा कि मानो सरकार एक शिशु के समान हैं और वह औलोकित रूप आज तक मेरे सम्मुख है। मुझे ऐसा जान पड़ा कि यह चमत्कार प्रकट करने का आशय यह रहा कि सरकार की प्राकृतिक निष्पाप होने की दशा पूर्ववत् बनी हुई है। अर्थात् जैसा शिशु स्वभाव के साथ प्रकट हुए थे। आज भी वह पवित्रता अथवा निष्कामना बनी हुई है। आज भी उसी भाव से शरीर

त्याग कर रहे हैं और फजीहत शाह कुदसा सिर्रहु ने सैय्यद अब्दुल गनी वारसी बिहारी और अन्य महानुभावों से ब्यान किया है कि इसी वर्ष सरकार वारिस पाक ने अपना बिना दाढ़ी मूंछ का नव युवक रूप मुझको दर्शाया और आदेश दिया कि अब तुम मुझे इसी सूरत में देखोगे। शेख वजीर अली साहब किदवई निवासी मसौली जिला बाराबंकी लिखते हैं कि दाता वारिस के अन्तिम संस्कार के समय जो लोग उपस्थित थे उनसे पूछा जाय कि उनके मन में प्रसन्नता के चिन्ह थे अथवा दु:ख के तो सभी का उत्तर होगा हर्षित थे। हम लोगों ने देखा कि सभी आनन्द का अनुभव कर रहे थे। हमने एक बुजुर्ग से पूछा क्या कारण है कि सभी हर्षित दिख पड़ रहे हैं। यह तो दु:ख का समय है। उन्होंने कहा कि यह समय आशिक माशूक की मिलन का है। अत: चारों ओर आनन्द ही आनन्द दिखाई पड़ता है।

वेसाल के पश्चात् सरकार वारिस पाक का मजार कहाँ होना चाहिए थोड़ी देर के लिए एक विवाद बन उठा किन्तु अन्तत: सरकार दाता वारिस के कथनानुसार उसी स्थान पर सरकार का शरीर भूमि में सौंप दिया गया जहाँ आप सोये हुए थे। नमाज की गई जमाअते हुई। सात बार लोगों ने बाहर नमाज और चार बार मकान के भीतर कुल ११ बार लोगों ने अलग-अलग समूहों में नमाज पढ़ी। जन समूह इतना प्रबल था कि जिसने जहाँ से चाहा जिधर अवसर मिला वहीं से नमाज अदा कर लिया। सरकार दाता वारिस का कथन चरितार्थ हुआ। चाहे किसी तरफ आदमी हों नमाज काबे की ओर होगी।

फऐनमा तवल्लू ससुम्म वजल्लाह। उक्त आयत शरीफ से रोजे की तारीख निकलती है।

सैय्यद मारूफ शाह, हाजी कैजू शाह, नूर मुहम्मद शाह, नवाब अब्दुश्शकूर खाँ और ठाकुर पंचम सिंह इत्यादि ने सरकार के पवित्र शरीर को स्नान कराया तथा बेदम शाह, मजहर अली किदवई, हाफीज अहमद शाह और मियाँ अब्दुस्समद ने आपके शरीर को कब्र में उतारा, अन्य मुरीदों ने भी हाथों हाथ अन्दर पहुँचाया और कुब्बा बना दिया गया। मौलवी अब्दुल अली साहब खुदा नुमा ने उसी रात को स्वप्न देखा कि कब्र के स्थान की मिट्टी जिस किसी के पास होगी उस मोछ हो जायेगा। उनका ब्यान है कि प्रात: जब मिट्टी लेने हेतु वहाँ पहुँचा तो देखा कि लोग थोड़ी-थोड़ी मिट्टी ढो रहे हैं। बड़ी कठिनाई से थोड़ी सी खाक पा सका था। तात्पर्य यह है कि सरकार वारिस पाक को उसी एहराम में जिसको शरीर पर धारण किये थे कब्र शरीफ में रखा गया। अन्तिम संस्कार के पश्चात् जब जन समूह विदा होने लगा तो सरकार का लौकिक अभाव

पाकर रोने लगे और लोगों के रोने से कोहराम मच गया।

२७ मोहर्रम १३२३ हिजरी सन् १९०३ ईसवी को एक भूचाल हुआ था। जिसके कारण जन जीवन अस्त व्यस्त हो गया था। कहीं-कहीं तीन चार दिन तक हल्का सा झटका चलता रहा। मौलवी मुहम्मद सरफराज वारसी भूतपूर्व मैनेजर दरगाह शरीफ अजमेर का कहना है कि मैं मुरादाबाद मुहल्ला नयी बस्ती में था और मुंशी याकूब साहब के मकान में रहता था। एक दिन भूचाल हुआ उस समय मुझे एक बात स्मरण हो आई जो एक मद्रासी फकीर ने कहा था। उस फकीर का नाम मदार शाह था। उन्होंने भविष्यवाणी किया था कि हजरत हाजी साहब किब्ला बहुत बड़े फ़कीर हैं। उनका जिस दिन विसाल होगा। ऐसा भूकम्प धरती में होगा जैसा कभी हिन्दुस्तान में न हुआ होगा और हिन्दी का एक पद्य पढ़ा :

जो यह सिद्ध जगत न रहिये।
पृथ्वी डोले और जग बहिये॥

कहने का अर्थ यह है कि सरकार वारिस पाक का लौकिक जीवन पूर्ण रूपेण अध्यात्म का युग था जिसने पूरे विश्व में अध्यात्म और ईश्वरत्व का झण्डा ऊँचा कर दिया। अपनी गली में ब्रह्मवाद के राज मार्ग का अवलोकन करा दिया। अन्तत: हमारी नजरों से अंतर्ध्यान हो गये। ईश्वर की एक ज्योति थी जो मानव रूप में प्रकट हुई और संसार को दर्पण की भाँति चकित कर दिया। उस ईश्वरीय ज्योति ने विश्व को जो प्रकाश दिया और जो प्राण संसार में फूंक दिया वह सूर्य के समान प्रत्यक्ष है। जिसका अस्तित्व अपने अगणित गुणों से हम सबको आश्चर्य में डालकर उसी ज्योति में विलीन हो गया जिसका प्रकाश था। यद्यपि आज भी उसके यश और विभूति में कोई कमी नहीं है जैसा कि आया है। **इन्नाल्लाह औलिया अल्लाह लायमूतून।** फिर भी वह पवित्र सूरत हमारी नजरों से ओझल है। **इन्ना लिल्लाहे व इन्ना एलैहे राजेऊन।**

उनवाने वाक्यात बैय्यत

एकराम हुसैन के बैय्यत का वाक्या

वारिसे पाक के रूहानियत और कुवते बातिनी के वाक्यात इस कदर हैरत अंगेज (अचम्भा) है कि समझ में नहीं आते (यानी मनुष्य के समझ के बाहर है।) हुजूर वारिस पाक की हयाते जाहिरी में जिस तरह वैसे वाक्यात नजर में आते रहते थे। वैसे ही अब भी अद्भुत लीलायें होते हैं। काजी मु० लियाकत हुसैन साहब वारसी रूधौलवी लिखते हैं कि २८ मुहर्रम सन् १३३४ हिजरी के रात्रि में स्वप्न

देखा मौलवी अब्दुल अली साहब वारसी खुदानुमा -

कि वह हुजूर पुरनूर वारिस पाक के खिदमत में हाजिर हैं और नौजवान आदमी को उन्होंने हुजूर अनवर से बैय्यत कर लिया है। बाद बैय्यत हुजूर हालात से आदेश हुआ कि इनको दो रकात नमाज पढ़वा दो और नियत नमाज की इस तरह आदेश हुआ कि नियत करता हूँ मैं दो रकात नमाज वासिल इल्लाह की अल्लाह हो अकबर। हर रकात में एक-एक बार सूरह फातिहा (यानि अलहम्दो) और ग्यारह-ग्यारह बार सुरह एखलास (कुल हो अल्लाहो) पढ़ने की हिदायत फरमाई अतः आदेशानुसार नमाज पढ़वा दी गई। जब नींद से जग गये तो खुदानुमा साहब को यह चिन्ता हुआ कि ये स्वप्न का वाक्या जरूर जाहिर होने वाला है। २९ मुहर्रम को खुदानुमा साहब शाम को बाराबंकी से देवा शरीफ रवाना हुए। राह में सफर का चाँद देखा। उसी रात वारिस पाक का कुल होता है। पहले इस स्वप्न का वाक्या कुछ लोगों से ब्यान भी कर दिया। सफर दो बजे दिन को वारिस पाक के मजार का गुस्ल दिया जाता है। इत्र, केवड़ा से मजार पाक धोया जाता है। गुस्ल देने वाले अन्दर थे और भीतर का दरवाजा बन्द था। बाहर का दरवाजा खुला हुआ था। चबूतरों पर कव्वालियाँ हो रही थीं।

खान बहादुर मौलवी मुहम्मद बाकर पेन्शीनियर डिप्टी कलेक्टर रईस रायबरेली। उनके अजीज मौलवी मुहम्मद नासिर खाँ साहब पेन्शीनियर कोर्ट इन्स्पेक्टर इनके भांजे इकराम हुसैन और अब्दुल हमीद खाँ साहब कव्वाली सुन रहे थे। इन साहबों में अब्दुल हमीद खाँ साहब खुदानुमा साहब को जानते थे। ये वहाँ पर टहल रहे थे। अब्दुल हमीद खाँ साहब और एकराम हुसैन इनकी तरफ देख-देखकर आपस में कुछ बातें कर रहे थे। खुदानुमा साहब को शक हुआ। अब्दुल हमीद ने कहा कि एकराम हुसैन कहते हैं कि ये खुदानुमा क्यों कर हैं? ये सुनकर खुदानुमा साहब ने गरम होकर कहा क्या देखोगे? एकराम हुसैन ने कहा जरूर देखूंगा। खुदानुमा साहब उनका हाथ पकड़कर पहले चौखठ के अन्दर ले गये और एकराम हुसैन से कहा हाथ उठाकर कहा देखो क्या नजर आता है? वह क्या चीज दिखाये यानि दूसरे चौखठ के ऊपर अन्दर जाने से पहले पत्थर पर खुदा हुआ है। कुराने पाक की आयत (निशानी) है। वह आयत ये हैं :

फ ऐनमा तवल्लू फसम्मा वजहुल्लाह

यानि जिधर तुम मुँह करो खुदा का चेहरा। इकराम हुसैन देखने लगे खुदा जाने उन्होंने क्या देखा देखते-देखते गुम हो गये और बराबर होश नहीं रहा और दोनों

आँखों से आँसू जारी हो गये। खुदानुमा साहब उनको उसी हालत में छोड़कर बाहर चले आये। कुछ देर के बाद रोते तड़पते हुए एकराम हुसैन भी बाहर आये। खुदानुमा साहब ने कहा देखा उन्होंने एक आह ठन्डी सांस भरकर कहा कि हाँ देखा। उसी वक्त से एकराम हुसैन खुदानुमा साहब के दीवाने हो गये। रात को मौलवी हमीद खाँ साहब रोते हुए मौलवी मुहम्मद बाकर साहब के कमरे में आकर कहने लगे। एकराम हुसैन फकीर होने पर तैयार हैं। सब लोगों को ताज्जुब हुआ और हैरान हो गये और उनके मामू साहब बेहद फिकरमन्द हो गये। एकराम हुसैन ने बैय्यत की दरख्वास्त की कि मुझे भी मुरीद करा दीजिए। जब खुदानुमा को अपना स्वप्न याद आया और जो सरकार ने ख्वाब में दो रकात जो सुने थे वही नमाज एकराम साहब को पढ़वा दिया। अल्लाह हो अकबर। ऐसे वाक्यात आज भी होते रहते हैं। मजार पाक से और वारसी फुकरा से भी।

—— ❄ ——

आह! अब दाता वारिस हमारे दृष्टि से छुप गये जो सभा में दाता वारिस ईश्वरी शान और तमाम प्रकृतियों में अपना प्रकाश दिखाते रहे। ईश्वरी चमक प्यारा नूरानी चेहरा नीची निगाहें चेहरे पर मुस्कुराहट और बैठने बोलने का अनोखा अन्दाज निराला और प्रेम मोहम्मदी आदत और मौला अली शेरे खुदा की वह करम फरमाई, अमीर और गरीब सबके ऊपर प्रेम और कृपा का उपकार करना और हर दुःख दर्द में ईश्वरी हाथ रखना ये सारी बात सरकार की सिर्फ याद में रह गई जो देखने में नहीं आ रहा है।

वो दाता वारिस की नीची निगाहें किये हुए प्रेमियों और होंठ पर ऊँगली रखकर मुस्कुराहट फरमाना हाजतमन्दों का मजमा वह प्रेमियों का खास चहल-पहल जो उस बारगाहे आलम में नजर आती थी। उसका अब साया भी नजर नहीं आता। वह पण्डितों का श्लोक और मौलवियों का कसीदा खानी और बात-बात में करामात और बड़े-बड़े वलीये मालिक बुजुर्गों का जौक शौक का जमघट और हुजूर के प्रेमियों और दीवानों का जमघट परवानों की तरह और विलायत का चिराग पर जान देना वह जोश और बलबला व कैफियते कलबी और वह मुहब्बत की हृदय में जलन पिछली रात के ख्वाब की तरह कुछ हिस्सा याद है। कुछ भूला हुआ है। अब वह महफिल का चिराग पाकी रोशनी नुरुल अलानूर और सरायानूर जन्नत की बहारें वो प्यारी मोहनी सूरत तमाम आलम की मुहब्बत की दिलों में आग लगा देना

ये हमारे निगाहों से छुप गया एक दिन था वह नूर की सूरत हमारे निगाहों के सामने थी। वह प्यारा शमाँ हमारे नजर में हर वक्त घूमता रहता था। अब वही महफिल है लेकिन अब वह रौनके महफिल नहीं, वही बस्ती है मगर चिरागे हस्ती नहीं और वही सूरज है और वही चाँद है मगर वो नूरानी बहार नहीं। वही इबादत वही जिक्र है मगर कस्ब में वह रौनक नहीं और आपके प्रेम हर प्रेमियों की दिल की दवा थी। वह दवा भी वही और खाक का बिस्तर वही फकीराना बिस्तर है। वही जात और पाक है। वही फकीरों का दरबार है। अब वहाँ शमां प्रेमियों के नजर में है जो तमाम आलम का नूर था। वह नूर ही नूर में मिल गया और तीसरे दिन लाखों आदमियों के मजमा के साथ हुजूर का कुल हुआ। सैय्यद मारूफशाह साहब बाद कुल के सलाम पेश किया।